ख़ुतबात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

10

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी

ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

नाम किताब

खुत्बात जुलफ़क़ार 'फ़क़ीर'

10

मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी

Edition: **2014** साइज़: 23x36/16

पेजः 288

पेशकर्दा : जनाब मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशक

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones: 23289786, 23289159 Fax: 23279998
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

KHUTBAT ZULFIQAR *FAQEER* Vol. 10

By: **Prof. Muhammad Haneef Naqshbandi**

Translitration : **Ab-Darda**

Pages: 288 Size: 23x36/16

Composed at: QAYAM GRAPHICS, Dehra Dun-248001
Ph.: 9675042215, 9634328430

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

फ़हरिस्त-मज़ामीन
(विषय-सूची)

इल्मे नाफ़े की बरकात

क़ुरआन मजीद की बरकात

सुकून की तलाश

गुनाहों की नहूसत

गुस्सा और उसका इलाज

दुआओं की रात

अर्ज़-ए-नाशिर

الحمد لله لوليه والصلوة والسلام على نبيه وعلى آله وصحبه اوتماعه اجمعين

الى يوم الدين. اما بعد

उलमा और नेक लोगों के महबूब हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दी दामतबरकातुहू के उलूम व मारिफ़ वाले बयान को छापने का यह सिलसिला "ख़ुत्बाते फ़क़ीर" के उनवान से 1417 हि० (1996 ई०) से शुरू किया था और अब यह नवीं जिल्द आपके हाथों में है। जिस तरह शाहीन (बाज़) की परवाज़ हर आन बुलन्द से बुलन्दतर और बढ़ती चली जाती है कुछ यही हाल हज़रत दामतबरकातुहू के बयानात हिकमत व मारिफ़त का है। जिस बयान को भी पढ़ेंगे एक नई परवाज़े फ़िक्र नज़र आएगी। यह कोई पेशावराना ख़िताबत या याद की हुई तक़रीरें नहीं हैं बल्कि हज़रत के दिल का सोज़ और रूह से निकले हुए अल्फ़ाज़ हैं जो अल्फ़ाज़ के सांचे में ढलकर आप तक पहुँच रहे होते हैं। बयान के दौरान चेहरए अनवर पर फ़िक्र के गहरे साए ज़बान हाल से यह कह रहे होते हैं—

मेरी नवाए परेशाँ को शायरी न समझ
के मैं हूँ महरमे राज़ दरूने ख़ाना

ख़ुत्बाते फ़क़ीर की इशाअत का यह काम हम ने भी इस नीयत से शुरू कर रखा है कि हज़रत दामत बरकातुहुम की इस फ़िक्र से सबको फ़िक्रमंद किया जाए। अल्हम्दुलिल्लाह इदारा "मक्तबतुल-फ़क़ीर" को यह ऐज़ाज़ हासिल है कि हज़रत दामतबरकातुहुम के इन बयानात को किताबी सूरत में अवाम के

नफ़ा उठाने के लिए छापता है। हर बयान को तहरीर में लाने के बाद हज़रत दामतबरकातुहुम से इस्लाह करवाई जाती है, फिर कंपोज़िंग और प्रुफरीडिंग का काम भी बड़ी बारीकी के साथ किया जाता है और आख़िर में प्रिन्टिंग और बाइन्डिंग का पेचीदा और तकनीकी मरहला आता है। यह तमाम मरहले बड़ी तवज्जेह और मेहनत को चाहते हैं जोकि 'मक्तबतुल-फ़कीर' के ज़ेरे एहतिमाम अंजाम दिए जाते हैं। फिर किताब आपके हाथों में पहुँचती है। पढ़ने वालों से गुज़ारिश की जाती है कि इशाअत के इस काम में कहीं कोई कमी कोताही महसूस हो या इसकी बेहतरी के लिए सुझाव रखते हों तो इत्तिला फ़रमाकर अल्लाह के हाँ अज्र के हक़दार बनें।

बारगाहे ईज़वी में यह दुआ है कि अल्लाह जल्लेशानुहू हमें हज़रत दामतबरकातुहू के इन बयानात की गूंज पूरी दुनिया तक पहुँचाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएं और इसे आख़िरत के लिए सदक़ा जारिया बनाएं, अमीन।

डा० शाहिद महमूद नक़्शबंदी अफ़ी अन्हु

ख़ादिम मक्तबातुल फ़क़ीर फ़ैसलाबाद

पेश-ए-लफ़्ज़

الحمد للّٰه الذی نور قلوب العارفین بنور الایمان وشرح
صدور الصادقین بالتوحید والایقان وصلی اللّٰه تعالیٰ علی
خیر خلقه سیدنا محمد وعلیٰ اله واصحابه اجمعین اما بعد.

इस्लाम ने उम्मते मुस्लिमा को ऐसी मशहूर हस्तियों से नवाज़ा है जिनकी मिसाल दूसरे मज़हबों में मिलना मुश्किल है। इस एतिबार से सहाबाकिराम पहली सफ़ के सिपाही हैं। जिनमें हर सिपाही ﴿اصحابی کالنجوم﴾ "मेरे सहाबी सितारों की तरह हैं" की तरह चमकते हुए सितारे की तरह है जिसकी रोशनी में चलने वाले ﴿اهتدیتم﴾ यानी हिदायत पा जाओगे की बड़ी बशारत पाते हैं और रुश्द व हिदायत उनके क़दम चूमती है। उसके बाद ऐसी-ऐसी रुहानी हस्तियाँ दुनिया में आयीं कि वक़्त की रेत पर अपने क़दमों के निशानात छोड़ गयीं।

मौजूदा दौर में एक ज़बरदस्त हस्ती, तरीक़त के शहसवार, हक़ीक़त के दरिया के ग़ोताख़ोर, अल्लाह के भेदों को जानने वाले, नूर की तस्वीर, जाहिद, आबिद, नक़्शबंदी सिलसिले के असल, (हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़ुक़्क़ार साहब) दामतबरकातुहू हैं। आप परवाने की तरह एक ऐसी कामिल हस्ती हैं कि जिसको जिस पहलू से देखा जाए उसमें क़ौज़-क़ज़ह (इंद्रधनुष) की तरह रंग सिमटे हुए नज़र आते हैं। आपके बयानात में ऐसी तासीर होती है कि हाज़िरीन के दिल मोम हो जाते हैं। आजिज़ के दिल में यह जज़्बा पैदा हुआ कि उनके खुत्बात को तहरीरी शक्ल में एक जगह कर दिया जाए

तो आम लोगों के लिए बहुत मुफ़ीद साबित होंगे। इसलिए आजिज़ ने सारे ख़ुत्बात काग़ज़ पर लिखकर हज़रत अक़्दस की ख़िदमत आलिया में इस्लाह के लिए पेश किए। अल्लाह का शुक्र है कि हज़रत अक़्दस दामतबरकातुहू ने अपनी बहुत ज़्यादा मश्ग़ूलियों के बावजूद न सिर्फ़ उनको सही किया बल्कि उनकी तर्तीब वग़ैरह को पसंद भी फ़रमाया। यह उन्हीं की दुआ और तवज्जेह हैं कि इस आजिज़ के हाथों यह किताब तर्तीब दी जा सकी।

ममनून हूँ मैं आपकी नज़रे इंतिख़ाब का

हज़रत दामतबरकातुहू का हर बयान बेशुमार फ़ायदे और नतीजे अपने में रखता है। उनको लिखते हुए आजिज़ की अपनी कैफ़ियत अजीब हो जाती है। बीच-बीच में दिल में यह बहुत ज़्यादा तमन्ना पैदा होती है कि काश! कि मैं भी इन बयान किए हुए हालात से सज जाऊँ। ये ख़ुत्बात यक़ीनन पढ़ने वालों के लिए भी नफ़े का ज़रिया बनेंगे। ख़ालिस नीयत और दिल के ध्यान से इनका पढ़ना हज़रत की बरकत वाली ज़ात से फ़ैज़ उठाने का ज़रिया होगा, इंशाअल्लाह।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर दुआ है कि वह इस मामूली सी कोशिश को क़ुबूल फ़रमाकर बंदे को भी अपने चाहने वालों में शुमार फ़रमा लें। (आमीन सुम्मा आमीन)

फ़क़ीर मुहम्मद हनीफ़ अफ़ी अन्हु
एम०ए०बी०एड०
मौज़ा बाग़, झंग

بسم الله الرحمن الرحيم

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ

इश्के इलाही की हक़ीक़त

यह बयान हज़रत अक्दस दामतबरकातुहुम ने सातवें सालाना इज्तिमा पर 30 अक्टूबर 2001 ई० को जामा मस्जिद मदीना झंग में इर्शाद फ़रमाया। इज्तिमा में अंदरून व बैरून मुल्क से हज़ारों सालिकीन शरीक थे।

इक़्तिबास

जब इंसान के दिल में आशनाई की लज़्ज़त आ जाती है तो दुनिया से इन्क़तअ (कटाव) हो जाता है। और इंसान की निगाहें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ज़ात पर जम जाया करती है। इसी तरह उसकी तवज्जोह का क़िब्ला एक बन जाया करता है। वह 'ला' की तलवार से मासिवा पर छुरी फेर देता है। उसके दिल में अल्लाह आ जाते हैं। उसके दिल में अल्लाह समा जाते हैं बल्कि उसके दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त छा जाते हैं। इसको फ़नाए क़ल्ब कहते हैं। इसी को हासिल करने के लिए मैं और आप उसके तलबगार हैं।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दी मद्देज़िल्लहु

इश्क़े इलाही की हक़ीक़त

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلَمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ(البقرہ:١٦٥)

وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِىْ مَقَامٍ آخَرٍ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ○ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ○

(القیامۃ:٢٢،٢٣)

وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ كُنْتُ كَنْزًا مَخْفِيًا فَاَحْبَبْتُ اَنْ اُعْرَفَ فَخَلَقْتُ الْخَلْقَ.

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

मख़्लूक़ाते आलम में मुहब्बत की तक़्सीम

इशदि बारी तआला है :

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ(البقرہ:١٦٥)

और ईमान वालों को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से शदीद मुहब्बत होती है।

और जो हदीसे क़ुदसी बयान की गई है उसमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं :

كُنْتُ كَنْزًا مَخْفِيًا فَاَحْبَبْتُ اَنْ اُعْرَفَ فَخَلَقْتُ الْخَلْقَ.

मैं एक छिपा हुआ ख़ज़ाना हूँ। मैंने इस बात को पसन्द किया कि मुझे पहचाना जाए। बस मैंने मख़्लूक़ को पैदा कर दिया।

गोया मख़्लूक़ के पैदा होने का सबब मुहब्बत बनी क्योंकि मुहब्बत वह पहली चीज़ है जो मख़्लूक़ के पैदा होने का सबब बनी। इसलिए मख़्लूक़ में से हर एक क़िस्म ने अपनी-अपनी इस्तेदाद के मुताबिक़ इस मुहब्बत में हिस्सा हासिल किया। मख़्लूक़ात आलम में मादनियात (पहाड़, पत्थर) भी हैं, और नबातात (पेड़ पौधे) भी, हैवानात भी हैं और इंसान भी। अल्लाह तआला ने अपनी तमाम मख़्लूक़ात को "मुहब्बत" में हिस्सा फ़रमाया। इसकी मिसालें हर जगह देखी जा सकती हैं क्योंकि मुहब्बत हर जगह जलवागर है।

लोहे में मक़्नातीस (चुम्बक) की मुहब्बत

मादनियात में देखिए लोहा मक़्नातीस का आशिक़ है। वह बेअख़्तियार उसकी तरफ़ खिंचता चला जाता है। मक़्नातीस जहाँ भी होगा वह उसकी तरफ़ फ़ौरन अपना रुख़ कर लेगा। वह मक़्नातीस के इश्क़ में इतना सच्चा है कि उसकी सोहबत में रहकर उसके रंग में रंग जाता है यानी जब लोहा मक़्नातीस के पास रहता है तो उसके अपने अंदर भी कुछ मक़्नातिसियत आ जाती है। गोया वह उसकी मक़्नातिसियत वाली सिफ़्त अपने अंदर जज़्ब कर लेता है।

सूरजमुखी के फूल की सूरज से मुहब्बत

सूरजमुखी एक फूल है। वह हर वक़्त अपना रुख़ सूरज की तरफ़ रखता है। गोया कि वह सूरज का आशिक़ है। इसीलिए

उसका नाम भी सूरजमुखी पड़ गया। जब सूरज मश्रिक़ की तरफ़ होता है तो उसका रुख़ भी मश्रिक़ की तरफ़ होता है और जैसे जैसे सूरज चढ़ता है उसकी सिम्त भी उसके साथ-साथ बदलती है यहाँ तक कि सूरज जब ग़ुरूब होने लगता है तो उसका रुख़ भी मग़रिब की तरफ़ हो जाता है। उसको सूरज के साथ कुछ ऐसी दीवानगी होती है कि सूरज जिस तरफ़ भी हो यह उधर घूम जाता है। अगर इंसान का भी यही हाल हो जाए कि उसके दिल की तमाम तर तमन्नाओं और उम्मीदों की धुरी एक अल्लाह की ज़ात हो जाए तो उसे ईमाने इब्राहीम नसीब हो जाए।

﴿اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ وَجَّهْتُ وَجْهِىَ لِلَّذِىْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا. (الانعام: ۷۹)﴾

मैं उसी की तरफ़ अपना रुख़ करता हूँ जो आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला है, ख़ालिस होकर।

मछली में पानी की मुहब्बत

हैवानात में देखिए। मछली पानी की आशिक़ है। उसे पानी में रहकर सुकून मिलता है। वह पानी के बग़ैर तड़पती है हत्ता कि वह उसकी जुदाई में तड़प तड़प कर जान भी दे देती है हालाँकि वह खाती पीती तो कुछ और चीज़ें है मगर पानी के साथ उसका इश्क़ इस क़द्र रासिख़ है कि जब पानी से निकाला जाए तो वह अपनी जान भी देती है। यहाँ तक कि उसका तड़पना ज़रबुल मिस्ल बन गया कि फ़लां तो बिन पानी की मछली की तरह तड़प रहा था। मछली का पानी में पुरसुकून होना नबी अलैहिस्सलाम की ज़बान मुबारक से भी साबित है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿اَلْمُؤْمِنُ فِى الْمَسْجِدِ كَالسَّمَكِ فِى الْمَاءِ.﴾

मोमिन को मस्जिद में ऐसे सुकून मिलता है जैसा कि मछली पानी के अंदर पुरसुकून होती है।

मछली का दिल पानी से कभी नहीं भरता अगरचे वह पूरे समन्दर का पानी ही क्यों न हो। वह थककर भी समन्दर से बाहर नहीं निकलती। समन्दर में रहना उसकी ज़िंदगी है। वह अपने इश्क़ में इतनी फ़ना है कि अगर कोई बंदा उसको खा ले तो खाने वाले को भी पानी का तालिब बना देती है। यही वजह है जो कि आदमी मछली का कबाब खाता है वह भी थोड़ी देर के बाद पानी मांगता है।

परवाने में शमा की मुहब्बत

परवाना शमा का आशिक़ है। वह हर वक़्त उसके गिर्द तवाफ़ करता रहता है। उसकी परवाज़ कभी ख़त्म नहीं होती। वह मुहब्बत में इतना आगे बढ़ा कि लोगों ने उसकी मिसालें देनी शुरू कर दीं।

उसके पास अदद और गिनती का तसव्वुर नहीं है कि शमा के गिर्द सात चक्कर लगाने हैं। अगर उसको चौबीस घंटे शमा मिले तो वह चौबीस घंटे उसका तवाफ़ करेगा। गोया शमा के गिर्द तवाफ़ करना ही उसकी ज़िंदगी है। वह थक हार कर उसी शमा के अंदर गिर जाता है और अपनी जान दे देता है। उसकी मुहब्बत का अंदाज़ा कीजिए कि जब वह जलता है तो आवाज़ भी नहीं निकालता। इसी मज़मून को किसी शायर ने अपने अलफ़ाज़ में यों बयान किया है :

कमाल यह है के आवाज़ तक नहीं आती
वफ़ूरे शौक़ में यों जल रहे हैं परवाने

अरबी में एक मसल मशहूर है जिसके माइने यह है कि फ़लाँ

आदमी ने तो परवाने की मानिन्द ख़ामोशी से जान दे दी। इसीलिए शेख़ सअदी रह० ने कहा–

اے مرغ سحر عشق ز پروانہ بیاموز کاں سوختہ را جاں شد و آواز نیامد

ऐ मुर्ग़े सहर! तू ज़रा परवाने से इश्क़ का सबक़ सीख कि वह अपनी जान दे देता है और वावेला नहीं मचाता।

चकोरी की चाँद से मुहब्बत

परिन्दों में चकोरी एक परिन्दा है। उसे चाँद से इश्क़ है। चाँद और चकोरी मिसाल बन गई। चकोरी चाँदनी रात में अपने आप में नहीं रहती। वह जैसे ही चाँद को देखती है उसकी मुहब्बत में चहकना शुरू कर देती है। उसके नग़मे अलापती है। वह नग़मे अलापते अलापते चाँद की तरफ़ परवाज़ भी करती है। उसके नग़मे कभी ख़त्म नहीं होते। वह चेहचहाती है तो चाँद की मुहब्बत में, तरसती है तो उसकी मुहब्बत को और फड़कती है तो उसकी मुहब्बत में।

बुलबुल की फूल से मुहब्बत

बुलबुल के दिल में फूल का इश्क़ है। जहाँ भी मुहब्बत का तज़्किरा किया जाए, वहाँ बुलबुल और फूल की मिसाल ज़रूर दी जाती है। कहने वाले ने क्या ख़ूब कहा–

आ अन्दलीब मिलकर करें आह ओ ज़ारियाँ
तू हाय गुल पुकार मैं चलाऊँ हाय दिल

जहाँ भी बाग़ और फूल का नाम आएगा वहाँ बुलबुल का नाम ज़रूर आएगा। वह फूलों के नग़मे अलापती रहती है। चमन के मुख़्तलिफ़ फूलों के पास बैठना और उनकी तारीफ़ें करना,

उसकी ज़िंदगी का काम है। बुलबुल और फूल के इश्क़ की दास्तानें किताबों में भरी पड़ी हैं।

इंसानों में मुहब्बत का जज़्बा

जहाँ मख़्लूक़ाते आलम के दर्मियान मुहब्बत रखी गई है। वहाँ अशरफ़ुल मख़्लूक़ात इंसान के दिल में भी मुहब्बत का जज़्बा डाला गया है। चुनाँचे दुनिया का कोई इंसान ऐसा नहीं जिसके दिल में मुहब्बत न हो। कोई बंदा यह नहीं कह सकता कि मेरे दिल में किसी की मुहब्बत नहीं है क्योंकि–

दिल बहरे मुहब्बत है मुहब्बत यह करेगा
लाख इसको बचा तू यह किसी पर तो मरेगा

यह और बात है कि मुहब्बत ख़ालिक़ की हो या मख़्लूक़ की–

पत्थर से हो ख़ुदा से हो या फिर किसी से हो
आता नहीं है चैन मुहब्बत किए बग़ैर

इसकी मिसाल यों समझिए कि कमरे में या तो रौशनी होगी। अगर रौशनी नहीं तो अंधेरा ज़रूर होगा। इसी तरह या तो दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत की रौशनी होगी और अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत की रौशनी नहीं तो मुख़्लूक़ की मुहब्बत का अंधेरा ज़रूर होगा।

याद रखिए कि मुहब्बत का जज़्बा एक मुक़द्दस जज़्बा है। इसलिए इसको मख़्लूक़ के ऊपर बर्बाद करना कोई अक़्लमंदी की बात नहीं है। चुनाँचे अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम ने आकर एक उसूली बात समझाई :

"लोगो! फ़ानी महबूब का इश्क़ भी फ़ानी है और बाक़ी महबूब का इश्क़ भी बाक़ी है। जो इंसान मख़्लूक़ से मुहब्बत

करेगा वह एक न एक दिन मख़्लूक़ से जुदा कर दिया जाएगा। और जो इंसान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से मुहब्बत करेगा वह एक न एक दिन अल्लाह से मिला दिया जाएगा।"

सबक़ आमोज़ अश'आर

ज़ेबुन्निसा मख़्फ़ी अपने अश'आर में कहती है—

مرغ دل را گلستاں بہتر زکوئے یار نیست   طالب دیدار را ذوق گل و گلزار نیست

گفت زاعشق بتاں اے دل چہ حاصل کردہ ای   گفت مارا حاصل جز نالہائے زار نیست

چند قطرہ خون دل مخفی برائے مہوشاں   ریختن برخاک دل ایں شیوۂ عطار نیست

दिल के मुर्ग़ के लिए यार की गली से बेहतर गुलशन कोई नहीं और दीदार के तालिब को गुल व गुलज़ार से कोई ज़ौक़ नहीं। क्योंकि महबूब के दीदार से बेहतर कोई नेमत नहीं। मैंने पूछा ऐ दिल! तूने इन फ़ानी महबूबों के इश्क़ से क्या पाया। कहने लगा, मुझे सिवाए रोने धोने के और कुछ नहीं मिला। ऐ मख़्फ़ी! यह दिल जो ख़ून के चंद क़तरे हैं। इसको मख़्लूक़ के लिए गिरा देना कोई अक़्लमंदों का काम नहीं है।

फ़ानी इश्क़ का इबरतनाक अंजाम

फ़ानी इश्क़ का अंजाम हमेशा इबरतनाक होता है। इसकी कितनी ही मिसालें हैं। इन्हीं मिसालों पर ग़ौर कर लीजिए जो अभी आपको दी हैं।

लोहे का अंजाम

लोहा मक़्नातीस का आशिक़ बना। इसकी ग़ैरपरस्ती का यह अंजाम हुआ कि उसे रंग काला मिला। उसे आग में पिघलाया जाता है। इसी पर बस नहीं बल्कि जब आग से निकलता है और

नरम होता है तो उसके सर पर हथौड़े लगाए जाते हैं। यों इसको मख़्लूक़ के साथ मुहब्बत करने का मज़ा चखाया जाता है। इसका अंजाम दुनिया में भी बुरा हुआ और आख़िरत में भी इसे जहन्नम बना दिया जाएगा। चुनाँचे जहन्नमियों को लोहे के तौक़ और ज़ंजीरें पहनाई जाएंगीं। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ۝ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۝ ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ۝ (الحاقة:٣٠تا٣٢)

पस तुम पकड़ो इसको। पस क़ैद कर दो इसको। फिर जहन्नम में इसको दाख़िल कर दो। और फिर सत्तर गज़ लंबी ज़ंजीर में इसको बांध दो।

तो लोहे के तौक़ और ज़ंजीरें आख़िरत में कहाँ होंगी। जहन्नम में होंगी। जन्नतियों को लोहे की ज़ंजीरें कोई नहीं पहनाएगा। उनके लिए सोना, चाँदी, मोती और हीरे होंगे।

हमें यहाँ एक इल्मी नुक्ता समझना चाहिए। वह यह कि लोहे को मक़्नातीस के साथ मुहब्बत होती है। उसके सामने आप लअल व जवाहर भी रख दें तो उनकी तरफ़ हर्गिज़ तवज्जोह नहीं करेगा। ऐ इंसान! लोहा एक मख़्लूक़ है और उसे मख़्लूक़ की मुहबबत में इतनी यकसूई हासिल है कि अपने महबूब के सिवा किस दूसरी तरफ़ तवज्जोह नहीं करता। तू अपने परवरदिगार का कैसा आशिक़ है कि रब्बे करीम ज़िंदा मौजूद है और हय्यु ला यमूत है और तू उस परवरदिगार को छोड़कर ग़ैरों की तरफ़ मुहब्बत की निगाहें डालता फिरता है।

लोहे को अगर शीशे में बंद कर दिया जाए तो उसकी तवज्जोह में फिर भी फ़र्क़ नहीं आता। अगर क़ुतबनुमा घड़ी बना दी जाए तो शीशे में घिर जाने के बावजूद भी लोहे में कोई फ़र्क़

नहीं आता। इसकी तवज्जोह का क़िब्ला भी मक़्नातीस ही रहता है। इसमें हमारे लिए इबरत है कि देखो यह मख़्लूक़ है और मख़्लूक़ से मुहब्बत करता है। इसका अंजाम भी बुरा होता है। लेकिन इसे मुहब्बत में इतनी यकसूई हासिल है कि शीशे में घिर जाने के बावजूद भी अपने मक़सूद से पीछे न हटा। ऐ इंसान! तू कैसा अपने मालिक का बंदा है कि अगर तुझे परेशानियों के हालात घेर लेते हैं तो तू अपने रब से रुख़ फेर लेता है। कारोबार में ज़रा सी परेशानी आ जाए तो मस्जिद का दरवाज़ा भूल जाता है और बा-जमाअत नमाज़े छूट जाती हैं। हमारा महबूब तो महबूबे हक़ीक़ी है। हमें तो चाहिए था कि हम ज़्यादा बेहतर अंदाज़ में अपने रब से मुहब्बत करते।

मछली का अंजाम

मछली को पानी से इश्क़ है। क्योंकि उसे पानी के साथ इस क़द्र वालेहाना मुहब्बत है कि उसकी जुदाई में तड़प-तड़प कर जान दे देती है। इसलिए अल्लाह तआला ने उसके जिस्म के अंदर बदबू पैदा कर दी है। ग़ैर परस्ती की वजह से उसके जिस्म में इतनी सड़ांध होती है जिन हाथों में जाती है उन हाथों को बदबूदार बना देती है। जिस बर्तन में जाती है उस बर्तन को बदबूदार बना देती है। जिस मुँह से खाएं उस मुँह में उसकी बदबू आना शुरू हो जाती है और जिस घर में पहुँचे उस घर में बदबू मचा देती है। किसी और जानदार में इतनी बदबू नहीं होती जितनी मछली में होती है। अगर उसे पूरे दरिया के पानी से भी धो डालें तो फिर भी उसकी बदबू ख़त्म नहीं होगी।

परवाने का अंजाम

परवाने ने शमा से इश्क़ किया। जिसका अंजाम यह हुआ कि

उसे जान देनी पड़ गई और उसका नाम "बेअक़्ल" मशहूर हो गया। अरबी में परवाने के लिए एक लफ़्ज़ इस्तेमाल होता है जिसके माइने हैं, "बेअक़्ल।" लोग कहते हैं कि वह तो परवाने की तरह बेअक़्ल इंसान है। परवाना शमा के गिर्द तवाफ़ करके अपनी जान दे देता है मगर शमा को उसके हाल की ख़बर तक नहीं होती। उर्दू में कहते हैं, "अंधे के सामने रोए अपने नैन खोए।"

मुहब्बते इलाही में धोका खाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बारे में आता है कि जब वह अपने ग़ुलामों में से किसी को अच्छे अंदाज़ से नमाज़ पढ़ते देखते तो वह उस ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया करते थे। जब आहिस्ता-आहिस्ता ग़ुलामों को पता चला तो हर ग़ुलाम ने यही वतीरा अपना लिया। ग़ुलाम अच्छी तरह नमाज़ पढ़कर दिखा देते और वह उन्हें आज़ाद कर देते। किसी ने कहा, हज़रत! आप के ग़ुलाम रियाकरी करते हैं। वे आपके सामने बना संवारकर नमाज़ पढ़ लेते हैं और आप उनको आज़ाद कर देते हैं। वह तो आपको इस तरह धोका देते हैं। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने फ़रमाया, "मैं अल्लाह की मुहब्बत में सच्चा कैसे हो सकता हूँ जब तक कि उसकी मुहब्बत में धोका न खा जाऊँ।"

चकोरी का अंजाम

चकोरी को चाँद से मुहब्बत होती है। वह चाँदनी रात में उड़ती है और आख़िर थककर गिर जाती है। और उसे मौत आ जाती है। उसे चाँद का वस्ल नसीब नहीं होता और गुमनामी की मौत भी आ जाती है। यों मख़्लूक़ की मुहब्बत का अंजाम बेकार रहता है। इंसानों का भी यही हाल है। जिस किसी इंसान ने अपनी

नफ़सानी ख़्वाहिशात की वजह से मख़्लूक़ से मुहब्बत की उसका अंजाम भी हमेशा बुरा हुआ और जिसने मुहब्बत के इस मुक़द्दस जज़्बे को अल्लाह के लिए इस्तेमाल किया अल्लाह तआला की निस्बत से अल्लाह के बंदों से नेकी और तक़्वे का ताल्लुक़ रखा उसका अंजाम हमेशा अच्छा हुआ। मुहबबत का य जज़्बा हम में हर बंदे को नसीब है। हमें चाहिए कि हम इस जज़्बे को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के लिए ही इस्तेमाल करें। और अपने दिलों में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत को बढ़ाएं। यह मुहब्बत का बढ़ाना इंसान के अपने अख़्तियार में होता है।

हुस्ने ज़ाहिर की हैसियत

दुनिया में मख़्लूक़ के पास जो भी हुस्न व जमाल है वह सब मेरे मौला की देन है। फ़क़त ज़ाहिरी हुस्न के पीछे भागने वाला इंसान हमेशा नुक़सान और ख़सारे में रहता है। सैय्यदना यूसुफ़ अलैहिस्सलाम मादरज़ाद हसीन थे। आप इतने हसीन थे कि हुस्ने यूसुफ़ आज दुनिया में मिसाल बन चुका है। जब उनको कुँए में डाला गया और फिर निकालकर बेचा गया तो उनकी क्या क़ीमत लगी? क़ुरआन मजीद में फ़रमाया गया ﴿وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ م بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ (یوسف : ٢٠)﴾ और उनको चंद खोटे सिक्कों के एवज़ बेच दिया गया।

मालूम हुआ कि मख़्लूक़ के ज़ाहिरी हुस्न की क़ीमत अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नज़र में चंद खोटे सिक्के हुआ करती है। हुस्न के पीछे भागने वाले इबरत हासिल करें कि वह कितनी बेक़ीमत चीज़ के पीछे भाग रहे होते हैं। इर्शादे बारी तआला है :

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ط وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ٥ (یوسف:٢٢)

और जब पहुँच गया अपनी क़ुव्वत को हमने उसको हुक्म और

इल्म दिया और ऐसा ही बदला देते हैं हम नेकी करने वालों को।

उसके बाद उनके ऊपर इम्तिहान आए, लेकिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको इम्तिहान में कामयाब फ़रमा दिया। आख़िर इस हुस्न व जमाल की वजह उनको क़ैद में जाना पड़ा। नौ साल तक क़ैद की मशक़्क़त उठाई। न तो उनके पास बहन भाई थे और न ही माँ-बाप। नौ साल गुज़ारने के बाद जब क़ैद से बाहर निकले तो अपने हुस्न की वजह से नहीं बल्कि अपने इल्म की वजह से निकले। इसीलिए जब आपसे पूछा गया कि आप मुल्क की कैसे हिफ़ाज़त करेंगे तो फ़रमाने लगे :

﴿اِجْعَلْنِىْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ج اِنِّىْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌo (يوسف:٥٥)﴾

मुझे ख़ज़ानों पर निगरान मुक़र्रर कर दीजिए मैं हिफ़ाज़त करने वाला हूँ और इल्म वाला हूँ।

यह नहीं कहा कि मुझे ख़ज़ानों का वाली बना दीजिए क्योंकि ﴿اِنِّىْ حَسِيْنٌ جَمِيْلٌ﴾ मैं बड़ा ख़ूबसूरत हूँ।

इससे पता चला कि इज़्ज़तें ख़ूबसूरती की वजह से नहीं मिलतीं बल्कि इल्म की वजह से मिलती हैं। याद रखिए कि इंसान की शक्ल व सूरत की अल्लाह तआला के हाँ कोई क़द्र व क़ीमत नहीं होती। हदीस पाक में आया है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَنْظُرُ اِلٰى صُوَرِكُمْ وَلَا اِلٰى اَمْوَالِكُمْ وَلٰكِنْ يَنْظُرُ اِلٰى قُلُوْبِكُمْ وَاَعْمَالِكُمْ.

बेशक अल्लाह तआला नहीं देखते तुम्हारी सूरतों को और न तुम्हारे अमवाल माल पैसे को बल्कि वे देखते हैं तुम्हारे दिलों और तुम्हारे आमाल को।

हमें चाहिए कि हम अपने दिल अल्लाह तआला की मुहब्बत से भर लें। मुहब्बत वालों के पास बैठने से यह मुहब्बत बढ़ जाती है

और ग़फ़लत में पड़ जाने से यह मुहब्बत घट जाती है।

अल्लाह तआला का हुस्न व जमाल

याद रखिए कि मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा हुस्न हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को दिया गया लेकिन इस हुस्न को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुस्न के साथ क्या निस्बत हो सकती है। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बारे में हदीस पाक में आया है कि उनको सारी मख़्लूक़ के बराबर का हुस्न दिया गया यानी अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ में जितना हुस्न तक़्सीम किया उसमें से सारी मख़्लूक़ को आधा हिस्सा मिला है और बाक़ी हिस्सा हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को मिला। आधे हिस्से के पाने के बाद उनको ऐसा हुस्न मिला था कि देखने वालियों ने जब देखा तो वे कह उठीं ﴿حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ط اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ (يوسف:٣١)﴾ (यह इंसान नहीं है। यह तो हमें कोई मुक़द्दस फ़रिश्ता नज़र आता है।)

मख़्लूक़ के हुस्न की हद यह है कि देखने वालों ने उसे कोई फ़रिश्ता समझा। अब अल्लाह तआला के हुस्न के साथ भला फ़रिश्तों के हुस्न को क्या निस्बत है। अल्लाह तआला का हुस्न तो बेमिसाल है। वह परवरदिगार जिसने हुस्न को पैदा किया भला उसके अपने हुस्न व जमाल का क्या आलम होगा। हदीस पाक में आया है ﴿اَللّٰهُ جَمِيْلٌ﴾ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ख़ूबसूरत हैं।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के जमाल के जलवे क्या होंगे, यह तो क़यामत के दिन जन्नत में जाकर ईमान वालों को नज़र आएंगे। दुनिया में तो हम उन जलवों का तसव्वुर भी नहीं कर सकते। अलबत्ता इतनी बात आपकी ख़िदमत में पेश कर देता हूँ कि जन्नती जब जन्नत में जाएंगे और हूर व ग़िलमान के हुस्न व जमाल को देखेंगे तो इतने हैरान होंगे कि उनको पाँच सौ साल

टिकटिकी बांधकर देखते रह जाएंगे। फिर जब जन्नती जन्नत में रहना शुरू करेंगे और आख़िर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जन्नतियों को अपना दीदार अता फ़रमाएंगे तो हदीस पाक में आया है कि दीदारे इलाही के वक़्त जन्नतियों के ऊपर नूर की आँधी चलेगी जैसे दुनिया में आँधी चलती है तो मिट्टी की तह हर इंसान के चेहरे पर आ जाती है। इस तरह जन्नत में भी नूर की आँधी चलेगी और नूर की एक तह जन्नतियों के चेहरे पर आ जाएगी। उस नूर की वज से जन्नतियों के चेहरे का हुस्न इतना बढ़ जाएगा कि जब यह जन्नती लौटकर अपने घरों में आएंगे तो इनकी हूरें और ग़िलमान उनके हुस्न व जमाल को देखकर पाँच सौ साल तक टिकटिकी बांधकर देखते रह जाएंगे। मालिक! तेरे हुस्न व जमाल का भी क्या आलम होगा कि जो आपका दीदार करेगा जन्नती मख़्लूक़ भी पाँच सौ साल तक उसके हुस्न व जमाल को ताज्जुब के साथ देखती रह जाएगी। और उनको वक़्त गुज़रने का पता भी नहीं चलेगा।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तजल्लिए इलाही का असर

जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कोहे तूर पर गए तो वहाँ पर चालीस दिन ठहरे और उन्हें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का दीदार नसीब हुआ। उस वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने सत्तर हज़ार पर्दों में तजल्ली डाली। इसके बावजूद कोहे तूर जलकर सुर्मा की मानिन्द बन गया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बेहोश होकर गिर पड़े। उनको न आग लगी और न ही मौत आई क्योंकि इस्तेदाद में फ़र्क़ था। आपके क़ल्ब के अंदर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत की और तजल्लियाँ क़बूल करने की इस्तेदाद थी और उस पहाड़ के अंदर इस्तेदाद नहीं थी। इसलिए वह जल गया और हज़रत

मूसा अलैहिस्सलाम पर फ़क़त ग़शी की सी कैफ़ियत तारी हुई।

तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर में लिखा है :

لَمَّا كَلَّمَ مُوْسٰى رَبَّهٗ عَزَّ وَجَلَّ مَكَثَ اَرْبَعِيْنَ يَوْمًا لَا يَرَاهُ اَحَدٌ اِلَّا مَاتَ مِنْ نُوْرِ اللّٰهِ.

जब मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने रब से कलाम किया तो चालीस दिन तक ठहरे रहे। (उसके बाद) कोई भी उनके (चेहरे) को नहीं देख सकता था। अगर कोई देखता तो देखते ही उस आदमी की मौत आ जाती थी।

चुनाँचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपने चेहरे को छिपाए रखते थे यहाँ तक कि अपनी बीवी भी उनके चेहरे को देखने को तरसती थी और वह नहीं देखने देते थे। इसलिए कि उनकी आँखों में वह हुस्न व नूर आ गया था कि उस तजल्ली को देखने के बाद देखने वाला उनके हुस्न की ताब न लाकर अपनी जान से हाथ धो बैठता था। सुब्हानअल्लाह जिसने परवरदिगार के हुस्न व जमाल को सत्तर हज़ार पर्दों में देखा उसके चेहरे का हुस्न इतना बढ़ गया कि मख़्लूक़ उसका भी दीदार करने की इस्तेदाद नहीं रखती थी।

दारक़ुतनी में तबरानी की रिवायत है :

عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ اَنَّهٗ قَالَ لَمَّا كَلَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى مُوْسٰى عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يُبْصِرُ النَّمْلَ
عَلَى الصَّفَا فِى اللَّيْلَةِ الْمُظْلِمَةِ.

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का दीदार किया तो उनकी आँखों में ऐसी बीनाई आ गई थी कि काली रात में चलने वाली चींटी को भी साफ़ तौर पर देख लिया करते थे।

जमाले यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की तजल्ली तो हज़ारों मर्तबा दुनिया में हुई मगर दुनिया में कोई फ़र्क़ न आया और जमाले

मौला की तजल्ली तो एक ही दफ़ा हुई थी जिसकी वजह से कोहे तूर सुर्मे की मानिन्द बन गया। जिन लोगों ने हुस्ने यूसुफ़ का नज़ारा करने वालियों को देखा उन पर कोई असर न पड़ा लेकिन ऐ मालिक! तेरे हुस्न व जमाल का क्या आलम होगा कि जिन पर आपकी तजल्ली कोहे तूर पर पड़ कर पड़ी उनका हुस्न इतना बढ़ गया कि कोई दूसरा उनको देख नहीं सकता था और उनकी बीनाई ऐसी बढ़ गई थी कि अंधेरे में भी चलती हुई काली चींटी को देख लिया करते थे हालाँकि यह आँख जितनी तेज़ रोशनी को देखती है उतनी बीनाई की क़ुव्वत मुतास्सिर होकर ज़ाएल होती जाती है लेकिन यह तजल्ली हुस्ने इलाही का मौजिज़ा था कि बीनाई और ज़्यादा हो गई।

तजल्लिए इलाही की बरकात

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जब कोहे तूर पर अपनी तजल्ली डाली तो उस वक़्त की कैफ़ियत रूहुल बयान में यों लिखी हुई है :

عذب كل ماء وافاق كل مجنون وبرا كل مريض وزال الشرك عن الاشجار واخضرت في الارض واظهرت وحمنت نيران المجوس وخرت الاصنام بوجوههن وانقطعت اصوات الملئكة وجعل الجبل ينهدم وينحال.

हर खारा पानी मीठा हो गया, हर मजनून आदमी का जुनून ख़त्म हो गया। हर मरीज़ की बीमारी को शिफ़ा मिल गई। कांटे दरख़्तों से नीचे गिर गए। ज़मीन सारी की सारी सरसब्ज़ हो गई और ख़ूबसूरत हो गई। मजूसियों की आग बुझ गई। दुनिया के सारे बुत अपने मुँह के बल ज़मीन पर गिर गए। मलाइका की आवाज़ें रुक गयीं और पहाड़ अपनी जगह पर लरज़ गए।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के जमाल के वक़्त मख़्लूक़ की यह

कैफ़ियत थी। जिस महबूब का जमाल ऐसा हो फिर हमें अपने महबूब के दीदार की कोशिशें क्यों नहीं करनी चाहिएं?

अल्लाह तआला की नाक़द्री

कई मर्तबा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के दीदार की लज़्ज़त की बजाए मख़्लूक़ के दीदार के पीछे परेशान फिर रहा होता है। हमने हुस्ने बाक़ी के बदले हुस्ने फ़ानी को चुना। हमने तो गोया अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नाक़द्री की। हैरत और ग़ैरत का मक़ाम है कि लोहा लअल बदख़ुशाँ की तरफ़ भी तवज्जोह नहीं करता और हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जेसी ख़ूबसूरत हस्ती को छोड़कर दुनिया के मुख़्तलिफ़ चेहरों की तरफ़ मुहब्बत भरी निगाहें डाल रहे होते हैं।

मेरे दोस्तो! जिन्होंने परवरदिगार की क़द्रदानी की। परवरदिगार ने उनको इज़्ज़तें दीं। आज हम लोग अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से तवज्जोह हटाकर मख़्लूक़ की तरफ़ किए हुए फिरते हैं। इसलिए ज़िंदगी से परेशानियाँ ख़त्म नहीं होतीं। जिस तरह कोल्हू का बैल चल रहा होता है उस तरह हम भी परेशानियों का पट्टा डाले ज़िंदगी गुज़ारते फिर रहे होते हैं। ये सब कुछ हमें बता रहा है कि हमें अपनी तव्वजोह का क़िब्ला दुरुस्त करने की ज़रूरत है। लोगों ने हर चीज़ की क़द्र की, अगर नाक़द्री की तो अपने परवरदिगार की की। यह कितनी इबरत की बात है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जैसी हस्ती को फ़रमाना पड़ा :

﴾وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ. (الزمر:٦٧)﴿

और उन्होंने अलाह की क़द्र नहीं की जैसी क़द्र करनी चाहिए थी।

जी हाँ! मुहब्बत वालों को यह चीज़ बहुत बुरी लगती है।

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाक़द्री

सच्ची बात तो यह है कि हमने तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़ी क़द्र की और न ही उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की। अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में बड़े अजीब अंदाज़ में फ़रमाते हैं:

﴿يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ (يٰس:٣٠)﴾

हसरत हैं बंदों पर, उनके पास कोई ऐसे रसूल नहीं आए कि उन्होंने उनका मज़ाक़ न उड़ाया हो।

पहले दौर में अंबिया किराम का मज़ाक़ उड़ाया जाता था और आज के ज़माने में उनकी सुन्नतों का मज़ाक उड़ाया जाता है। आज किसी घर में कोई नौजवान अपने चेहरे पर नबी अलैहिस्सलाम की सुन्नत का नूर सजा ले तो ज़रा उसकी माँ के तास्सुरात सुन लीजिए, उसकी बहनों के फ़िक़रे सुन लीजिए। उसके दूसरे रिश्तेदारों की फ़ब्तियाँ सुन लीजिए हालाँकि ये सारे कलिमागो होंगे। हमने नबी अलैहिस्सलाम की सुन्नतों की क्या क़द्र की?

कलामुल्लाह की नाक़द्री

इंसान तो ऐसा नाक़द्रा है कि यहूदी थोड़े से माल की ख़ातिर परवरदिगार के कलाम को तब्दील कर दिया करते थे। वे जानते थे कि अल्लाह तआला का सही कलाम क्या है लेकिन दुनिया के चंद टकों की ख़ातिर अल्लाह तआला के कलाम को बदल देते थे। ऐ इंसान! एक हिन्दू औरत अपने मुर्दा ख़ाविन्द के पीछे मरकर जान दे देती है मगर तेरे लिए ज़िंदा ख़ुदा के पीछे अपनी जान दे देना क्यों मुश्किल है। हमें चाहिए कि हम अपने परवरदिगार पर क़ुर्बान हो जाएं।

हुस्ने लैला की हैसियत

मजनूँ को लैला के साथ एक ताल्लुक़ था। लैला का नाम लैला इसलिए था कि वह लैल (रात) की तरह काली थी। एक मर्तबा मजनूँ के सामने एक ख़ूबसूरत औरत पेश की गई। उसने उसकी तरफ़ आँख उठाकर भी न देखा। सोचने की बात है कि मजनूँ काली औरत की मुहब्बत में ऐसा फंसा कि वह ख़ूबसूरत गोरी औरतों को देखना पसन्द नहीं करता था। हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के कैसे आशिक़ हैं कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जैसी हुस्न व जमाल वाली हस्ती को छोड़कर काली कलौटी हस्तियों के पीछे नज़रें दौड़ाते फिर रहे होते हैं। भला हुस्न मौला के साथ हुस्ने लैला को क्या निस्बत हो सकती है?

कोई ज़मीन और आसमान की मिसाल दे तो वह हर्गिज़ ठीक नही है, कोई दोनों में अर्श व फ़र्श का फ़र्क़ बयान करे तो वह भी गुमान से बाहर है। कोई क़तरे और समुन्दर की मिसाल दे तो वह भी कहानी ग़लत है और आफ़ताब और ज़र्रे की निस्बत ठहराए तो वह भी दुरुस्त नहीं है।

मख़्लूक़ के हुस्न व जमाल को अल्लाहरब्बुलइज़्ज़त के हुस्न व जमाल के साथ कोई निस्बत हो ही नहीं सकती। हमें चाहिए कि हम परवरदिगारे हक़ीक़ी के तालिब बनकर ज़िंदगी गुज़ारने लग जाएं।

इश्क़ के तीन इम्तिहान

इश्क़े इलाही के मैदान में सैय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने रासिख़ क़दम रखा। अल्लाह तआला ने जब उनको आज़माया तो वह इस आज़माइश में कामयाब हो गए। इसी हक़ीक़त को

कुरआन मजीद में यों बयान किया गया है :

﴿وَاِذِابْتَلٰی اِبْرَاھِیْمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ. (البقرة:١٢٣)﴾

और याद करो उस वक़्त को जब आज़माया इब्राहीम को उसके रब ने चंद बातों में और वह उसमें कामयाब हुआ।

हमारे हज़रत मुर्शिदे आलम रह० फ़रमाया करते थे कि ﴿فَاَتَمَّهُنَّ﴾ का मतलब यह है कि वह उसमें सौ फ़ीसद कामयाब हुए। अब आपकी ख़िदमत में इन चंद बातों की तफ़्सील पेश करता हूँ।

बे-ख़तर कूद पड़े आतिशे नमरूद में

किताबों में लिखा है :

اوحی اللّٰه تعالٰی الی نبیه ابراهیم علیه الصلوة والسلام یا ابراهیم! انك لی خلیل فاحذر ان اطلع علی قلبك فاجد مشغولا بغیری فیقطع حبك من فانی انما اختار لحبی من لو احرقته بالنار لم یلتفت قلبه عنی.

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने नबी इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरफ़ "वही" नाज़िल फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम! आप मेरे ख़लील हैं। इस बात से परहेज़ करना कि आपके क़ल्ब में को किसी ग़ैर के साथ मशग़ूल पाऊँ। इसलिए कि जिसको मैं अपनी मुहबबत के लिए चुन लेता हूँ तो वह ऐसा होता है कि अगर उसको आग भी जला दे तो उसका क़ल्ब मेरी तरफ़ से दूसरी तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होता।

चुनाँचे ज़िंदगी में वह वक़्त भी आया कि जब नमरूद ने आपको आग में डाल देने का हुक्म दिया। तफ़्सीरों में इस आग की तफ़्सील बयान की गई है। उन लकड़ियों को एक ही वक़्त में आग लगाई गई। जब सारी लकड़ियाँ जलने लगीं तो नमरूद इस

सोच में पड़ गया कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में कैसे डाले। आख़िर शैतान नमरूद के पास आया और उसने समझाया कि एक झोला बना लीजिए और उसमें बिठाकर इनको आग में फेंक दीजिए। इस तरह यह आग के बीच में जाकर गिरेंगे। चुनाँचे उसने झोला बनवा लिया और आपको उसमें बिठाकर आग में फेंक दिया गया।

अभी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का झोला हवा में ही था कि फ़रिश्ते ताज्जुब से कहने लगे, "ऐ अल्लाह! इब्राहीम के दिल में आपकी कितनी मुहब्बत है। आपकी मुहब्बत की वजह से आग में डाले जा रहे हैं। उन्होंने असबाब की कोई परवाह नहीं की। ऐ अल्लाह! उनकी मदद फ़रमा दीजिए। मगर अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को फ़रमाया :

"तुम लोग उनके पास चले जाओ और अपनी मदद पेश कर लो। फिर मेरा ख़लील कबूल कर ले तो तुम मदद कर देना वरना ख़लील जाने और रब्बे ख़लील जाने क्योंकि यह मेरा और मेरे ख़लील का मामला है।"

चुनाँचे फ़रिश्तों ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास आकर मदद की पेशकश की मगर आप अलैहिस्सलाम ने उनकी बात सुनकर फ़रमाया ﴿لَا حَاجَةَ لِيْ اِلَيْكُمْ﴾ मुझे तुम्हारी कोई हाजत नहीं।

फिर हज़रत जिब्राइल अलैहिस्सलाम हाज़िरे ख़िदमत हुए और इमदाद पेश की। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पूछा, "जिब्रील! क्या आप अपने मर्ज़ी से आए हैं या अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने भेजा है? हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि मैं आया तो अल्लाह की मर्ज़ी से हूँ मगर अल्लाह तआला ने मुझे फ़रमाया है कि अगर वह मदद कबूल करें तो मदद कर देना। हज़रत इब्राहीम

अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, जब मेरे अल्लाह को मेरे हाल का पता है तो फिर मुझे यही काफ़ी है कि परवरदिगार जानता है कि इब्राहीम किस हाल में है। मेरा मालिक और मेरा महबूब जानता है कि मुझे उसके नाम पर आग में डाला जा रहा है। लिहाज़ा आग में जाना ही पसन्द करूंगा।''

जब फ़रिश्ते वापस चले गए तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने आग से मुख़ातिब होकर इर्शाद फ़रमाया :

﴿يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ. (الانبياء:٦٩)﴾ ऐ आग! मेरे इब्राहीम पर सलामती वाली, ठंडक वाली बन जा।

इस तरह अल्लाह तआला ने उनके लिएआग को गुल व गुलज़ार बना दिया।

बे-आब व ग्याह (बंजर) वादी में

जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पैदाइश हो गई तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम से फ़रमाया, ''ऐ मेरे प्यारे ख़लील! आप अपनी बीवी को वीरान वादी में छोड़ आइए।'' इसलिए आप अपनी बीवी हज़रत हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा और बच्चे हज़रत इस्माईल को बैतुल्लाह के क़रीब जहाँ पानी और हरियाली का नाम व निशान भी नहीं था, छोड़ देते हैं। कोई बात भी नहीं करते और फिर वापस मुल्के शाम जाने के लिए खड़े हो जाते हैं। यह कोई आसान काम नहीं था। ज़रा तसव्वुर करके देखिए कि अपनी बीवी को अकेले मकान में छोड़कर आने के लिए बंदे का दिल तैयार नहीं होता हालाँकि शहर के अंदर होता है। फिर अपनी बीवी और बच्चे को ऐसे वीराने में छोड़ देना जहाँ पीने को पानी भी न मिले और हर तरफ़ पत्थर ही पत्थर नज़र आएं, कितनी बड़ी आज़माइश है। जब अल्लाह के

हुक्म से उन्हें छोड़कर वापस आने लगे तो बीवी ने पूछा, आप हमें यहाँ क्यों छोड़कर जा रहे हैं? मगर आपने कोई जवाब नहीं दिया। दोबारा पूछा कि आप हमें यहाँ क्यों छोड़कर जा रहे हैं? मगर फिर भी आपने कोई जवाब नहीं दिया। वह भी आख़िर नबी के साथ रही थीं। तीसरी बार पूछने लगीं कि क्या आप हमें अल्लाह के हुक्म से यहाँ छोड़कर जा रहे हैं? आपने जवाब देने के बजाए सर हिला दिया कि हाँ मैं अल्लाह के हुक्म से आपको यहाँ छोड़कर जा रहा हूँ। जब उस नेक बीवी ने यह सुना तो कहने लगीं अगर आप हमें अल्लाह के हुक्म से यहाँ छोड़कर जा रहे हैं तो अल्लाह तआला हमें कभी ज़ाए नहीं फ़रमाएंगे। फिर आप अपने बीवी बच्चे को वहाँ छोड़कर वापस मुल्के शाम चले गए।

सिखाए किसने इस्माईल (अलैहिस्सलाम) को आदाबे फ़रज़न्दी

अपनी जान देना आसान होता है लेकिन अपने सामने अपने बच्चे को मरते देखना इससे भी ज़्यादा मुश्किल काम है। इसीलिए तो बच्चे को बचाने के लिए माँ-बाप आ जाते हैं और कहते हैं कि पहले हमें मारो फिर बच्चे को हाथ लगाना। मालूम हुआ कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का आग में डाले जाने का इम्तिहान एक दर्जा पीछे था और औलाद को अपने हाथों से ज़िब्ह करना उससे भी एक दर्जा आगे था। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी बीवी और बच्चे से मिलने मुल्के शाम से मक्का मुकर्रमा आए। आपने आठ ज़िलहिज्जा को ख़्वाब देखा कि मैं अपने बेटे को अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह कर रहा हूँ। आप सुबह उठते तो सोचने लगे कि शायद क़ुर्बानी मक़सूद है। इसलिए आपने सत्तर ऊँट अल्लाह के रास्ते में क़ुर्बान कर दिए। नवीं रात को फिर वही ख़्वाब देखा। इसलिए दूसरे दिन भी सत्तर ऊँट क़ुर्बान कर दिए।

लेकिन दसवीं रात को फिर वही ख़्वाब देखा कि मैं अपने बेटे को अल्लाह के नाम पर क़ुर्बान कर रहा हूँ। जब तीसरी रात यही ख़्वाब देखा तो वाज़ेह तौर पर समझ गए कि अल्लाह तआला को मेरे बेटे की ही क़ुर्बानी मतलूब है। इसलिए आपने पक्का इरादा कर लिया कि अब मैंने अपने सात साला बेटे इस्माईल को अल्लाह की राह में क़ुर्बान करना है।

चुनाँचे जब सुबह हुई तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बच्चे को प्यार किया और कहा बेटा! मेरे साथ चलो। बीवी ने पूछा कहाँ? आपने फ़रमाया, किसी बड़े की मुलाक़ात करनी है। नाम न बताया क्योंकि वह आख़िर माँ हैं, मुमकिन है क़ुर्बानी का नाम सुनकर उसका दिल पसीज जाए और उसकी आँखों से आँसू आ जाएं और सब्र व बरदाश्त में कुछ फ़र्क़ आ जाए। इसलिए मोटी सी बात कर दी कि किसी बड़े की मुलाक़ात के लिए जाना है। बीबी हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को नहलाया, सर में तेल भी लगाया, कंघी भी कर दी। लेकिन उनको मालूम नहीं था कि उनका बेटा आज किसी आज़माइश में जा रहा है। अलबत्ता रवाना होते वक़्त इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे को कह दिया, बेटा! एक रस्सी और छुरी भी ले लो। उसने पूछा, अब्बा जान! रस्सी और छुरी किस लिए लेनी है? फ़रमाया, बेटा! जब बड़े से मुलाक़ात होती है तो फिर क़ुर्बानियाँ भी देनी पड़ती हैं। बेटा समझा कि शायद किसी जानवर को क़ुर्बान करेंगे। यूँ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने जिगर के टुकड़े को क़ुर्बान करने के लिए घर से चल पड़े।

जब वह अपने घर से चले गए तो पीछे शैतान मलऊन बीबी हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आया और कहने लगा तुझे पता

भी है कि आज तेरे बेटे के साथ क्या होने वाला है? उन्होंने पूछा क्या? वह कहने लगा तेरा मियाँ तेरे बेटे को ज़िब्ह कर देगा। उन्होंने कहा बूढ़े! तेरी अक़्ल चली गई, कभी बाप भी अपने बेटे को ज़िब्ह करता है? वह कहने लगा हाँ, उनको अल्लाह का हुक्म हुआ है। जब उसने यह कहा तो कहने लगीं अगर अल्लाह का हुक्म हुआ है तो मेरे बेटे को क़ुर्बान होने दो क्योंकि अगर मेरे बारे में अल्लाह का हुक्म होता तो मैं भी उसके रास्ते में क़ुर्बान होने के लिए तैयार हो जाती।

जब शैतान का बीबी हाजरा के सामने कोई बस न चला तो वह रास्ते में हज़रत इस्माईल के पास आया और उनसे पूछा सुनाओ तुम कहाँ जा रहे हो? आपने फ़रमाया कि किसी बड़े की मुलाक़ात के लिए जा रहा हूँ। वह कहने लगा हर्गिज़ नहीं, तुझे ज़िब्ह कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा यह कैसे हो सकता है, कोई बाप भी अपने बेटे को ज़िब्ह करता है? कहने लगा हाँ अल्लाह का हुक्म है। हज़रत इस्माईल कहने लगे अगर अल्लाह तआला का हुक्म है तो मैं हाज़िर हूँ। लिहाज़ा शैतान फिर नाकाम हुआ।

फिर रास्ते में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास आया और कहने लगा, बेटे को क्यों ज़िब्ह करते हो, कभी ख़्वाब के पीछे भी कोई अपनी औलाद को ज़िब्ह करता है? देखिए क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया था लेकिन आज तक उसका नाम रुसवाए ज़माना मशहूर है। अगर आप भी अपने बेटे को ज़िब्ह कर देंगे तो कहीं आपका नाम भी ऐसे ही बुरा न मशहूर हो जाए लिहाज़ा ऐसा काम हर्गिज़ न करना। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, अरे बदबख़्त! मालूम होता है तू शैतान है। क़ाबील ने तो अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश की वजह से बंदे को मारा था और मैं

तो रहमानी ख़्वाब को पूरा करने के लिए अपने बेटे को क़ुर्बान करना चाहता हूँ। मेरे ख़्वाब का उसके अमल के साथ कोई ताल्लुक़ और वास्ता भी नहीं है। क़ाबील तो औरत का मिलाप चाहता था और मैं अपने पाक परवरदिगार का मिलाप चाहता हूँ। लिहाज़ा मैं आज अपने बेटे की क़ुर्बानी देकर दिखाऊँगा। उसके बाद जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम आगे बढ़े तो शैतान आकर रास्ते में खड़ा हो गया और कहने लगा मैं नहीं जाने देता। उस वक़्त उन्होंने सात कंकरिया उठाकर शैतान को मारी और अल्लाह तआला ने वहाँ से शैतान को भगा दिया। जहाँ उसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कंकरिया मारीं उस जगह का नाम जमरतुल-ऊला पड़ गया। फिर दूसरी जगह पर जाकर रास्ता रोका और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने वहाँ भी उसकी रमी जमार की। शैतान फिर भाग गया। उस जगह का नाम जमरतुल-वुस्ता पड़ गया। फिर तीसरी जगह भी उसको कंकरियाँ लगीं और उस जगह का नाम जमरतुल-उक़्बा पड़ गया। जमरतुल-उक़्बा से आगे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पूछा, अब्बा जान! आपने फ़रमाया कि बड़े की मुलाक़ात के लिए जाना है, बताइए कि उस बड़े की मुलाक़ात कब होगी? अब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे को सारी बात बताई कि,

﴿يٰبُنَىَّ اِنّىْ اَرٰى فِى الْمَنَامِ اَنّىْ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى. (الصّٰفّٰت:١٠٢)﴾

ऐ मेरे बेटे! मैंने ख़्वाब देखा है कि मैं तुम्हें ज़िब्ह कर रहा हूँ, बता तेरी क्या राय है?

बेटा भी बड़े दर्जे के नबी के घर का चश्म व चिराग़ था और बाद में रिसालत के ओहदे पर बैठने वाला था। इसलिए कम उम्री

के बावजूद इताअत के साथ सर झुकाते हुए बहुत ही अदब से अर्ज़ करने लगा :

﴿يٰابت افعل ما تؤمر ستجدنی انشآء الله من الصّبرين۔(الصّٰفّٰت:۱۰۲)﴾

ऐ अब्बा जान! कर गुज़रिए जिस बात का आपको हुक्म हुआ है, आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे।

सुब्हानअल्लाह! जब बाप के दिल में मुहब्बत इलाही का जज़्बा जोश मार रहा होता है तो फिर घर के दूसरे लोगों के अंदर भी उसके नमूने नज़र आते हैं। जब बेटे ने यह जवाब दिया तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उनको ज़िब्ह करने के लिए तैयार हो गए। यह देखकर वह कहने लगे, "अब्बा जान! मैं आपसे चार बातें अर्ज़ करना चाहता हूँ।" हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मेरे बेटे! तुम मुझे बताओ कि तुम इस वक़्त क्या कहना चाहते हो? अर्ज़ किया अब्बा जान! पहली बात तो यह कहना चाहता हूँ कि आप छुरी को अच्छी तरह तेज़ कर लीजिए ऐसा न कि छुरी खुंडी हो और मुझे ज़िब्ह करने में ज़्यादा वक़्त लग जाए। मैंने जब अल्लाह के नाम पर जान देनी ही है तो छुरी तेज़ होने की वजह से मेरी जान जल्दी निकलेगी और मैं अल्लाह से मिल जाऊँगा।"

यह सुनकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने छुरी और भी तेज़ कर ली और पूछा बेटा! दूसरी बात कौन सी है? बेटे ने अर्ज़ किया, "अब्बा जान! मैं छोटा हूँ, आप मुझे रस्सी से बाँध दीजिए।"

लिहाज़ा इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उनको रस्सी से बाँध दिया और पूछा बेटा! तीसरी बात क्या है? बेटे ने अर्ज़ किया, "अब्बा जान! जब आप मुझे ज़िब्ह करेंगे तो मेरा चेहरा ऊपर आसमान की तरफ़ न करना क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मुझे सज्दे की हालत

में मौत आए। वैसे भी जब आपकी तरफ़ पीठ होगी तो आपके दिल में बाप वाली मुहब्बत भी जोश नहीं मारेगी।"

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, बेटा! मैं यह भी कर दूँगा। आप अब और क्या बात करना चाहते हो? अर्ज़ किया, "अब्बा जान! जब आप मुझे ज़िब्ह कर चुकें तो आप मेरे कपड़े मेरी वालिदा को दिखा देना और कहना कि आपका बेटा अल्लाह के नाम पर कामयाब हो गया।" हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की चौथी बात पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम रो पड़े और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से फ़रियाद की, "ऐ अल्लाह आपने बुढ़ापे में औलाद दी और अब इस मासूम बच्चे की क़ुर्बानी मांगते हैं, ऐ अल्लाह! अपने ख़लील पर रहम फ़रमा और इस बच्चे पर भी जो क़ुर्बानी के लिए तैयार है।"

फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को औंधे मुँह लिटाकर उनके गले पर छुरी रखी दी। वह उनको ज़िब्ह करना चाहते थे मगर छुरी उनको ज़िब्ह नहीं करती थी। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जिब्रील अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया, "जिब्रील! जाओ और छुरी को थाम लो अगर रगों में से कोई रग कट गई तो फ़रिश्तों के दफ़्तर से तुम्हारा नाम निकाल दूँगा।" लिहाज़ा हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आकर छुरी को थाम लेते हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम छुरी को चलाने की कोशिश करते हैं लेकिन छुरी नहीं चलती। फिर अपना पूरा बोझ उस के ऊपर डाल देते हैं मगर छुरी ने बच्चे को फिर भी ज़िब्ह न किया। चुनाँचे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम गुस्से में आकर छुरी से कहते हैं, ऐ छुरी! तू क्यों नहीं चलती? छुरी ने जवाब में पूछा, ऐ इब्राहीम ख़लीलुल्लाह! जब आपको आग में डाला गया था तो आप को आग ने क्यों नहीं जलाया था? हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने

फ़रमाया, आग को अल्लाह का हुक्म था कि इब्राहीम को नहीं जलाना। फिर छुरी कहने लगी, "ऐ इब्राहीम ख़लीलुल्लाह! आप मुझे एक बार कहते हैं कि गला काटो और अल्लाह मुझे सत्तर बार कह रहे हैं कि हर्गिज़ नहीं काटना। अब बताए कि मैं गला कैसे काट सकती हूँ?" अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की शान देखिए कि उसने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को ज़िंदा बचा लिया और उनके बजाए एक मेंढा क़ुर्बान हो गया। अल्लाह तआला को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की यह अदा इतनी पसन्द आई कि अल्लाह तआला ने उनके बेटे को महफ़ूज़ भी फ़रमा लिया और फ़रमाया,

﴿وفدينه بذبح عظيم. (الصفت: آیۃ ۱۰۷)﴾

उसकी जगह हमने एक बड़ी क़ुर्बानी दे दी।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि अल्लाह तआला ने "अज़ीम" का लफ़्ज़ इसलिए इर्शाद फ़रमाया कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पेशानी में दो नबुव्वतों का नूर था। एक अपनी नबुव्वत का और एक सैय्यदना रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत का। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

﴿ان هذا لهو البلؤا المبين. (الصفت ۱۰۶)﴾

बेशक यह बहुत बड़ी आज़माइश थी।

फिर फ़रमाया,

﴿سلٰم علىٰ ابراهيم. (الصفت: ۱۰۹)﴾

ऐ इब्राहीम! तुझ पर सलामती हो यानी ऐ इब्राहीम! तुझे शाबाश हो, इब्राहीम! तू जीता रहे कि तूने ऐसी क़ुर्बानी करके दिखाई।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने ख़लील की इतनी हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई कि,

﴿وتركنا عليه في الآخرين. (الصفت ۱۰۸)﴾

और हमने आने वालों में इस अमल को जारी कर दिया यानी ऐ इब्राहीम! हमें तेरा यह अमल इतना पसंद आया कि हम तेरे इस अमल को क़यामत तक सुन्नत बनाकर जारी कर देंगे।

देखिए जो इश्क़े हक़ीक़ीमें कामयाब होते हैं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से उनको यूँ इज़्ज़तें मिलती हैं। आज भी ईमान वालों की ज़िन्दगियों में मुहब्बते इलाही के आसार नज़र आते हैं। कितनी माँएं हैं जो आज भी अपने बेटों को दीने इस्लाम की सरबुलन्दी के लिए मैदाने जिहाद में भेजती हैं और कहती हैं कि जाइए और अपनी जान क़ुर्बान कर दीजिए।

माँ हो तो ऐसी

हमारे इसी शहर (झंग) से ताल्लुक़ रखने वाला एक नौजवान चंद दिन पहले मैदाने हिजाद में शहीद हुआ। जब उसका जनाज़ा पढ़ाया जाने लगा तो उसकी वालिदा ने कहा :

"मेरा एक बेटा शहीद हुआ है। तीन बेटे और मौजूद हैं। मेरा जी चाहता है कि बाक़ी तीन भी अल्लाह के रास्ते में शहीद हो जाएं।"

देखिए ईमान वालों के दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की कैसी मुहब्बतें हैं कि आज भी ईमान वाली औरतें तमन्नाए करती हैं कि हमारे बेटे अल्लाह के दीन की ख़ातिर जान दे दें।

ज़िक्रे इलाही की अहमियत

मेरे अज़ीज़ दोस्तो! इस ज़िक्रुल्लाह से ज़ाते इलाही की मुहब्बत पैदा होती है। इस ज़िक्र का मतलब फ़क़त गिनती करके अदद पूरे करना नहीं है बल्कि इसका असल मक़सद यह है कि दिल में

अल्लाह तआला की मुहब्बत पैदा हो जाए।

اشتیاق حق بود ذکر دلت   کوشش تا گردد ترا ایں حاصلت

हक़ का इश्क़ तेरे दिल का ज़िक्र है। बस कोशिश कर कि यह तुझे हासिल हो जाए।

जब मुहब्बते इलाही हासिल हो जाती है तो फिर इंसान के लिए इबादत आसान हो जाती है। उसके लिए क़ुर्बानियाँ देना आसान हो जाता है और अपने नफ़्स का लगाम देना आसान हो जाती है। इसीलिए फ़रमाया :

﴿وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ. (البقرة:١٦٥)﴾ (और ईमान वालों को अल्लाह तआला से शदीद मुहब्बत होती है।)

मुहब्बत इलाही वह नेअमत है कि जो अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला से मांगी। आप तहज्जुद की नमाज़ में फ़रमाते थे :

﴿اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُّحِبُّكَ﴾

ऐ अल्लाह! मैं आपसे आपकी मुहब्बत का सवाल करता हूँ और जो आपसे मुहब्बत करते हैं उनकी मुहब्बत का सवाल करता हूँ।

हमें भी चाहिए कि हम भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से उसकी मुहब्बत का सवाल किया करें। याद रखिए—

दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अजब चीज़ है लज़्ज़ते अशनाई

जब इंसान के दिल में आशनाई की लज़्ज़त आ जाती है तो दुनिया से इन्क़तअ (फ़ासला) हो जाता है। और इंसान की निगाहें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ज़ात पर जम जाया करती है। इसी तरह उसकी तवज्जोह का क़िब्ला एक बन जाया करता है। वह 'ला'

की तलवार से मासिवा पर छुरी फेर देता है। उसके दिल में अल्लाह आ जाते हैं। उसके दिल में अल्लाह समा जाते हैं बल्कि उसके दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त छा जाते हैं। इसको फ़नाए क़ल्ब कहते हैं। इसी को हासिल करने के लिए मैं और आप उसके तलबगार हैं।

हमें चाहिए कि हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से यों मांगे कि रब्बे करीम! हमें अपनी ऐसी याद अता फ़रमा दे जिसकी वजह से हमारी पूरी ज़िंदगी उसके हुक्मों के मुताबिक़ हो जाए।

याद रखें जो तलब करत है वह पा लेता है। हज़रत ख़्वाजा मासूम रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं :

"सालिक जब तक हालिक न बने काम नहीं होता।"

यानी सालिक अपने आपको हलाक करने के दरपे हो जाए। इसीलिए अल्लाह तआला ने इंसान पर ज़िक्र की कोई बंदिश नहीं लगाई बल्कि फ़रमाया ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا. (الاحزاب:٤١)﴾ ऐ ईमान वालो! अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करो।

दूसरी जगह फ़रमाया ﴿وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ. (الاحزاب:٣٥)﴾ और कसरत के साथ ज़िक्र करने वाले मर्द और ज़िक्र करने वाली औरतें।

अल्लाह तआला ने इन आयतों में अपने ज़िक्र के लिए कसरत का लफ़्ज़ इर्शाद फ़रमाया। कसरत इसको नहीं कहते कि हम पाँच मिनट या दस मिनट का मुराक़बा करें। जब मिनटों के चक्कर से निकल जाएंगे और ज़िक्रे इलाही को ज़िंदगी का मक़सद बना लेंगे तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त भी हम पर रहमत फ़रमा देंगे। जिस तरह शेख़ (वजीहुद्दीन) साहब दामतबरकातुहुम ने कितनी अजीब बात फ़रमाई :

"बादशाह अपने दीदार के लिए इंतिज़ार करवाया करते हैं।"

अल्लाह तआला हमें मुराकबे की शक्ल में इस इंतिज़ार की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दें। अगर आज हमने यह बात दिल में पक्की कर ली तो गोया हमारा यहाँ आने का मक़सद पूरा हो गया। इंसान अल्लाह तआला से उसकी मुहब्बत का यों सवाल करे : ﴿اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْكَ﴾ ऐ अल्लाह! मैं आपसे आप ही को चाहता हूँ।

अगर इंसान के दिल में सच्ची तलब पैदा हो जाए तो फिर देखना इबादात की कुछ और ही कैफ़ियत होगी। ज़िंदगी में से गुनाह ख़त्म हो जाएंगे और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की इताअत आ जाएगी।

मुहब्बते इलाही तो किसी न किसी दर्जे में हर कलिमा गो के अंदर मौजूद होती है मगर परवरदिगारे आलम ने "अशद्‌द" का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया है कि जब तक यह मुहब्बत "अशद्‌द" के मर्तबे तक नहीं पहुँचेगी उस वक़्त तक गोया ईमाने कामिल की लज़्ज़त नहीं मिलेगी। इसलिए हमें चाहिए कि हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से उसकी मुहब्बत की शिद्‌दत मांगे और कहें : **"ऐ अल्लाह! हमें अपनी मुहब्बत में दीवाना बना दीजिए। मस्ताना बना दीजिए। हर वक़्त आपके साथ तार जुड़े रहें और हर वक़्त हमारे दिल में आपका बसेरा हो जाए।"**

किसी आरिफ़ ने क्या ही अच्छी बात कही—

मुझको न अपना होश न दुनिया का होश है
बैठा हूँ मस्त हो के तुम्हारे जमाल में

तारों से पूछ लो मेरी रूदादे ज़िंदगी
रातों को जागता हूँ तुम्हारे ख़याल में

हम भी परवरदिगारे आलम की ख़ातिर रातों को जागने वाले बन जाएं। तहज्जुद पाबन्दी से पढ़ने वाले बन जाएं और हर वक़्त "वक़ूफ़े क़ल्बी" रखने वाले बन जाएं।

सनमख़ानों की सफ़ाई

मुहब्बते इलाही की शिद्दत हासिल करने के लिए दिल को साफ़ करना पड़ता है। जब इंसान दिल में पड़े हुए बुतों को तोड़ता है तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसके ऊपर तजल्ली फ़रमाते हैं। आज मैली जगह पर कोई इंसान बैठना पसन्द नहीं करता। पाक परवरदिगार गंदी जगह पर आना कैसे पसन्द फ़रमाएंगे। वह भी यही चाहते हैं कि अपने दिलों को साफ़ कर लो। इसलिए हमें चाहिए कि हम माबूदाने बातिल से अपनी तवज्जोह हटा लें। चाहे वह अनफ़ुसी (ज़मीनी) हों या आफ़ाक़ी हों और चाहे वह ख़्याली हों। जी हाँ कई बुत ऐसे भी होते हैं जिनको इंसान अपने दिमाग़ में पूजता है। ऐसे सब सनमख़ानों की सफ़ाई करनी पड़ती है।

ख़ुलासए कलाम

मेरे दोस्तो! हमारी इबादतें और मुजाहिदे यक़ीनन इस क़ाबिल नहीं कि उनके बदले हमें अल्लाह तआला की मुहब्बत जैसी लाज़वाल दौलत मिल जाए। मगर हम तो सवाली हैं। सवाली का काम तो सवाल करना होता है। वह यह नहीं देखता कि मैं इस बात के क़ाबिल हूँ या नहीं। हम भी अल्लाह तआला से यही कहें कि ऐ अल्लाह! अगरचे हम भी इस क़ाबिल नहीं हैं। आप ही अता फ़रमा दीजिए। क़ाबिल भी तो आप ही बनाते हैं। इर्शादे बारी तआला है :

﴿وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِنْ اَحَدٍ اَبَدًا. (النور:٢١)﴾

और अगर अल्लाह तआला का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो तुम में से कोई भी इंसान सुथरा न होता।

मालूम हुआ कि मामला हमारी मेहनत पर मौक़ूफ़ नहीं बल्कि अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत पर मौक़ूफ़ है। हाथ पाँव बच्चा मारता है और माँ बाप को तरस आ जाता है। तज़्किए का भी यही मामला है। हाथ पाँव सालिक मारता है और अल्लाह तआला को हाथ पाँव मारने पर तरस आ जाता है। इस तरह वह खुद तज़्किया कर दिया करते हैं।

अल्लाह तआला मेहरबानी फ़रमा कर अपने बंदों की आजिज़ी को क़बूल फ़रमा लेते हैं। जैसे बाप अपने बेटे से कहता है, बेटा! मेरी तरफ़ आओ। वह हालाँकि जानता है कि बच्चा कमज़ोर है और वह नहीं आ सकता। गिर जाएगा मगर बाप को पता होता है कि मैंने इसे गिरने नहीं देना है। सिर्फ़ यह देखना है कि मेरी तरफ़ आता है या नहीं आता। इसी तरह हम भी रास्ते पर क़दम आगे बढ़ाएंगे। अगरचे हम कमज़ोर और नादान हैं और अहलियत व ताक़त भी नहीं है मगर जब क़दम आगे बढ़ाएंगे और किसी जगह पर डोलने लगेंगे तो अल्लाह तआला भी देख रहे होंगे। वह अपनी रहमत के साथ हमें फ़ितनों में पड़ने से बचा लेंगे जिस तरह बाप बेटे को सीने से लगा लेता है इसी तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त भी हमें अपनी रहमत के साए में जगह अता फ़रमा देंगे।

परवरदिगारे आलम से दुआ है कि वह हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे और हमें वल्लज़ीना आमनू अशद्दु हुब्बललिल्लाह का मिस्दाक़ बना दे। (आमीन सुम्मा आमीन)

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

بسم الله الرحمن الرحيم

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا

इल्मे नाफ़े की बरकात

यह बयान हज़रत अक़्दस दामत बरकातुहुम ने 24 रबिउस्सानी 1423 हि० मुताबिक़ 1 जुलाई 2002 ई० बरोज़ सोमवार मलावी के शहर ल्युलोंगो में फ़रमाया। जिसमें कसीर तादाद में उलमा और तुलबाव आम लोग मौजूद थे।

इक़्तिबास

अगर किसी को फ़लसफ़ा व मंतिक़ पर नाज़ है तो वह हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़िंदगी को देखे।

अगर किसी को अपनी क़ुव्वते हाफ़िज़ा पर नाज़ है तो वह हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़िंदगी को देखे।

अगर किसी को अपनी फ़ुक़ाहत पर नाज़ है तो वह हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़िंदगी को देखे।

अगर किसी को अपनी इक़ामते दीन की कोशिशों पर नाज़ है तो वह हज़रत शेखुलहिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़िंदगी को देखे।

अगर किसी को तबलीगे़ दीन पर नाज़ है तो वह हज़रत मौलाना इलयास साहब रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़िंदगी को देखे।

अगर किसी को अपनी तहरीर पर नाज़ है तो वह हज़रत अक़्दस थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़िंदगी को देखे।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी
मुजद्दिदी मद्देज़िल्लहु

इल्मे नाफ़े की बरकात

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ○ (آل عمران:٧٩)

وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ اٰخَرَ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ○ (الصّٰفّٰت:١٨٠تا١٨٢)

وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ اَلْعُلَمَاءُ وَرَثَةُ الْاَنْبِيَاءِ اَوْ كَمَا قَالَ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ والسلام.

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ○

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

इल्म और इश्क़ के बर्तन

परवरदिगारे आलम ने हर इंसान को दो ख़ास नेमतों से नवाज़ा है। एक फड़कता हुआ दिमाग़ और दूसरा धड़कता हुआ दिल। फड़कता हुआ दिमाग़ इल्मे इलाही का बर्तन है और धड़कता हुआ दिल मुहब्बते इलाही का बर्तन है। इंसान को चाहिए कि दोनों बर्तनों को भरा रखे। दिल इश्क़े इलाही से भर जाए लेकिन दिमाग़ इल्म से ख़ाली हो तो इंसान फिर भी गुमराह हो जाता है। इश्क़ इंसान को बिदआत सिखाता है जबकि इल्म उसके अंदर तवाज़ुन पैदा करता है। और अगर दिमाग़ इल्म से भर जाए और दिल

इश्क़ से ख़ाली हो तो फिर भी इंसान गुमराह हो जाता है। वह खुद पसन्दी और तकब्बुर का शिकार हो जाता है। शैतान के पास इल्म था मगर क्यों गुमराह हुआ? इसलिए कि उसमें "मैं" थी और उसने कहा था ﴿أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ (ص:٧٦)﴾ यानी मैं इससे बेहतर हूँ। शैतान को इसी उजब और ख़ुद पसन्दी ने रान्दए दरगाहे बारगाहे इलाही बना दिया था।

तीन वाज़ेह तब्दीलियाँ

पहले दौर के लोगों में और आज के दौर के लोगों में तीन वाज़ेह तब्दीलियाँ नज़र आती हैं :

1. पहली बात तो यह है कि हमारे असलाफ़ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मारिफ़त के हुसूल के लिए दिन रात फ़िक्रमंद रहते थे जबकि आज का इंसान काएनात की मारिफ़त हासिल करने के लिए फ़िक्रमंद रहता है। साइन्सदान कम्पयूटर स्क्रीन के सामने बैठे रहते हैं ताकि कहकशाओं (Galaxies) निज़ामे शम्सी (Solar System) और सय्यारों (Planets) के बारे में काएनात की मारिफ़त पा सकें।
2. दूसरी तब्दीली यह देखने में आ रही है कि हमारे असलाफ़ जितनी मेहनत अपनी आख़िरत को बनाने के लिए करते थे आज का इंसान उस दर्जे की मेहनत अपनी दुनिया को बनाने के लिए कर रहा है। वह दिन रात दुनिया के पीछे भागता फिर रहा है। दुनिया उसके दिल में रच बस चुकी है कि दिन तो इंसान दुकान के अंदर होता है लेकिन रात के वक़्त दुकान इंसान के अंदर होती है। उन्हीं सोचों और ख़्यालों में उसकी रात बसर हो जाती है।
3. तीसरी तब्दीली यह नज़र आ रही है कि हमारे असलाफ़ अपनी

रूह को ग़िज़ा बहिम पहुँचाने के लिए जितनी मेहनत करते थे आज का इंसान अपने जिस्म को ग़िज़ा पहुँचाने के लिए इतनी मेहनत कर रहा है। जिसका नतीज़ा यह निकला की रूह कमज़ोर होती जा रही है और जिस्म को ग़िज़ा ज़रूरत से ज़्यादा मिल रही है। पहले ज़माने में लोग कम खाने की वजह से मरते थे और आज के दौर में इंसान ज़्यादा खाने की वजह से मरता है। सब बड़ी-बड़ी बीमारियाँ ज़्यादा खाने की वजह से जन्म लेती हैं। अफ़सोस के साथ यह बात कहनी पड़ती है कि औरतों का इतना वक़्त मुसल्ले पर नहीं गुज़रता जितना किचन में केक और देग बनाने में गुज़र रहा होता है।

फ़लास्फ़रों और अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम के उसूल व ज़ाब्तों में फ़र्क़

'दुनिया में मुख़्तलिफ़ तहज़ीबों के जितने स्कालर गुज़रे हैं उन्होंने भी इंसानियत की फ़लाह व बहबूद के उसूल व ज़ाब्ते बनाए और अंबिया किराम जब दुनिया में तशरीफ़ लाए तो उन्होंने भी उसूल व ज़ाब्ते बनाए। स्कालर का वह तब्क़ा जिसने अपनी अक़्ल की बुनियाद पर ज़िंदगी गुज़ारने के उसूल बनाए। अक़्ल को जहाँ फ़ायदा नज़र आया उस काम को कर लिया और जहाँ अक़्ल को नुक़सान नज़र आया उस काम से पीछे हट गए। दूसरे लफ़्ज़ों में वे अक़्ल के पुजारी साबित हुए। अब इंसानियत का एक तब्क़ा उन फ़लास्फ़रों और स्कॉलरों के पीछे चल रहा है और एक वे कलिमागो तब्क़ा है जो अंबिया किराम के रास्ते पर चल रहा है। इस दूसरे तब्क़े के लोग वे थे जिन्होंने अपने दिलों पर मेहनत की और उनको ईमाने हक़ीक़ी और मुहब्बते इलाही से और अपने दिमाग़ को "वही" के उलूम से भर लिया। उन्होंने अल्लाह

रब्बुलइज़्ज़त की मन्शा के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी। अजीब बात यह है कि इन दोनों ज़िंदगी के तरीक़ों में तीन नुमायाँ फ़र्क़ नज़र आते हैं :

1. वे लोग जो अक़्ल के पुजारी बने और फ़लस्फ़े के पीछे चले उनमें एक बात तो यह देखी गई कि उन्होंने इंसानियत की फ़लाह के लिए जो उसूल तर्तीब दिए उनके ज़माने के लोगों ने उनकी मुख़ालिफ़त की। चुनाँचे एक फ़लास्फ़र के उसूल कुछ और होते थे और दूसरे के कुछ और। गोया कि हर एक का अपना-अपना नज़रिया था लेकिन अंबिया किराम जब तशरीफ़ लाए तो उन सबने एक ही बात कही कि तुम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की इबादत करो। क़ुरआने अज़ीम से इस बात का सबूत मिलता है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿وَإِلَى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ. (هود:٨٤)﴾

और मदयन की तरफ़ भेजा उनके भाई शुएब को। फ़रमाया, ऐ मेरी क़ौम! बंदगी करो अल्लाह की।

﴿وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صٰلِحًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ. (هود:٦١)﴾

और समूद की तरफ़ भेजा उनका भाई सालेह। बोला ऐ क़ौम बंदगी करो अल्लाह की।

गोया सब अंबिया किराम ने अपने से पहले नबियों की तस्दीक़ की कि जिस नज़रिए का प्रचार वह करते थे हम भी उसी नज़रिए पर कारबंद हैं।

2. दूसरा वाज़ेह फ़र्क़ यह है कि जिन फ़लास्फ़रों ने उसूल व ज़ाब्ते पेश किए उनके शागिर्दों ने अपने उस्तादों की बातों को रद्द

करके नाक़ाबिले अमल बना दिया। जैसे कम्युनिज़्म एक तरीक़ए ज़िंदगी था लेकिन सत्तर साल के बाद ख़ुद कम्युनिज़्म पर चलने वाले लोगों ने ही लेनिन के पुतले को सड़कों पर घसीटा कि इस आदमी ने हमें ग़लत रास्ते पर लगा दिया।

दूसरी तरफ़ जितने भी अंबिया किराम तशरीफ़ लाए उन सबके शागिर्दों ने पूरी ज़िंदगी उनकी तस्दीक़ की। अंबिया अलैहिमुस्सलाम जो कुछ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से लेकर आए सब सहाबा किराम ने उसकी तस्दीक़ की। यहाँ तक कि अबूजहल ने कहा, अबूबक्र! क्या कोई बंदा रात के वक़्त मक्का मुकर्रमा से मस्जिदे अक़्सा तक जा सकता है? फ़रमाया, जा तो नहीं सकता। वह मरदूद कहने लगा तुम्हारे दोस्त कहते हैं कि मैं गया हूँ। फ़रमाया, अगर वह कहते हैं तो वह अल्लाह के नबी हैं और सच कह रहे हैं। सुब्हानअल्लाह फ़ौरन तस्दीक़ कर दी।

3. एक तीसरा फ़र्क़ यह नज़र आता है कि जिन लोगों ने अक़्ल की बुनियाद पर उसूल बनाए उन्होंने जब भी कोई उसूल बनाया और समझाया तो उन्होंने अपने आपको आगे पेश किया और कहा :

मैंने यह सोचा, मैं इस नतीजे पर पहुँचा, मेरी रिसर्च यह बताती है, मेरा तजरिबा यह कहता है, मेरे ज़हन में यह ख्याल आया, मैंने यह फ़ैसला किया।

गोया उनकी पूरी बात का निचोड़ "मैं" और "मैं" निकला।

जबकि अंबिया किराम जो तालीमात लेकर आए उन सबने इंसानियत की तवज्जोह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ दिलाई। उन्होंने अपनी बात को मुक़द्दम नहीं किया बल्कि

अल्लाह के पैग़ाम को मुक़द्दम किया और फ़रमाया :

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने यों फ़रमाया, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने यों नाज़िल फ़रमाया, मेरी तरफ़ अल्लाह तआला का यह पैग़ाम आया, अल्लाह तआला ने मुझे यह हुक्म दिया।

यानी इन तालीमात में अंबिया किराम ने इंसानियत को अल्लाह के दर पर पहुँचाया।

अलहम्दुलिल्लाह सुम्मा अलहम्दुलिल्लाह जिस दीन पर हम कारबंद हैं ये तमाम आलम के दीनों का निचोड़ और ख़ुलासा है। जैसे दूध से मक्खन को निकालकर कहते हैं कि यह सारे दूध का निचोड़ है। यह ऐसी नेमत है जिसके बारे में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ. (المائدہ:۳)﴾

आज के दिन मैंने तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और मैंने यह नेमत तुम पर मुकम्मल कर दी।

सुब्हानल्लाह ख़ुद परवरदिगारे आलम ने इसे नेमत क़रार दिया। क़ुर्बान जाएं उस परवरदिगार की फ़य्याज़ी पर कि उसने हम आजिज़ मिस्कीनों को इस शरिअत पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी। याद रखें कि यह एक कामिल शरिअत है। इस शरिअत को जानने के लिए इल्म हासिल करना पड़ता है। इल्म के बग़ैर शरिअत का पता नहीं चलता।

इंसान कानें हैं

मोहिसने इंसानियत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद मुज्तबा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿اَلنَّاسُ مَعَادِنُ﴾ इंसान कानें हैं।

नबी अलैहिस्सलाम ने यह बहुत क़ीमती बात इर्शाद फ़रमाई है। लोग तो दुनिया में किसी की अच्छी बात सुनकर कह देते हैं कि फ़लाँ ने तो लाख रुपए की बात कही लेकिन हम कहते हैं कि नबी अलैहिस्सलाम के इस फ़रमान को इससे तश्बीह दी ही नहीं जा सकती।

कान ज़मीनी ख़ज़ाने को कहते हैं। कहीं सोने की कान होती है, कहीं तांबे की कान होती है, कहीं लोहे की कान पाई जाती है। कहीं। यूरेनियम की कान पाई जाती है। इन कानों से चीज़ें निकालकर तरह तरह के फ़ायदे हासिल किए जाते हैं। नबी अलैहिस्सलाम ने इंसानों को कानों के साथ इसलिए मुशाबेहत दी कि हर इंसान के अंदर अल्लाह तआला ने इस्तेदाद और सिफ़ात के ख़ज़ाने रख दिए हैं। जैसे कानों में से चीज़ खुद निकालनी पड़ती हैं। इसी तरह इंसान अपनी मेहनत से इन छुपी हुई सिफ़ात और सलाहियतों को बेदार कर सकता है। चूँकि हर बंदे में ये सलाहियतें होती हैं इसलिए किसी बंदे को भी कम नज़र से नहीं देखना चाहिए। हदीस पाक में आया है :

﴿خِيَارُكُمْ فِي الْإِسْلَامِ خِيَارُكُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ إِذَا فَقِهُوا.﴾

तुम में से इस्लाम में वह बंदा बेहतर है जो जाहिलयत में बेहतर था। जब वह दीन की समझ हासिल करें।

जब वह इस्लाम की तरफ़ आकर नेक बनेंगे तो वह दीन में भी तुम से आगे निकल जाएंगे और उनको फ़ुक़ाहत (समझ) मिल जाएगी। इसलिए कि इब्तिदा में जो डाकुओं का लीडर होगा। जब तौबा करेगा तो वह नेकियों में भी दूसरों से आगे बढ़ जाएगा क्योंकि उसके अंदर क़यादत (Leadership) की सलाहियत मौजूद होती है।

इसकी मिसाल यों समझिए कि एक बीज के अंदर दरख़्त बनने की सलाहियत मौजूद होती है। बड़ का पेड़ कितना बड़ा होता है लेकिन उसका बीज मटर के दाने से भी छोटा होता है। इतने छोटे से बीच में दरख़्त बनने की सलाहियत मौजूद होती है। लेकिन हर बीज दरख़्त नहीं बनता। सिर्फ़ वही बीज दरख़्त बनता है जिसको ज़रख़ेज़ ज़मीन, पानी और हिफ़ाज़त करने वाला माली मिलता है वरना कई बीज ज़मीन में पड़े-पड़े ज़ाए हो जाते हैं। इसी तरह इंसानों की यह सोई हुई सलाहियतें तब बेदार जागती हैं जब उनको नेक सोहबत मिल जाए और कोई अच्छा उस्ताद और मुरब्बी मिल जाए जो उसे मौक़े-मौक़े गाइड करता रहे।

शाह भीख़ रह० एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उन्होंने हिन्दी ज़बान में एक अजीब शे'र लिखा है। उस शे'र की बुनियाद इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़सानी रह० की यह बात बनी कि उन्होंने फ़रमाया कि हर इंसान वली बिलक़ुव्वत है यानी अल्लाह तआला ने हर इंसान को इतनी सलाहियतें दे रखी हैं कि अगर वह उनको काम में लाए तो वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का वली बन सकता है मगर वली बिल-फ़ेअल बनने के लिए मेहनत की ज़रूरत होती है। वह मेहनत कोई भी कर सकता है। इसलिए कोई-कोई अल्लाह का ख़ास वली बनता है। शाह भीख़ रह० अपना तख़ल्लुस भीखा लिखते थे। उन्होंने यह शे'र लिखा—

भीका भीखा कोई नहीं हर दी गठरी लअल
गिरह खोल न जान्दे ते तुरत फिरन कंगाल

भीका! कोई भी भूखा नहीं है हर एक के पास लअल व जवाहर (Pearl and Diamond) हैं। यह गठरी की गिरह खोलना नहीं जानते। इसलिए बेचारे कंगाल फिरते हैं। वाक़ई अल्लाह

तआला ने हमारे अंदर सलाहियतें रखी हैं। हम उन सलाहियतों को बेदार नहीं करते। इसलिए कंगाल ज़िंदगी गुज़ार रहे होते हैं।

इन सोई हुई सलाहियतों को बेदार करने के लिए इल्म की ज़रूरत है। इसलिए दीने इस्लाम का इल्म हासिल करना हर मुसलमान मर्द और औरत पर लाज़िम कर दिया गया है।

फ़राईज़ का इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है, वाजिबात का इल्म हासिल करना वाजिब है, सुनन का इल्म हासिल करनां सुन्नत है।

इल्म हासिल करना इसलिए ज़रूरी है कि इंसान के साथ हर वक़्त तो मुफ़्ती नहीं होता कि उससे पूछकर काम करेगा। ज़रूरियाते दीन का इल्म तो हर सूरत हासिल करना चाहिए। अलबत्ता अगर कोई दीन का मुकम्मल इल्म हासिल कर ले तो सोने पे सुहागा है। यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नेमत है जिसको चाहे अता कर दे।

समझ कब बेदार होती है?

इंसान की समझ कब बेदार होती है और उसमें फ़ुक़ाहत कब पैदा होती है। इसका जवाब यह है कि जब दिल संवरता है तब उसके अंदर फ़ुक़ाहत और समझ पैदा होती है। इसीलिए क़ुरआन अज़ीमुश्शान में फ़रमाया गया ﴿لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَا. (الحج:٤٦)﴾ उनके दिल होते जो उनको अक़्ल सिखाते। गोया अक़्ल को क़ल्ब के ताबे बनाया गया है।

ख़ानक़ाह से क्या मुराद है?

हमारे मआशरे में दिल संवरने की जो दरसगाहें हैं उनको ख़ानक़ाह कहते हैं। ये ख़ानक़ाह किसी इमारत का नाम नहीं होता बल्कि ये शख़्सियात का नाम होता है। वे लोग जिन्होंने अपने

मशाइख़ की ख़िदमत में वक़्त गुज़ारा और उनसे तर्बियत पाई फिर उन मशाइख़ ने उसके इल्म और अमल के अंदर जोड़ और ज़ाहिर व बातिन के अंदर फ़र्क़ को ख़त्म करते देखा तो उन्होंने तस्दीक़ कर दी कि अब यह बंदा सच की ज़िंदगी गुज़ार रहा है। अब यह बंदा तर्बियत पा चुका है और अब यह दूसरों को अल्लाह अल्लाह सिखाने के क़ाबिल है। इस शख़्सियत का नाम ख़ानक़ाह होता है।

युनिवर्सिटियों और ख़ानक़ाहों की तालीमात में फ़र्क़

आज युनिवर्सिटियों में भी तालीम मिलती है और ख़ानक़ाहों में भी तालीम मिलती है। मगर दोनों में फ़र्क़ है। युनिवर्सिटी इमारत का नाम होता है और ख़ानक़ाह कोई इमारत नहीं होती बल्कि यह एक चलती फिरती युनिवर्सिटी होती है। युनिवर्सिटियों में एक ख़ास वक़्त के लिए तालीम दी जाती है लेकिन ख़ानक़ाहों में चौबीस घंटे तालीम होती है और जो तुलबा उन ख़ानक़ाहों में आकर रहते हैं वे चौबीस घंटे के स्टूडेन्ट होते हैं। दिन हो या रात वह अपने शेख़ से दीन सीख रहे होते हैं। युनिवर्सिटियों का कोर्स चंद सालों का होता है। मसलन डाक्टर चंद सालों में डाक्टर बन जाता है और उसे छुट्टी हो जाती है लेकिन ख़ानक़ाहों का कोर्स ऐसा है कि सारी उम्र छुट्टी नहीं मिलती। इंसान को यह कोर्स पूरी ज़िंदगी में यानी अपनी क़ब्र में जाने तक करना पड़ता है—

मक्तबे इश्क़ के अंदाज़ निराले देखे
उसको छुट्टी न मिली जिसने सबक़ याद किया

अगर कोई मेहनत करके अपने आपको बनाता है तो फिर मशाइख़ उसको बैठने नहीं देते बल्कि उसे आगे दूसरे की ख़िदमत (इस्लाह) में लगा देते हैं।

ख़ानक़ाहों का सबसे बड़ा फ़ायदा

यह ख़ानक़ाह हैं कि इंसान को फ़ायदेमंद उलूम से फ़ायदा हासिल करने वाला बना देती हैं। और उनका जो नुक़सानदेह पहलू होता है उससे बचा लेती है। जैसे जिस्म के अंदर मेदा जो ग़िज़ा हम खाते हैं उसमें कुछ ग़िज़ा तो वह होती है जो जिस्म के लिए फ़ायदेमंद होती है और मेदा उस ग़िज़ा को ख़ून बनाकर जिस्म के मुख़्तलिफ़ आज़ा को भेज देता है लेकिन जो चीज़ें नुक़सानदेह होती हैं उनको पेशाब पाख़ाना बनाकर ख़ारिज कर देता है। गोया ग़िज़ा का वह पहलू जो फ़ायदेमंद था उसको हासिल कर लिया और जो नुक़सानदेह था उससे बचा लिया। ख़ानक़ाहों में भी यही होता है। इंसान जो इल्म हासिल करता है उसका फ़ायदेमंद पहलू यह है कि उसके दिल के अंदर इबादत का शौक़ पैदा हो जाए, इख़्लास पैदा हो जाए, ख़ुशू व ख़ुज़ू पैदा हो जाए और नमाज़ को अच्छे अंदाज़ के साथ पढ़ने वाला बन जाए।

ये सब फ़ायदे उसे हासिल हो जाते हैं मगर उसका एक नुक़सानदेह पहलू भी है कि जब किसी बंदे के अंदर इल्म आता है तो फिर उसके अंदर "मैं" आ जाती है। फिर वह ख़ुद पसन्दी और तकब्बुर का शिकार होकर अपनी इल्मियत को मनवाने की कोशिश करता है। "हम चूँ माँ दीगर नेस्त" के मिस्दाक़ उसके ज़हन में जो बात आ जाती है कि मेरे जैसा कोई और नहीं है। यहूद के अंदर इल्म ज़्यादा था। इसीलिए उन्होंने सोचना शुरू कर दिया कि ﴿نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ. (المائدة:١٨)﴾ हम अल्लाह के बेटे और महबूब हैं। उन्होंने यह बात तकब्बुर की वजह से कही। चुनाँचे इर्शाद फ़रमाया :

﴿سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ (الاعراف:١٣٦)﴾

मैं फेर दूंगा उनको अपनी आयतों से जो तकब्बुर करते हैं ज़मीन में नाहक़।

चूँकि तकब्बुर एक नुक़सानदेह चीज़ है इसलिए ख़ानक़ाहों में इल्म के फ़ायदेमंद पहलू को तो इंसान पर लागू कर दिया जाता है मगर तकब्बुर और ख़ुदपसन्दी को उसके अंदर से निकाल दिया जाता है जिससे इंसान को फ़ायदा हो जाता है। तकब्बुर और ख़ुदपसन्दी का निकलना बहुत मुश्किल है। आज तो लोग एक अच्छा ख़्वाब देखकर अपने मौतक़िद बन जाते हैं और फ़ैसला कर ले हैं कि हम बड़े पहुँचे हुए हैं हालाँकि वह कबीरा गुनाहों कर रहे होते हैं। शैतान उस कबीरा गुनाह के करने की तरफ़ उनकी तवज्जोह नहीं दिलाता बल्कि उन्हें अपना मौतक़िद बना देता है। इंसान अल्लाह वालों की ख़िदमत में आकर इस नुक़सानदेह पहलू से महफ़ूज़ हो जाता है।

ख़ानक़ाहों में क्या तर्बियत दी जाती है

इमाम रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अलफ़सानी रह० ने लिखा है कि इंसान मदनिउत्तबा पैदा किया गया है यानी यह अकेले रहना पसन्द नहीं करता बल्कि मिलजुलकर रहना पसन्द करता है। जब मिलजुल कर रहेंगे तो फिर एक दूसरे के हुक़ूक़ भी लागू होंगे। इसलिए इंसान दूसरों के साथ ऐसी मआशरत रखे कि वह हसद, कीना, तकब्बुर और दीगर अख़्लाक़े रज़ीला से बच जाए। इस मक़सद के लिए उसे तर्बियत की ज़रूरत होती है। याद रखें कि अच्छी सिफ़ात अपने आप इंसान के अंदर आती नहीं और बुरी सिफ़ात ख़ुद-ब-ख़ुद आ जाती हैं। मिसाल के तौर पर अगर आप आज फ़ैसला कर लें कि आज के बाद मुझे झूठ नहीं बोलना तो इसका मतलब यह नहीं कि आज के इस फ़ैसले के बाद आप को

यह चीज़ हासिल हो गई। नहीं बल्कि चूँकि आदत बनी हुई है इसलिए बेअख़्तियार ज़बान से झूठ निकल जाएगा। एक छोटी सी बात बताता हूँ मसलन कोई आदमी फ़ोन पर यह कह दे कि "मैं एक सेकेन्ड में आया।" यह हक़ीक़त में झूठ है लेकिन इंसान इसको ख़ुद नोट नहीं करता। अच्छा अगर वह किसी की निशानदिहीपर नीयत भी कर ले कि आइन्दा मैं नहीं कहूँगा तो वह फिर भी कह बैठेगा क्योंकि इसकी आदत बन चुकी है। इस से साबित हुआ कि जो चीज़ें आदत बन चुकी होती हैं उनको छोड़ना कोई आसान काम नहीं होता। इसलिए उस्ताद की ज़रूरत होती है जो उसे समझाए कि इस वक़्त आप यह ग़लती कर रहे हैं। इसी तर्बियत का नाम "तज़्किया" है। और ख़ानक़ाहों में यही तर्बियत दी जाती है।

सहाबा किराम की तर्बियत

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तर्बियत फ़रमाई और नबी अलैहिस्सलाम ने सहाबा किराम की तर्बियत फ़रमाई। नबी अलैहिस्सलाम के तर्बियत करने के मुख़्तलिफ़ अंदाज़ थे।

- कभी सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से कोई नापसन्दीदा बात सरज़द हो जाती तो नबी अलैहिस्सलाम के चेहरए अनवर पर नागवारी के आसार ज़ाहिर होते थे जिसकी वजह से सहाबा किराम समझ लेते थे।
- कभी नबी अलैहिस्सलाम कोई बात देखते तो ख़ामोशी अख़्तियार फ़रमा लेते थे। आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ामोशी सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए बर्दाश्त करना मुश्किल हो जाती थी।

- बाज़ अवक़ात नबी अलैहिस्सलाम अपनी ज़बान मुबारक से भी सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु की इस्लाह फ़रमाया करते थे।
- कभी ख़ामोश रहकर तर्बियत फ़रमाई और कभी बात बताकर तर्बियत फ़रमाई। एक सहाबी ने कोई सवाल पूछा। उसके बाद फिर सवाल पूछा। आपने फ़रमाया कि तुम मुझसे उस वक़्त तक न पूछो जब तक मैं तुमसे न कहूँ। तुम से पहली क़ौमों पर इसीलिए अज़ाब उतरा कि वे अंबिया किराम से कसरत से सवाल पूछते थे।
- कभी नबी अलैहिस्सलाम ने दरख़्त की टहनी हिलाई और जब पत्ते गिरे तो समझाया कि जो शख़्स नमाज़ पढ़ता है उसके गुनाह इस तरह झड़ जाते हैं जिस तरह पतझड़ के मौसम में दरख़्त के पत्ते झड़ जाते हैं।
- कभी किसी को नहर की मिसाल देकर समझाया कि अगर किसी के घर के सामने नहर हो और वह उसमें पाँच दफ़ा गुस्ल करे तो क्या उसके बदन पर मैल कुचैल रहेगी। सहाबा किराम ने अरज़ किया नहीं। फ़रमाया कि जो शख़्स पाँच वक़्त वुज़ू करता है वह भी गुनाहों की मैल कुचैल से पाक हो जाता है।

उलूमे दीनिया के असरात

अल्लाह तआला ने अपना पैग़ाम अंबिया किराम के दिलों पर नाज़िल फ़रमाया। चुनाँचे इर्शादे बारी तआला है :

﴿فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَىٰ قَلْبِكَ. (البقرة:٩٧)﴾

बेशक! उसने क़ुरआन नाज़िल कर दिया आपके क़ल्ब पर।

तो "वही" का ताल्लुक़ दिल के साथ होता है। अक़्ल के साथ नहीं होता। इसलिए जो उलूम इंसान को क़ल्ब के ज़रिए से मिले होते हैं वे ठोस होते और पक्के होते हैं और जो उलूम इंसान को अक़्ल के ज़रिए से मिलते हैं वह पुख़्ता नहीं होते। एक बात के बाद अक़्ल दूसरी बात सोचती है। फिर तीसरी बात सोचती है। लिहाज़ा इंसान अक़्ल के ऊपर अपनी ज़िंदगी की बुनियाद नहीं बांध सकता।

अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम ने उलूमे दीनिया दूसरे इंसानों को सिखाए। उन्होंने इस पैग़ामे ख़ुदावंदी की वज़ाहत फ़रमाई।

﴿لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ. (النحل:٤٤)﴾

ताकि आप बयान कर दें वह जो कुछ उनकी तरफ़ नाज़िल किया गया।

इसलिए इन उलूम की बुनियाद सदाक़तों और सच्चाईयों पर है जो अल्लाह तआला ने अपने बंदों तक पहुँचाए हैं। इन सच्चाइयों की तालीमात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने वाले लोग हमेशा कामयाब रहते हैं। इन इल्हामी उलूम से फ़ायदा उठाने के लिए इंसान को अपने आपको सुथरा करना पड़ता है ताकि गुनाहों की मैल कुचैल उतर जाए। जब तक इंसान का मन सुथरा न हो उसे ये उलूम फ़ायदा नहीं देते। चुनाँचे जब नबी अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मक़ासिद में से एक मक़सद यह भी था :

﴿وَيُزَكِّيهِمْ (آل عمران:١٦٤)﴾ और आपको उनका सुथरा फ़रमाएंगे।

इसी हुक्म की बिना पर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने सहाबा किराम का तज़्किया फ़रमाया। यह तज़्किया हम में से हर एक के लिए हासिल करना इंतिहाई ज़रूरी है। जब इंसान का

तज़्किया हो जाता है तो फिर ये उलूम इंसान के अंदर अपने असरात छोड़ते हैं।

क़ल्ब के अंदर ईमान बढ़ता है, मुहब्बते इलाहिया बढ़ती है, ख़ौफ़े ख़ुदा बढ़ जाता है और उसका दिल संवर जाता है। ऐसा ही इंसान कामयाब ज़िंदगी गुज़ारता है।

ईमान वालों की दो निशानियाँ

क़ुरआन मजीद की एक आयत में ईमान वालों की दो निशानियाँ बताई गई हैं। अब हम इन निशानियों को अपनी ज़िंदगी में तलाश करें :

पहली निशानी

इर्शादे बारी तआला है :

﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ إِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ (الانفال:٢)﴾

बेशक ईमान वाले बंदे वे हैं जिनके सामने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का तज़्किरा किया जाए तो उनके दिल फड़क उठते हैं।

जैसे महबूब का नाम सुनकर बंदा मुतवज्जेह हो जाता है और उसकी कैफ़ियत बदल जाती है इस तरह मोमिन भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का नाम सुनकर फड़क उठता है—

इक दम भी मुहब्बत छुप न सकी जब तेरा किसी ने नाम लिया

अब हम यह निशानी अपनी ज़िंदगी में तलाश करने की कोशिश करते हैं कि जब हमारे सामने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का नाम लिया जाता है तो क्या हम अपने क़ल्ब में उसकी हरारत महसूस करते हैं? और अगर परवाह नहीं होती तो इसका मतलब यह है कि हमारे अंदर वह कैफ़ियत अभी कामिल दर्जे की पैदा नहीं हुई। यह तयशुदा बात है कि जिस बंदे ने भी कलिमा पढ़ा

उसके दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत ज़रूर है लेकिन इस मुहब्बत को बढ़ाकर हमने शदीदतरीन बनाना है क्योंकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाते हैं :

﴿وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ. (البقرة:١٦٥)﴾ और ईमान वालों को अल्लाह से शदीद मुहब्बत होती है।

दूसरी निशानी

अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا. (الانفال:٢)﴾

और जब उनके सामने क़ुरआन पाक की आयात तिलावत की जाती हैं तो उनका ईमान बढ़ जाता है।

क्या यह कैफ़ियत भी हमें हासिल है कि जब हम क़ुरआन पाक की आयत पढ़ें या सुनें तो हमारे ऊपर भी यह असरात हों?

रहमतों के झुरमुट में रहमत से महरूमी

यह बात बड़े अफ़सोस से कह रहा हूँ कि एक क़ारी साहब अपने हालात बताते हुए कह रहे थे हज़रत! जब मैं बच्चों को पढ़ा रहा था तो ऐन सबक़ सुनने की हालत में मेरी शहवत भरी नज़र एक बच्चे पर पड़ रही थी। आख़िर इसकी क्या वजह है? ऐसा क्यों हो रहा है? हालाँकि अल्लाह तआला तो फ़रमाते हैं कि जहाँ क़ुरआन पढ़ा जाए वहाँ रहमत उतरती है। अब वह बंदा जिसने फ़ज्र से पहले क्लास लेनी शुरू की और फिर फ़ज्र के बाद से इशा तक मुख़्तलिफ़ वक़्फ़ों से बच्चों को अल्लाह का क़ुरआन पढ़ाया, ख़ुद भी पढ़ा, बच्चों से भी सुना और एक वक़्त में दर्जनों बच्चों की क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ें कानों में जाती रहीं तो वह दिन के बारह चौदह घंटे अल्लाह की रहमतों के झुरमुट में बैठा रहा। ऐसे

बंदे का दिल तो बिल्कुल धुल जाना चाहिए था। उस पर नफ़्स व शैतान ने ग़लबा क्यों किया और उस पर क़ुरआन मजीद की तिलावत का असर क्यों न हुआ? हमारे मशाइख़ ने इसका यह जवाब दिया है कि क़ुरआन मजीद की तिलावत के वक़्त अल्लाह की रहमतों के उतरने में तो कोई शक ही नहीं मगर उसका दिल रहमतों को जज़्ब नहीं कर रहा होता।

एक मिसाल से यह बात अच्छी तरह समझ में आ जाएगी। जब बच्चा पैदा होता है तो अगर आप उसको पहले दिन भैंस का दूध पिला दें तो उसका मेदा उसको बरदाश्त नहीं कर सकेगा। उसका पेट ख़राब हो जाएगा और उसे दस्त की तकलीफ़ हो जाएगी। इसलिए बच्चे को या माँ का दूध पिलाया जाए या बकरी का दूध पिलाया जाए। क्योंकि बकरी का दूध बहुत हलका और पतला होता है। इसलिए बच्चा उसे बरदाश्त कर लेगा। और जवान होकर भैंस का एक किलो दूध भी बरदाश्त कर लेगा। क्या मतलब? मतलब यह है कि शुरू में कमज़ोरी थी। इसलिए उसे हलकी फुलकी चीज़ की ज़रूरत थी। जब हलकी ग़िज़ा मिलती रही और वह परवरिश पाता रहा तो फिर उसके अंदर ताक़त बढ़ती रही यहाँ तक कि उसके अंदर गाए का दूध जज़्ब करने की सलाहियत पैदा हो गई। फिर जब बढ़ते बढ़ते वह जवान हो गया तो उसके अंदर भैंस का दूध बरदाश्त करने की सलाहियत पैदा हो गई। बिल्कुल इसी तरह क़ुरआन मजीद के अनवारात सक़ील हैं अल्लाह तआला फ़रमाते हैं

﴿انا سنلقی علیک قولا ثقیلا.(المزمل ٥)﴾

अन्क़रीब हम आप पर एक भारी बात नाज़िल करेंगे।

इसलिए इसके अनवारात को बरदाश्त कर लेना हर बंदे के

बस की बात नहीं होती। हमारे मशाइख़ फ़रमाते हैं कि ज़िक्रुल्लाह के अनवरात बहुत लतीफ़ होते हैं। लिहाज़ा जो बंदा अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है तो उसका क़ल्ब गुनाहों के मैल की वजह से जितना भी गंदा हो ज़िक्र के अनवारात को क़ुबूल कर लेता है। इस ज़िक्रुल्लाह से उसके क़ल्ब की नूरानियत बढ़ती रहती है यहाँ तक कि एक वक़्त ऐसा आता है कि उसका दिल ला इलाहा इल्लल्लाह के अनवारात क़ुबूल करने के क़ाबिल हो जाता है। ला इलाहा इल्लल्लाह का ज़िक्र करते करते इंसान की एक ऐसी कैफ़ियत बन जाती है कि जब वह क़ुरआन मजीद के अनवारात का भी फ़ैज़ पाना शुरू कर देता है। अब उसके दिल की रूहानियत इतनी बन चुकी होती है कि यह क़ुरआन सुनकर फड़क उठता है।

सूरः ज़ुलज़ाल सुनने की तमन्ना

हमारे मशाइख़ के कानों में जब क़ुरआन मजीद की तिलावत की आवाज़ आ जाती थी तो उनकी कैफ़ियत बदल जाती थी। वह आयत सुनकर फड़क उठते थे। कई तो ऐसे हज़रात भी थे कि वह ये दुआएं मांगते थे कि ऐ अल्लाह! हम सूरः ज़िलज़ाल पूरी सुन सकें। अभी शुरू की जाती थी तो चंद आयात के बाद उन पर बेहोशी तारी हो जाती। वे ग़श खाकर गिर जाते थे और कई दिनों के बाद उन्हें होश आता था।

इतना ख़ौफ़े ख़ुदा

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने एक मर्तबा तहज्जुद की नमाज़ में एक आयत पढ़ी :

﴿إِنَّ لَدَيْنَا أَنكَالًا وَجَحِيمًا ۝ وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا﴾ (المزمل:١٢،١٣)

अलबत्ता हमारे पास बेड़ियाँ हैं और आग का ढेर और खाना गले में अटकने वाला और अज़ाब दर्दनाक।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े थे। उन्होंने आयत सुनी और उसी वक़्त गिरकर अपनी जान दे दी। उन हज़रात को इतना ख़ौफ़े ख़ुदा था। सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा पूरी रात यह आयत पढ़ती रहीं :

﴿وَبَدَا لَهُمْ مِنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ۝﴾ (الزمر:٤٧)

और नज़र आए उनको अल्लाह की तरफ़ से जो ख़्याल भी न रखते थे।

वह हज़रात क़ुरआन मजीद के अनवारात से फ़ैज़ पाते थे। फिर उनके आँसू जारी हो जाते थे। और क़ुरआन मजीद उनकी तस्दीक़ कर रहा है। फ़रमाया :

وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا
عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ. (المائدہ:٨٣)

और जब सुनते हैं उसको जो उतरा रसूल पर तो देखे उनकी आँखें उबलती हैं आँसुओं से इस बात से कि उन्होंने पहचान लिया हक़ बात को।

क्या आज भी हमारी यह कैफ़ियत होती है? अगर यह हमारी कैफ़ियत नहीं है तो यह इस बात की निशानदिही है कि हमें अभी मेहनत करने की ज़रूरत है। अगर क़ुरआन पढ़ते सुनते हुए हमारे अंदर से शहवत ज़ाएल नहीं हो रहे हैं तो यह इस बात की अलामत है कि हमें भी अपने दिल को साफ़ करने की ज़रूरत है। किसी रूहानी डाक्टर से अपना चैकअप करवाने की ज़रूरत है। अगर नहीं करवाएंगे तो उन नजासतों को अपने साथ क़ब्र में लेकर जाएंगे।

हदीस जिब्रील की वज़ाहत

सैय्यदना उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हदीसे जिब्रील के रावी हैं। वह फ़रमाते हैं कि एक साहब नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में आए। उनके कपड़े सफ़ेद थे और बाल काले। चेहरा तर व ताज़ा था। वह आकर नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में इस तरह बैठ गए कि उन्होंने अपने घुटने नबी अलैहिस्सलाम के घुटनों के साथ अत्तहियात की शक्ल में मिला दिए। उन्होंने आकर नबी अलैहिस्सलाम से सवाल पूछे :

- पहले पूछा ﴿ما الايمان﴾ ईमान क्या है? नबी अलैहिस्सलाम ने उसका जवाब दे दिया। फिर वह कहने लगे, ﴿صدقت﴾ कि ऐ नबी अलैहिस्सलाम! आपने सच फ़रमाया। हमें हैरानी हुई कि एक तो सवाल पूछ रहा है और फिर जवाब मिलने पर जवाब की तस्दीक़ भी कर रहा है। जैसे पहले ही जवाब का पता है।
- फिर दूसरा सवाल पूछा ﴿ما الاسلام﴾ इस्लाम क्या है? नबी अलैहिस्सलाम ने उसका भी जवाब दिया। फिर वह कहने लगा कि आपने सच फ़रमाया। हमें और हैरानी हुई।
- फिर तीसरा सवाल पूछा ﴿ما الاحسان﴾ एहसान की हक़ीक़त क्या है? नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿اَنْ تَعْبُدَاللّٰهَ كَاَنَّكَ تَرَاهُ فَاِنْ لَّمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَاِنَّهٗ يَرَاكَ.﴾

यह कि तू अल्लाह की इबादत ऐसे कर जैसे तू उसे देख रहा है और अगर तू ऐसा नहीं देख सकता तो यों समझ कि अल्लाह तुम्हें देख रहा है।

उन्होंने इस जवाब की भी तस्दीक़ की और चले गए। सहाबा किराम उनकी गुफ़्तगू से हैरान थे कि यह बंदा क़रीब का ही

लगता है क्योंकि उसके कपड़ों और बदन के आसार दूर से आने वाले के नहीं थे मगर चूँकि हम में से उसे कोई जानता नहीं इसलिए क़रीबी कैसा? और अगर यह दूर से आया है तो इसके कपड़ों और चेहरे पर गर्द के निशान क्यों नहीं? वह यही सोच रहे थे कि नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿هٰذَا جِبْرَئِيْلُ اَتَاكُمْ يُعَلِّمُكُمْ دِيْنَكُمْ﴾ यह जिब्राईल अलैहिस्सलाम थे यह इसलिए आए थे कि यह तुम्हें तुम्हारा दीन सिखाएं।

ग़ौर कीजिए कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम आकर तीन सवाल पूछते हैं और फिर नबी अलैहिस्सलाम इर्शाद फ़रमाते हैं कि जिब्राइल अलैहिस्सलाम तुम्हें तुम्हारा दीन सिखाने के लिए आए थे। अब इस हदीस में चंद बातें क़ाबिले तवज्जोह हैं :

पहली बात तो यह कि जिब्राइल अलैहिस्सलाम अपनी मर्ज़ी से नहीं आए होंगे क्योंकि फ़रिश्तों की सिफ़्त है :

﴿لَا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ٥ (التحريم:٦)﴾

अल्लाह उनको जो हुक्म करता है उसकी नाफ़रमानी नहीं करते। और वही कुछ करते हैं जिसका उनको हुक्म दिया जाता है।

मालूम हुआ कि हज़रत जिब्राइल अलैहिस्सलाम ख़ुद नहीं आए थे बल्कि उन्हें परवरदिगार ने भेजा था।

दूसरी बात यह कि यह सवाल भी हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने ख़ुद नहीं पूछे बल्कि ख़ुद अल्लाह तआला ने सवाल पुछवाए। परवरदिगार आलम ने पसन्द किया कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को इन बातों का पता चल जाए। इसलिए अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को एक ज़रिया बना दिया।

तीसरी बात यह कि बनी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि यह जिब्राइल अलैहिस्सलाम तुम्हें तुम्हारा दीन सिखाने के लिए आए थे। इसका मतलब यह है कि ये तीनों सवाल दीन हैं। इससे मालूम हुआ कि ﴿ما الاحسان﴾ (एहसान की हक़ीक़त क्या है?) वाली कैफ़ियत का हासिल करना भी दीन है। यह दीन से बाहर की कोई चीज़ नहीं है। जो उसे दीन से बाहर की चीज़ समझेगा उसका दीन अधूरा रह जाएगा। दीन उस वक़्त कामिल होगा जब ईमान, इस्लाम और एहसान तीनों की कैफ़ियतें हासिल होंगी।

नमाज़ों पर मेहनत करने की ज़रूरत

अब आप अपनी नमाज़ों पर ग़ौर कर लीजिए। हदीस पाक में दो कैफ़ियतें बयान की गई हैं कि या तो इस तरह इबादत करो कि जैसे तुम अल्लाह तआला को देखते हो या फिर यों करो कि जैसे अल्लाह तआला तुम्हें देखते हैं। अगर हमारी नमाज़ में न तो पहली कैफ़ियत है और न दूसरी कैफ़ियत है तो फिर हम कैसी नमाज़ें पढ़ते फिर रहे हैं। मालूम हुआ कि हमारी नमाज़ें न पहली हालत वाली हैं और न ही दूसरी हालत वाली हैं। फिर तीसरी हालत वाली नमाज़ें कैसे क़बूल होंगी जो दुनिया के ख़्यालात से भरी हुई होंगी। हमें अपनी नमाज़ों पर मेहनत करने की ज़रूरत है। या तो हमें मुशाहिदे की कैफ़ियत हासिल हो जाए और अगर वह हासिल नहीं होती तो कम से कम मुराक़बे की कैफ़ियत ही हासिल हो जाए। इसीलिए हमारे असलाफ़ अपनी नमाज़ों पर मेहनत क्या करते थे।

नमाज़ में मासिवा की मुदाख़लत कैसे दूर हुई?

शाह इस्माईल शहीद साहब रह० ने एक मर्तबा सौ रकअतें

सिर्फ़ इसलिए पढ़ीं ताकि मासिवा के ख़्याल के बग़ैर अल्लाह की नमाज़ अदा कर सकें मगर उन्हें हर दफ़ा कोई न कोई ख़्याल आ जाता। सौ रकअतें अदा करने के बाद बड़े फ़िक्रमंद हुए कि मैंने सौ नफ़्लें भी पढ़े और मैं एक दो गाना भी ऐसा न पढ़ सका जिसमें बाहर का कोई ख़्याल न आया हो। चुनाँचे सैय्यद अहमद शहीद साहब रह० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, हज़रत! मैंने सौ रकअतें इस नीयत से पढ़ीं कि मुझे कम से कम एक दोगाना ऐसा नसीब हो जाए जिसमें किसी ग़ैर के बारे में कोई ख़्याल न आए मगर मुझे हर दफ़ा कोई न कोई ख़्याल आता रहा। अब मैं परेशान हूँ कि मेरी नमाज़ नमाज़ कैसे बनेगी। शाह साहब ने फ़रमाया, अच्छा तुम तहज्जुद में हमारे साथ खड़े होकर नमाज़ पढ़ लेना। चुनाँचे शाह इस्माईल साहब शहीद रह० सैय्यद अहमद शहीद रह० के मुसल्ले के क़रीब आकर तहज्जुद की नीयत बांध ली। उनकी सोहबत का यह असर था कि अभी पहली रकअत का सज्दा अदा नहीं किया था कि उनकी तबियत में रिक़्क़त पैदा हो गई। फिर वह इतना रोए कि उनके लिए नमाज़ का सलाम फेरना मुश्किल हो गया। सौ रकअतें अपने तौर पर पढ़ीं तो कुछ न बना और तबीब के पास आकर दो रकअत की नीयत बांधी तो ऐसा गिरया तारी हुआ कि सलाम फेरना मुश्किल हो गया तो यह हज़रात ज़िंदगी के आमाल को बनाना सिखाते हैं, सुब्हानअल्लाह।

कैफ़ियाते नबवी के वारिस

उलमाए किराम उलूमे नबवी के वारिस हैं और मशाइख़ हज़रात कैफ़ियाते नबवी के वारिस हैं। मसलन अगर किसी ने नबी अलैहिस्सलाम की तवक्कुल देखनी है तो वह किताबों से थोड़ा

मिलेगी। उसको मशाइख़ की ज़िंदगी में देखना पड़ेगा। अगरे ज़ोहद देखना हो, मख़्लूक़ से अलग-थलग रहने को देखना हो, अगर मुहब्बते इलाहिया की कैफ़ियत को देखना हो, अगर नबी अलैहिस्सलाम के क़ल्बे अतहर की कैफ़ियात का कोई नमूना देखना चाहेगा तो उसे मशाइख़ की सोहबत अख़्तियार करनी पड़ेगी। कुछ ऐसे भी ख़ुशनसीब हज़रात होते हैं जो उलूम के भी वारिस होते हैं और कैफ़ियात के भी वारिस होते हैं। अल्लाह तआला उनको हामिल कामिल बना देते हैं। हमें ऐसा बनना है ताकि हमें भी नबी अलैहिस्सलाम के नक़्शे क़दम पर चलते हुए इनाब इलल्लाह की कैफ़ियत नसीब हो जाए। यह मेहनत करनी हमारे लिए ज़रूरी है। हम जो मदरसों में आए तो हमारा असल मक़सद यही है। हम ने यहाँ सिर्फ़ अल्फ़ाज पढ़कर नहीं जाना। फ़क़त इल्म पर मग़फ़िरत होती तो फिर शैतान की मग़फ़िरत हम से पहले हो जाती। इसलिए कि वह हम से बड़ा आलिम है। मालूम हुआ कि फ़क़त इल्म की बात नहीं है। इस इल्म पर अमल की बात है और अमल पर इख़्लास की बात है। तब जाकर इल्म का असल मक़सद हासिल होता है। इसका बेहतर तरीक़ा यह है कि जब हम उस्तादों के सामने पढ़ने बैठें तो इस नीयत से बैठें कि हमने जो कुछ पढ़ना है उस पर इख़्लास के साथ अमल करना है। हम जो कुछ आज सुनेंगे उस पर अमल करेंगे। यह नहीं कि हम सारा इल्म पढ़कर आलिम बन लें और फिर इकठ्ठा अमल करें। अगर यह नीयत कर लेंगे तो शैतान के बहकावे में आ जाएंगे और फिर शेतान अमल की तौफ़ीक़ नहीं होने देगा।

इल्म अमल की नीयत से हासिल किया जाए

किसी शख़्स ने हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब

नानौतवी रह० से सवाल पूछा, हज़रत! दीन की जो किताबें आपने पढ़ीं वही किताबें आप के दूसरे साथियों ने भी पढ़ी लेकिन अल्लाह तआला ने जो मर्तबा आपको दिया है वह किसी और को नहीं दिया, इसकी क्या वजह है? हज़रत मौला मुहम्मद क़ासिम साहब रह० ने अजीब जवाब दिया कि मेरे साथियों ने क़ुरआन मजीद को इस नीयत से पढ़ा कि हम मआरिफ़े क़ुरआन को जान लें और हक़ाइक़ क़ुरआन मजीद से वाक़िफ़ हो जाएं। इसलिए उनको वह हक़ाइक़ तो मिल गए मगर वह नेमत न मिली जो अल्लाह तआला ने मुझे अता कर दी। उसने पूछा हज़रत आपको यह नेमत कैसे मिली? फ़रमाने लगे कि मैंने जब भी क़ुरआन मजीद को पढ़ा, हमेशा इस नीयत से पढ़ा कि ऐ अल्लाह! तेरा ग़ुलाम हाज़िर है, तेरा हुक्म जानना चाहता है कि जिसको यह अपनी ज़िंदगी में अमल में ले आए, सुब्हानअल्लाह। यही चीज़ा सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में थी। सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ढाई साल के अंदर सूरः बक़रा मुकम्मल की हालाँकि अरबी ज़बान तो उनकी मादरी ज़बान थी। इसलिए उनको तो सर्फ़ व नहू की ज़रूरत ही नहीं थी। फिर ढाई साल कैसे लगे? मालूम हुआ कि वे हज़रात एक-एक आयत पढ़ते थे और उस परअमल करते थे। इधर उनकी सूरत मुकममल होती थी और उधर उनका अमल उस सूरत पर मुकम्मल होता था। क्या कभी हमने इस नीयत से क़ुरआन मजीद को खोला? इस मेहनत को करना चाहिए। इस मेहनत को किए बग़ैर वह कमाल हासिल नहीं हो सकेगा जो हमारे असलाफ़ को हासिल था। ज़िंदगी के अंदर ये नेमतें हासिल करने के लिए मेहनत करना, तज़्किया और एहसान की मेहनत कहलाता है।

जूतियाँ सीधी करने से तकब्बुर का ख़ात्मा

क़ारी मुहम्मद तैय्यब साहब रह० बहुत हसीन व ज़मील आदमी थे। उनकी तबियत में नफ़ासत भी थी। वह अच्छे और साफ़ कपड़े पहनते थे। देखने वाले हैरान होकर कहते थे :

﴿مَا هٰذَا بَشَرًا ط اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ﴾ (يوسف:٣١)

यह तो कोई इंसान नहीं बल्कि मौज़्ज़िज़ फ़रिश्ता है।

वह अपना वाक़िआ ख़ुद लिखते हैं कि मैं छोटी उम्र में ही मोहतमिम बन गया था। छोटी उम्र और मोहतमिम। इसकी वजह से उनमें कुछ ख़ुदपसन्दी सी आ गई थी। यह मोहतमिम का लफ़्ज़ हम से बना। यह हम अरबी ज़बान का है, उर्दू का नहीं। उर्दू के हम का मतलब होता है "हम ही हम हैं" और अरबी के "हम" का मतलब "ग़म" होता है। चूँकि उनकी उम्र छोटी थी इसलिए उनमें ग़म वाले हम के बजाए "हम ही हम" वाला हम था।

उनकी बैअत के निस्बत हज़रत अक़्दस थानवी रह० के साथ थी। जब उन्होंने महसूस किया कि मेरे अंदर ख़ुद पसन्दी आ गई है तो उन्होंने हज़रत अक़्दस थानवी रह० को ख़त लिखा कि हज़रत! मैं अपने अंदर यह चीज़ महसूस करता हूँ। हज़रत रह० ने फ़रमाया, सब कुछ छोड़कर हमारे पास आ जाओ। चुनाँचे उन्होंने एहतिमाम को छोड़ा और हज़रत के पास आ गए। हज़रत रह० ने उनके लिए इलाज तजवीज़ फ़रमाया, देखो जो समझदार तबीब होता है वह बंदे की बीमारी के मुताबिक़ दवा देता है। उन्होंने उनके ज़िम्मे यह ड्यूटी लगाई कि ख़ानक़ाह में जो लोग आते हैं वे अपने जूते उतारकर मस्जिद में दाख़िल होते हैं। आपने उनके जूतों को सीधा करना है। अब नौजवान और इतने अख़्तियारात के मालिक और इतने इल्म वाले। उनको जूते सीधे करने पर लगा

दिया। शुरू में तबियत की नागवारी तो महसूस हुई मगर शेख़ के हुक्म पर जूते सीधे करनें शुरू कर दिए।

हज़रत थानवी रह० ने उन पर नज़र रखी कि कैसे जूते सीधे करते हैं। एक मर्तबा हज़रत ने देखा कि जो नए नए जूते हैं उनको बिल्कुल सीधा करके रखते हैं और जो गंदे और पुराने हैं उनको बस थोड़ा सा हाथ लगाते हैं। हज़रत समझ गए कि अभी अंदर से तकब्बुर नहीं निकला। हज़रत थानवी रह० ने फ़रमाया कि पुराने जूतों को पहले ठीक करो। फ़रमाते हैं कि बस हज़रत का यह हुक्म होना ही था कि मेरे अंदर से उजब और तकब्बुर सब कुछ निकल गया। चंद दिन जूतियाँ सीधी करने ने मेरे मन के अंदर से तकब्बुर को बिल्कुल ख़त्म कर दिया।

तकब्बुर एक एटमी गुनाह है

यह लफ़्ज़ जिसका माद्दा काफ़, बे, रे यह बड़ी बुरी बीमारी है। हदीस पाक में फ़रमाया :

﴿لَايَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِيْ قَلْبِهٖ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِّنْ كِبْرٍ.﴾

वह आदमी जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता जिसके दिल में ज़र्रे के बराबर भी तकब्बुर होगा।

मिस्क़ाला ज़र्राः के अल्फ़ाज़ बता रहे हैं कि तकब्बुर एक एटमी गुनाह है। जैसे लोग एटमी अस्लहे से बड़ा डरते हैं। इसी तरह इस गुनाह से भी इंसान को बचते रहना चाहिए क्योंकि जिस तरह एटमी अस्लहा बहुत ज़्यादा तबाही फैलाता है इसी तरह तकब्बुर भी इंसान को इतना नुक़सान देता है कि उसका सारा किया कराया तबाह करके रख देता है। इसलिए मशाइख़ उस पर मेहनत करते हैं ताकि इंसान के अंदर से यह बीमारी निकल जाए।

बड़े-बड़े मशाइख़ को अपने तर्बियत की फ़िक्र

बड़े-बड़े मशाइख़ ने अपने आपको तर्बियत के लिए पेश किया हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान कामिलपुरी रह० मज़ाहिर उलूम के शेख़ुलहदीस थे। वहाँ वह बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाते थे। बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाने में उनकी इतनी शोहरत थी कि लोग हज़ारों मील दूर से उनके पास बुख़ारी शरीफ़ पढ़ने के लिए मज़ाहिर उलूम में जाते थे। ऐन उसी वक़्त जब वह बुख़ारी शरीफ़ के उस्ताद थे। उन्होंने हज़रत अक़्दस थानवी रह० को ख़त लिखा और अपने आपको बैअत के लिए पेश फ़रमा दिया। आख़िर कोई नेअमत तो थी जिसकी तलाश में उनको भी अपने आपको पेश करना पड़ा।

सैय्यद सुलेमान नदवी रह० बहुत बड़े अरबीदान थे लेकिन वह भी हज़रत अक़्दस थानवी रह० के दस्ते अक़्दस पर बैअत हुए।

हज़रत मुफ़्ती महमूद हसन रह० दारुल उलूम देवबंद से पढ़ा और दारुल उलूम देवबंद ही में पढ़ाने लग गए। मुफ़्ती और उस्ताद हदीस थे मगर महसूस करते थे कि जो कैफ़ियत अंदर होनी चाहिएं वह नहीं हैं। चुनाँचे इसी फ़िक्र के साथ हज़रत अक़्दस थानवी रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उनसे उन्होंने बैअत की और हज़रत के बड़े ख़लीफ़ाओं में हुए।

ख़ुद हज़रत अक़्दस थानवी रह० की सैंकड़ों किताबें हैं। उनकी ये किताबें इल्मी मक़ाम रखती हैं। हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० अपने शगिर्दों को मना फ़रमाया करते थे कि उर्दू की किताबें मत पढ़ा करो क्योंकि उनमें इल्म नहीं होता बल्कि अरबीके असल माअख़ज़ की तरफ़ रुजू किया करो। एक मर्तबा हज़रत अक़्दस थानवी रह० की तफ़्सीर बयानुल क़ुरआन हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० की नज़र से गुज़री तो आकर

दर्स में तुलबा को फ़रमाया कि मैं अब तक तुम्हें उर्दू ज़बान में लिखी हुई किताबों से मना करता था क्योंकि उनमें इतना इल्म नहीं होता बल्कि असल माअख़ज़ और मराजेअ की तरफ़ रुजू किया करो लेकिन मैंने जब से तफ़्सीर बयानुल क़ुरआन का मुताला किया है तब से पता चला है कि उर्दू ज़बान में भी इल्म मौजूद है। इन किताबों में ऐसा इल्म था कि जिसकी तस्दीक़ हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० ने भी फ़रमा दी। हज़रत अक़्दस रह० इतने कमालात के बावजूद हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० की ख़िदमत में वह कैफ़ियात और वारदात हासिल करने के लिए गए जिनसे इंसान के अंदर ईमान बढ़ता है और उसके दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत ठाठें मारती है। इसी का नाम तर्बियत है।

अगर किसी को नाज़ है...

याद रखिए अगर किसी को फ़लसफ़ा व मंतिक़ पर नाज़ है तो वह हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़िंदगी को देखे।

अगर किसी को अपनी क़ुव्वते हाफ़िज़ा पर नाज़ है तो वह हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़िंदगी को देखे।

अगर किसी को अपनी फ़ुक़ाहत पर नाज़ है तो वह हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़िंदगी को देखे।

अगर किसी को अपनी इक़ामते दीन की कोशिशों पर नाज़ है तो वह हज़रत शेख़ुलहिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़िंदगी को देखे।

अगर किसी को तबलीगे दीन पर नाज़ है तो वह हज़रत मौलाना इलयास साहब रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़िंदगी को देखे।

अगर किसी को अपनी तहरीर पर नाज़ है तो वह हज़रत अक़्दस थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़िंदगी को देखे।

अगर किसी को अपनी तक़रीर पर नाज़ हो तो वह अमीरे शरिअत हज़रत अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० की ज़िंदगी को देखे।

अगर किस को अरबी दानी पर नाज़ है तो वह सैय्यद सुलेमान नदवी रह० की ज़िंदगी को देखे।

अगर किसी को अपनी तदरीस पर नाज़ है तो वह हज़रत मदनी रह० की ज़िंदगी को देखे कि उन्होंने अठ्ठारह साल तक मदीना मुनव्वरा में दर्से हदीस दिया और आख़िर तर्बियत पाने के लिए हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िदमत में हाज़िरह हुए।

ये जितने अकाबिर के नाम लिए, वे अपने-अपने फ़न में मशहूर थे। मगर उन्होंने तर्बियत पाने के लिए मशाइख़ से बैअत की और बाक़ायदा उनकी सोहबत में वक़्त गुज़ारा। अगर इन मशाइख़ को मशाइख़ की सोहबत में वक़्त गुज़ारना पड़ा तो अगर हम भी इन नेमतों को चाहते हैं तो हमें भी अपने आप पर मेहनत के लिए कुछ वक़्त गुज़ारना पड़ेगा।

अल्लाह वाले बन जाओ

उलमा और तुलबा को ख़ासतौर पर इन मशाइख़ की सोहबत में रहकर तर्बियत पानी चाहिए क्योंकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿كُونُوا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنتُمْ تَدْرُسُونَ٥(ال عمران:٧٩)﴾

तुम बन जाओ रब वाले क्योंकि तुम किताब की तालीम दिए हुए हो और दर्स व तदरीस का काम करते हो।

यह "कूनू" अम्र का सेग़ा है। गोया अल्लाह तआला हुक्मन इर्शाद फ़रमा रहे हैं कि ऐ क़ुरआन पढ़ने वालो! ऐ मेरी किताब के वारिस बनने वालो! तुम अल्लाह वाले बन जाओ। मालूम हुआ कि दर्स व तदरीस का काम करने वालों को बहुत ज़्यादा इसकी मेहनत करने की ज़रूरत है क्योंकि परवरदिगारे आलम ने उनको मुख़ातिब करके हुक्म दिया है कि तुम अल्लाह वाले बन जाओ। इसलिए हमें चाहिए कि हम अपने अंदर इख़्लास पैदा कर लें और हम अपने इल्म का रंग अपने ऊपर चढ़ा लें ताकि जो कुछ हमने पढ़ा है वह चीज़ हमारे ऊपर अपना रंग डाल दे और हम अल्लाह के रंग में रंगे जाएं। हमें चाहिए कि हम हर मामले में अल्लाह की तरफ़ रुजू करें और यह रुजू बेअख़्तियार होना चाहिए। जैसे छोटे बच्चे को माँ मारे तो वह "अम्मा" पुकारता है, अगर उसे कोई ग़ैर मारे तो वह "अम्मा" पुकारता है। अगर उसने कोई चीज़ मांगनी हो तो वह "अम्मा" पुकारता है। अगर उससे कोई चीज़ छीने तो वह "अम्मा" पुकारता है। अगर वह गिर पड़े तो "अम्मा" पुकारता है। जैसे इस बच्चे के ज़हन में माँ के साथ ऐसा ताल्लुक़ है कि वह हर ग़म और ख़ुशी में अपनी माँ को याद करता है मोमिन को चाहिए कि उसका अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के साथ भी ऐसा ताल्लुक़ हो कि वह हर ख़ुशी और ग़मी में हर क़दम पर और हर मोड़ पर उसकी ज़बान पर अल्लाह का ज़िक्र जारी हो और वह हर वक़्त अपने रब की तरफ़ रुजू कर रहा हो।

नूर की किरनें

हज़रत शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि

ने अपनी किताब में लिखा है कि मैं हज पर गया। जब मैं मदीना मुनव्वरा में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में सलाम पेश करने के लिए मवाजेहा शरीफ़ पर हाज़िर हुआ तो मैंने खुद देखा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कल्बे अतहर से एक नूर आ रहा था और उस नूर की किरनें बारीक-बारीक सुनहरी धागों की शक्ल में उन लोगों के दिलों पर पड़ रही थीं जो हदीसे पाक की ख़िदमत करते थे, सुब्हानअल्लाह। चूँकि ये नबी अलैहिस्सलाम के वारिस हैं इसलिए थोड़ी मेहनत पर भी इनकी ज़्यादा क़द्र होती है। और उन्हें जल्दी क़ुबूलियत नसीब हो जाती है।

नबी अलैहिस्सलाम की दावत

साईं तवक्कुल शाह अंबालवी रह० का दस्तरख़्वान बड़ा वसी होता था। वह अल्लाह की रज़ा के लिए अल्लाह की मख़्लूक़ को खाना खिलाया करते थे। उनकी तरफ़ से ऐलाने आम था कि जो आए खाना खाए, लिहाज़ा ग़रीब, मुक़ीम, मिस्कीन और नादार लोग आते थे और खाना खाकर चले जाते थे। उनको एक बार ख़्वाब में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया : तवक्कुल शाह! तुम अल्लाह तआला की दावत तो रोज़ाना करते हो लेकिन तुमने हमारी दावत कभी नहीं की। इसके बाद उनकी आँख खुल गई। वह बड़े परेशान हुए कि इस ख़्वाब का क्या मतलब है? इसलिए उन्होंने रो रो कर अल्लाह तआला से दुआएं मांगी कि परवरदिगार आलम! इस ख़्वाब की हक़ीक़त को वाज़ेह फ़रमा दे। आख़िर उनके दिल में डाला गया कि तुम अल्लाह की मख़्लूक़ को अल्लाह के लिए हर रोज़ खिलाते हो मगर तुमने मेरे

नबी के वारिसों यानी उलमा व तलबा और क़ारियों को अपने दस्तरख़्वान पर एहतिमाम के साथ कभी नहीं बुलाया।

इसलिए फ़रमाया कि तुमने हमारी दावत कभी नहीं की लिहाज़ा उन्होंने शहर भर के उलमा, तलबा और क़ारियों की दावत की और फिर यह समझे कि गोया मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत फ़रमा दी।

तालिब इल्म की दुआ की बरकरत

सुलतान महमूद ग़ज़नवी रह० के दिल में तीन बातें खटकती थीं :

1. एक बात यह दिल में खटकती थी कि मैं सुबकतगीन का बेटा हूँ और सुबकतगीन तो पहले बादशाह नहीं था बल्कि एक फ़ौजी था, फिर बादशाह बना। क्या मेरी निस्बत सही है या कुछ और है।
2. दूसरी बात यह दिल में खटकती थी कि दीन के मुख़्तलिफ़ शोबे हैं लेकिन सबसे अफ़ज़ल और बेहतर शोबा कौना सा है यानी उम्मत में जो सबसे आला लोग हैं वे कौन हैं?
3. तीसरी बात यह दिल को खटकती थी कि मुझे बड़े अरसे से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब नहीं हुई। इसलिए मुझे ज़ियारत नसीब हो जाए।

एक बार वह गली में राउंड कर रहे थे। उन्होंने बाहर आकर एक तालिब इल्म को रोशनी में पढ़ते हुए देखा। पूछा तुम मस्जिद में क्यों नहीं पढ़ते? उसने कहा, मस्जिद में रोशनी का इन्तिज़ाम नहीं है। यह एक आदमी के घर के बाहर रोशनी जल रही है इसलिए मैं यहाँ बैठकर पढ़ाई कर रहा हूँ। उन्होंने कहा, बच्चे तुम जाओ, आज के बाद मैं तुम्हारे लिए रोशनी का इन्तिज़ाम करा

दूंगा। जब तालिब इल्म ने रोशनी देखी तो उसने दुआ कर दी कि ऐ अल्लाह! इस बंदे की मुरादें पूरी कर दे। लिहाज़ा जब सुलतान महमूद ग़ज़नवी रह० घर आए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई और आप ने फ़रमाया : "ऐ सुबकतगीन के बेटे! तूने मेर वारिस की इज़्ज़त की अल्लाह तआला तुझे दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़तें नसीब फ़रमाए, सुब्हानअल्लाह। इससे तालिब इल्म की दुआ की बरकत से सुलतान महमूद ग़ज़नवी रह० की तीनों मुरादें पूरी हो गयीं। एक तो उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई, दूसरा उनके दिल में अपने नसब के बारे में जो छोटी-मोटी बातें थीं वे ख़त्म हो गयीं, तीसरे उनको यह पता चल गया कि उलमा किराम ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वारिस हैं और यही लोग दूसरों से अफ़ज़ल हैं।

हर हफ़्ते नबी अलैहिस्सलाम की ज़ियारत

हमारे एक ताल्लुक़ वाले दोस्त हैं। वह अल्लाह का शुक्र है हाफ़िज़ हदीस भी हैं। एक बार अपने असबाक़ और अपनी कैफ़ियात के बारे में बैठें बता रहे थे। मैंने उनसे पूछा कि आप बुख़ारी शरीफ़ के हाफ़िज़ हैं। क्या आपने उन अहादीसे मुबारका की बरकात का भी मुशाहिदा किया है? वह फ़रमाने लगे हज़रत! मैं इस बात पर हैरान हूँ कि हिफ़्ज़ हदीस के बाद मेरे ऊपर अल्लाह का ऐसा फ़ज़ल हुआ कि मेरा कोई हफ़्ता भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत से ख़ाली नहीं गुज़रता। कम से कम एक बार और कभी-कभी एक से ज़्यादा बार मुझे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़ियारत होती रहती है। अल्लाह का शुक्र कि आज भी वह इस वक़्त दुनिया में ज़िन्दा हैं। हदीसे

पाक की मुहब्बत ने उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ऐसा क़ुर्ब अता कर दिया कि उन्हें हर हफ़्ते में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत होती रहती है, सुब्हानअल्लाह।

उनका रोना पसन्द आ गया

हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० को हदीस पाक की ख़िदमत की वजह से बहुत ज़्यादा नबी अलैहिस्सलाम की ज़ियारत होती थी। एक मर्तबा कुछ हफ़्तों के लिए उनको ज़ियारत होना बंद हो गई तो हज़रत कश्मीरी रह० को ग़म की वजह से दस्त लग गए। किसी ने वजह पूछी तो कि कहीं मुझसे कोई ऐसी ग़लती और कोताही न हो गई जिसकी वजह से सज़ा के तौर पर इस नेमत से महरूम कर दिया गया हूँ। चुनाँचे ख़ूब रोए। अल्लाह तआला को उनका रोना पसन्द आ गया और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस नेमत को वापस लौटा दिया, सुब्हानअल्लाह। तो यह उलमा और तुलबा ज़रा आगे क़दम बढ़ाते हैं तो फिर उनके ऊपर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ख़ास रहमत होती है।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की क़द्र

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु जब मुसलमान हुए तो उस वक़्त बुढ़ापे की उम्र शुरू हो चुकी थी और अक्सर भूल जाया करते थे। लिहाज़ा नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! मैं आपकी बातें सुनता हूँ मगर भूल जाता हूँ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया : अपनी चादर फैलाओ। उन्होंने चादर फैला दी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दोनों मुबारक हाथों से ऐसा इशारा फ़रमाया जैसे किसी गठरी में कुछ डाल रहे हों। फिर

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अबूहुरैरह! अब चादर की गठरी बांध लो। लिहाज़ा उन्होंने गठरी बांध ली। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको ऐसा हाफ़्ज़ा दिया कि उसके बाद वह कोई बात नहीं भूलते थे। सुब्हानल्लाह इल्म के हासिल करने के लिए उन्होंने क़दम बढ़ाया और उस्ताद ने दुआएं दीं जिसकी बरकत से अल्लाह तआला ने यूँ क़ुबूलियत अता फ़रमाई।

हज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी साहब रह० फ़रमाते थे कि अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु 'मौलवी' क़िस्म के सहाबी थे। वह हदीसें इकठ्ठी करने की फ़िक्र में लगे रहते थे। इसीलिए सबसे ज़्यादा रिवायतें भी उन्हीं की हैं, सुब्हानअल्लाह।

याददाश्त हो तो ऐसी

एक बार अब्दुल मलिक ने सोचा कि हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत ज़्यादा अहादीस की रिवायत करते हैं। क्या ये रिवायतें ठीक उन्हीं अल्फ़ाज़ में हैं जो कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के थे या रिवायत बिल मानी करते हैं। लिहाज़ा उसने उनकी दावत की और भी कुछ सहाबा किराम को बुलाया गया। उसने पर्दा लटकाकर दो कातिब हज़रात को बिठा दिया और उन्हें कहा कि अबूहुरैरह जो बोलेंगे आप लोगों को लिखना है। दो बंदे इसलिए बिठाए कि आपस में भी ततबीक़ हो सके। जब महफ़िल शुरू हुई तो अब्दुल मलिक कहने लगा हज़रत! आपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बहुत सी बातें सुनीं। आप मेहरबानी फ़रमाकर हमें भी उनकी कुछ बातें सुना दीजिए। सैय्यदना अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस महफ़िल में एक सौ हदीसें रिवायत फ़रमायीं और लिखने वालों ने लिख लीं मगर किसी को पता न चला। उसके बाद महफ़िल ख़त्म हो गई। एक साल

बाद उसने हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु को दोबारा दावत दी। इस बार उसने पर्दे के पीछे फिर उन्हीं दो आदमियों को बिठा दिया और कहा कि अपने पिछले नोट्स निकालना और मिलाते जाना। मैं उनसे दरख़्वास्त यह करूंगा कि आपने जो अहादीस पिछली बार सुनायीं उनमें बड़ा मज़ा आया। आप मेहरबानी फ़रमाकर वही हदीसें आज फिर सुना दीजिए। लिहाज़ा महफ़िल लगी तो उसने कहा हज़रत! जो हदीसें आपने पिछले साल सुनायी थीं वे सुनकर बड़ा मज़ा आया था, आप वही हदीसें आज फिर सुनाएं। सैय्यदना अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फिर वही एक सौ हदीस सुनायीं। दोनों कातिब हैरत में पड़ गए कि कहीं एक हर्फ़ का भी फ़र्क़ न आया। यूँ अल्लाह तआला ने क़ुव्वते हाफ़ज़ा अता फ़रमाई थी।

इल्म दोस्ती हो तो ऐसी

हज़रत इब्ने तैमिया रह० के हालाते ज़िंदगी में लिखा है कि वक़्त के बादशाह ने उनसे कोई फ़तवा मांगा मगर उन्होंने फ़तवा न दिया। उसे ग़ुस्सा आया और क़ैद करवा दिया। जब तीन दिन गुज़रे तो बादशाह अपने दरबार में बैठा था। उस वक़्त एक ऐसा नौजवान जिसकी उठती जवानी थी, उसके चेहरे पर नूरानियत और मासूमियत झलक रही थी। वह नौजवान ज़ार व क़तार रो रहा था। जिसने भी उसको देखा दिल पसीज गया और हर आदमी ने उम्मीद की बादशाह सलामत इस तालिब इल्म की मुराद ज़रूर पूरी करेंगे। जब बादशाह ने देखा तो उसने भी वादा कर लिया कि ऐ नौजवान! तू डर नहीं, तू क्यों इतना रो रहा है? तू जो भी कहेगा हम तेरी बात ज़रूर पूरी करेंगे। जब उसने यह वादा किया तो तालिब इल्म ने फ़रियाद पेश की कि बादशाह सलामत! आप मुझे

क़ैदख़ाने में भेज दीजिए। बादशाह बड़ा हैरान हुआ कि क़ैदख़ाने में जाने के लिए तो कोई इस तरह नहीं रोता। उसने पूछा कि आप क़ैदख़ाने में जाने के लिए इतना क्यों रो रहे हैं। तालिब इल्म ने कहा : बादशाह सलामत! आपने मेरे उस्ताद को तीन दिन से क़ैदख़ाने में बंद कर रखा है जिसकी वजह से मेरा सबक़ क़ज़ा हो रहा है। अगर आप मुझे क़ैद में डाल देंगे तो मैं क़ैद व बंद की मशक़्क़तें तो बरदाश्त कर लूंगा मगर अपने उस्ताद से सबक़ तो पढ़ लिया करूंगा। यूँ पहले वक़्तों में शागिर्द अपने उस्ताद से इल्म हासिल किया करते थे। जबकि आज तो इल्म दोस्ती निकलती जा रही है। हमने टीवी को दोस्त बना लिया और बाक़ायदगी के साथ उस पर तमाशे देखते हैं। और अल्लाह तआला के क़ुरआन को खोलकर बैठने की बहुत कम फ़ुर्सत मिलती है। कई घर ऐसे होते हैं कि जिनके अंदर क़ुरआन खोला ही नहीं जाता, इल्ला माशाअल्लाह।

चार मर्दों का जहन्नम में दाख़िला

मर्द समझते हैं कि औरतों को तो दीनी तालीम की ज़रूरत ही नहीं। उनको तो बस किचन का काम आना चाहिए। खाना भी बनाएं, मिठाईयाँ भी बनाएं और स्वीट डिशें भी बनाएं। हमारे मआशरे में आज वह औरत हुनरमंद समझी जाती है जो किचन वर्क की माहिर हो। याद रखें कि यह बोझ मर्दों की गर्दन पर होगा। वे औरतें क़यामत के दिन अल्लाह तआला के हुज़ूर उज़्र पेश करेंगी कि इनहोंने हमारे लिए दीन के रास्ते बंद किए थे। न ख़ुद घर में नेकी की तलक़ीन करते थे और न ही हमें ऐसी मज्लिसों में लेकर जाते थे जहाँ हम नेकी की बातें सुन पातीं। इस वजह से हम नेक न बन सकीं। चुनाँचे इन औरतों की वजह से

इन मर्दों की पकड़ होगी। इसलिए रिवायत में आता है कि एक जहन्नमी औरत अपने साथ चार नेक मर्दों को लेकर जहन्नम में जाएगी, बाप को, मियाँ को, भाई को, बेटे को।

वह कहेगी कि मैं घर की धोबन और बावर्चन बनी रही थी। यह काम करती तो सारे मुझसे ख़ुश थे। मैं दीन पर अमल नहीं करती थी मगर मुझे कोई पूछता ही नहीं था कि तूने दीन पर अमल क्यों नहीं किया।

दौरए हदीस के बाद दौरए हदीस

जो इल्म के क़द्रदान हैं वे सारी ज़िंदगी अपने आपको इल्म पढ़ाते हैं। और आज यह गुज़ारिश उलमाए किराम की ख़िदमत में भी करनी है कि वह मदरसे से निकलने के बाद अपने इल्म में इज़ाफ़ा करते रहें और अपने इल्म को ताज़ा भी रखें। ज़रा पूछें कि कितने उलमा हैं जिन्होंने दौरए हदीस के बाद हदीस का पाक का दौरा किया हो यानी एक दौरा तो वह जो उस्तादों से किया। उसके बाद भी कभी हदीस का दौरा किया। याद रखें कि हमारे असलाफ़ जिस तरह क़ुरआन मजीद की तिलावत किया करते थे उसी तरह अहादीस की किताबें बाक़ायदा रोज़ाना तिलावत किया करते थे जैसे हम कुछ वक़्त के बाद क़ुरआन मजीद ख़त्म करते हैं इसी तरह वह अपने नफ़े के लिए बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़ और दूसरी हदीस की किताबों का ख़त्म किया करते थे जिससे उनका इल्म ताज़ा रहता था। यहाँ तक कि उलमा ने किताबों में लिखा है कि जिस इलाक़े में क़हत पड़ जाता था या कोई नागहानी मुसीबत आ जाती तो वहाँ बुख़ारी शरीफ़ का ख़त्म करवाया जाता था और अल्लाह तआला उस शहर से मुसीबत को दूर फ़रमा दिया करते थे। आज तो उलमा की ज़िंदगियों में भी

यह चीज़ नहीं पाई जाती। अलबत्ता कभी-कभी वअज़ व नसीहत और बयान के लिए पढ़ लेते हैं और बस।

अख़बारी जुमा की मज़म्मत

बाज़ जगहों पर तो "अख़बारी जुमा" होता है। कहते हैं कि जी मैंने जुमा पढ़ाना है दो चार अख़बार ले आओ। अब अख़बारी जुमा से क़ौम की तक़्दीर क्या बदलेगी। पहले वक़्तों में जुमा पढ़ाने के लिए तफ़्सीरों का मुताला किया जाता था और आज अख़बार बीनी की जाती है। गोया इल्म दोस्ती निकलती जा रही है। पहले हमारे अकाबिरीन उस वक़्त तक सोते नहीं थे जब तक कि वह कुछ वक़्त के लिए मुताला नहीं कर लेते थे और आज उस वक़्त तक नहीं सोते जब तक आपस में मिलकर गप्पें नहीं लगा लेते। हमारे अकाबिरीन सुबह उठते ही शौक़ से तिलावत किया करते थे और आज के हज़रात दिन के इब्तिदा अख़बार की तिलावत से करते हैं।

मुताले की अहमियत

मुताला करने की अहमियत का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस उम्मत को अल्लाह तआला ने सबसे पहला पैग़ाम इल्म हासिल करने के लिए दिया था। अल्लाह तआला की तरफ़ से उतरने वाली वही पहल वही का पहला लफ़्ज़ था ﴿اقْرَأْ﴾ इसका मतलब है "पढ़" मगर अफ़सोस कि हमारे दिलों में इस पहले लफ़्ज़ की मुहब्बत पैदा नहीं होती। हक़ तो यह है कि बंदए मोमिन को पूरी ज़िंदगी इल्म में आगे बढ़ना चाहिए और इस इल्म से मुराद दीन का इल्म है। इल्म में हर रोज़ तरक़्क़ी होनी चाहिए। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस बंदे के दो दिन एक जैसी हालत में गुज़रे वह इंसान ﴿مغبون﴾ यानी घाटे में है

यानी दो दिन भी एक जैसे नहीं होने चाहिएं बल्कि हर रोज़ बंदे के इल्म और अमल में तरक़्क़ी होनी चाहिए। हर आने वाला दिन गुज़रे हुए दिन से बेहतर होना चाहिए। और बराबर तो क्या हमारा आने वाला दिन पहले दिन से गिरावट वाला होता है और आमाल के एतिबार से गिर रहे होते हैं। याद रखें कि जब हम इल्म दोस्त बनेंगे तो उम्मत के अंदर इल्म आएगा और अमल का रास्ता हमवार हो जाएगा। अंबिया किराम के तरीक़े पर इल्म पढ़ने वाले और अपनी औलादों को इल्म पढ़ाने वाले इल्म दोस्त होते हैं।

किताबों का ख़ज़ीना

आप जितना इल्म पढ़ सकते हैं पढ़ लें इसकी कोई हद नहीं। हमने अपनी उम्र में जितना इल्म हासिल किया हमारे अकाबिर उनता इल्म हासिल करके शायद भूल ही जाया करते थे यानी हमारे अकाबिर इतना इल्म हासिल करते थे कि उनका भूला हुआ इल्म हमारे हासिल कर्दा इल्म से ज़्यादा होता था। यक़ीन जानें कि उनके दिमाग़ में किताबें होती थीं। यह कहना बेजा न होगा कि उनका दिमाग़ किताबों का ख़ज़ीना होता था।

क़ुव्वते हाफ़िज़ा का कमाल

जब बहावलपूर में ख़त्मे नबुव्वत के सिलसिले में मुक़दमा हुआ तो हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० तशरीफ़ ले गए। मुख़ालिफ़ों ने वहाँ एक किताब पेश की। उस किताब का तर्जुमा मुसलमानों के अक़ीदे के ख़िलाफ़ बनता था। वह किताब भी मुसलमानों के बड़ों की थी। जज बड़ा हैरान हुआ। उसने कहा कि देखो यह तो तुम्हारी अपनी ही किताब पेश कर रहे हैं जो तुम्हारी ही जड़ें काट रही है। अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह० ने फ़रमाया कि ज़रा वह किताब मुझे दिखाई जाए। जज ने किताब

दिखाई। हज़रत रह० ने किताब के सफ़्हे का मुताला किया और फ़रमाने लगे कि जिस कातिब ने यह किताब लिखी है उससे असल किताब से लिखते हुए दर्मियान में एक लाइन छूट गई है। उस वक़्त तो छपी हुई किताबें नहीं थी बल्कि मख़तूता किताबें होती थीं। इस सतर के छूट जाने से जब पिछली इबारत को अगली इबारत से मिलाकर पढ़ते तो मानी मुख़ालिफ़ बन जाते। लिहाज़ा हज़रत ने फ़रमाया कि उसी किताब का एक नुस्ख़ा और मंगवाया जाए। लिहाज़ा एक और नुस्ख़ा मंगवाया गया। जब दोनों नुस्ख़ों को मिलाया तो अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह० की बात बिल्कुल ठीक निकली। चुनाँचे मुख़ालिफ़ीन के झूठ का पोल खुल गया लेकिन बाद में उलमा ने कहा हज़रत! आप को तो उम्मीद ही नहीं थी कि वे इस किताब का हवाला पेश करेंगे, आप को कैसे याद रहा कि दर्मियान में एक सतर छूटी हुई है? फ़रमाया : "हाँ मैंने सत्ताईस साल पहले यह किताब देखी थी, अल्‌हम्दुलिल्लाह कि मुझे उस वक़्त से यह बात याद है, सुब्हानअल्लाह।

इसयान (गुनाह) से निसयान (भूल) पैदा होती है

याद रखना कि बंदा इसयान से निसयान का मरीज़ बनता है। यह बात लोहे पर लकीर की मानिन्द है। आजकल तालिब इल्म जो यह कहते हैं कि हज़रत दुआ फ़रमाएं मैं भूल जाता हूँ। यह सब गुनाह का वबाल होता है। इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं कि मैंने अपने उस्ताद इमाम वकीअ रह० से अपने हाफ़िज़े की कमज़ोरी की शिकायत की तो उन्होंने मुझे नसीहत की कि गुनाह करना छोड़ दे। इसलिए कि इल्म अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का नूर है और अल्लाह का नूर किसी गुनाहगार को अता नहीं किया जाता।

इल्म की निस्बत

हमारे पास इल्म तो होता है लेकिन इल्म की निस्बत नहीं होती। निस्बत इस नूर को कहते हैं जो नबी अलैहिस्सलाम के अक़्वाल, अख़बार और अफ़आल को अपनाने की वजह से बंदे के सीने में मुन्तक़िल होता है। अगर वह निस्बत का नूर आ जाए तो साफ़ फ़र्क़ नज़र आएगा। जिसको इस निस्बत का नूर मिल गया, उसे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बारहगाह में क़बूलियत नसीब हो गई।

शरिअत की क़लई

हम लड़कपन में बर्तन क़लई करने वाले को बैठकर देखा करते थे। हमें खुशी होती थी कि बर्तन चमकदार बन जाते हैं। वह सदा लगाता था "बर्तन क़लई करा लो।" हम भी अम्मी को इसरार के साथ कहते थे कि आप भी बर्तन क़लई करवा लें। मक़सद यह होता था कि हम भी देखें कि वह क्या करता है। चुनाँचे हम उसके पास बर्तन लेकर जाते थे। वह आग की भट्टी में रखकर बर्तनों को गर्म करता था। फिर उनके ऊपर नौशादर लगाकर उनका मैल उतारता था। उसके पास क़लई होती थी। वह मैल उतारने के बाद उनके ऊपर हल्की सी क़लई टच करके एक लाईन लगा देता और बाद में वह पूरे बर्तन पर उस क़लई को ऐसे फेरता कि उसकी एक तह बर्तन पर चढ़ जाती थी। मशाइख़ भी ऐसा ही करते हैं कि वे सालिक को मुजाहिदे की भट्टी में डालकर ज़िक्र के ज़रिए उसका तज़्कियए नफ़्स करते हैं। गोया वह ﴿لِكُلِّ شَيْءٍ صِقَالَةٌ وَصِقَالَةُ الْقُلُوبِ ذِكْرُ اللّٰهِ﴾ के मिस्दाक़ ज़िक्रे इलाही का नौशादर लगाते है। जिससे उसके दिल का बर्तन साफ़ हो जाता है। फिर उसके बाद जब वह उसके ऊपर शरिअत की क़लई फेरते हैं तो फिर

उसकी पूरी शख़्सियत शरिअत के मुताबिक़ बन जाती है।

रिजालुल्लाह की अहमियत

यह तज़्किया किसी शेख़ के बग़ैर नहीं हो सकता। अगर इंसान अपना तज़्किया ख़ुद कर सकता तो फिर अल्लाह तआला अंबिया किराम को न भेजते। फ़क़त किताब भेज देते और बंदों से कह देते कि इसके मुताबिक़ अमल करो। ऐसा तो हुआ कि नबी अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और किताब न आई लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ कि किताब आई और नबी अलैहिस्सलाम तशरीफ़ न लाए हों। किताबुल्लाह को समझने के लिए रिजालुल्लाह का होना ज़रूरी है। इसलिए बंदा जब किसी शेख़ की सोहबत में रहकर मेहनत करता है तो उसके ऊपर निस्बत का रंग चढ़ जाता है। इसीलिए किसी आरिफ़ के कहा–

قال را بگذار مرد حال شو   پیش مرد کاملے پا مال شو

इल्मे क़ाल को छोड़कर इल्मे हाल के बंदे बन जाओ और अपने आपको एक कामिल वली के सामने पामाल कर दो।

صد کتاب و صد ورق در نار کن   جان و دل را جانب دلدار کن

सौ किताबों और सौ वरक़ को आग में डाल दो और अपने जान व दिल को दिलदार के हवाले कर दो।

इंसान नाशुक्रा है

मेरे दोस्तो! जितना नाक़द्रा इंसान है उतना नाक़द्रा कोई नहीं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿إِنَّ الْإِنسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ○ وَإِنَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ○ (العديت۶،۷)﴾

बेशक इंसान अपने परवरदिगार का नाशुक्रा है और यह ख़ुद भी

इस नाशुक्री के ऊपर गवाह है।

अगर हम अपने दिल को झांककर देखें तो दिल गवाही देगा कि हम वाक़ई नाशुक्रे हैं। ज़रा सी तंगी आए तो सब से पहले इबादतें छूट जाती हैं। हमारी इस्तिक़ामत का यह हाल है कहते हैं जी कि कारोबार की परेशानी है। यह ख़त्म हो ले तो फिर नमाज़ पढ़ेंगे, अस्तग़फ़िरुल्लाह। तो सबसे पहले रब का दरवाज़ा छूटता है।

कुत्ते की नसीहत

एक मुतवक्किल साहब अल्लाह पर तवक्कुल करने की मेहनत कर रहे थे। वह एक वीराने में इबादत कर रहे थे। उन्हें अल्लाह की रहमत से रोज़ाना खाना मिल जाता था। उनको तीन साल तक खाना मिलता रहा। एक बार उन्हें खाना मिलना बंद हो गया। तीन दिन का फ़ाक़ा होने की वजह से लाचार हो गए। चुनाँचे कहने लगे कि किसी बंदे से जा कर खाना लाना पड़ेगा। लिहाज़ा वहाँ से गए और किसी बंदे के दर पर जाकर सवाल किया। उस बंदे ने उसको तीन रोटियाँ दे दीं।

वह रोटियाँ लेकर आ रहे थे कि रास्ते में एक कुत्ता उनके पीछे लग गया। वह इस क़द्र तेज़ी से भौंक रहा था कि उन्होंने समझा कि शायद यह मुझे खा जाएगा। चुनाँचे उन्होंने जान छुड़ाने के लिए कुत्ते को एक रोटी फेंक दी। कुत्ते ने वह रोटी खा ली और फिर उनके पीछे भागा। फिर उन्होंने जान छुड़ाने के लिए दूसरी रोटी भी डाल दी। उसने वह रोटी भी खा ली और फिर उनके पीछे दौड़ा। अभी मंज़िल पर नहीं पहुँचे थे कि कुत्ता फिर उनके पास पहुँच गया। उन्होंने जान छुड़ाने के लिए तीसरी रोटी भी फेंक दी। कुत्ते ने तीसरी रोटी भी खा ली। जब उन्होंने तीसरी रोटी

डाली तो साथ ही यह भी कहा कि तुम कितने ज़ालिम हो कि मेरे लिए एक रोटी भी न बचाई। उसके बाद अल्लाह तआला ने कुत्ते को बात करने की ताक़त अता फ़रमा दी। जी हाँ! जब अल्लाह तआला चाहते हैं तो बुलवा देते हैं। कुत्ते ने उनसे कहा, "मैं ज़ालिम नहीं हूँ बल्कि तुम ज़ालिम हो।" उन्होंने कहा, वह कैसे? कुत्ता कहने लगा वह इस तरह कि आपका मालिक आपको तीन साल तक एक ही जगह बिठाकर रिज़्क़ देता रहा। फिर तीन दिन रोटी न मिली तो आपने अपने रब का दर छोड़कर किसी और के दरवाज़े पर जाकर दस्तक दी। और मुझे देखो कि मेरा मालिक मुझे कई कई दिन रोटी नहीं डालता। मैं भूखा तो रह लेता हूँ मगर मालिक का दर कभी नहीं छोड़ता।

एक नासेहाना कलाम

भल्ले शाह रह० एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनका पंजाबी ज़बान में एक कलाम है। आप शायद कि समझ तो नहीं पाएंगे। मैं उसका तर्जमा कर दूंगा।

راتیں جاگیں تے شیخ سڈاویں راتیں جاگن کتے تیتھوں اتے

رکھا سکھا ٹکڑا کھا کے دنیں جا رکھاں وچ ستے تیتھوں اتے

تو نا شکرا اتے پلنگاں اوہ شاکر روڑیاں اتے تیتھوں اتے

در مالک دا مول نہ چھوڑن بھانویں مارے سو سو جتے تیتھوں اتے

اٹھ بھلیاں توں یار منالیں نہیں تے بازی لے گئے کتے تیتھوں اتے

तू रात को जागता है और अपने को शेख़ कहलवाता है। रात को तो कुत्ते भी जागते हैं। कुत्ते तुझसे बेहतर हैं वे रूखी सूखी रोटी खा लेते हैं और सारी रात जाग-जाग कर मालिक के घर का

पहरा देते हैं। सुबह के वक़्त उनके लिए नरम बिस्तर नहीं होते बल्कि दीवार या दरख़्त की ओट में बग़ैर बिस्तर के ज़मीन पर लेटकर सो जाते हैं। कुत्ते तुझसे बेहतर हैं तू पलंगों पर सोने के बाद भी नाशुक्री करता है। और वह रोड़ियों यानी ग़लाज़त के ढेरों पर भी सोकर अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं। कुत्ते तुझसे बेहतर हैं। कुत्ते अपने मालिक का दर कभी नहीं छोड़ते चाहे उनका मालिक उन्हें सौ सौ जूते मार ले और तू ज़रा सी बात पर मालिक का दर छोड़कर चला जाता है। कुत्ते तुझसे बेहतर हैं। ओ भलिया! उठ तहज्जुद का वक़्त है तो अपने परवरदिगार को राज़ी कर ले वरना कुत्ते तुझसे बाज़ी ले जाएंगे।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआ है कि वह हमें भी अपने मालिक का वफ़ादार बनकर रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे। हम सबको इल्म की निस्बत का नूर अता फ़रमाए और इस निस्बत को मज़बूत से मज़बूत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे। और मौत से पहले पहले मौत की तैयारी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

❀ ❀ ❀

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ.

क़ुरआन मजीद की बरकात

हज़रत अक़्दस दामत-बरकातुहुम ने यह बयान ज़ांबिया में 29 रमज़ानुल मुबारक 1422 हि० मुताबिक़ 14 दिसंबर 2001 ई० को एतिकाफ़के दौरान फ़रमाया। मुख़ातिबीन में मौतकिफ़ीन और अवाम की बड़ी तादाद मौजूद थी।

इक़्तिबास

कुरआन मजीद फ़ुरक़ाने हमीद इंसानों को अंधेरों से निकालकर रोशनी की तरफ़ लाने वाली किताब, भटके हुओं को सीधा रास्ता दिखाने वाली किताब, ज़िल्लत के गढ़ों में पड़े हुए को सुरैय्या पर पहुँचाने वाली किताब और अल्लाह से बिछड़े हुओं को अल्लाह से मिलाने वाली किताब है।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी मद्दज़िल्लहु

क़ुरआन मजीद की बरकात

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ط اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا○ (الاحزاب:٧٢)

وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِىْ مَقَامٍ اٰخَرَ الٓرٰ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ لا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ○ (ابراہیم:١)

وقال رسول اللّٰه صلى اللّٰه وليم وسلم خيركم من تعلم القرآن وعلمه (صحاح سته) او كما قال عليه الصلوٰة والسلام.

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

अंधेरों से रोशनी की तरफ़

الٓرٰ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ لا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ○ (ابراہیم:١)

यह एक किताब है जो हमने आपकी तरफ़ नाज़िल फ़रमाई है ताकि इसके ज़रिए आप इंसानों को अंधेरों से निकालकर रौशनी

की तरफ़ लाएं।

गोया क़ुरआन मजीद फ़ुरक़ाने हमीद क़ुरआन मजीद फ़ुरक़ाने हमीद इंसानों को अंधेरों से निकालकर रोशनी की तरफ़ लाने वाली किताब, भटके हुओं को सीधा रास्ता दिखाने किताब, ज़िल्लत के गढ़ों में पड़े हुए को सुरैय्या पर पहुँचाने वाली किताब और अल्लाह से बिछड़े हुओं को अल्लाह से मिलाने वाली किताब है।

क़ुरआन मजीद की फ़ज़ीलतों मेंसे सबसे बड़ी फ़ज़ीलत यह है कि यह शंहाशाहे हक़ीक़ी का कलाम है। इसको दूसरे कलामों पर वही फ़ज़ीलत हासिल है जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को अपनी मख़्लूक़ पर हासिल है।

किताबे हिदायत

क़ुरआन मजीद किताबे हिदायत है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इसे किताबे इबादत नहीं कहा कि यह मुसल्ले की इबादत बताती है बल्कि यह किताबे हिदायत बच्चे के पैदा होने से लेकर उसके मरने हशर के दिन उठने और जन्नत के अंदर पहुँचने तक क़दम-क़दम पर रहनुमाई करती है। इसलिए ज़िंदगी में कोई भी मामला पेश आए तो इस किताब की तरफ़ रुजू कीजिए। आपको इसमें हर बीमारी का इलाज मिलेगा और इसमें हर मसअले का हल मिलेगा।

क़ुरआन मजीद बिस्मिल्लाह की ﴾ب﴿ "ब" से शुरू होता है और वन्नास के ﴾س﴿ "सीन" पर मुकम्मल होता है। ब और सीन को मिलाइए तो "बस" का लफ़्ज़ बनता है। इसका मतलब यह है कि जिसने क़ुरआन पढ़ लिया उसको अब किसी और हिदायत की ज़रूरत नहीं है। उसके लिए बस यही काफ़ी है।

रहमते इलाही को खींचने का मक़्नातीस

लोहा जहाँ भी हो मक़्नातीस उसको अपनी तरफ़ खींचता है। जब क़ुरआन मजीद की तिलावत की जाती है तो यों मालूम होता है कि क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने हमीद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमों को खींचने का मक़्नातीस है। इर्शादे बारी तआला है :

﴿وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ. (الاعراف:۲۰۴)﴾

और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो तवज्जोह से सुनो और ख़ामोश रहो ताकि तुम पर रहमतों की बारिश की जाए।

मारफ़तों भरी किताब

क़ुरआन मजीद मारिफ़तों भरी किताब है। ये हक़ीक़तों का ख़ज़ाना है, सच्चाईयों का मजमूआ है बल्कि सच्ची किताब है कि यह Ultimate realities of the universe है। अल्लाह तआला ने इस काएनात की सदाक़तों को यकजा फ़रमा दिया है। यह अब हमारे पास मौजूद है। इसको पढ़िए, इस पर अमल कीजिए और दुनिया व आख़िरत की इज़्ज़तें पाइए। याद रखें कि जो बंदा दुनियामें इस क़ुरआन की क़द्र नहीं पहचानेगा आख़िरत में क़ुरआन उससे अनजान बन जाएगा। और इस तरह वह बंदा क़ुरआन अज़ीमुश्शान की शफ़ाअत से महरूम हो जाएगा।

एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ

1987 ई० में यह आजिज़ वाशिंगटन में वर्जीनिया के क़रीब मुक़ीम था। हमें इत्तिला मिली कि यहाँ मुख़्तलिफ़ मज़हबों के लोगों ने अपने मिलने का एक दिन तय किया हुआ है। वहाँ हर मज़हब के लोग आते हैं। लेकिन वहाँ इस्लाम की नुमाइन्दगी करने वाला कोई नहीं है। लिहाज़ा उनके दिल में इस्लाम के बारे में जो

उल्टी सीधी बातें आती हैं वे कहते रहते हैं। चुनाँचे दोस्त व अहबाब ने इस आजिज़ को क़ुर्बानी का बकरा बना दिया कि आप ही वहाँ जाएं। लिहाज़ा फ़क़ीर ने वहाँ जाना शुरू कर दिया। महीने में एक बार उनकी मीटिंग होती थी। कभी कोई बात ज़ेरे बहस आती और कभी कोई बात। हमारा फ़र्ज़े मंसबी यह था कि मुसलमान होने के नाते अगर इस्लाम के बारे में कोई बात हो तो उसको हम देखें। चुनाँचे अगर उनको कोई उलझन होती थी तो हम उसको दूर कर देते थे। अलहम्दुलिल्लाह अल्लाह तआला ने इस आजिज़ को यह सआदत सालों नसीब फ़रमाई। किसी कुर्सी पर ईसाईयों का पादरी बैठा होता था, किसी कुर्सी पर यहूदियों का रबाई (यहूदियों का मज़हबी पेशवा) बैठा होता था। किसी कुर्सी पर हिन्दुओं का पंडित बैठा होता था और जो कुर्सी इस्लाम के नाम पर रखी हुई थी उस कुर्सी पर इस आजिज़ को बैठने की तौफ़ीक़ मिलती थी। इसके अलावा दुनिया के मज़हबों के और भी नुमाइन्दे बैठे होते थे।

एक मर्तबा इस आजिज़ ने एक प्वाइन्ट उठाया कि आइन्दा मीटिंग का जो ऐजेन्डा बनाया जा रहा है उसमें यह प्वाइन्ट रखा जाए कि हर हर दीन वाला अपनी अपनी आसमानी किताब का कुछ हिस्सा इस मीटिंग में पढ़े और उसका ख़ुलासा भी पेश करे। इस पर वे सब आमादा हो गए। इसमें एक राज़ था जिसको वे समझ न सके।

जब अगले महीने मीटिंग हुई तो उन्होंने इस आजिज़ से कहा कि चूँकि यह आप ही का सुझाव था। इसलिए आप ही शुरू फ़रमाएं। चुनाँचे हमने सूरः फ़ातिहा की उनके सामने तिलावत की और उसके माइने टूटी फूटी अंग्रेज़ी में उनके सामने बयान कर दिए। इसलिए हमने पढ़ा था कि तमाम आसमानी किताबों का

निचोड़ क़ुरआन मजीद में आ चुका है और पूरे क़ुरआन मजीद का निचोड़ सूरः फ़ातेहा में है। लिहाज़ा हमने सोचा कि सूरः फ़ातिहा का पढ़ लेना गोया पूरे क़ुरआन को उनके सामने पेश करे देने जैसा है। उसके बाद उन्होंने चंद सवालात किए और वे उनके जवाबात सुनकर मुतमइन हो गए।

मेरे बाद क़ुदरतन यहूदी बैठा था। वह मुझे हमेशा बड़े ग़ौर से देखता रहता था। हर बार अमामा भी होता, हर बार जुब्बा भी होता और हर बार हाथ में असा भी होता था। अब उसके दिल को महसूस तो होता था कि असा तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की विरासत थी मगर इनके हाथ में है। यहाँ तक कि वह बेचारा एक दिन बोल ही पड़ा। कहने लगा :

You always come with a diffrent respective look.

आप हमेशा एक अलग और क़ाबिले क़द्र शख़्सियत के रूप में तशरीफ़ लाते हैं।

सुब्हानअल्लाह यह नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सुन्नतों की बरकत है। ये अलफ़ाज़ यहूदियों के एक बड़े आलिम के हैं। जी हाँ जादू वह जो सर चढ़कर बोले।

ख़ैर जब इस आजिज़ ने तिलावत और तर्जुमा मुकम्मल किया तो उसके बाद उस यहूदी रबाई ने अंग्रेज़ी किताब खोली और उसको पढ़ना शुरू कर दिया। जब उसने वह किताब पढ़ना शुरू की तो मैंने कहा कि मैं एक प्वाइन्ट उठाना चाहता हूँ। उसने कहा वह क्या? मैंने कहा जी आप मुझे यह बताएं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर जो किताब तौरात नाज़िल हुई थी वह किस ज़बान में हुई थी? उसने कहा, वह तू जबरून (इबरानी) ज़बान में नाज़िल हुई। मैंने कहा अभी तो आप अंग्रेज़ी पढ़ रहे थे जबकि

तय यह हुआ था कि जो आसमानी किताब नाज़िल हुई उसमें उसे पढ़ा जाए। जब मैंने यह कहा तो मजमे में सन्नाटा छा गया।

थोड़ी देर के बाद ईसाईयों का पादरी बोला कि "जी आपके सामने खरी सी बात करता हूँ कि इस दुनिया में जितने भी दीन हैं मौजूद हैं उनके मानने वालों में से फ़क़त मुसलमान ही ऐसे हैं जिन के पास इल्हामी किताब (क़ुरआन मजीद) असली हालत में मौजूद है, बाक़ी सबके पास फ़क़त तर्जुमे हैं।" सबने इसकी ताइद की।

अल्लाहु अकबर उस वक़्त ईमान मज़बूत हुआ कि इस वक़्त दुनिया के जितने बड़े बड़े मज़हब हैं उनके चुने हुए बंदे मौजूद हैं और सब इक़रार कर रहे हैं कि फ़क़त मुसलमान ही ऐसे हैं जिनके पास "कलामे इलाही" अपनी असली शक्ल में मौजूद है। बाक़ी किसी के पास कलामे इलाही मौजूद नहीं है। अल्हम्दुलिल्लाह सुम्मा अल्हम्दुलिल्लाह यही वजह थी कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुरआन मजीद पकड़कर फ़रमाते थे :

﴿هذا كلام ربي، هذا كلام ربي﴾ यह मेरे परवरदिगार का कलाम है, यह मेरे परवरदिगार का कलाम है।

डिप्रेशन का लफ़्ज़ कहाँ से आया?

आजकल तो क़ुरआन को मानने वाले भी कह रहे होते हैं कि बस कुछ डिप्रेशन सी है। यह "डिप्रेशन" का लफ़्ज़ हम मुसलमानों का लफ़्ज़ नहीं है। हमारे असलाफ़ की ज़िंदगियों में यह नहीं होता था। इसीलिए इस लफ़्ज़ का उर्दू में तर्जुमा करने के लिए कोई लफ़्ज़ ही नहीं है। इसी तरह अरबी ज़बान में भी इसके तर्जुमे के लिए कोई लफ़्ज़ नहीं है। यही वजह है कि अगर डिप्रेशन को उर्दू में बोलना हो तो डिप्रेशन ही कहते हैं। न तो यह लफ़्ज़ उर्दू में था और न ही अरबी में। लिहाज़ा सवाल पैदा होता

है कि यह लफ़्ज़ कहाँ से आया। इसका जवाब यह है कि जिनकी ज़बान का लफ़्ज़ है उन्हीं की ज़िंदगियों में डिप्रेशन होता था और वहीं से इधर हमारे हाँ आया है। क़ुरआन मजीद से मुँह मोड़ने की वजह से यह लफ़्ज़ हमारी ज़िंदगियों में भी आ गया है।

जिसका अल्लाह तआला से वास्ता हो उसका परेशानियों से क्या वास्ता।"

ग़ौर से सुनिए कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ. (الرعد:٢٨)﴾ जान लो कि अल्लाह कि याद के साथ दिलों का इत्मिनान वाबस्ता है।

जब दिलों में अल्लाह तआला की याद होती है तो फिर इंसान के ज़हन में कोई परेशानी नहीं होती है। यह हाथों की कमाई है। क़ुरआन मौजूद है मगर पढ़ते नहीं। और कहते हैं कि जी हमें इसे पढ़ने का वक़्त नहीं मिलता। हम खुशनसीब हैं कि हमारे पास क़ुरआन मौजूद है। दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जिनके पास यह नेमत मौजूद नहीं है।

एक रूसी औरत क़ुरआन की तलाश में

मुझे 1992 ई० में ताशक़न्द जाने का मौक़ा मिला। वहाँ एक जगह से गुज़र रहा था कि एक जवान औरत ज़रा तेज़-तेज़ चलती हुई क़रीब आई और कहने लगी :

Are you Muslim? क्या आप मुसलमान हैं?

मैंने कहा, हाँ मैं मुसलमान हूँ।

वह कहने लगी, Do you have Quran? (क्या आपके पास क़ुरआन मजीद है?)

मैंने कहा, हाँ मेरे पास है। सफ़र में एक छोटा नुस्ख़ा सीने से लगाकर रखते हैं।

उसने कहा, क्या मैं देख सकती हूँ?

मैंने कहा, आप ज़रूर देख सकती हैं।

जब उसने मेरे हाथ से क़ुरआन पाक को लिया तो वह क़ुरआन पाक को चूमकर कभी एक आँख से लगाने लगी, कभी दूसरी आँख से लगाने लगी और कभी सीने से लगाती। अजीब दीवानों वाली उसकी कैफ़ियत थी। कुछ देर तो मैं इंतिज़ार करता रहा। फिर मैंने उससे पूछा, क्या वजह है कि अभी तक आपने मुझे क़ुरआन वापस नहीं किया?

वह कहने लगी, मैं मुसलमान हूँ। मेरी उम्र इस वक़्त उन्तालीस साल है। और मैं अपनी ज़िंदगी में पहली मर्तबा क़ुरआन मजीद की ज़ियारत कर रही हूँ।

उस वक़्त एहसास हुआ कि ऐ अल्लाह! यह तेरी कितनी बड़ी नेमत है कि हम मस्जिद में जाएं तो वहाँ भी क़ुरआन मजीद मौजूद होता है, मदरसे में जाएं तो वहाँ भी मौजूद होता है। घरों में जाएं तो वहाँ भी मौजूद होता है यहाँ तक कि दुकानों में जाएं तो वहाँ भी मौजूद होता है। अलहम्दुलिल्लाह सुम्मा अलहम्दुलिल्लाह इसकी बरकात से न सिर्फ़ मुसलमान ही फ़ायदा उठा रहे हैं बल्कि ग़ैर-मुस्लिमों की ज़िंदगियों में भी इंक़लाब बर्पा कर रहा है।

एक हिन्दू घराने के इस्लाम लाने का वाक़िआ

हमारे मुल्क पाकिस्तान के सूबा सिंध में एक हिन्दू घराने के इस्लाम लाने का एक अजीब वाक़िआ पेश आया। एक जवान का ताल्लुक़ हिन्दू घराने से था। उसे कैंसर का मर्ज़ हो गया। डाक्टरों ने लाईलाज क़रार देकर हास्पिटल से घर भेज दिया। उसकी उम्र चालीस बयालिस साल थी। वह घर आकर बड़ा उदास व परेशान

रहने लगा। उसे रह रह कर यह ख़्याल आता कि मैं तो बस चंद दिनों के बाद मर जाऊँगा। एक दिन उसकी बीवी उसके पास बैठी थी। वह उसके साथ मुहब्बत भरी बातें कर रहा था। इस दौरान वह कहने लगा, अब तो मैं और आप जुदा हो जाएंगे क्योंकि अब मेरी सेहत बहाल होने का कोई चान्स नहीं है।

बीवी ने कहा, अगर आप मेरे साथ वादा करें कि मैं जो भी कहूँगी आप मेरी बात मानेंगे तो इस शर्त पर मैं आपको एक चीज़ पिलाती हूँ, आप बिल्कुल सेहतमंद हो जाएंगे।

उसने जवाब दिया, जब हास्पिटल में मेरे ईलाज के लिए दवाईयाँ नहीं तो आपके पास कौन सी चीज़ आ गई? वह कहने लगी, क्या आपको मुझसे मुहब्बत है? उसने कहा, जी हाँ, बहुत मुहब्बत है। बीवी ने कहा, अगर आपको मुझसे वाक़ई मुहब्बत हैं तो फिर वादा करें। आप बिल्कुल ठीक हो जाएंगे। फिर हम इकठ्ठे लंबी ज़िंदगी गुज़ारेंगे। बस आप वादा करें कि जो बात मैं कहूँगी आप ज़रूर मानेंगे। उसने कहा मैं तो आपकी बातें वैसे ही मानता हूँ। पहले ज़माने में तो जानवर को रस्सी डालकर पीछे लेकर चलते थे लेकिन आजकल के नौजवान ऐसे सधाए हुए हैं कि वैसे ही पीछे चल रहे होते हैं।

ख़ैर मियाँ ने वादा कर लिया कि आप जो बात भी कहेंगी मैं मानूंगा। उसके बाद उसकी बीवी उसके पास कुर्सी डालकर बैठ गई। उसने अपने पास एक जग में पानी भी रख लिया। वह कुछ पढ़ पढ़ कर उस पर फूंकती रही। जब वह फ़ारिग़ हुई तो उसने मियाँ को उसमें से कुछ पानी दिया। फिर जब भी उसको प्यास महसूस होती तो वह उस जग में से पानी पिला देती।

अल्लाह की शान देखिए कि उसने अभी कुछ दिन ही वह पानी पिया था कि वह अपने आपको सेहतमंद महसूस करने

लगा। उसने जाकर लैब्रोट्री टैस्ट कराया तो पता चला कि उसके अंदर का ब्लड कैंसर ख़त्म हो चुका था। उसको यक़ीन न आया। जब उसने सारी सूरतेहाल अपनी बीवी को बताई तो उसने कहा कि किसी दूसरी लैबोट्री से चैक करवा लें। लिहाज़ा दूसरी लैब्रोट्री में चला गया। वहाँ से भी यही रिपोर्ट मिली कि ब्लड कैंसर ख़त्म हो चुका है। वह बड़ा हैरान हुआ।

जब वह दूसरी रिपोर्ट लेकर घर आया तो बीवी से कहने लगा, मेरी बीमारी तो वाक़ई ख़त्म हो चुकी है। और अब मैं अपने आपको बेहतर महसूस कर रहा हूँ मगर सच सच बताएं कि आख़िर यह मामला क्या है? बीवी ने कहा, पहले तो आप वादा पूरा करें जो मेरे साथ किया था, फिर बताऊँगी। उसने कहा ठीक है, आप मुतालबा करें, आप जो बात भी कहेंगी मैं पूरी करूंगा। वह कहने लगी, "आप कलिमा पढ़कर मुसलमान बन जाएं।" जब उसकी बीवी ने यह कहा तो वह हिन्दू जवान हैरान रह गया। वह उसके चेहरे की तरफ़ देखकर ग़ौर से देखकर बोला, आप क्या कह रही हैं?

बीवी ने कहा, मैं आपकी बीवी हूँ, अब आपको सेहत मिल चुकी है, आपने मुझसे वादा किया हुआ है, लिहाज़ा अब आप अपना वादा निभाएं और कलिमा पढ़कर मुसलमान हो जाएं। उसने कहा, मैं तो यह तसव्वुर भी नहीं कर सकता था कि आप मुझसे यह कहेंगी।

बीवी ने कहा, जी आपकी बात बिल्कुल ठीक है, लेकिन अब जो कह दिया है वह पूरा करें। उसने पूछा, क्या आप मुसलमान हैं? बीवी कहने लगी, हाँ मैं मुसलमान हूँ।

उसने कहा कि तुम्हारा बाप तो इतना पक्का हिंदू है कि वह

तो औरों को भी हिन्दू बनाता है। अगर उसे आपके बारे में पता चल गया तो वह आपका गला काट देगा। तुम ऐसे घर की लड़की हो फिर तुम कैसे मुसलमान बन गयीं? बीवी ने कहा, यह लंबी कहानी है, फिर सुनाऊँगी। आप पहले कलिमा पढ़ें और मुसलमान हो जाएं। मियाँ अब अच्छी तरह क़ाबू में आ चुका था इसलिए उसे कलिमा पढ़ना ही पड़ा। अल्‌हम्दुलिल्लाह वह मुसलमान बन गया। उसके बाद उसने बीवी से कहा अब बताओ कि असल में मामला क्या हुआ था? अब उसने उसे यह कहानी सुनाई जो अब मैं सुना रहा हूँ।

बीवी ने कहा कि जब मैं छोटी उम्र में स्कूल में पढ़ती थी उस वक़्त मेरी क्लास में एक मुलमान लड़की भी थी। वह मेरी सहेली बन गई। वह हमारे पड़ौस में ही रहती थी। मैं शाम के वक़्त उसके घर खेलने के लिए जाती थी। उसकी वालिदा मुसलमान बच्चों को क़ुरआन मजीद पढ़ाती थीं। मेरी वह सहेली भी अपनी वालिदा से क़ुरआन मजीद पढ़ती थी। क्योंकि वह मेरी सहेली थी इसलिए जब वह अपना सबक़ याद करती तो मैं भी उसके पास बैठ जाती थी। मैं भी ज़हीन थी। उसे भी सबक़ याद हो जाता और मुझे भी उसका सबक़ याद हो जाता। जब वह अम्मी को सुनाती तो मैं भी उनसे कहती कि ख़ाला! मैं भी सुनाती हूँ। इस तरह वह मुझसे भी सबक़ सुन लेती थीं।

जब ख़ाला ने कुछ दिनों में मेरा शौक़ देखा तो उन्होंने मुझे मश्वरा दिया कि बेटी! तुम रोज़ाना ही तो आती हो, तुम भी इसके साथ साथ रोज़ाना याद करती रहो। क्योंकि मेरी क्लास फ़ैलो थी इसलिए मैंने कहा, जी ठीक है। जब मैंने यह कहा तो ख़ाला कहने लगी, बेटी! यह किसी को न बताना। मैंने कहा, जी मैं किसी को नहीं बताऊँगी। इस तरह मैं दो साल तक उनके घर

जाती रही और सबक़ पढ़ती रही। जिस तरह उनकी बेटी ने नाज़रा क़ुरआन पाक मुकम्मल किया उसी तरह मैंने भी उसके साथ क़ुरआन पाक मुकम्मल कर लिया।

मैंने जब क़ुरआन पाक मुकम्मल पढ़ लिया तो मैंने ख़ाला से कहा, बाक़ी बच्चे तो घर में पढ़ते हैं लेकिन मैं तो घर में नहीं पढ़ सकती। उन्होंने कहा कि क़ुरआन मजीद में अलम-नश्रह एक सूरत है। यह सूरत पढ़कर अगर किसी मरीज़ पर दम कर दें या पानी पर दम करके उसे पिला दें तो उसको सेहत मिल जाती है। यह अमल मुझे किसी बुज़ुर्ग ने बताया था। अब यही अमल मैं आपको बता रही हूँ, इसे याद रखना यह कभी न कभी तेरे काम आएगा। वह मुझे इस क़िस्म की बातें सुनाती रहती थीं।

जब मैं जवान हुई और मेरी शादी होने लगी तो चंद दिन पहले मैं उनके पास गई और उनके पास बैठकर बहुत रोई। मैंने कहा, ख़ाला! आपकी बेटी मेरी सहेली थी। उसकी वजह से मैं आपके घर आया करती थी। इसी बहाने से मैंने क़ुरआन पाक भी पढ़ लिया था और आपने मुझे कलिमा भी पढ़ा दिया था। अंदर से तो मैं मुसलमान हो चुकी हूँ लेकिन अब जहाँ मेरी शादी हो रही है, वहाँ तो मैं न अपने ईमान का इज़्हार कर सकती हूँ और न ही मेरे पास क़ुरआन मजीद होगा, वहाँ मेरा क्या बनेगा? ख़ाला ने कहा, बेटी! तुम परेशान न हो। मैं किसी न किसी तरह तुम्हारे साथ जहेज़ में क़ुरआन मजीद भेज दूंगी। मैंने कहा, यह तो बहुत ही अजीब बात है। चुनाँचे ख़ाला ने मेरी वालिदा को पैग़ाम भिजवाया कि आपकी बेटी मेरी बेटी की सहेली है, मेरी बेटी उसे हदिए के तौर पर जहेज़ में कुछ कपड़े देना चाहती है। अगर इजाज़त हो तो मैं भी कपड़े बनवा दूँ। मेरे माँ-बाप के वहम व

गुमान में भी यह बात नहीं आ सकती थी। उन्होंने सोचा कि यह दोनों प्राइमरी से लेकर कालेज तक क्लास फ़ैलो हैं और आपस में मुहब्बत भी रखती हैं। इसलिए उन्होंने इजाज़त दे दी कि ठीक है। आप भी कुछ जोड़े बनवा दें। लिहाज़ा उन्होंने जवाब भेजा कि हम उसको जहेज़ में सात जोड़े बनवाकर देंगे।

उस ख़ाला ने मेरे लिए बहुत क़ीमती जोड़े बनवाए। उन्होंने कपड़ों को बहुत ही ख़ूबसूरत तरीक़े से गिफ़्ट पैक करवाया और उनके बीच में क़ुरआन मजीद भी गिफ़्ट पैक करके हमारे घर पहुँचा दिया। और साथ ही यह भी कहा कि हमने इसके कपड़े गिफ़्ट पैक किए हैं, आप उसे यहाँ अपने घर न खोलना बल्कि आपकी बेटी अपने नए घर जाकर खोलेगी ताकि उसका ख़ाविन्द भी देखकर खुश हो।

मेरे माँ-बाप को उनकी यह बात बहुत अच्छी लगी। लिहाज़ा उन्होंने कहा कि यह गिफ़्ट पैक वाक़ई बहुत ख़ूबसूरत है। बेहतर यही होगा कि दुल्हन उसे अपने घर में जाकर ही खोले। मैं जब आपके घर में आई तो मैंने सबसे पहला काम यह किया कि जिस कमरे में मेरी रिहाइश थी, मैंने कलाम पाक निकालकर कहीं छिपा दिया। जब आप रोज़ाना दफ़्तर चले जाते तो मैं पीछे क़ुरआन पाक खोलकर पढ़ लेती और जब आपके वापस आने का वक़्त क़रीब होता तो मैं उसे अच्छी तरह छिपा कर रख देती ताकि आप इसको देख न लें। ज़िंदगी के इतने साल मैंने अपना ईमान छिपाए रखा। आख़िर आप बीमार हो गए और दवाईयों ने काम न किया। मेरे दिल में पक्का यक़ीन था कि जहाँ दवाईयाँ काम नहीं आतीं वहाँ अल्लाह का कलाम काम आ जाता है। अल्लाह तआला भी इसी कलाम में फ़रमाते हैं :

﴿شفاء لما في الصدور﴾ (यह क़ुरआन मजीद) सीने (दिल) की बीमारियों के लिए शिफ़ा है।

वह कहने लगी, जब आप अपनी ज़िंदगी से नाउम्मीद हो गए और आपने मुझे कहा अब मैं मरने के क़रीब हूँ तो फिर मैंने आपसे कहा कि वादा करें ज़ो मैं कहूँगी आप उसे पूरा करेंगे तो मैंने आपको कुछ पानी पिलाती हूँ। आपने मेरी बात मान ली और मैंने वही सूरत आपको पानी पर दम करके दी और अल्लाह तआला ने आपको शिफ़ा अता फ़रमा दी। मैंने भी कलिमा पढ़ा हुआ था और आप भी मुसलमान बन चुके हैं। अल्लाह तआला ने आपको नई ज़िंदगी दी है। अब आप अपनी ज़िंदगी को अल्लाह के दीन की ख़िदमत में सर्फ़ कर दीजिए, अल्लाहु अकबर।

क़ुरआन मजीद का सबसे बड़ा एजाज़

मेरे दोस्तो! हम क़ुरआन मजीद की बरकतों से वाक़िफ़ नहीं हैं। अगर हमें इसकी बरकतों का यक़ीन हो तो हम अपने आप को ख़ुशनसीब समझें कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हमें दुनिया में अपनी यह नेमत अता फ़रमाई है। यह ऐसी नेमत है कि जो हमारे पास हर वक़्त मौजूद है। इसका बड़ा एजाज़ है। इसका हिफ़्ज़ हो जाना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत है। छोटे से छोट बच्चे भी इसे याद कर लेते हैं। पूरी दुनिया में कोई और किताब ऐसी नहीं है जिसके हाफ़िज़ दुनिया में मौजूद हों।

सीना-बसीना क़ुरआन का फ़ैज़

हमारे एक दोस्त स्टील मील कराची में इंजीनियर थे। वह एक नेक सीरत और शरिअत के पाबन्द मुसलमान थे। चूँकि स्टील मील रूस के तआवुन से लगी थी। इसलिए वह 1973 में ट्रेनिंग के लिए मेहमान बनकर मास्को गए। यह वह दौर था जब वहाँ

कम्युनिज़्म का तूती बोलता था बल्कि दुनिया तो यहाँ तक कहती थी कि अब पूरा एशिया सुर्ख़ होने वाला है।

उन्होंने यह वाक़िआ सुनाया खुद सुनाया कि चंद दिनों के बाद वहाँ जुमा का दिन आया और मैंने दोस्तों से कहा कि मुझे तो मस्जिद जाना है। मैं जुमा की नमाज़ मस्जिद में पढूँगा। उन्होंने कहा कि यहाँ तो मस्जिदों को गोदाम बना दिया है। एक दो मस्जिदों को टूरिस्ट के लिए खुला रखा गया है और बाक़ी मस्जिदों को उनके खुले खुले हॉल की वजह से गोदाम बना दिया गया है। और जो मस्जिदें खुली रखी गई हैं वह भी कभी खुलती हैं और कभी बंद होती हैं। मैंने कहा कि आप मुझे उन मस्जिदों का पता बताएं।

ख़ैर मैं पता करके एक मस्जिद के पास पहुँच गया। वहाँ पता चला कि इस मस्जिद के पड़ौस में एक आदमी के पास इस मस्जिद की चाबी है और वही इसको खोला करता है। चुनाँचे मै। उस आदमी के पास गया और कहा कि मस्जिद खोलो, मुझे नमाज़ पढ़नी है। उसने कहा मैं खोल तो देता हूँ, आगे आप जो कुछ करेंगे खुद ज़िम्मेदार होंगे। अगर आपको पुलिस पकड़कर ले गई तो मैं ज़िम्मेदार नहीं हूँगा। मैंने कहा आप फ़िक्रन क करें मैं कोई भागकर यहाँ नहीं आया हुआ हूँ बल्कि मैं यहाँ गैस्ट हूँ। मैं अपने मुल्क में भी मुसलमान था और यहाँ भी मुसलमान हूँ। वहाँ भी नमाज़ें पढ़ता था और यहाँ भी पढूँगा, मुझे कौन रोक सकता है?

मेरी बातें सुनकर वह बड़ा हैरान हुआ और मस्जिद खोल दी। मैंने मस्जिद की सफ़ाई की। मस्जिद में कोई और आदमी नहीं था जिसकी वजह से मैं जुमा की नमाज़ तो पढ़ ही नहीं सकता था। फ़क़त ज़ुहर की नमाज़ पढ़नी थी। लिहाज़ा जब ज़ुहर का वक़्त हुआ तो मैंने ख़ूब ऊँची आवाज़ में अज़ान दी। जब अज़ान दी तो

क़रीब के मकानों से मर्द और औरतें और बच्चे मस्जिद में आ गए। वह यह सारा माजरा हैरान होकर देख रहा थे। मैंने नमाज़ पढ़ी और वह मुझे दूर दूर से इस तरह देख रहे थे जैसे कोई नया काम देख रहे हों।

जब नमाज़ से फ़ारिग़ होकर मैं जाने लगा तो उनमें से एक बच्चा आकर कहने लगा कि आप हमारे घर चाय पीने के लिए आएं। मैंने उनके ख़ुलूस को देखते हुए दावत क़बूल कर ली। वह मुझे अपने मेहमानख़ाने में ले गए। मैंने देखा कि दस्तरख़्वान लगा हुआ है। उस पर मेवे लगे हुए हैं। औरतें खाना लेकर आ गयीं और चाय भी फ़ौरन आ गई। मेरे वहाँ जाने पर उस घर में ईद की ख़ुशी का समाँ था। बच्चे, मर्द और औरतें सब ख़ुश थे। मैंने कुछ खाना खाया, मर्दों ने भी साथ खाया। उसके बाद हम वहाँ बैठकर बातें करने लगे। उनके छोटे छोटे बच्चे मेरे आगे बैठ गए। उनके मर्द पीछे बैठ गए और औरतें आकर खड़ी हो गयीं।

एक छोटा सा बच्चा मेरे क़रीब बैठा था। मैंने उससे पूछा, बच्चे! तुम क़ुरआन मजीद पढ़े हुए हो? बच्चे ने इशारे से हाँ में जवाब दिया। मेरी जेब में छोटे साइज़ का क़ुरआन मजीद था। मैंने वह खोलकर उसके सामने किया और मैंने कहा कि यहाँ से पढ़ो। वह बच्चा कभी क़ुरआन मजीद की तरफ़ देखता और कभी मेरे चेहरे की तरफ़। मैं बड़ा हैरान हुआ कि कहता भी है कि मैं पढ़ा हुआ हूँ और पढ़ता भी नहीं। तीसरी मर्तबा मैंने उससे कहा पढ़ो ना यहाँ से :

﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا. (التحريم : ٦)﴾

वह कहने लगे कि जब मैंने ये चंद अल्फ़ाज़ पढ़े तो बच्चे ने पढ़ना शुरू कर दिया और वह क़ुरआन मजीद की तरफ़ देखे बग़ैर

पढ़ता चला जा रहा था। मैं और ज़्यादा हैरान हुआ। मैंने उन लोगों से पूछा कि यह क्या मामला है? उसके जवाब में उसके वालिद मुस्कराए और कहने लगे दरअसल हमारे पास क़ुरआन मजीद मौजूद नहीं है। अगर किसी के घर में क़ुरआन पाक का एक वरक़ भी निकल आए तो घर के छोटे बडे सब लोगों को फांसी दे दी जाती है। इसलिए हम अपने पास क़ुरआन मजीद रख ही नहीं सकते। मैंने पूछा कि फिर आप क्या करते हैं? कहने लगे कि जो हमारे पुराने हाफ़िज़ हैं उनमें से कोई दर्ज़ी का काम करता है और कोई और काम। हम यह करते हैं कि बच्चों को दर्ज़ी वग़ैरह का काम सिखाने के लिए शागिर्द बनाकर भेज देते हैं। वे बच्चों को जहाँ कपड़ा काटना, सिलाई करना और बटन लगाना सिखाते हैं वहाँ साथ ही साथ बच्चे को दो तीन आयतें ज़बान सबक़ भी रोज़ाना दे देते हैं और इस तरह बच्चा नाबीना बच्चे की तरह याद कर रहा होता है। आख़िर एक वक़्त ऐसा भी आता है कि वह क़ुरआन मजीद का हाफ़िज़ तो बन जाता है लेकिन उसे क़ुरआन मजीद नाज़रा पढ़ना नहीं आता। यही वजह है कि जब आपने क़ुरआन पाक खोलकर उसे कहा कि यहाँ से पढ़ो तो उसको तो पता नहीं था कि कहाँ से पढ़ना है क्योंकि उसने तो क़ुरआन मजीद देखा ही नहीं है और जब आपने आयत पढ़ी तो उसको पता चल गया कि यहाँ से पढ़ना है। अगर आप कहते तो बच्चा क़ुरआन पाक के ख़ात्म तक पढ़ता चला जाता, सुब्हानअल्लाह।

वह कहने लगे कि मैंने क़ुरआन मजीद का मौजिज़ा देखा कि जहाँ पर लोग क़ुरआन मजीद पर लोग पाबन्दी लगा चुके हैं लोग क़ुरआन मजीद को देख नहीं सकते वहाँ क़ुरआन मजीद को नाज़रा पढ़ने वाले तो नहीं होते मगर क़ुरआन मजीद के हाफ़िज़

वहाँ भी मौजूद होते हैं, अल्लाहु अकबर। उन्होंने बताया कि मैंने दिल में कहा :

लोगो! तुमने क़ुरआन मजीद की इस किताब पर तो पाबन्दी लगा दी लेकिन जो सीनों में क़ुरआन मजीद है तुम पर पाबन्दी कहाँ लगा सकते हो।

वाक़ई यह क़ुरआन मजीद खुला मौजिज़ा है कि जिन मुल्कों के लोग क़ुरआन मजीद रख नहीं सकते थे उनकी नस्लों में क़ुरआन मजीद फिर भी हिफ़्ज़ के तौर पर सीनों से सीनों में चलता रहा।

यह कहाँ का इंसाफ़ है?

हम यक़ीनन खुशनसीब हैं कि उस परवरदिगार ने हमें यह नेमत घर में दी हुई है। हम जब पढ़ना चाहें तो इस क़ुरआन मजीद को पढ़ सकते हैं। हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के इस एहसान का शुक्र अदा करें और इस क़ुरआन मजीद को रोज़ाना पढ़ना अपनी ज़िम्मेदारी समझें। कोई दिन भी इसकी तिलावत के बग़ैर न गुज़रे।

मिसाल के तौर पर मै। आपसे पूछता हूँ कि अगर आपके पीर व मुर्शिद का बेटा आपके घर में मेहमान आए और आप किसी दिन उसका हाल न पूछें तो आप महसूस करेंगे कि मेरे शेख़ क्या कहेंगे और यह बच्चा क्या कहेगा कि मेरी ख़ैर ख़बर भी नहीं ली। और अगर वह कई दिनों तक आपके घर में रहे तो और आप उससे न मिलें और न ही हाल पूछें तो फिर आप और ज़्यादा अजीब महसूस करेंगे कि बच्चा हमारे घर में मेहमान के तौर पर आया हुआ है और मैं न तो उससे मिल ही सका और न ही हाल पूछा है।

ओ खुदा के बंदो! अगर पीर व मुर्शिद का बेटा घर आए और

हम उससे हाल न पूछ सकें तो अपने आपको मुजरिम समझते हैं। यह क़ुरआन मजीद हमारे परवरदिगार का कलाम है और हमारे पास मेहमान है मगर पूरा दिन गुज़र जाता है और हम इस मेहमान का हाल तक नहीं पूछते। यह कहाँ का इंसाफ़ है।

क़ुर्बे क़यामत की एक अलामत

यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का एहसान समझिए कि उसने अभी तक हमारे अंदर अपना क़ुरआन रखा हुआ है। क़ुर्बे क़यामत की अलामतों में से है कि क़ुरआन मजीद को उठा लिया जाएगा। हमें चाहिए कि उस वक़्त से पहले पहले इस क़ुरआन की क़द्र कर लें। परवरदिगार आलम का एहसान है कि उसने हमें रमज़ानुल मुबारक में क़ुरआन मजीद सुनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। हम परवरदिगार का जितना भी शुक्र अदा करें कम है।

फ़िक्र की घड़ी

मौज़्ज़िज़ सामेईन! यह आज 29 रमज़ानुल मुबारक की रात है क्या मालूम कि यह रमज़ानुल मुबारक की आख़िरी रात हो। अगर यह आख़िरी रात है तो फिर हमें उस हदीस पाक के मज़्मून के बारे में सोचना पड़ेगा जिसमें फ़रमाया गया है कि बर्बाद हो जाए वह शख़्स जिसने रमज़ानुल मुबारक का महीना पाया और अपनी मग़फ़िरत न करवाई। क्या हमने अल्लाह तआला से सच्ची माफ़ी मांग ली। क्या हमने गुनाह बख़्शवा लिए।

अगर अभी तक गुनाह नहीं बख़्शवा सके तो हमारे लिए तो ख़तरे की घंटी बज रही है। वक़्त तो हमारे हाथों से जा रहा है। जिस तरह अठ्ठाइस दिनों के गुज़रने का पता नहीं चला इसी तरह अगले अठ्ठाइस घंटों के गुज़रने का पता भी नहीं चलेगा। यह इस रमज़ानुल मुबारकी का आख़िरी रात है। हमें चाहिए कि हम इस

मुबारक रात में अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करें और अपने रब से सुलह कर लें। हमने अपने परवरदिगार की बहुत नाफ़रमानियाँ कीं, भाग-भाग कर गुनाह किए। सच्ची बात तो यह है कि हमने गुनाह किए बढ़-बढ़ के और परवरदिगार ने परेशानियाँ भेज-भेज कर फिर मस्जिद बुला लिया।

वैसे तो बंदे को मस्जिद याद ही नहीं आती लेकिन कारोबार में कमी कर दी, मस्जिद की तरफ़ भागा, बीवी को बीमार कर दिया, मस्जिद की तरफ़ भागा, कोई ग़म परेशानी दे दी, मस्जिद की तरफ़ भागा।

पाक है वह परवरदिगार जो परेशानियों की रस्सियों में बांध बांध कर हमें अपने घर की तरफ़ खींच रहा होता है। परेशान करने का मक़सद सताना नहीं होता बल्कि अपने घर की याद दिलाना मक़सूद होता है।

बहरहाल अल्लाह की रहमत से हमें रमज़ानुल मुबारक में इस घर की हाज़िरी नसीब होती है। हमने तरावीह भी पढ़ी और क़ुरआन मजीद भी सुना। अब यह आख़िरी रात है। इस रात में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से सुलह कर लीजिए और अपने गुनाहों को बख़्शवा लीजिए।

या तो यह रात हमारे लिए गोल्डन चान्स होगी या फिर हमारे लिए लास्ट चान्स होगी।

गुनाह और नापाकी

एक बात याद रखना कि गुनाह नापाकी की मानिन्द हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ. (التوبه: ٢٨)﴾ मुश्रिक नजिस होते हैं।

अगर मुश्रिक सत्तर मर्तबा भी ग़ुस्ल करके आए तो वह नजिस

है हालाँकि उसके जिस्म से नजासत की बदबू नहीं बल्कि परफ़्यूम की खुशबू आ रही होती है। क़ुरआन मजीद इसको नजिस कह रहा है। क्यों इसलिए कि शिर्क को नजासत से ताबीर किया है।

बिल्कुल इसी तरह जितने भी गुनाह हम करते हैं हर हर गुनाह नजासत की मानिन्द है। जिस अज़ू से भी गुनाह करते हैं वह अज़ू गुनाह करने से नजिस हो जाता है। चूँकि यह गुनाह इंसान को नापाक कर देते हैं इसलिए इस नापाक इंसान को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की पाक हस्ती का वस्ल हासिल नहीं हो सकता। लिहाज़ा अगर हम सौ फ़ीसद गुनाहों से सच्ची तौबा करेंगे तो हमें अल्लाह तआला का वस्ल हासिल हो सकेगा।

यह ख़त्म क़ुरआन की महफ़िल थी इस आजिज़ ने बग़ैर कुछ तैयारी किए आपके सामने बयान दिया। आजिज़ ने शुरू में नीयत भी यही की थी कि या अल्लाह जो बातें मजमे के लिए ज़्यादा फ़ायदेमंद हों वही कहलवा दीजिए। लिहाज़ चंद बातें आपके सामने पेश कर दी हैं।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें क़ुरआन मजीद का क़ारी बना दे। क़ुरआन मजीद का हाफ़िज़ बना दे, क़ुरआन मजीद का आलिम बना दे, क़ुरआन मजीद का आमिल बना दे। क़ुरआन मजीद का दाई बना दे। क़ुरआन मजीद का नाशिर बना दे। क़ुरआन मजीद का आशिक़ बना दे बल्कि क़ुरआन मजीद को हमारा ओढ़ना बिछौना बना दे। (आमीन)

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें सच्ची पक्की तौबा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दें, आमीन।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

अश'आरे मुराक़बा

बनाऊँगा अपने नफ़्से सरकश को अब तो या रब गुलाम तेरा
मैं छोड़कर कारोबार सारे करूंगा हर वक़्त काम तेरा
किया करूंगा बस अब इलाही मैं ज़िक्र ही सुबह शाम तेरा
जमाऊँगा दिल में याद तेरी रटूँगा दिन रात नाम तेरा
हर दम करूंगा ऐ मेरे बारी अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह
अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह

मैं ऐ खुदा दम भरूंगा तेरा बदन में जब तक के जाँ रहेगी
पढूंगा हर वक़्त कलिमा तेरा दहन में जब तक ज़बाँ रहेगी
कोई रहेगा न ज़िक्र लब पर तेरी ही बस दास्ताँ रहेगी
न शिकवा दोस्ताँ रहेगा न ग़ीबत दुश्मनाँ रहेगी
हर दम करूंगा ऐ मेरे बारी अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह
अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाहा

रहा मैं दिन रात ग़फ़लतों में अबस यों ही ज़िंदगी गुज़ारी
क्या न कुछ काम आख़िरत का कटी गुनाहों में उम्र सारी
बहुत दिनों मैंने सरकशी की मगर है अब सख़्त शर्मसारी
मैं सर झुकाताहूँ मेरे मौला मैं तौबा करता हूँ मेरे बारी
हर दम करूंगा ऐ मेरे बारी अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह
अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह

بسم الله الرحمن الرحيم

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْب.

सुकून की तलाश

यह बयान यकुम शव्वाल 1422 हि० मुताबिक़ 15 दिसम्बर 2001 ई० ईद की रात को मस्जिद नूर लूसाका (ज़ाम्बिया) में एतिकाफ़ के बाद हुआ। मुख़ातबीन में मौतकिफ़ीन उलमा, सुल्हा और आम लोगों की कसीर तादाद थी।

इक़्तिबास

अल्लाह के ज़िक्र के अंदर एक फ़नाइयत है और इसी फ़नाइयत के ज़रिए इंसान के ग़म दूर होते हैं जिससे उसके दिल को सुकून मिलता है और वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत में आगे बढ़ता रहता है। इसीलिए ज़िक्र करने की बार-बार ताकीद की जाती है। अगर हम अल्लाह का ज़िक्र कसरत और क़ायदगी के साथ करेंगे तो हमें दीन और दुनिया दोनों में फ़ायदा होगा। अब तो यह बात साइन्स से भी साबित हो चुकी है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿ذِكْرُ اللّٰهِ شِفَاءُ الْقُلُوْبِ﴾ अल्लाह की याद दिलों के लिए शिफ़ा है।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्ददी मद्देज़िल्लहु

सुकून की तलाश

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُو اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًاo وَسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا (الاحزاب ۴۱،۴۲)

وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِىْ مَقَامٍ اٰخَرَ. وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَالذّٰكِرَاتِ لا اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًاo(الاحزاب : ۳۵)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَo وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَo
وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

सुकूने क़ल्ब का लाजवाब नुस्ख़ा

कितनी तस्कीन वाबस्ता है तेरे नाम के साथ
नींद कांटों पे भी आ जाती है आराम के साथ.

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद में कुछ ऐसा लुत्फ़ और मज़ा है कि इंसान की सब परेशानियाँ दूर हो जाती हैं। चुनाँचे क़ुरआन मजीद में फ़रमा दिया गया :

﴿اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ. (الرعد:۲۸)﴾ जान लो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद के साथ दिलों का इत्मिनान वाबस्ता है।

किसी शायर ने इसी मज़मून को यों बयान किया है—

न दुनिया से न दौलत से न घर आबाद करने से
तसल्ली दिल को होती है ख़ुदा को याद करने से

दो लामहदूद चीज़ें

क़ुरआन मजीद के मुताले से पता चलता है कि दो चीज़ें ऐसी हैं जिनकी कोई हद नहीं :

1. तक़्वा, 2. ज़िक्रुल्लाह।

तक़्वे की कोई हद मुक़र्रर नहीं की गई। बस इतना कह दिया ﴿فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ (التغابن:١٦)﴾ पस तुम तक़्वा अख़्तियार करो जितनी तुम्हारे अंदर इस्तितअत है। यानी मैदान खुला है इसमें जितने दौड़ सकते हो दौड़कर दिखाओ। इंसान सारी उम्र तक़्वे में बढ़ सकता है। इसकी कोई हद नहीं है।

इसी तरह ज़िक्रुल्लाह के बारे में इर्शाद फ़रमाया :

﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا. (الاحزاب:٤١)﴾

ऐ ईमान वालो! अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करो।

अब इस ज़िक्रे कसीर की यह तफ़्सीर :

﴿اَلَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ. (آل عمران:١٩١)﴾

वह बंदे जो खड़े, बैठे और लेटे अल्लाह को याद करते हैं।

इंसान की तीन हालतें मुमकिन हैं। या तो वह खड़ा होगा या बैठा होगा या लेटा होगा। गोया इंसान को इन तीनों हालतों में ज़िक्र करने का हुक्म दिया गया है। दूसरे लफ़्ज़ों में बंदे को ज़िक्र करने का हुक्म दिया गया है। इसकी कोई हद नहीं। इंसान जितना गुड़ डालेगा उतना ही मीठा होगा। इन दो चीज़ों के अलावा बाक़ी तमाम चीज़ों की हद मुक़र्रर की गई। मिसाल के

तौर पर :

नमाज़ की हद मुक़र्रर है कि पाँच फ़र्ज़ नमाज़ें पढ़नी है।

रोज़े की हद है कि तीस रोज़े रखने हैं।

ज़कात की हद है कि इतनी देनी है।

हज की हद है कि ज़िंदगी में एक बार फ़र्ज़ है।

इमामे आज़म रह० की इमाम अबूयूसुफ़ रह० को नसीहत

ज़िक्रुल्लाह की इतनी अहमियत है कि इमामे आज़म रह० ने जब इमाम अबूयूसुफ़ रह० को जस्टिस बनाकर भेजा तो उन्हें नसीहतें फ़रमायीं। उलमा जानते हैं कि "वसाया इमामे आज़म" के नाम से किताबें भी मिलती हैं। देखें एक आदमीको चीफ़ जस्टिस का ओहदा मिल रहा है और उसका उस्ताद उसको नसीहतें कर रहा है। हिदायत देते हुए चाहिए तो यह था कि वह फ़रमाते कि उसूले फ़िक़ह को सामने रखना है, क़ुरआन व हदीस और इज्मिा व क़यास पर नज़र रहे लेकिन इमाम आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि ने इमाम अबूयूसुफ़ रह० को फ़रमाया :

"ऐ याक़ूब! (असल नाम याक़ूब था, कुन्नियत अबूयूसुफ़ थी) तुम लोगों में बैठकर कसरत के साथ ज़िक्र करना ताकि लोग तुमसे सीखकर ज़िक्र करें।"

मालूम हुआ कि इल्म का कोई भी मैदान हो ज़िक्र के बग़ैर रंग नहीं चढ़ता। जिस तरह ज़िक्र करने से इंसान के दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत आती है उसी तरह ज़ाकिरीन की सोहबत में बैठकर अल्लाह तआला की मुहब्बत आती है

मग़रिबी दुनिया सुकून की तलाश में

1985 ई० की बात है कि हमारे वाशिंगटन के दोस्तों ने एक

महफ़िल का इंतिज़ाम किया जिसमें उन्होंने दुनिया के बड़े पढ़े लिखे और बासलाहियत लोगों को ख़ासतौर पर बुलाया। कई एम्बेसडर थे, कई पीएचडी और मेडिकल डाक्टर थे। इस आजिज़ ने उनके सामने अंग्रेज़ी में बयान किया उसके बाद मामूल के मुताबिक़ उनको मुराक़बा करवाया और फिर दुआ करवाकर महफ़िल ख़त्म कर दी।

दुआ के बाद एक आदमी इस आजिज़ से मिलने के लिए आए। उनके साथ चार पाँच आदमी और भी आ गए। उनका तारुफ़ करवाया गया कि यह एक मुसलमान डाक्टर हैं और ये मुल्क के बीस अज़ीम डाक्टरों में से एक हार्ट स्पेशलिस्ट हैं। बहरहाल यह सुनकर खुशी हुई कि यह मुसलमान हैं और अल्लाह तआला ने इनको किसी न किसी शोबे में इज़्ज़त बख़्शी है।

मुख़्तसर तारुफ़ के बाद वह मुझसे पूछने लगे कि आपने थोड़ी देर सर झुकाकर क्या करवाया है? मैंने कहा मुराक़बा। वह कहने लगे आपने यह कहाँ से सीखा है? मैंने कहा अपने बड़ों से। वह फिर कहने लगे, ऐशिया से सीखा है या यूरोप से? मैंने कहा यहाँ तो मैं अभी आया हूँ। मैंने मुराक़बा करना एशिया से ही सीखा है। वह कहने लगा क्या इसका तज़्किरा कहीं है? मैंने कहा, बिल्कुल है। यह सुनकर वह थोड़ी देर सोचता रहा। आख़िर कहने लगा कि इस्लाम सच्चा दीन है। हमने पूछा, आप कैसे कह रहे हैं कि इस्लाम बड़ा सच्चा दीन है। वहजह क्या बनी? उसके जवाब में उसने यह तफ़्सील बताई।

वह कहने लगे, यहाँ गोलियाँ खाकर जो लोग सोते हैं उनकी तादाद पिछले सालों में इतनी बढ़ गई थी। उसके नतीजे में गवर्मेन्ट के सामने डिमान्ड आई कि या तो फ़ैक्ट्रियों को प्रोडक्शन बढ़ाने की इजाज़त दो या कोई ऐसी सूरत हो कि बंदों को खानी

ही न पड़े। यह सुनकर हमारे "बड़े" परेशान हुए कि पूरी क़ौम को गोलियाँ खाकर सोना पड़ता है। चुनाँचे उन्होंने पूरे मुल्क से हार्ट स्पेशलिस्ट डाक्टरों को इकठ्ठा किया। मैं भी उनमें था। उन्होंने इन डाक्टरों की एक कमेटी बना दी और कहा कि इस बात पर रिसर्च करो कि लोग परेशान क्यों होते हैं हालाँकि हमारे माहौल में वे जो चाहते हैं खाते हैं, जो चाहते हैं, पीते हैं। जहाँ चाहते हैं सोते हैं। क्लबों में जाते हैं, डान्स करते हैं। उन पर किसी चीज़ की पाबन्दी नहीं है ही नहीं। जब उनकी हर ख़्वाहिश पूरी हो जाती है तो फिर ये परेशान क्यों होते हैं।

हुकूमत ने तमाम डिपार्टमेन्ट में एक आफ़िस आर्डर कर दिया कि यह कमेटी नेशनल लेवल का एक काम कर रही है, इसको जहाँ भी सपोर्ट चाहिए होगी तमाम डिपार्टमेन्ट इनको सपोर्ट दें। वह डाक्टर साहब कहने लगे कि हमारे तो वारे के नियारे हो गए। सुपर कम्पयुटर हमारे अख़्तियार में थे। जिस इदारे से भी हमें दस्तावेज़ या रिसर्च पेपर चाहिए होता था हमें मिल जाता था। हर लायब्रेरी हमारे सामने थी। हर तरह की सहूलतें हमें मयस्सर थीं।

हमने आपस में सोचा कि आख़िर बंदा परेशान क्यों होता है? किसी ने कुछ कहा और किसी ने कुछ। काफ़ी बहस के बाद यह फ़ाइनल हुआ कि हमें सोचना चाहिए कि दिमाग़ का वह कौन सा हिस्सा है जिसके साथ ख़ुशी व ग़मी का ताल्लुक़ है। ख़ुश बंदे के दिमाग़ में भी कोई चीज़ होगी और परेशान बंदे के दिमाग़ में भी। इन दोनों के दर्मियान मेडीकली कोई फ़र्क़ होगा। हमने कहा इसी बात पर रिसर्च करते हैं।

हमने इस का तरीक़ा यह अपनाया कि हमने ख़ुश बंदों को मशीन में बिठाकर उनकी दिमाग़ की स्केनिंग की। उनके दिमाग़ का जितना डाटा (मवाद) था उसको हिन्दसी (गिनती की) सूरत

करके हमने कम्पयुटर में फीड (दाख़िल) कर दिया। और जो परेशान थे उनको भी इसी तरह स्कैन किया और डाटा कम्पयुटर में फीड कर दिया और जो परेशान थे उनको भी इसी तरह सुकून किया और और फिर हमने कम्पयुटर को एक प्रोग्राम बनाकर दे दिया जिसमें कहा कि कुछ यह बंदे हैं और कुछ ये बंदे हैं। इन के दिमाग़ों का आपस में मुक़ाबला करके बताओ कि फ़र्क़ कहाँ पर है? जब कम्पयुटर को ऐसी Assignment (मश्क़) दी जाए तो वह दिमाग़ के एक-एक सेल के ऊपर जाकर फ़र्क़ बताता है।

वह कहने लगे कि हमने कई हज़ार ख़ुश बंदों के और कई हज़ार डिप्रेशन वाले बंदों के टेस्ट लिए। आख़िर दो तीन महीने की मेहनत के बाद सुपर कम्पयुटर ने दिमाग़ के एक सैल को निशानज़दा कर दिया। गोया उसने बता दिया कि इस सेल में फ़र्क़ होता है। इसका मतलब यह है कि जब इस सेल पर चार्ज होता है तो बंदा बेचैनी महसूस करता है। उसका मूड आफ़ हो जाता है। बात करने को जी नहीं चाहता। और हम कहते हैं कि दिमाग़ गर्म हो गया है। जब इस जगह से चार्ज ख़त्म हो जाता है तो बंदा मज़े में होता है, हंस भी रहा होता है और हंसा भी रहा होता है।

हम सोचने लगे कि यह तो बहुत बड़ी रिसर्च हो गई कि हमने इस सेल को ढूंढ लिया। फिर हमने ख़्याल किया इसका काउन्टर टेस्ट लेते हैं। चुनाँचे हमने सोचा कि हम ऐसे बंदे को मशीन में बिठाते हैं जो वाक़ई बड़ी टैनशन (बेचैनी) में हो और मसनवी तौर पर मशीन के ज़रिए उसके इस सेल को चार्ज से डिसचार्ज कर देते हैं। जब उसका वह सैल डिस्चार्ज हो जाएगा तो वह बंदा ख़ुश हो जाएगा। चुनाँचे वह कहने लगे कि हमने ऐसे ही बंदे को मशीन में बिठाया जो वाक़ई परेशान था और हमने उसके दिमाग़ के इस टिशू से चार्ज को ख़त्म कर दिया जिसकी वजह से मुस्कराने लगा

और हमारे साथ यों बातें करने लगा जैसे वह परेशान ही नहीं था। उसके बाद हमने एक बहुत ही खुश बंदे को मशीन में बिठाया। हमने उसके दिमाग़ के इस टिशू में मसनवी तौर पर चार्ज दाख़िल कर दिया। बस चार्ज दाख़िल करना ही था कि उसका पारा ही चढ़ गया। वह हमसे झगड़ने लग गया।

हमने इस तरह हज़ारों टेस्ट लेकर तसल्ली कर ली कि अगर इस जगह चार्ज बंद हो तो बंदा परेशान होता है और अगर इस जगह से चार्ज ख़त्म हो जाए तो बंदा खुश हो जाता है। हमने कहा कि हमने रिसर्च करके खुशी ग़मी का पता कर लिया है।

वह कहने लगा कि हमने हुकूमत को रिपोर्ट पेश कर दी। जब पढ़ने वालों ने हमारी रिपोर्ट पढ़ी तो उन्होंने कहा, शाबाश! तुमने बहुत अच्छा काम किया। लेकिन हम सारी क़ौम को मशीनों में तो नहीं बिठा सकते। आपने अभी तक आधा और आधा काम यह है कि अब यह सोचो कि यह चार्ज बग़ैर मशीन में बैठे कैसे ख़त्म हो सकता है चुनाँचे वह कहने लगे कि यह Second assignment (मश्क़) मिल गई और हम यह सोचने में लग गए कि यह चार्ज मशीन में बैठे बग़ैर कैसे ख़त्म हो सकता है।

इस मक़सद के हासिल करने के लिए पहले बड़ी बहसें हुईं। फिर रिसर्च वर्क शुरू हुआ। आख़िर दिल में एक बात आई कि एक बंदा जो बड़ा ही ग़मज़दा होता है अगर उसे दो चार घंटे की नींद आ जाए तो नींद के बाद जब वह उठता है तो उसको पहले जैसा ग़म नहीं होता बल्कि तबियत बहाल हो चुकी होती है। हमारे ज़हन में सवाल पैदा हुआ कि दो चार घंटे की नींद से आख़िर क्या फ़र्क़ पड़ता है? चुनाँचे यह मालूम करने के लिए एक परेशान बंदे को सोने से पहले भी मशीन में बिठाया और एक दो घंटे की नींद के बाद भी मशीन में बिठाया तो हमने देखा कि उसके चार्ज

की Intensity (शिद्दत) कम हो चुकी थी। पहले उसकी Intensity ज़्यादा थी और बाद में कम हो गई। हमने कहा कि इसका मतलब यह है कि यह जल्दी ज़ाएल हो जाता है। जब बंदा सो जाता है तो उसका दिमाग़ ऑफ़ लोड हो जाता है यानी दिमाग़ का बोझ उतर जाता है। आफ़ लोड होने की वजह से चार्ज जल्दी ज़ाएल हो जाता है।

वह कहने लगे कि हमारे ज़हन में ख़्याल आया कि अगर यह चार्ज जल्दी सो जाने से जल्दी ज़ाएल हो जाता है तो क्यों न हम कोई ऐसी Exercise (मश्क़) ढूंढें जिससे यह जल्दी ज़ाएल हो जाए। चुनाँचे हमने सोचा कि हम दिमाग़ को आफ़ लोड करने की कोशिश करते हैं। हमने कहा कि एक बंदे को बिठाकर कहा जाए कि वह बिल्कुल सोचना छोड़ दे। जब वह सोचना छोड़ देगा तो दिमाग़ पर लोड कम हो जाएगा। वह कहने लगे कि जब हमने एक परेशान बंदे को इस तरह बिठाया तो आधे पौने घंटे में उसका चार्ज वाक़ई जल्दी ज़ाएल हो गया। इस तरह हमने कई टेस्ट किए। आख़िर हमने हाकिमों को बता दिया कि जनाब यह मश्क़ करने से बंदे की परेशानी जल्दी ख़त्म हो जाती है और वह खुश हो जाता है।

हुकूमत ने इस वर्ज़िश का नाम Meditation (मुराक़बा) रखा। और हुक्म दिया कि पूरे मुल्क में हर शहर के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में मेडिटेशन क्लब बना दो। वह कहने लगे कि अब तो हर जगह मेडिटेशन क्लब हुए हैं। लोग अपने दफ़्तरों से थके मांदे और परेशान हाल आते हैं और वे क्लब के अंदर चले जाते हैं। क्लब के अंदर बताने वाले मौजूद होते हैं। वे उनको कहते हैं कि यहाँ बैठ जाइए। हर चीज़ को भूल जाइए। बिल्कुल सोचना छोड़ दीजिए। इस तरह की बातें करते रहते हैं। थोड़ी देर के बाद वे

कहते हैं कि हम तो अपने आपको बहुत ही लाइट महसूस कर रहे हैं। इस तरह वे समझते हैं कि बेचैनी ख़त्म हो जाती है।

डाक्टर साहब कहने लगे कि ये मेडिटेशन तो यहाँ आम हो चुकी है। लेकिन जो रिसर्च यहाँ आज होती है वह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में तो कहीं बीस साल बाद पहुँचती है। इसीलिए मैंने आपसे सवाल किया था कि आपने यह मेडीटेशन कहाँ से सीख ली।

अब मैंने उनको समझाया कि भई! यह मेडिटेशन नहीं है बल्कि यह तो अल्लाह का ज़िक्र है जिसका हुक्म क़ुरआन मजीद में यों है :

﴿وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ (الاعراف:٢٠٥)﴾

और ज़िक्र करे अपने रब का अपने दिल में।

हमने मुराक़बा करके क़ुरआन मजीद की इस आयत पर अमल किया है। ख़ैर उसकी फिर बड़ी तसल्ली हुई। वह कहने लगे कि यही वजह है कि मैंने कहा था कि इस्लाम बड़ा सच्चा दीन है जिसने चौदह सौ साल पहले हमें बता दिया था कि अगर हम ज़िक्रे क़ल्बी करेंगे तो अल्लाह तआला हमारे दिल की तमाम परेशानियों को दूर फ़रमा देंगे। दुनिया आज रिसर्च करने के बाद जिस नतीजे पर पहुँच रही है हमें चौदह सौ साल पहले वैसे ही बता दिया गया था।

स्वीडन में एक माहिर नफ़्सियात का एतिराफ़

इस वाक़िए के पाँच साल बाद 1990 ई० में एक और वाक़िआ पेश आया। उस वक़्त फ़कीर भी किसी मुल्क के दूसरे बड़े सनअती ग्रुप के जनरल मैनेजर का डाइरेक्टर टैक्नीकल था। स्वीडन में प्लानिंग के बारे में एक कोर्स हुआ। उस कोर्स का नाम

प्रोजेक्ट मैनेजमेन्ट था। कोर्स की इंतिज़ामिया ने मुख़्तलिफ़ मुल्कों के लोगों को स्लैक्ट किया। अजीब बात यह है कि पूरे मुल्क से इस आजिज़ का नाम स्लैक्ट हो गया। अलहम्दुलिल्लाह फिर हमने नुमाइन्दगी की। इस कोर्स में दुनिया के सत्ताइस मुल्कों के लोग शामिल थे। इसमें हमने चालीस दिन कम्पयुटर पर काम किया।

अल्लाह तआला की शान देखिए कि जब इस कोर्स का इम्तिहान हुआ तो यह आजिज़ सत्ताइस मुल्कों के लोगों में भी टाप कर गया बल्कि मैं तो कहता हूँ क मेरे साथ वाले बड़े अच्छे थे और मुझ पर इतने मेहरबान थे कि उन्होंने मुझे अव्वल आने का मौक़ा दे दिया।

आख़िरी दिन उन लोगों ने अपने मुल्क के सात माहिरीन नफ़्सियात को बुलाया। उनमें से चार मर्द और तीन औरतें थीं। यह उनके मुल्क के चुने हुए लोग थे। उन्होंने लैक्चर देना था। चुनाँचे उन्होंने कहा कि आज का उनवान Human Stresses (इंसानी परेशानियाँ) है। वह कहने लगे कि जिस तरह टरबाइन का रोटर बनाते हुए स्ट्रेस आ जाते हैं और फिर उनको रीलीज़ करना पड़ता है इसी तरह सांइसी दुनिया में जो मैनेजर और डाइरेक्टर होते है उनके दिमाग़ में भी हर वक़्त स्ट्रेस पड़ रहे होते हैं। कभी-कभी वे चाहते हैं कि कुछ काम हो जाएं मगर वे नहीं हो पाते। और कभी वे चाहते हैं कि कुछ काम न हो लेकिन वह हो जाते हैं। इसकी वजह से उनके ज़हन मे हर तरफ़ से टैनशन बेचैनी हो जाती है। अगर इस टैनशन को ख़त्म न किया जाए तो इस बंदे की सेहत पर बुरा असर पड़ता है। इसलिए उन्होंने इस लैक्चर का नाम Human Stresses (इंसानी परेशानियाँ) रखा। मैंने दिल में सोचा कि हमारे लोग इस बात को सादा लफ़्ज़ों में बयान कर देते हैं, "परेशानियाँ इंसान को बूढ़ा कर देती हैं।"

लेकिन वह इसी बात को साइन्स की ज़बान में खड़े समझा रहे थे कि पहले तिब्बी तौर पर यों होता है, फिर यों होता है। फिर बंदे पर असर पड़ता है और फिर वाक़ई बंदा ठीक हो जाता है।

जब उन्होंने इस बात को मेडिकली साबित कर लिया तो वह कहने लगे कि आप सत्ताइस मुल्कों के लोग हैं। हम आपको एक मश्क़ करवाना चाहते हैं। इस मश्क़ के ज़रिए आपको टैनशन ख़त्म हो जाया करेगी। यह सुनकर वे बड़े ख़ुश हुए और कहने लगे कि जी हाँ आप हमें ज़रूर मश्क़ करवाएं।

उन्होंने हमें एक हाल में दायरे की शक्ल में बिठाया हुआ था। सामने स्टेज पर वे सब लैक्चर दे रहे थे। वे कम्प्युटर और दूसरे सुनने और देखने वाली मशीनों की मदद से अपनी साइन्सी फ़िल्में दिखा रहे थे। जब उन्होंने सारा कुछ दिखा दिया तो वह कहने लगे कि अब हम आपको वह वर्ज़िश सिखाना चाहते हैं ताकि आप रोज़ाना अपनी टैनशन भी रिलीज़ कर लिया करें और दूसरों को भी सिखाएं ताकि उनकी टैनशन भी ख़त्म हो सकें। हमने कहा बहुत अच्छा। आप ज़रूर सिखाएं।

आप हैरान होंगे कि उन्होंने कहा :

Shut the doors. (दरवाज़े बंद कर दो।

एक आदमी ने जाकर दरवाज़े बंद कर दिए।

Switch off th lights. (लाइटें बुझा दो।)

चुनाँचे लाइट भी बंद कर दी गयीं।

Close the eyes. (आँखें बंद कर लो।)

हम सबने आँखें बंद कर लीं।

Bend your heads. (अपने सरों को झुका लो।)

हमने सरों को झुका लिया। फिर वे कहने लगे :

Forget everything, feel relax. (हर चीज़ को भूल जाओ। सुकून महसूस करो।)

हम इसी तरह बैठे रहे और वह बराबर यही जुमले कहते रहे :

Forget everything, feel relax. Forget everything, feel relax.

पाँच सात मिनट बाद उनके चेयरमैन ने कहा :

The exercise is over. (वर्ज़िश ख़त्म हो गई।)

अब लाइटें ऑन हो गयीं और दरवाज़े खोल दिए गए।

उसके बाद उनमें से एक ने कहा कि अब आपसे बारी-बारी पूछेंगे कि आपने इस वर्ज़िश को कैसा महसूस किया। चुनाँचे उन्होंने पूछना शुरू कर दिया।

जमाएका की एक लड़की ने खड़े होकर कहा :

I am feeling elevated. (मैं हल्का महसूस कर रही हूँ।)

उसके बाद इंडोनेशिया का एक लड़का खड़ा होकर कहने लगा:

I am feeling satisfied. I am feelingh sctisfied. (मैं इत्मिनान महसूस कर रहा हूँ, मैं इत्मिनान महसूस कर रहा हूँ।)

हम भी दर्मियान में बैठे हुए थे। जब उन्होंने हमसे तास्सुरात पूछ तो हमने कहा कि बात यह है कि आपने हमें जो कुछ करवाया है वह तो अधूरा काम है जबकि हम तो पूरा काम रोज़ाना करते हैं। उसने कहा आपका क्या मतलब है? मैंने कहा कि आपने हमें कहा :

हर चीज़ को भूल जाओ, हर चीज़ को भूल जाओ, हर चीज़ को भूल जाओ, यह काम आधा है। हम इसके अलावा भी कुछ

करते हैं। हम कहते हैं, "हर चीज़ को भूल जाओ और अल्लाह तआला की याद में डूब जाओ।"

यह जो Second half (दूसरा आधा) है यह तो आपने करवाया नहीं जबकि हम तो यह भी करते हैं। जब मैंने उससे यह बात कही तो उसने मुझसे पूछा, Are you Muslim? (क्या आप मुसलमान हैं?

मैंने कहा, Yes, I am. (हाँ में मुसलमान हूँ।)

जब मैंने यह कहा तो उस वक़्त उसने इंगलिश में एक फ़िक़रा बोला। मैंने वह फ़िक़रा हू-ब-हू याद कर लिया। अब मैं वही फ़िक़रा आपको सुना रहा हूँ। उसने कहा :

You learnt it by wisdom one thousand time and five hundred years ago but we have just learnt it by science.

आपने इस अमल को "वही" के ज़रिए पंद्रह सौ साल पहले सीख लिया था और हमने उसे अभी सांइस के ज़रिए सीखा है।

उसने यह बात सत्ताइस मुल्कों के लोगों के सामने की। मैंने कहा अलहम्दुलिल्लाह यह दीने इस्लाम कितना ख़ूबसूरत दीन है कि ये लोग रिसर्च करके आख़िर वहाँ पहुँचते हैं जहाँ हमारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तालीम दी। सुब्हानअल्लाह एक आम बंदा जिसको दीन का कुछ पता नहीं अगर वह भी अल्लाह की याद में बैठता है तो वह भी इसके फ़ायदे हासिल कर रहा होता है।

मेरे दोस्तो! नेमतें हमारे पास हैं और लोग इनसे दुनिया के फ़ायदे ढूंढते फिर रहे हैं। लेकिन जब मुसलमान से कहा जाए कि ऐ ख़ुदा के बंदो! तुम जो परेशान फिरते हो, तुम्हारी परेशानी का

इलाज गोलियाँ खाने में नहीं है बल्कि अल्लाह तआला की याद में है तो वे इस तरफ़ आते नहीं। बल्कि सच्ची बात यह है कि वे इसे एक फ़ालतू काम समझते हैं और कहते हैं कि यह ज़िक्र व मुराक़बा कहाँ से आ गया। वे ख़ुद तो सारी दुनिया का ज़िक्र करते फिरते हैं और अगर हम अल्लाह का ज़िक्र करें तो यह उन्हें बुरा लगता है। हक़ीक़त यह है कि जिस बंदे को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से मुहब्बत होती है उसको उसका नाम लेने में मज़ा आता है—

हम रटेंगे गरचे मतलब कुछ न हो
हम तो आशिक़ हैं तुम्हारे नाम के

अगर मुहब्बे इलाही वाली यह कैफ़ियत किसी को न मिली हो और अल्लाह तआला ने उसको इससे महरूम कर रखा हो तो फिर हम उसके लिए क्या कर सकते हैं?

ज़िक्रे इलाही से सुकून मिलने की वजह

अल्लाह के ज़िक्र के अंदर एक फ़नाइयत है और इसी फ़नाइयत के ज़रिए इंसान के ग़म दूर होते हैं। जिससे उसके दिल को सुकून मिलता है और वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत में आगे बढ़ता रहता है। इसलिए ज़िक्र करने की बार-बार ताकीद की जाती है। अगर हम अल्लाह तआला का ज़िक्र कसरत और बाक़ायदगी के साथ करेंगे तो हमें दीन और दुनिया दोनों में फ़ायदा होगा। अब तो यह बात साइंस से भी साबित हो चुकी है। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿ذِكْرُ اللّٰهِ شِفَاءُ الْقُلُوْبِ﴾ अल्लाह की याद दिलों के लिए शिफ़ा है।

आप ज़रा लेटे बैठे चलते फिरते हर वक़्त अपने दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद रखें फिर उसकी बरकतें देखना।

हमारे मशाइख़ जो ज़िक्र करवाते हैं वे ऐसे ही तस्बीह नहीं फिरवाते और न ही अदद पूरे कराते हैं बल्कि इससे सालिक का दिल बदल रहा होता है। हमने इस निस्बत की बहुत ज़्यादा बरकतें देखी हैं।

मैं आप जैसा बनना चाहता हूँ

एक बार यह आजिज़ किसी एयरपोर्ट पर फ़्लाइट के इंतिज़ार में बैठा था। एक नौजवान सामने से गुज़रा। वह शराब पी रहा था। एक बार तो वह सामने से गुज़र गया। थोड़ी सी दूर जाकर वह फिर लौटा और आकर मुझे हैलो हाय करने के बाद कहने लगा :

मैं आप जैसा बनना चाहता हूँ (I want to be like you.) जब मैंने उसे देखा कि उसके हाथ में शराब की बोतल थी तो मैं यह समझा कि इसको यह पगड़ी और लिबास अच्छा लगा होगा। हम से जब बाहर मुल्क में लोग पूछते हैं कि आपने यह लिबास क्यों पहना हुआ है तो हम कहते हैं यह "क्यूट" लिबास है। उन काफ़िरों को हम यह नहीं कहते कि यह सुन्नत लिबास है क्योंकि क्या पता कि वह आगे क्या बकवास कर दें। और क्यूट ऐसा लफ़्ज़ है कि जब हम उनको जवाब में कहते हैं तो वे आगे बोल ही नहीं सकते। ख़ैर जब उसने कहा कि मैं आप जैसा बनना चाहता हूँ तो मैंने उससे कहा,

Do you like this turban and this white dress.

क्या आप यह पगड़ी और सफ़ेद लिबास पसन्द करते हैं? वह कहने लगा,

(No, I want to be like you because I am seeing some light on your face.)

नहीं, मैं आपकी तरह इसलिए बनना चाहता हूँ कि मुझे

आपके चेहरे पर नूर नज़र आ रहा है।

जब उसने ये अल्फ़ाज़ कहे तो मुझे फ़ौरन एहसास हुआ कि क्या पता कि अल्लाह तआला ने इसे बदलने का फैसला कर लिया हो। चुनाँचे मैंने उससे कहा,

O brother! then you can be better than me.

ऐ भाई! आप मुझ से भी बेहतरीन बन सकते हैं। वह कहने लगा, क्या सचमुच ऐसा ही है? वह कहने लगा,

Ok, I am just comming.

ठीक है मैं अभी आ रहा हूँ।

वह यह कहकर सामने वाशरूम में चला गया। उसने मेरे देखते हुए शराब की बोतल फेंकी और वाशबेसन पर कुल्ली करके चेहरा धोया। वह ताज़ा दम होकर दोबारा मेरे साथ वाली कुर्सी पर आकर बैठ गया। वह कहने लगा,

Let me to introduce myself.

क्या मैं आपको अपना तार्रुफ़ कराऊँ?

मैंने कहा, जी हाँ कराएं।

अब उसने आपना तार्रुफ़ कराया कि मेरा नाम यह है और मैं ने टोकियो (जापान) की युनिर्वसिटी से एमएससी कंप्युटर साइंस से किया हुआ है और मैं इस वक़्त फ़लाँ बड़ी कंपनी के अंदर मैनेजर हूँ। उसने फिर वही बात दोहराई कि मैं आप जैसा बनना चाहता हूँ।

(I want to be like you.) मैं आप जैसा बनना चाहता हूँ।

मैंने कहा, You can be better than me. आप मुझ से भी बेहतरीन बन सकते हैं।

वह कहने लगा, यह कैसे मुमकिन है जबकि मैं नौजवान हूँ।

मैंने कहा तो क्या हुआ? नौजवान ही तो बन सकते हैं।

वह कहने लगा, नहीं, मैं आपको यह कहना चाहता हूँ कि आप मेरी शख़्सियत को देख रहे हैं कि मैं कितना ख़ूबसूरत हूँ। मेरा ओहदा और तंख़्वाह भी आपके सामने है। मुझे इस मुल्क में हर दिन कहीं न कहीं से गुनाह की दावत मिलती है और मैं उनका मेहमान होता हूँ। आज इधर अय्याशी कर रहा हूँ तो कल मेरे ग्राहक रोज़ नए होते हैं। जब मामला यहाँ तक पहुँच चुका है तो बताएं कि मैं गुनाह से कैसे बच सकता हूँ? मैंने कहा, भई! अगर आपके लिए गुनाहों से बचना मुश्किल है तो अल्लाह तआला के लिए तो आपको गुनाहों से बचा देना आसान है।

वह कहने लगा, हाँ यह तो है। मैंने कहा, हमने गुनाहों से बचने के लिए बड़ों से एक नुस्ख़ा सीखा हुआ है। मैं आपको वह सिखा देता हूँ। फिर उसकी बरकत ख़ुद देखना।

वह कहने लगा, जी बताएं। मैंने उसी जगह पर बैठे हुए उस आदमी को बैअत के कलिमात पढ़ाए और उसको मुराक़बा करने का तरीक़ा बताया। उसने कहीं और जाना था और मैंने कहीं और अलबत्ता हमने एक दूसरे का पता ले लिया।

अल्लाह की शान तीन माह बाद उस नौजवान ने इंगलिश में ख़त लिखा। उस ख़त को मैंने महफ़ूज़ कर लिया। उसने उस ख़त में दो बातें लिखीं :

पहली बात यह लिखी कि "पाँच वक़्त की नमाज़ तो पढ़ता ही हूँ, कभी-कभी मुझे तहज्जुद की नमाज़ भी मिल जाती है।"

दूसरी बात यह लिखी कि "इस बात पर हैरान हूँ कि मैं गुनाहों के समुन्दर में रहते हुए भी गुनाहों से कैसे बचा हुआ हूँ।"

मैंने इसके जवाब में लिखा कि "हमारे बड़ों की दुआएं हमारे

गिर्द पहरा दिया करती हैं।

दूर बैठा कोई तो दुआएं देता है
मैं डूबता हूँ समुन्दर उछाल देता है

एक एसपी की बातिनी इस्लाह

एक मर्तबा मुल्तान में बयान किया। कुछ लोग बैअत हुए। एक आदमी को मैंने देखा कि वह दूसरे आदमी को कह रहा था, बैअत हो जाओ, बैअत हो जाओ। लेकिन वह बैअत होने को तैयार नहीं हो रहे थे। जब मैंने यह देखा तो मैंने उनसे कहा कि आप इनको क्यों मजबूर करते हैं। यह तो ख़ुशी का सौदा है जिसका जी चाहेगा वह बैअत हो जाएगा। अब वह बंदा जिसको मजबूर कर रहा था वह ज़रा आगे बढ़कर कहने लगा, "हज़रत! बात यह है कि मैं इस इलाके का एसपी हूँ और ये मेरे बड़े भाई हैं। इन्होंने आपसे बैअत की हुई है और अब वह मुझे भी मजबूर कर रहे हैं कि आप भी बैअत हो जाएं। चूँकि मैं पुलिस के महकमे में हूँ। इसलिए मेरा खाना भी हराम, मेरा पीना भी हराम और मेरा पहनना भी हराम यहाँ तक कि आप जो गुनाह सोच सकते हैं वह गुनाह मैंने किए हुए हैं। इसलिए बैअत करने से मेरी कौनसी इस्लाह होगी।

मैंने कहा, भले आपकी ज़िंदगी जैसी भी है, बैअत होने की अपनी बरकतें हैं। अपने बदआमालियों की ज़ुलमत को देखा है और हमने इस अमल (बैअत) के नूर को देखा है। आप ज़रा आज़मा लें कि कुछ होता है या नहीं होता। उसने कहा, अच्छा, जी बैअत कर लेता हूँ। आजिज़ ने उसे भी बैअत किया और उस के दिल पर भी उंगली रखकर अल्लाह! अल्लाह की ज़र्ब लगा दी।

चार पाँच माह के बाद फिर उसी शहर में प्रोग्राम के सिलसिले

में जाना हुआ। अल्लाह की शान असर की नमाज़ के बाद जब यह आजिज़ खड़ा हुआ तो किसी आदमी ने पीछे से आकर छुप्पी डाली। मैं बड़ा हैरान हुआ कि मेरी तो किसी से ऐसी बेतकल्लुफ़ी नहीं है कि कोई आकर पीछे से यों छुप्पी डाले। थोड़ी देर के बाद उस ने छोड़ा। जब मैंने उस की तरफ़ देखा तो मुझे वह सुपरइन्टेन्डेन्ट पुलिस नज़र आए। उसकी मसनून दाढ़ी थी। मैंने देखकर कहा, ओ सुपरइन्टेन्डेन्ट साहब! क्या हाल हैं?

कहने लगे, "हज़रत! वह सुपरइन्टेन्डेन्ट तो उसी दिन मर गया था। बस आपका ग़ुलाम ज़िन्दा है।"

उसके बाद उसने भरे मजमे में कहा, "हज़रत! मेरी लाइफ़ इतनी बदल गई है कि मैं तहज्जुद की नमाज़ घर में पढ़ता हूँ और इस मस्जिद में आकर फ़ज्र की अज़ान देता हूँ।

एक मेम्बर नेशन एसेम्बली पर निस्बत की बरकात

जहाँनिया मंडी में हमारा एक मदरसा "जामिया रहमानिया" है। वहाँ के मोहतमिम, नाज़िम और उस्ताद सिलसिलए आलिया में बैअत हैं। इस ताल्लुक़ की बिना पर हम उसे अपना मदरसा कहते हैं। इस जामिया में बुख़ारी शरीफ़ का इफ़्तिताह या ख़त्म पर आजिज़ को लाज़मी जाना पड़ता है क्योंकि उलमा की महफ़िल होती है।

एक मर्तबा बुख़ारी शरीफ़ के ख़त्म की महफ़िल में शामिल होने के लिए उन्होंने आजिज़ को शिर्कत का हुक्म दिया। इस आजिज़ ने हुक्म की तामील की। जब बयान से फ़ारिग़ हुए तो हाजी अज़ीज़ुर्रहमान मेरे पास आए और उन्होंने कहा, हज़रत! मेरा एक फ़र्स्ट कज़िन है और वह एम०एन०ए० हैं। वह एक बड़ा ही अच्छा इंसान है। उसने लंदन से तालीम हासिल की है और वह

वहीं के रंग में रंग गया। वह इस वक़्त करोड़ें पति इंसान है। उसने यहाँ भी वही लाइफ़ रखी जो वहाँ थी। उसकी इतनी ज़्यादा जाएदाद है कि उसकी ज़मीन बिकी और पूरा शहर आबाद हुआ।

उसने कहा कि वह पिछले पैंतीस सालों से लगातार एम०एन०ए० बन रहा है। एक गवर्मेन्ट आए तो भी वह एम०एन०ए० बन जाता है और दूसरी गवर्मेन्ट आए तब भी वह एम०एन०ए० बन जाता है। उसकी वजह यह है कि वह सारा साल लोगों का काम करता है क्योंकि उसको पैसे का लालच नहीं है। इसलिए वह बेलौस होकर ग़रीबों का काम करता है और उनकी परेशानियों में उनका साथ देता है। इसलिए लोग कहते हैं कि हम तो उसी को वोट देंगे बल्कि वह अपने हलके में इतना मक़्बूल है और हर दिल अज़ीज़ है कि अगर वह अपनी जगह किसी खम्बे को खड़ा कर दे तो लोग उस खम्बे को भी वोट देकर एम०एन०ए० बना देंगे। वह अपने हलके में इतना मक़्बूल और हर दिल अज़ीज़ है। शहर के डिप्टी कमिश्नर, असिस्टेन्ट कमिश्नर, एस०एच०ओ० और दूसरे अफ़सरान उसके साथ अच्छी तालमेल बनाकर रखते हैं क्योंकि उनको पता होता है कि इसने तो फिर एम०एन०ए० बन जाना है। अगर हम इससे बिगाड़ेंगे तो हमें यहाँ से उखाड़कर किसी और सूबे में भिजवा देगा और हम बिला वजह मुसीबत में पड़ जाएंगे।

उसका काम यह है कि वह सारे दिन अपने ड्राइंगरूम में बैठा रहता है और ग़रीब आ रहे होते हैं और वह उनकी परेशानियाँ दूर करने में मदद कर रहा होता है। किसी को नौकरी दिलवाता है और किसी की बेटी की शादी का मसअला है तो उसको पैसे दे देता है। इस तरह वह सारा दिन लोगों के काम संवारता है। इस

लिहाज़ से लोग उससे बहुत खुश होते हैं लेकिन उसकी ज़िंदगी का एक अफ़सोसनाक पहलू यह है कि उसका रुज्हान दीन की तरफ़ इतना ज़्यादा नहीं बल्कि सच्ची बात तो यह है कि वह ईद पढ़ने के लिए भी मुश्किल से ही आता है। मेरा जी चाहता है कि वह दीन के क़रीब आ जाए। मैंने कहा, बहुत अच्छा। वह कहने लगे कि जी फिर क्या करना है? मैंने कहा अब तो गाड़ी में सामान रख दिया गया है और मैं जा रहा हूँ। आप इतना काम करना कि उनके पास चले जाना और जाकर यह कहना कि मेरे पीर साहब ने आपको सलाम दिया है। बस इतना काफ़ी है।

मैं तो यह बात भूल ही गया था लेकिन अल्लाह की शान देखिए कि जब अगले साल फिर बुख़ारी शरीफ़ के ख़त्म के मौक़े पर वहाँ पहुँचा तो हाजी अज़ीज़ुर्रहमान खुशी खुशी मेरे पास आए और कहने लगे हज़रत! मैंने अपने कज़िन को पिछले साल आपका सलाम दिया था। कुछ देर तो वह सोचता रहा और बाद में कहने लगा कि जब आपके पीर साहब आएं तो मेरी मुलाक़ात करवाना। इसलिए मैं अब उन से आपकी मुलाक़ात करवाना चाहता हूँ। मैंने कहा, अच्छा आप जाएं और उससे कहें कि हमारे बड़ों ने कहा है:

﴿بئس الفقير على باب الامير ونعم الامير على باب الفقير.﴾

फ़क़ीरों में से सबसे बुरा फ़क़ीर वह होता है जो किसी अमीर के दरवाज़े पर चलकर जाए और अमीरों में से बेहतरी अमीर वह होता है जो किसी फ़क़ीर के दरवाज़े पर चलकर जाए।

इसलिए इस फ़रमान के मिस्दाक़ अगर मैं तुम्हारे पास चल के आऊँगा तो ﴿بئس الفقير﴾ बुरा फ़क़ीर बन जाऊँगा और अगर आप मिलने आएं तो ﴿نعم الامير﴾ बेहतरीन अमीर बन जाएंगे। अब आप बताएं कि आप क्या चाहते हैं?

उसके बाद हाजी साहब उनके पास चले गए। जब उन्होंने उनसे बात की तो अल्लाह की शान देखिए कि उसने अपनी पिजारो गाड़ी निकाली और जिस मदरसे में हम ठहरे हुए थे वह एम०एन०ए० साहब वहाँ पहुँच गए। जब वह आकर चटाई पर बैठ गए तो लोग बड़े हैरान हुए कि बंदा जो पूरी ज़िंदगी कभी मदरसे में नहीं आया था वह भी आकर चटाई पर बैठा हुआ है। सलाम करने के बाद वह कहने लगे कि मैं आपसे अलैहिदगी में बात करना चाहता हूँ। चुनाँचे इस आजिज़ ने दूसरे हज़रात को बाहर भेजकर दरवाज़ा बंद कर दिया।

दरवाज़ा बंद करने के बाद उन्होंने हाल अहवाल पूछे। उसके बाद इस आजिज़ ने तौबा के उनवान पर चंद आयतें और हदीसें जो अल्लाह तआला ने दिल में डालीं उनके सामने बयान कीं। सुनने के बाद उन्होंने यह कहा कि हज़रत! तौबा तो वह करे जिसके कुछ गुनाह हों और कुछ नेकियाँ और जिसके गुनाह ही गुनाह हों उसने कभी नेकी की ही न हो वह कैसे तौबा करे। मुझे तो याद नहीं पड़ता कि मैं कभी नमाज़ भी पढ़ी हो। मेरा दिमाग़ यूरोप में जाकर ऐसा ख़राब हुआ कि मुझे वहाँ "पीने पिलाने" की आदत पड़ गई। जिसकी वजह से मैं अपने आप में मस्त होता हूँ। मैं इस आदत को छोड़ भी नहीं सकता। क्या मेरे जैसा बंदा भी बदल सकता है? मैंने कहा, हाँ बदल सकता है। वह कहने लगे कि जी मेरे पास तो नेक आमाल नहीं हैं। मैंने कहा नहीं, नहीं आप के बहुत से नेक आमाल हैं। जब मैंने कहा कि आपके भी नेक आमाल बहुत से हैं तो वह हैरान होने लगे। मैंने उनकी यह कैफ़ियत देखकर कहा कि आप नमाज़ नहीं पढ़ते ना। कहने लगे, हाँ। मैंने कहा मस्जिद में नहीं जाते? वह कहने लगे, हाँ। मैंने कहा ये गुनाह ही हैं जो आप करते हैं मगर इसके साथ साथ आप

नेकियाँ भी करते हैं मसलन जब कोई दुखी आता है तो क्या आप उसके साथ हमदर्दी करते हैं? कहने लगा, हाँ। मैंने कहा, क्या आप ग़रीबों पर रम खाते हैं? कहने लगे, हाँ। जो मुश्किल में फंसे हुए होते हैं क्या उनकी मुश्किल दूर करते हैं? वह कहने लगे, जी हाँ मैं तो ऐसे काम बहुत ज़्यादा करता हूँ। मैंने कहा, ये सब ख़ैरख़्वाही के काम हैं नेकी के काम हैं। इसलिए मालूम होता है कि आपके नामए आमाल के ज़ख़ीरे में नेकियाँ भी बहुत ज़्यादा लिखी हुई हैं। अब उनको भी तसल्ली हो गई कि मैं जो सारा दिन फ़लाही काम करता हूँ ये भी नेकी के ही काम हैं।

उसके बाद मैंने उन्हें समझायाकि दूसरों के काम आना तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ बड़े अज्र वाला काम है। वह यह सुनकर कहने लगे कि अब मैं क्या करूँ? मैंने कहा कि मैं आपको कुछ कलिमात पढ़ा देता हूँ उनकी बरकत से तुम्हारे पिछले गुनाहों की फ़ाइल बंद हो जाएगी और एक नई फ़ाइल शुरू हो जाएगी। उसको बात समझ आ गई। चुनाँचे कहने लगे, जी ठीक है। मैंने उनको बैअत के कलिमात पढ़ा दिए। फिर मुराक़बा करवाकर रुख़्सत कर दिया।

बाद में हाजी साहब ने बाक़ी वाक़िआ सुनाया कि जब ये साहब अपने घर गए तो अपनी बीवी से कहा कि घर में जितनी शराब की बोतलें पड़ी हैं सब तोड़ दो। उसने सब बोतलें तोड़ दी। पहले दौर में शराबी को शराब से तौबा करवाना विलायते कुबरा के मुक़ाम के बुज़ुर्गों का काम होता था। और अल्लाह की रहमत देखिए कि इस दौर में हम जैसे को अल्लाह तआला सबब बना रहे हैं। उसकी रहमत किस क़द्र आम है। उन्होंने अपनी बीवी से कह दिया कि मेरी पहले सोसाइटी के लोग अब हमारे घर नहीं आएंगे। फिर कहने लगे कि अब मैं नमाज़ भी पढूँगा और नेकी के दूसरे

काम भी करूँगा। उसने कहा, मैं और क्या चाहती हूँ। अगर आपकी ज़िंदगी ऐसी हो जाए तो मुझे बड़ी ख़ुशी होगी। बीवी ये सब देखकर हैरान होती जा रही थी कि इसको अचानक क्या हो गया।

ख़ैर उन्होंने अभी एक आध ही नमाज़ पढ़ी होगी कि उन्होंने टीवी में ख़बरें सुनी कि आजकल हाजियों के क़ाफ़िले हज के लिए जा रहे हैं। ख़बरें सुनकर उन्होंने अपनी बीवी से कहा मैं दर्जनों मर्तबा अमरीका और यूरोप हो आया हूँ लेकिन आज तक मुझे हज या उमरे के लिए जाने की तौफ़ीक़ नहीं मिली जबकि हज करना तो मुझ पर फ़र्ज़ है। इसलिए मेरा भी दिल चाह रहा है कि मैं भी हज करूँ। बीवी ने कहा, ज़रूर करें। चुनाँचे उन्होंने वहीं बैठे बैठे मज़हबी उमूर वज़ीर को फ़ोन किया कि मैं हज पर जाना चाहता हूँ। उसने कहा, जनाब एम०एन०ए० साहब! आप कल ही हज पर जाइए। हम आपको स्पेशल सीट पर भेज देंगे। इसमें तो कोई मसअला ही नहीं। आप तो लगातार पैंतीस सालों से एम०एन०ए० रहे हैं। इस वजह से आपकी एक हैसियत है। आप जिस वक़्त तशरीफ़ लाएंगे हम उसी वक़्त आपको भिजवा देंगे।

वह एक सूटकेस लेकर वहाँ पहुँच गए। अब हुआ यह कि दफ़्तर वाले जब हाजियों के ग्रुप तश्कील देते हैं तो उनमें मजबूरी की वजह से कभी-कभी कुछ सीटें ख़ाली हो जाती हैं। मसलन कोई बीमारी की वजह से न जा सके या फ़ौत होने की वजह से कोई सीट ख़ाली हो जाए। उन्होंने उनको ऐसी ही एक सीट पर एडजेस्ट करके ग्रुप लीडर बनाकर भेज दिया।

अल्लाह की शान देखिए कि उन्होंने हज के दौरान अपने ग्रुप के लोगों की ख़ूब ख़िदमत की। वह खाना भी लेकर आते और

दस्तरख़्वान भी उनके सामने लगाते थे। लोग कहते थे कि हम हैरान होते थे कि यह वही शहज़ादा था जो किसी की बात तक नहीं सुनता था। अब इस क़द्र बिछा बिछा जाता है। ख़ैर हज मुकम्मल करने के बाद अल्लाह तआला उन्हें दाढ़ी की सुन्नत अपनाने की तौफ़ीक़ भी अता फ़रमा दी।

हज से वापस आने के बाद जब शहर के उलमा को पता चला कि अब वह वापस आ चुके हैं तो उन्होंने आपस में सोचा कि पहले तो हमारी उनसे बनती नहीं थी लेकिन चूँकि अब यह नेक बन चुके हैं इसलिए हमारा हक़ बनता है कि हम सब जाकर उनको मुबारकबाद देंगे। चुनाँचे उन्होंने तय कर लिया कि हम बीस पच्चीस उलमा असर के बाद जाकर उनको मुबारकबाद देंगे।

इधर वह असर की नमाज़ पढ़कर घर आए। सर पर टोपी थी हाथ में तस्बीह थी जो मदीना मुनव्वरा से लाए थे हमने घंटी बजाई तो उन्होंने आदमी को भेजा कि पता करो कि बाहर कौन है? उसने आकर बताया कि जी शहर के उलमा हैं। उन्होंने कहा कि उनको मेहमानख़ाने में बिठाओ। वे बैठ गए। जब वह उलमा के पास पहुँचे तो सबसे मिले। यह पहला मौक़ा था कि वह शहर के उलमा से गले मिल रहे थे। मिलने के बाद उनसे कहने लगे कि आप तशरीफ़ रखें मैं अभी आपके लिए आबे ज़मज़म और खजूरें लाता हूँ और आपको मैं हज की बातें सुनाता हूँ। उलमा ने उनके चेहरे पर दाढ़ी, सर पर टोपी और हाथ में तस्बीह देखी तो बड़े ख़ुश हुए कि अल्लाह की शान कि यह वक़्त भी उसकी ज़िंदगी में आना था।

वह अंदर गए और बीवी से कहा कि शहर के उलमा आए हैं। आप उनके लिए ज़मज़म और खजूरें दें और मैं अपनी तस्बीह पूरी

कर लूँ। वह ज़मज़म और खजूरें लेने के लिए अंदर गयी और वह अपनी तस्बीह पूरी करने लगे। जब वह अंदर से ज़मज़म और खजूरें लेकर वापस उनके पास आई तो देखा कि वह अल्लाह को प्यारे हो चुके थे, अल्लाहु अकबर।

जब उन्हें मौत आई तो हज करके आए थे, चेहरे पर सुन्नत का नूर था, सर पर टोपी थी, हाथ में तस्बीह थी, नमाज़ पढ़कर बैठे थे, बावुज़ू थे, दिल में उलमाए किराम को हदिया देने की नीयत थी।

यह क्या चीज़ थी, यह निस्बत की बरकत थी। जो लोग कहते हैं कि यह ज़िक्र वाले क्या करते रहते हैं। इन बेचारों को असल में हक़ीक़त का पता नहीं नहीं होता। आम दस्तूर है :

﴿الناس اعداء لما جهلوا﴾ लोगों को जिस चीज़ का पता नहीं होता वह उसके दुश्मन बन जाते हैं। यही वजह है कि ज़िक्र करने वालों पर भी एतिराज़ किया जाता है।

सिलसिलए नक़्शबंदिया के नाम की वजह

हमारे मशाइख़ बैअत होने वाले सालिक के क़ल्ब पर उंगली रखकर अल्लाह अल्लाह की ज़र्ब लगाते हैं। मैंने एक मर्तबा बुख़ारा शहर के उलमा से पूछा कि मशाइख़ क़ल्ब के ऊपर उंगली रखकर जो अल्लाह अल्लाह की ज़र्ब लगाते हैं यह क्या मामला होता है? उन्होंने कहा, जी आप को पता है कि ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबंदी रह० का असली नाम "बहाउद्दीन" था लेकिन नक़्शबंद के नाम से मशहूर हो गए। हमारा सिलसिला सैय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु से चला तो शुरू शरू में "सिद्दीक़िया सिलसिला" कहलाता था। फिर ख़्वाजा बयज़ीद बुस्तामी रह० के बाद बाज़ जगहों पर इसका नाम "तैफ़ूरिया सिलसिला" पड़ गया

लेकिन नक़्शबंद बुख़ारी रह० के ज़माने में इसका नाम "नक़्शबंदिया सिलसिला" पड़ गया। यह नाम ज़्यादा मशहूर हो गया यहाँ तक कि जिससे पूछते कि इस्लाही ताल्लुक़ कहाँ है तो जवाब मिलता नक़्शबंद से। इस तरह इस सिलसिले का नाम "नक़्शबंदिया" ही मशहूर हो गया। जैसे लोग अपने आपको अलवी कहना शुरू कर देते हैं तो वह नसबन अलवी मशहूर हो जाते हैं यहाँ तक कि यही नाम की पहचान का दर्जा अख़्तियार कर लेता है। बुख़ारी शरीफ़ में इमाम बुख़ारी रह० ने रावियों के नाम लिखे और साथ ही ﴿عَلَوِيًا، عُثْمَانِيًا﴾ भी लिखा। जब बुख़ारी शरीफ़ में भी अलवी उस्मानी निस्बत का सुबूत मिलता है तो मालूम हुआ कि पहचान के लिए लफ़्ज़ इस्तेमाल किया जा सकता है। इसलिए अगर हम यह कहते हैं कि हम नक़्शबंदी हैं तो इसमें एक लफ़्ज़ का पता चल जाता है कि इनका किन बुज़ुर्ग से ताल्लुक़ है। कहने लगे आप अपने हाथ की उंगलियाँ देखिए। यह हाथ की उंगलियाँ "अल्लाह" के लफ़्ज़ की शक्ल बना रही हैं। ख़्वाजा बहाउद्दीन रह० भी उंगलियों से "अल्लाह" के नाम की शक्ल बनाते थे और उसके बाद अल्लाह तआला ने उनको जो रूहानी ताक़त दी थी, उस रूहानी ताक़त के साथ बंदे के क़ल्ब पर उंगली रखकर "अल्लाह" का लफ़्ज़ कहते थे।

﴿كان ينقش اسم الله على قلوب السالكين.﴾

वह सालिकीन के दिलों पर अल्लाह तआला का नाम नक़्श कर दिया करते थे।

वाक़ई सालिकीन को यों महसूस होता था कि जैसे उन्होंने उनके दिलों पर अल्लह तआला का नाम नक़्श कर दिया हो। वह चूँकि अल्लाह के नाम का नक़्श सालिकीन के दिलों पर नक़्श कर

देते थे इसलिए नक्शबंद के नाम से मशहूर हो गए।

क़ल्ब पर उंगली लगने का फ़ायदा आलमे मज़अ में

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० ने एक मर्तबा अजीब बात इर्शाद फ़रमाई। फ़रमाया कि हज़रत ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० फ़रमाते थे :

"जिस क़ल्ब पर यह उंगली लग गई उसको कलिमे के बग़ैर मौत नहीं आ सकती।"

हज़रत रहमतुल्लाहि अलैहि उस वक़्त बड़े ख़ुशगवार मूड में थे। आजिज़ भी उस वक़्त ख़िदमत में था। इसलिए मौक़ा ग़नीमत समझते हुए मैंने अरज़ किया, हज़रत! यह तो बड़ी Storong Statement (ज़बरदस्त बात) है। जब मैंने इतनी बात कही तो हज़रत मेरा मक़सद समझ गए। चुनाँचे हज़रत रह० ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें बात समझाता हूँ।

हज़रत रह० ने फ़रमाया कि जब शेख़ क़ल्ब पर उंगली रखकर अल्लाह अल्लाह की ज़र्ब लगाता है तो एक नूर उस बंदे के क़ल्ब के अंदर आ जाता है। उसके बाद अगर उसका ताल्लुक़ शेख़ के साथ न भी रहे, उसने मामूलात न भी किए और इसी तरह ग़फ़लत की ज़िंदगी गुज़ारता रहा तो भी मौत के वक़्त जब बिल्कुल आख़िरी वक़्त आने लगता है तो उस वक़्त एक लम्हा ऐसा भी होता है कि जब उस आदकी की आँख के सामने आख़िरत के मंज़र खुलने लगते हैं और दुनिया भी उसके सामने होती है। आहिस्ता-आहिस्ता दुनियवी चीज़ें ओझल हो रही होती हैं और आख़िरत के मंज़र सामने आ रहे होते हैं। मगर एक लम्हा ऐसा भी होता है जब आख़िरत का मंज़र भी आ जाता है और दुनिया के असरात अभी मौजूद होते हैं। यह एक ऐसा लम्हा होता

है कि इधर तो मौत के मंज़र खुलकर सामने आ चुके होते हैं और उधर अभी कुछ याद बाक़ी होती है। ऐन उस वक़्त जबकि वह बंदा जिसने किसी शेख़ से अल्लाह अल्लाह की ज़र्ब लगवाई थी जब वह बावजूद ग़फ़लत की ज़िंदगी वह इस लम्हे को पहुँचता है तो बुज़ुर्गों के अल्लाह अल्लाह कहने का नूर वाज़ेह हो जाता है। और इस नूर की बरकत से अल्लाह तआला उसे कलिमे पर मौत अता फ़रमा देते हैं।

ज़िंदगियों के बदलने का सिलसिला

इसलिए जो मामूलात बताए जाते हैं उनको आप बाक़ायदगी के साथ करें और खुद उसकी बरकात देखेंगे। डाक्टर को तो कहने की ज़रूरत पेश नहीं आती कि तुम ठीक हो रहे हो। यह तो मरीज़ खुद बताता है कि अब मैं ठीक हो रहा हूँ। हमारे मशाइख़ का भी यही तरीक़ा है। वह ख़ुद कुछ नहीं कहते हैं बल्कि मुनसलिक होने वाले ख़ुद बताते हैं कि अब मेरी ज़िंदगी में तब्दीली आ रही है। मैं अपने आपको पहले से ज़्यादा अच्छा महसूस करता हूँ। मेरे अंदर अब नेकी का शौक़ ज़्यादा है और मैं फ़लाँ फ़लाँ गुनाह छोड़ चुका हूँ। इसलिए ख़ानक़ाहों में मशाइख़ जो अल्लाह अल्लाह करवाते हैं इसके बारे में यह ज़हन में न रखें कि यह तस्बीह पढ़वाते हैं और अदद पूरे करवाते हैं। नहीं, ज़ाहिर में तो अदद पूरे होते नज़र आ रहे होते हैं जबकि हक़ीक़त में ज़िंदगियों के बदलने का सिलसिला चल रहा होता है। रही बात यह कि जी बहुत सी ख़ानक़ाहों पर आजकल रस्मी पीरी मुरीदी का सिलसिला चल रहा है तो यह तो हर शोबे में ही है। पहले ज़माने में जैसे आलिम थे क्या आजकल उन जैसे आलिम मिलते हैं? कोई कोई, कहीं-कहीं मिलता है। इसी तरह पहले ज़माने में

जैसे मशाइख़ थे वैसे हर जगह थोड़ा मिलेंगे। यह क़हतुर्रिजाल (नेक लोगों की कमी) का दौर है। बहुत कम ऐसे बंदे होंगे जो शरिअत को सामने रखते हुए ज़िंदगी गुज़ार रहे होंगे। इसलिए हमें चाहिए कि किसी सुन्नत व शरिअत के पाबन्द मशाइख़ के साथ ख़ुद भी मुन्सलिक हों ओर अपनी औलादों को भी जोड़ें।

इस्लाही ताल्लुक़ की बरकत

यह आजिज़ आप से एक बात कह देना चाहता है। आप तजरिबा करके देख लीजिए कि आपकी औलाद में से जो बच्चा सबसे ज़्यादा नाफ़रमान है आप उसको किसी साहिबे निस्बत शेख़ से बैअत करवा दीजिए। अगर निस्बत पक्की हुई तो उसकी ज़िंदगी में यक़ीनन तब्दीली आएगी। यह कोई मामूली चीज़ नहीं है। अलहम्दुलिल्लाह यह नुस्ख़ा हज़ारों पर आज़माया हुआ है। हमारे मशाइख़ जो तौबा के कलिमात पढ़ाते हैं उनका मक़सद यही होता है कि इंसान की ज़िंदगी बदले और वह ग़फ़लत वाली ज़िंदगी को छोड़कर शरिअत व सुन्नत वाली ज़िंदगी पे आ जाए। इसलिए ऐसे हज़रात के सामने मुन्सलिक होना, उनसे अल्लाह अल्लाह सीखना और अपनी ज़िंदगी को एक तर्तीब से गुजारना इंसान की शख़्सियत के निखार का बाइस बनता है। इसलिए इसको "इस्लाही ताल्लुक़" कहते हैं। याद रखें कि हमने सालिकीन को तस्बीह का कस्बी नहीं बनाना होता बल्कि इस्लाह मक़सूद होती है ताकि दिल में दीन की मुहब्बत आ जाए। जो सालिक नेक नीयती के साथ आता है अल्लाह तआला उसकी ज़िंदगी को बदल देते हैं।

आज की यह महफ़िल ख़ात्मे की महफ़िल थी। इसलिए ये चंद बातें बैअत के बारे में भी बता दी हैं। हो सकता है कि बाज़

दोस्त ऐसे भी हों जिन्होंने ख़ानक़ाहों का नाम भी न सुना हो। जब नाम ही नहीं सुना होगा तो उनके मक़सद क्या पता होंगे। याद रखें कि तसव्वुफ़ दीन ही का शोबा है।

خوشا مسجد و مدرسہ خانقاہ   کہ در وے بود قیل و قال محمد

दस दिन एतिकाफ़ के असरात

आपने एतिकाफ़ में यहाँ चंद दिन गुज़ारे हैं। यह देखने में तो दस दिन ही हैं लेकिन आप इनके असरात इंशाअल्लाह सुम्मा इंशाअल्लाह पूरा साल महसूस करेंगे। अगले रमज़ानुल मुबारक तक आपका दिल आपको गवाही देगा कि आप इसके असरात महसूस कर रहे हैं। यह कोई ज़ाहिरी चीज़ नहीं है जिसकी आप कोई गठरी बांधकर ले जाएंगे बल्कि यह एक ऐसी चीज़ है कि जो सीने से सीने में मुन्तक़िल होती है। यह बग़ैर कहे और बग़ैर बताए अपना असर दिखा रही होती है। इसको "फ़ैज़" और "नूर" कहते हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें इस नूर की हिफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। ख़ासतौर से जो अहबाब ऐतिकाफ़ में बैठे उनको चाहिए कि वे अपनी ज़िंदगी की तर्तीब को बदलें। जिस तरह वे अब अपने गुनाहों से सच्ची पक्की तौबा कर चुके हैं वे आइन्दा पूरा साल इसी तरह गुनाहों से बचकर गुज़ारने की कोशिश फ़रमाएं। वे आइन्दा पूरा साल इसी तरह गुनाहों से बचकर ज़िंदगी गुज़ारने की कोशिश फ़रमाएं। अल्लाह तआला उनका हामी और नासिर होगा। इंशाअल्लाह इस मामले में उनके लिए आसानियाँ होंगी।

इज़्हारे शुक्र

मक़ामी अहबाब जिन्होंने दावत दी और यहाँ पर इतने अच्छे

इंतिज़ामात किए ये आजिज़ एतिकाफ़ वालों की तरफ़ से और अपनी तरफ़ से उन सबका शुक्रिया अदा करता है क्योंकि हदीस पाक में आया है :

﴿مَنْ لَمْ يَشْكُرِ النَّاسَ لَمْ يَشْكُرِ اللهَ﴾

जो बंदों का शुक्रिया अदा नहीं करता वह अपने परवरदिगार का भ शुक्रिया अदा नहीं करता।

इन हज़रात ने बहुत ही फ़राख़दिली और बशाशते क़ल्ब के साथ हम आजिज़ मिस्कीनों को यहाँ आने की दावत दी। हमें यहाँ हर एतिबार से सहूलत रही और अलहम्दुलिल्लाह ख़ुशदिली के साथ अब यहाँ से रुख़्सत होंगे और यह दुआ देकर जाएंगे कि ऐ अल्लाह! आपके इन बंदों ने इस आजिज़ मिस्कीन का दिल ख़ुश किया। इसके बदले में इन सबके दिलों को ख़ुश फ़रमा।

नेक ख़ाविन्द औरत का मुर्शिद होता है

मस्तूरात में जिन्होंने बैअत की उनके मर्दों की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि वे उनको मामूलात की याददिहानी करवाते रहें। बल्कि याद रखें कि अगर ख़ाविन्द नेक हो तो वह तो औरत का मुर्शिद ही होता है। लेकिन मुसीबत यह है कि आजकल के ख़ाविन्द उल्टा उसकी दीनदारी में रुकावट बने होते हैं। अगर बैअत होने वाली मस्तूरात पहले पर्दा नहीं करती थीं और अब उन्होंने पर्दा करने का इरादा किया है तो उनके लिए रुकावट न बनिएगा। ऐसा न हो कि आप उनके लिए रुकावट बनें। अब तो वह बयानात सुनकर यह इरादा कर चुकी हैं। इसलिए अब उनको आपकी सपोर्ट चाहिए। लेकिन अगर आपने ही इधर उधर के Comments (तास्सुरात) पास कर दिए तो शैतान मेहनत करेगा

और इसको बिगाड़ने का पूरा एक साल मिल जाएगा। इस एक साल में वह इस औरत को पस्त कर देगा।

मस्तूरात की क़ाबिले तारीफ़ मेहनत

जिन मस्तूरात ने घरों में खाने बनाए, रातों को जागीं और दिनों में बयानात के लिए भाग दौड़ की उनको भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए। क्योंकि इतने मेहमानों को रमज़ानुल मुबारक के दिनों में सहरी व इफ़्तारी का खाना पहुद्दचाना वाक़ई क़ाबिले तारीफ़ बात है। और सिर्फ़ एक ही खाना नहीं बल्कि माशाअल्लाह कई कई खाने होते थे। इसमें मज़े तो हम मेहमानों के थे, मक़ामी अहबाब तो सिर्फ़ फ़क़त चाए से इफ़्तारी करते थे और बाक़ी सब कुछ हमारे लिए होता था और हम भी बड़े खुश थे। ऐसे अच्छे मेज़बान कहाँ मिलेंगे। बहरहाल अल्लाह तआला सबको जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए। जिस-जिस ने जिस नीयत के साथ जो ख़िदमत की अल्लाह तआला उन सब की नेक नीयतों के मुताबिक़ उनके साथ ख़ैर का मामला फ़रमा दे। और जो माँ-बाप अपनी औलाद के बारे में फ़िक्रमंद हैं हम दुआ गो हैं कि अल्लह तआला उनकी औलादों को नेक बनाए और उनकी आँखों की ठंडक का सामान बना दे, आमीन।

आइन्दा साल एतिकाफ़ करने की दावत

इस साल मुख़्तलिफ़ उनवानात एक तर्तीब से चले। दोस्त अहबाब आइन्दा के लिए भी फ़रमा रहे हैं कि आपने हाज़िरी देनी है और यह आजिज़ भी इरादा कर चुका है कि अगर ज़िंदगी रही तो इंशाअल्लाह आइन्दा साल भी हाज़िरी देंगे। इंशाअल्लाह आइन्दा साल इन उनवानात के अलावा दूसरे इस्लाही उनवानात को खोला जाएगा। जो कुछ आपने इस दफ़ा यहाँ से सुना है

उसको नोटिस कर लें और साल भर में कभी कभी मुताला करते रहें ताकि ये बातें ताज़ा रहें।

मक़ामी अहबाब से गुज़ारिश

मक़ामी अहबाब जो आइन्दा साल के लिए दावत दे रहे हैं उनकी ख़िदमत में गुज़ारिश है कि वे आइन्दा साल के प्रोग्राम के बारे में दूसरे अहबाब को ज़रूर ख़बर दीजिएगा क्योंकि पिछले साल एतिकाफ़ के बाद मुझे मारिशिस, ज़िम्बावे और मुख़्तलिफ़ जगहों के दोस्तों ने कहा कि हमें तो पता ही नहीं था वरना हम भी आते और इस बार भी बाहर मुल्कों में कोई इत्तिला नहीं दी गई थी। इसलिए आइन्दा साल यह ज़रूरत कीजिएगा कि साल के दौरान अगर आपकी मुलाक़ात क़रीब-क़रीब के उलमा और अज़ीज़ व अक़ारिब से हो तो उनको यह इत्तिला बहुत पहले से दे दीजिए ताकि जो लोग शामिल होना चाहें वे भी शामिल हो जाएं और ज़्यादा से ज़्यादा लोग फ़ायदा उठाएं। जितने ज़्यादा लोग फ़ायदा उठाएंगे उतना ही ज़्यादा आपको फ़ायदा होगा।

एतिराफ़े हक़ीक़त

बाक़ी यह कि हम सबने जो कुछ किया है अल्लाह की रज़ा के लिए किया है। फिर भी हमें इस मौक़े पर कसरत से इस्तिग़फ़ार करनी चाहिए क्योंकि हमें एतिकाफ़ के दौरान जिन आदाब की रिआयत करनी चाहिए थी यक़ीनन हम से कोताही हुई होगी। हम हक़ अदा नहीं कर सके। हमें इस मौक़े को ज़्यादा फ़ायदेमंद बनाना चाहिए था।

हर चे गीरद इल्लती इल्लत शूद यानी इल्लती जो करता है उसमें इल्लत ही होती है।

बहरहाल हम अपनी सुस्ती और नालाएक़ी का एतिराफ़ करते हुए एहसासे नदामत के साथ परवरदिगार आलम के सामने इस्तिग़फ़ार करते हैं, हमारे किसी क़ौल व फ़ेअल से किसी का दिल दुखा हो या अगर कोई गुनाह हुआ हो हो या कोई बात अल्लह को नापसन्द आई हो तो हम उन सबसे तौबा करते हैं और इस वक़्त यह दुआ मांगते हैं कि ऐ अल्लाह! हमारी कोताहियों पर नज़र न डालिएगा बल्कि अपनी रहमत के ख़ज़ानों को देखिएगा और हमारी ख़ाल झोलियों को देखकर इनको भर दीजिएगा। दुनिया का भी दस्तूर है कि जब मज़दूर मज़दूरी करता है तो घर का मालिक जाते हुए उसे कुछ न कुछ देता है। जब आम दुनियादार मालिक भी कुछ न कुछ देकर भेजता है तो फिर आप सब हज़रात ने तो अल्लाह के दर को पकड़ा और उसी की रज़ा के लिए यहाँ बैठे। इसलिए हम दुआ गो होते हैं कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त भी हमारी झोलियों को भर दे। आप इस वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ मुतवज्जेह होकर जो दिल में आए अपने रब से मांगिए। अपने लिए और पूरी उम्मत के लिए दुआएं कीजिए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारी इन दुआओं को क़बूल फ़रमा ले और आइन्दा भी हमें इसी तरह सुन्नत व शरिअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे, आमीन बि हुरमति सैय्युदल मुरसलीन।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

بسم الله الرحمن الرحيم

يٰاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰى اَنْفُسِكُمْ.

गुनाहों की नहूसत

हज़रत अक्दस दामत बकरातुहुम का यह बयान ने 26 जनवरी 2002 ई० को मदरसा अरबिया इस्लामिया स्काउट कॉलोनी गुलशन बाग़ कराची में हुआ।

इक़्तिबास

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿مَنْ يَعْمَلْ سُوْءًا يُجْزَ بِهٖ (النساء ۱۲۳)﴾

(जिसने भी बुराई की उसको उसकी सज़ा मिलेगी।)

यहाँ पर क़ुरआनी उसूल समझने की ज़रूरत है कि जिसने भी गुनाह किया उस गुनाह का वबाल उस पर ज़रूर आएगा।

बर्फ़ हो और ठंडी न लगे, आग हो और गर्म न लगे, गुनाह हो और उसके बुरे असरात न हों। यह कैसे मुमकिन है?

याद रखें कि गुनाहों की सज़ा ज़रूर मिलती है ख़्वाह उसका एहसास हो या न हो।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी मद्देज़िल्लहु

गुनाहों की नहूसत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ٥

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ٥ (الانعام :١٢٠)

وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ اٰخَرَ يٰاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰى اَنْفُسِكُمْ.٥

(الصّٰفّٰت:١٨٠تا١٨٢)

وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ اٰخَرَ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْءً ا يُّجْزَ بِهٖ (النساء١٢٣)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ٥ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ٥

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ٥

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

गुनाह छोड़ने का हुक्म

इर्शादे बारी तआला है :

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ٥ (الانعام :١٢٠)

और छोड़ दो खुला हुआ गुनाह और छुपा हुआ।

गुनाह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नाफ़रमानी करने और नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की मुबारक सुन्नतों से मुँह फेरने को कहते हैं। गुनाह में इंसान के लिए दुनियवी नुक़सानात भी हैं और

उख़रवी नुक़सानात भी हैं।

गुनाहों के नुक़सानात का इल्म

इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है कि आलिम शख़्स वह होता है जिस पर गुनाहों के नुक़सानात अच्छी तरह वाज़ेह हो जाएं। गोया जो शख़्स गुनाहों के नुक़सानात से जितना ज़्यादा वाक़िफ़ होगा वह उतना ही बड़ा आलिम होगा। यह बात बहुत काम की है। वजह यह है कि जब इंसान किसी चीज़ के नुक़सानात से वाक़िफ़ हो तो वह उससे बचता है। यह इंसान की फ़ितरत है। मिसाल के तौर पर :

1. इंसान ज़हर के नुक़सानात से वाक़िफ़ होता है। इसलिए वह उससे बचता है। अगर उस यह बता दिया जाए कि आप के सामने जो एक हज़ार बिस्कुट पड़े हैं इनमें नौ सौ निन्नावे बिल्कुल ठीक हैं सिर्फ़ एक बिस्कुट में ज़हर है। आप खा लीजिएगा तो क्या वह उसे खालेगा? वह इंसान उसे खाने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं होगा। वह कहेगा कि क्या पता जिसको मैं खा रहा हूँ उसी में ज़हर हो। क्योंकि हमें पता है कि ज़हर खा लेने से इंसान की मौत हो जाती है। इसलिए नहीं खाते लेकिन एक बच्चा जो इससे वाक़िफ़ नहीं है उस बच्चे को एक बिस्कुट पकड़ाएं और उससे कहें कि यह ज़हर वाला है तुम खा लो तो वह बच्चा उसे मुँह में डाल लेगा। इसलिए कि वह इस नुक़सान से वाक़िफ़ नहीं है। इस मिसाल से यह बात वाज़ेह होती है कि जब इंसान किसी चीज़ के नुक़सान से वाक़िफ़ होता है तो वह उसके क़रीब भी नहीं फटकता और हर मुमकिन तरीक़े से बचता है क्योंकि वह समझता है कि मुझे नुक़सान हो जाएगा।

2. इसी तरह हम साँप के नुक़सान से वाक़िफ़ हैं। हर छोटे बड़े को पता है कि अगर साँप काट ले तो इंसान मर जाता है यहाँ तक कि अगर कोई प्लास्टिक का बना हुआ साँप भी दिखा दे तो लोग डरकर भाग जाते हैं। बड़ा साँप तो क्या अगर साँप का कोई छोआ सा बच्चा भी किसी घर में नज़र आ जाए तो औरतें शोर मचा देती हैं। जब तक उसको मार न लिया जाए तब तक वे चैन से नहीं बैठतीं। वे कहती हैं कि चूँकि घर में बच्चे हैं इसलिए इसको मारना ज़रूरी है। चूँकि हम साँप के नुक़सानात से वाक़िफ़ हैं इसलिए इसका वजूद अपने घर में बदाश्त नहीं कर सकते।

3. हम जानते हैं कि बाज़ लोग रात को डाके डालते हैं। वे लोगों के घरों को लूट भी लेते हैं और बाज़ अवक़ात उनको जान से भी मार देते हैं। यहाँ तक कि कोई दरिन्दा सिफ़्त डाकू इज़्ज़तें भी ख़राब कर देते हैं। इसलिए बंदे के दिमाग़ में डाकुओं का एक डर सा रहता है। अगर कोई भी नावाक़िफ़ बंदा रात के वक़्त आप के घर का दरवाज़ा खटखटाएगा तो आप कभी खोलने के लिए तैयार नहीं होते। आप उसे कहेंगे कि पहले अपना तार्रुफ़ करवाओ। जब तक आप उसका मुकम्मल तार्रुफ़ नहीं कर लेते उस वक़्त तक उस अजनबी आदमी के लिए दरवाज़ा नहीं खोलते। अगर वह कहे कि बाहर सर्दी है दरवाज़ा जल्दी खोलो तो आप कहेंगे कि मैं दरवाज़ा नहीं खोल सकता। अगर वह आपकी मिन्नत समाजत भी करेगा तो आप उसके लिए दरवाज़ा नहीं खोलेंगे क्योंकि मुमकिन है कि वह डाकू ही हो। चूँकि आप डाकू के नुक़सानात से वाक़िफ़ हैं इसलिए आप अजनबी शख़्स के

लिए अपने घर का दरवाज़ा रात के वक़्त नहीं खोलेंगे।

जब ये मिसालें समझ में आ गयीं तो ये बातें भी ज़हन में रखिए कि :

- नफ़्स की ख़्वाहिश हमारे लिए ज़हर की मानिन्द है। नफ़्स हमारे मन में गुनाहों के जो जो ख़्यालात पैदा करता है वह ज़हर की मानिन्द हैं। जिस तरह इंसान ज़हर से बचता है इसी तरह वह नफ़्स के इन ज़हरीले ख़्यालात से भी बचता है जो उसे गुनाह पर उभारता है। जिस तरह इंसान ज़हरीले बिस्कुट की दावत क़बूल नहीं करता। इसी तरह गुनाहों के जो बिस्कुट नफ़्स पेश करता है कि यह भी कर लो, यह भी कर लो। तो आदमी को चाहिए कि नफ़्स की भी वह बात क़बूल न करे। वह यही सोचे कि इस ख़्वाहिश के पूरा करने में ज़हर है। लिहाज़ा अगर मैं पूरी करूंगा तो रूहानी मौत मर जाऊँगा।
- इसी तरह बुरे दोस्त की मिसाल साँप की होती है। इसीलिए हमारे मशाइख़ ने कहा कि "यारे बद" "मारे बद" से ज़्यादा बुरा होता है यानी बुरा दोस्त साँप से भी ज़्यादा नुक़सानदेह होता है। इसलिए कि अगर मारे बद (बुरे साँप) ने काट लिया तो इंसान की जिस्मानी मौत हो जाती है और अगर यारे बद ने काट लिया तो इंसान की रूहानी मौत हो जाती है। आजिज़ तो यहाँ तक कहता है कि बुरा दोस्त शैतान से भी ज़्यादा बुरा है। वह इसलिए कि शैतान इंसान के दिल में सिर्फ़ गुनाह का इरादा या ख़्याल डालता है मजबूर नहीं करता। लेकिन बुरा दोस्त न सिर्फ़ गुनाह का ख़्याल ही दिल में डालता है बल्कि हाथ पकड़कर इंसान से गुनाह भी करवा लेता है। तो बुरा दोस्त साँप और शैतान से ज़्यादा बुरा होता है।

- चूँकि हम डाकू के नुक़सानात से वाक़िफ़ होते हैं इसलिए उस के कहने पर घर का दरवाज़ा नहीं खोलते। शैतान की मिसाल हमारे ईमान के डाकू की मानिन्द है। जैसे डाकू मौक़े की तलाश में होता है कि मैं इसके घर में ऐसे वक़्त पहुँचूं जब मैं घर का सफ़ाया कर दूँ और इसे पता ही न चले। शैतान भी इसी इंतिज़ार में होता है। वह इब्ने आदमम के क़ल्ब की तरफ़ मुतवज्जेह रहता है। जब वह बंदे को ज़िक्र करता देखता है तो वह पीछे हटा रहता है। और जैसे ही वह उसको ग़ाफ़िल पाता है तो उसी वक़्त क़ल्ब के अंदर अपने वार करना शुरू कर देते है। जब हम शैतान के नुक़सानात से वाक़िफ़ होंगे तो फिर हम शैतानी वसाविस के लिए अपने दिल के दरवाज़े नहीं खोलेंगे बल्कि दिल में हर वक़्त अल्लाह तआला की याद रखेंगे ताकि हम शैतान के वसाविस से बच सकें।

पता चला कि हम गुनाहों के नुक़सानात से जितना ज़्यादा वाक़िफ़ होंगे उतना उनसे बचने की कोशिश करेंगे। हमने डाक्टर लोगों को देखा है कि अगर उनको चर्बी वाले खाने या पराठें दिए जाएं तो वह उनको खाने से परहेज़ करते हैं हालाँकि उनको कोई बीमारी नहीं होती। अगर कोई पूछे कि क्यों नहीं खाते तो वह कहते हैं जी हमें इसके नुक़सानात का पता है और जिस बंदे को नुक़सानात का पता नहीं होता कि उसके दिल की शीराने बंद हो जाती हैं। वह सुबह, दोपहर, शाम पराठे खाता है। वह ख़ूब चप्पली कबाब खाता है चाहे दिल की शीराने बंद हो जाएं। इसी तरह डाक्टर जब बाहर के इलाक़े में जाते हैं तो नलके का पानी नहीं पीते। वे कहते हैं कि इसमें कई बीमारियों के जरासीम होते हैं जिनसे मैदा ख़राब हो जाता है। लिहाज़ा हम तो बोतल का साफ़ पानी पिएंगे। यहाँ तक कि डाक्टर जब हस्पताल में मरीज़ों

के पास जाते हैं तो दस्ताने भी पहनते हैं और नाक पर मास्क भी लगाते हैं। उनको पता होता है कि बीमार के क़रीब रह-रह कर कौनसी बीमारी दूसरे को लग सकती हैं। लिहाज़ा वे एहतियात करते हैं।

खंबे से बिजली की तार जा रही हो और आप किसी इलैक्ट्रिकल इंजीनियर से कहें कि जनाब! ज़रा इसको हाथ तो लगाएं तो वह कहेगा, जनाब! मैं बेवक़ूफ़ नहीं हूँ। अगर कहें कि एक दफ़ा हाथ लगा दें तो वह कहेगा, बिजली एक दफ़ा भी माफ़ नहीं करती। वह पहली दफ़ा ही पकड़ लेती है। इंजीनियर तो यह समझता है कि इसके अंदर वोलटेज है और उससे जान को ख़तरा हो सकता है लेकिन आम आदमी धोका खा जाएगा क्योंकि उसे नज़र नहीं आ रहा होता। इसलिए वह परहेज़ नहीं करता। लेकिन आलिम समझता है कि गुनाहों में ऐसी नहूसत है और उनके करने से इंसान अल्लाह तआला से दूर हो जाता है। इसलिए वह गुनाहों के क़रीब नहीं जाता।

इल्म के बावजूद गुमराही

जिस इंसान के नज़दीक नेकी और गुनाह में फ़र्क़ ही नहीं होता वह एक तरफ़ गुनाह भी कर रहा होत है और दूसरी तरफ़ तस्बीह भी फेर रहा होता है। उसके पास इल्म है ही नहीं। और अगर इल्म है तो इल्मे नाफ़ेअ से महरूम है। क़ुरआने अज़ीमुश्शान में है

﴿اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ (الجاثیہ:۲۳)﴾

क्या आपने उसको देखा है जिसने ख़्वाहिशात को अपना माबूद बना लिया है। अल्लाह तआला ने इल्म के बावजूद उसको गुमराह कर दिया।

इल्म के बावजूद गुमराही का क्या मतलब?

आपने देखा होगा कि कुछ लोगों को सिगरेट पीने की आदत होती है। वे जानते हैं कि सिगरेट नोशी सेहत के लिए मुज़िर है। यहाँ तक कि बनाने वाली कम्पनी भी लिख देती है कि सिगरेट नोशी सेहत के लिए मुज़िर है। पीने वाला भी लोगों को कहता है कि हम तो पीते हैं तुम न पीना। मालूम हुआ कि वह सिगरेट के नुक़सानात को जानता है मगर फिर भी पीता है। खाना खाकर उसकी तबियत में ऐसी तलब उठती है कि वह फिर सिगरेट पीता है। इसको कहते हैं इल्म के बावजूद गुमराह होना।

इसी तरह इंसान जानता है कि ग़ैर-महरम को देखना गुनाहे कबीरा है मगर उसकी निगाहें क़ाबू में नहीं होतीं। वह बीमार होता है। उसका अपने ऊपर बस नहीं चलता। उसका नफ़्स उस घोड़े की तरह बेक़ाबू होता है जो अपने सवार की बात नहीं मानता और भागता ही रहता है। जिस इंसान को इल्मे नाफ़ेअ नसीब हो जाए और वह गुनाहों के नुक़सानात को अच्छी तरह पहचान ले वह आदमी फिर गुनाहों के क़रीब भी नहीं जाता और हर मुमकिन उससे बचने की कोशिश करता है।

नेकी और गुनाह में फ़र्क़

नेकी और गुनाह का वही फ़र्क़ है जो रोशनी और अंधेरे का होता है। अगर किसी जगह अंधेरा हो तो वहाँ इंसान को साँप और बिच्छू नज़र ही नहीं आते और वह उनसे बच नहीं सकता। जैसे ही रोशनी आती है साँप बिच्छू का पता चल जाता है। अव्वल तो वह ख़ुद भाग जाते हैं वरना इंसान उनको मार देता है। इसी तरह जिस इंसान के पास इल्म का नूर होता है, उस नूर के आते ही गुनाहों के साँप बिच्छू उसके सामने वाज़ेह हो जाते हैं।

फिर वह इंसान उन साँप बिच्छुओं से बचने की कोशिश करता है।

नूरे क़ल्बी की हिफ़ाज़त

यह एक मोटी सी बात अच्छी तरह समझ लें कि आम लोगों में और औलिया अल्लाह में बुनियादी फ़र्क़ गुनाहों से बचने का है। हम आम लोग कभी-कभी ऐसी नेकियाँ कर लेते हैं जैसे बड़े-बड़े औलिया करते हैं। ख़ूब रुजु-इलल्लाह के साथ नमाज़ पढ़ते हैं और दिल में नूर आ जाता है। मगर जब मस्जिद से बाहर निकलते हैं तो घर पहुँचने से पहले-पहले जितना नूर आया था सब ख़त्म हो जाता है। जैसे कच्चा घड़ा होता है। अगर उसमें पानी डाल दें तो चंद घंटों के बाद वह ख़ाली हो जाता है। क्योंकि इसमें से पानी क़तरा क़तरा करके टपकता रहता है। इसी तरह हमारा हाल होता है कि मस्जिद में बैठकर इबादत की तो दिल में नूर भर गया लेकिन जैसे ही मस्जिद से बाहर गए और लोगों से मिले तो दूसरों की ग़ीबत करने की वजह से और बद नज़री वग़ैर की वजह से वह नूर टपकना शुरू कर देता है। इस तरह हम इस नूर को ज़ाए कर बैठते हैं। उसकी हिफ़ाज़त नहीं करते।

मैंने ख़ुद एक मर्तबा देखा कि बैतुलख़ला में बाल्टी थी। उसके ऊपर वाली टोटी बंद थी मगर लीक थी। और उसमें से एक-एक क़तरा पानी टपक रहा था। कुछ देर के बाद पूरी बाल्टी भर गई। वहाँ एक लोटा भी रखा हुआ था और वह टोंटी के क़रीब से फटा हुआ था। उसको भरने के लिए टोंटी खोली तो वह भरता ही नहीं था। मैं दोनों चीज़ों को देखकर हैरान हुआ कि बाल्टी के अंदर कोई सुराख़ नहीं है और ऊपर बंद टोंटी से एक-एक क़तरा टपक रहा है मगर चूँकि पानी महफ़ूज़ हो रहा है इसलिए थोड़ी देर के बाद पूरी बाल्टी भर गई। और जिस लोटे को सुराख़ था उसके

ऊपर हमने टोंटी पूरी खोल दी मगर वह भरा ही नहीं। यही मिसाल हमारी और एक वली की होती है। हम लोग उस लोटे की मानिन्द हैं जिसमें सुराख़ था। इसलिए जितना नूर भी अंदर आता है वह ज़ाए होता रहता है और अल्लाह के वली की मिसाल उस बाल्टी की मानिन्द है। उनके अंदर क़तरा-क़तरा नूर भी आए तो वह उस नूर को महफ़ूज़ कर लेते हैं। जिसकी वजह से उनके दिल की बाल्टी नूर से भरी रहती है।

मासियत (गुनाहों) से बचने का इनाम

शरिअत मुताहिरा में इस बात को पसन्द किया गया है कि इंसान लंबी इबादतें करने की बजाए गुनाहों से ज़्यादा बचे। मसलन एक आदमी तहज्जुद नहीं पढ़ता, लंबे लंबे अज़्कार नहीं करता, नफ़्ली रोज़े नहीं रखता। भले नफ़्ल आमाल कुछ न करे मगर गुनाहों से बचे तो वह अल्लाह का वली है क्योंकि उसकी ज़िंदगी में मासियत नहीं है। हमारे सिलसिले में भी गुनाहों से बचना सिखाया जाता है। तुलबा को इस बात पर नज़र रखनी चाहिए। कि हमारे वजूद से कोई भी काम शरिअत के ख़िलाफ़ सादि न हो। हम अपने इल्म और इरादे से कोई गुनाह न करें। अगर यह बात आपने पा ली तो समझ लीजिए कि आपको विलायत का मक़ाम हासिल हो गया है। याद रखें विलायत के लिए हवा में उड़ना शर्त नहीं, पानी पर चलना शर्त नहीं, कोई करामत के वाक़िआत पेश आ जाना शर्त नहीं बल्कि वली उसको कहते हैं जो अपने आप को गुनाहों से बचा लेता हो। क़ुरआन मजीद ने इन अल्फ़ाज़ में कह दिया :

﴿إِنْ أَوْلِيَآءُهُ إِلَّا الْمُتَّقُوْنَ. (الانفال:٣٤)﴾

उसके वली वह होते हैं जो मुत्तक़ी होते हैं।

यह भी याद रखें कि तक़्वा कुछ करने का नाम नहीं बल्कि कुछ न करने को तक़्वा कहते हैं यानी वे बातें जिनसे अल्लाह तआला नाराज़ होते हैं उनको न करना तक़्वा कहलाता है। मोटे अल्फ़ाज़ में समझ लीजिए कि तक़्वा यह है कि आप हर उस काम से बचें जिसको करने से कल क़यामत के दिन कोई आपका गिरेबान पकड़ने वाला हो। लिहाज़ा अपने आपको गुनाहों से बचाना लंबी लंबी इबादतें करने से ज़्यादा अहम है। अब एक आदमी लंबी लंबी नफ़्लीइबादतें करता है मगर साथ-साथ ग़ीबत भी करता है और लोगों का दिल दुखाता है तो वह बेचारा तो फ़क़ीर है। कल क़यामत के दिन जब वह पेश होगा तो यह हक़ वाले उसकी सारी इबादतें लेकर चले जाएंगे बल्कि उनके गुनाह उल्टा उसके सर पर रख दिए जाएंगे। हदीस पाक में आता है :

﴿اَلْوِقَايَةُ خَيْرٌ مِّنَ الْعِلَاجِ﴾ परहेज़ इलाज से बेहतर है।

एक आदमी को नज़ला, ज़ुकाम हो। वह दवाई भी खाए और साथ-साथ आइस-क्रीम भी खाए तो उसकी बीमारी ठीक नहीं होगी। डाक्टर कहेंगे पहले परहेज़ करो तब दवाई फ़ायदा देगी। इसीलिए मशाइख़ कहते हैं कि गुनाहों से पहले बचो तब ज़िक्र व अज़्कार का फ़ायदा होगा। आज का उनवान भी यही है कि हम अपने जिस्म को गुनाहों से बचाएं और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नाफ़रमानी न करें। इस बात पर हमारी हर वक़्त नज़र रहे कि हम किसी गुनाह को भी न करें। हम सुबह उठें तो दिल में यह नीयत हो कि मैंने आज कोई गुनाह नहीं करना। फिर सुबह से शाम तक इस कोशिश में लगे रहें :

आँख से कोई गुनाह न हो। ज़बान से कोई गुनाह न हो। कान से कोई गुनाह न हो। शर्मगाह से कोई गुनाह न हो। हाथ पाँव से कोई गुनाह न हो।

12

ख़्वाजा अबुलहसन ख़रक़ानी रह० हमारे सिलसि के बुज़ुर्ग थे। उन्होंने एक बड़ी प्यारी बात लिखी। वह फ़रमाते हैं कि जिस बंदे ने कोई दिन गुनाहों के बग़ैर गुज़ारा ऐसा ही है जैसे उसने वह दिन नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की मईय्यत में गुज़ारा। सुब्हानल्लाह इसलिए आप रोज़ाना उठकर सुबह को अल्लाह से दुआएं मांगा करें कि ऐ मालिक! मैं आज का दिन ऐसा गुज़ारना चाहता हूँ कि तेरे हुक्म की नाफ़रमानी न हो। इसको तमन्ना बनाकर मांगे। अगर कोई एक दिन भी हमारी ज़िंदगी में ऐसा हुआ तो हम उम्मीद कर सकते हैं कि इस दिन की बरकत से क़यामत के दिन हम पर अल्लाह तआला की रहमत हो जाएगी।

गुनाह नजासत की मानिन्द है

उम्मीद है कि यहाँ तक बात आपके ज़हन नशीन हो चुकी होगी। यहाँ तक तो तमहीद थी। अब यह आजिज़ असल मज़मून समझाना चाहता है। लिहाज़ा सुनिए और दिल के कानों से सुनिए। गुनाह बातिनी एतिबार से नजासत की मानिन्द होता है। चुनाँचे जिस अज़ू से भी गुनाह करते हैं हमारा वह अज़ू बातिनी तौर पर नापाक हो जाता है, गोया :

- आँख ने ग़लत देखा तो आँख नापाक हो गई।
- ज़बान से झूठ बोला तो ज़बान नापाक हो गई।
- कान से ग़ीबत सुनी तो कान नापाक हो गए।
- हाथों से चोरी की तो हाथ नापाक हो गए।
- पाँव से ग़लत काम के लिए चलकर गए तो पाँव नापाक हो गए।
- शर्मगाह से बदकारी की तो शर्मगाह नापाक हो गई।

लेकिन अगर सरापा गुनाह में मुब्तला होकर भी तौबा ताएब हो जाएगा तो अल्लाह उसको भी पाक फ़रमा देंगे।

गुनाह की बदबू

नजासत के अंदर बदबू होती है। लिहाज़ा इंसान जिन आज़ा से गुनाह करता है उन आज़ा से बातिनी तौर पर बदबू आती है। इसकी दलील हदीस पाक में मिलती है। मिसाल के तौर पर :

1. हदीस पाक में आया है कि इंसान जब झूठ बोलता है तो उसके मुँह से बदबू निकलती है हत्ताकि फ़रिश्ते उससे तकलीफ़ महसूस करते हैं और बंदे से दूर हो जाते हैं।
2. हदीस पाक में आया है कि जब आदमी की वफ़ात का वक़्त क़रीब आता है तो मलकुल मौत के साथ आने वाले दूसरे फ़रिश्ते उस आदमी के आज़ा को सूंघते हैं। जिन-जिन आज़ा से उसने गुनाह किए हुए होते हैं। उन आज़ा से उनको बदबू महसूस होती है। जैसे बचे हुए खाने को औरतें सूंघकर पता लगा लेती हैं कि यह ठीक है या ख़राब। ज़रा सी महक महसूस हो तो वे कहती हैं कि खाना ख़राब है। बिल्कुल इसी तरह फ़रिश्ते मौत के वक़्त इंसान के आज़ा को सूंघते हैं। अगर उनमें गुनाहों की बदबू हो तो उन्हें पता चल जाता है। और वे इस बंदे की पिटाई शुरू कर देते हैं। और जो तौबा ताएब होने वाला नेकोकार इंसान होता है उसके आज़ा गुनाहों से पाक होते हैं। लिहाज़ा उनसे बदबू महसूस नहीं होती।
3. सैय्यदना उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक साहब आए और आपने देखकर फ़रमाया कि लोगों को क्या हो गया कि वे हमारी महफ़िलों मुँह उठाए चले आते हैं और उनकी निगाहों से ज़िना टपकता है। इससे पता चला कि कभी-कभी

गुनाहों की बदबू बाज़ लोगों को दुनिया में भी महसूस हो जाती है।

याद रखें कि गुनाहों की यह बदबू सिर्फ़ दुनियवी ज़िंदगी में और मौत के वक़्त ही फ़रिश्तों को महसूस नहीं होती बल्कि जहन्नम में पड़ने के बाद भी इन आज़ा से बदबू महसूस होगी। चुनाँचे हदीस पाक में आया है कि जो इंसान ज़िनाकार हैं जहन्न में डालने के बावजूद उनकी शर्मगाहों से ऐसी बदबूदार हवा निकलेगी कि सारे जहन्नमियों को परेशान कर देगी और वे बड़े ग़ुस्से के साथ उस जहन्नमी को देखकर कहेंगे कि तेरे जिस्म से कैसी बदबू निकली जिसने जहन्नम के अंदर हमारी तकलीफ़ में इज़ाफ़ा कर दिया।

नेकी की खुशबू

नेकी में खुशबू होती है। लिहाज़ा नेक लोगों के आज़ा से खुशबू आती है। अगर हम नेकोकार बन जाएंगे तो हमारे जिस्म से भी बातिनी तौर पर खुशबू आएगी। अल्लाह तआला ने बाज़ हज़रात के अंदर तो नेकी की खुशबू इतनी बढ़ा दी कि वे लोगों को ज़ाहिर में भी महसूस होती थी। मिसाल के तौर पर:

1. खुद नबी अलैहिस्सलाम के मुबारक पसीने से इतनी खुशबू आती थी कि उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा बच्चों को भेजकर महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़तरों को शीशियों में जमा करवाती थीं। नबी अलैहिस्सलाम ने पूछा, उम्मे सुलैम! तुम ऐसा क्यों करती हो? अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! हम इस मुबारक पसीने के क़तरों को जब खुशबू में मिला लेती हैं तो खुशबू की महक में इज़ाफ़ा हो जाता है। मदीना तैय्यबा की दुल्हनें भी वह पसीना बतौर खुशूब इस्तेमाल किया करती थीं।

एक सहाबी की बेटी की शादी थी। उनके पास पैसे नहीं थे। उनको नबी अलैहिस्सलाम ने पसीने के चंद क़तरे इनायत फ़रमा दिए। जब उनकी बेटी ने जिस्म पर लगाए तो उससे ख़ुशबू आने लगी बल्कि उन्होंने उसमें से कुछ क़तरे अपने घर में रख लिए। उस घर में ख़ुशबू आना शुरू हो गई। हत्ता कि सहाबा किराम में वह घर "ख़ुशबुओं वाला घर" मशहूर हो गया। और बाज़ रिवायतों में आता है कि नबी अलैहिस्सलाम जिस रास्ते से चलकर जाते थे उस रास्ते से ख़ुशबू आती थी।

2. सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को अल्लाह तआला ने गुनाहों से महफ़ूज़ किया हुआ था जिसकी वह से उनके जिस्म से भी ख़ुशबू आया करती थी। सैय्यदना उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है :

﴿كَانَ رِيْحُ اَبِى بَكْرٍ اَطْيَبُ مِنْ رِيْحِ الْمِسْكِ﴾

अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के जिस्म से ऐसी ख़ुशबू आती थी जो मुश्क की ख़ुशबू से भी बेहतर हुआ करती थी।

3. इमाम आसिम रह० जब मस्जिदे नबवी में जाते थे तो वहाँ क़ुरआन पाक पढ़ा करते थे। उनके मुँह से ख़ुशबू आया करती थी। किसी ने पूछा, हज़रत! क्या आप मुँह में इलायची रखते हैं या कोई और चीज़ रखते हैं? हमने इतनी ख़ुशबू कहीं नहीं सूंघी। वह कहने लगे, नहीं बात यह है कि एक मर्तबा ख़्वाब में नबी अलैहिस्सलाम की ज़ियारत नसीब हुई तो नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि आसिम! तू इतनी मुहब्बत से क़ुरआन मजीद पढ़ता है कि मुझे बहुत पसन्द आता है। आओ मैं तुम्हारे मुँह का बोसा दे दूँ। जब नबी अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब में मेरे मुँह का बोसा लिया, उस

वक़्त से मेरे मुँह से ख़ुशबू आती है, सुब्हानअल्लाह।

4. शेख़ुल हदीस मौलाना ज़करिया रह० ने फ़ज़ाइल दरूद शरीफ़ में लिखा है कि एक आदमी रात को सोने से पहले रोज़ाना दरूद शरीफ़ पढ़ता था। एक रात ख़्वाब में उसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई। अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, अपना मुँह मेरे क़रीब करो जिससे तुम मुझ पर दरूद पढ़ते हो, मैं उसका बोसा लेना चाहता हूँ। उसने अपना रुख़्सार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीब कर दिया। अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके चेहरे का बोसा लिया और उसकी आँख खुल गई। जैसे ही आँख खुली पूरा घर मुश्क की ख़ूश्बू से महक रहा था। उसके बाद आठ दिन तक उसके रुख़्सार से मुश्क की ख़ुश्बू आती रही।

5. इंडिया में एक बुज़ुर्ग ख़्वाजा मुश्की रह० थे। उनके जिस्म से मुश्क की सी ख़ुश्बू आती थी। लोग हैरान होकर पूछते थे कि आप कैसी ख़ुश्बू लगाते हैं कि आपके कपड़े पर वक़्त ख़ुश्बू में बसे हुए लगते हैं? किसी ने एक मर्तबा बहुत मजबूर किया तो वह फ़रमाने लगे कि मैं तो कोई ख़ुश्बू नहीं लगाता। उसने कहा कि आपकें कपड़े से ख़ुश्बू कैसी आती है?

उन्होंने कहा कि वाक़िआ यह है कि एक बार मैं किसी गली में से गुज़र रहा था। एक मकान के दरवाज़े पर एक बूढ़ी औरत खड़ी हुई थी। उसने मुझे देखकर कहा कि घर में कोई बीमार है। तुम नेक बंदे नज़र आते हो। उसको कुछ पढ़कर फूंक दो। हो सकता है कि ठीक हो जाए। मैंने उस पर भरोसा किया और घर के अंदर चला गया। जब अंदर गया तो उसने ताला लगा दिया।

उसके बाद घर की मालिक सामने आई। उसकी नीयत मेरे बारे में बुरी थी। वह कहने लगी कि मैं रोज़ाना तुझे गुज़रता हुआ देखती थी। मेरे दिल में बुराई का ख़्याल पैदा होता था। चुनाँचे मैंने आज तुझे इस बूढ़ी औरत के ज़रिए घर में बुला लिया है। लिहाज़ा अब मैं गुनाह करना चाहती हूँ। जब उसने नीयत का इज़्हार किया तो मैं बहुत परेशान हुआ। मैंने उसका मुतालबा मानने से इंकार कर दिया और बाहर निकलने की कोशिश की। लेकिन वह कहने लगी कि अब ताला लग चुका है। अगर नहीं मानोगे तो मैं शोर मचाऊँगी और बोहतान लगाकर संगसार कराऊँगी। अब दो बातों में से एक तय कर लो। या तो संगसार होना पसन्द कर लो या मेरे साथ गुनाह का काम कर लो। उसकी यह बात सुनकर मैं बहुत परेशान हुआ। आख़िर अल्लाह तआला ने मेरे ज़हन में तर्कीब डाली तो मैंने उससे कहा कि मुझे बैतुलख़ला जाने की ज़रूरत है। लिहाज़ा मैं फ़ारिग़ होकर तुम से बात करूंगा। उस औरत ने सोचा कि चलो तैयार तो हो गया। उसने मुझे बैतुलख़ला की जगह दिखा दी। मैं वहाँ गया तो मुझे बैतुलख़ला में जो गंदगी और निजासत नज़र आई। मैंने उसे अपने हाथों से अपने जिस्म और अपने कपड़ों पर मल लिया। जब मैं बाहर निकला तो मेरे जिस्म से सख़्त बदबू आ रही थी। चुनाँचे उस औरत ने मुझे देखा तो उसके दिल में मेरी तरफ़ से नफ़रत पैदा हो गई। और वह कहने लगी कि यह तो कोई पागल है। निकालो इसको यहाँ से। यूँ मैं अपना ईमान बचाकर उसके घर से निकल आया। उसके बाद मुझे परेशानी हुई कि मेरे बदन और कपड़ों से लोगों को बदबू आएगी। लिहाज़ा जल्दी से गुस्लख़ाने में पहुँचा और मैंने अपने बदन और कपड़ों को धोया और पाक किया। जब गीले कपड़े पहनकर बाहर निकला तो उस वक़्त मेरे जिस्म से ख़ुश्बू आने

लगी अल्लाहु अकबर। उनका असली नाम तो कुछ और था लेकिन क्योंकि उनके जिस्म से मुश्क की ख़ुश्बू आती थी इसलिए लोग उन्हें ख़्वाजा मुश्की कहकर पुकारते थे। एक मोटी सी बात ज़हन में बिठा लेनी चाहिए कि नेकी से जिस्म में ख़ुश्बू आती है और गुनाह से जिस्म में बदबू आती है।

क़ब्र में बदन ख़राब होने या न होने की वजह

अब एक और बात भी आप समझ लीजिए। यह चीज़ फ़ायदा देगी। वह यह कि कुछ ऐसी चीज़ें होती हैं कि गलने वाली होती हैं। मसलन चावल पकाए और गर्म-गर्म चावल किसी बर्तन में ढांपकर रख दें तो उनमें से बदबू सी पैदा हो जाएगी। इसलिए कि आपने गर्म-गर्म डाल दिए। यही वजह है कि लोग सफ़र में खाना लेकर जाते हैं लेकिन वह जब खोलते हैं तो उसमें बदबू सी महसूस होती है। फिर वे कहते हैं कि ओहो! बीवी ने खाना पकाया तो था मगर गर्म-गर्म डाल दिया जिसकी वजह से इसके अंदर बदबू आ गई। यहाँ यह बात समझने वाली है कि वह खाना इसलिए ख़राब हुआ कि उसमें ख़राब होने वाली चीज़ मौजूद थी। आप अपने पास चीनी या गुड़ को बंद कर लें और एक साल बाद खोलें तो उसकी महक ठीक होगी क्योंकि उसमें ख़राब होने वाली कोई चीज़ नहीं थी। एक साल बाद भी चीनी चीनी ही होगी और गुड़ गुड़ ही होगा। अब यह बात भी आपको मालूम हो गई कि कुछ चीज़ें ऐसी होती हैं जिनमें ख़राब होने का मादा मौजूद होता है और वे चंद ही घंटों में ख़राब हो जाती हैं और कुछ चीज़ों में ख़राब होने का मादा नहीं होता लिहाज़ा वह सालों पड़ी रहें तो भी ख़राब नहीं होतीं। अब जब यह बात भी समझ में आ गई तो इस आजिज़ ने आपको जो असल बात बतानी थी वह यह है कि गुनाह के अंदर ख़राब करने का माद्दा होता है क्योंकि वह

नजासत की मानिन्द है और नजासत बदबू ही फैलाती है जिससे चीज़ें ख़राब हो जाती हैं। इसीलिए गुनाहों के असरात की वजह से क़ब्रों के अंदर बदन ख़राब हो जाते हैं और कीड़ों की ग़िज़ा बनते हैं। और नेकी के अंदर ख़ुशबू होती है और ख़ुशबू को आप जितना अरसा ढांपकर रखें वह ख़ुशबू ही रहेगी। लिहाज़ा अब एक बात सामने आई कि जो इंसान दुनिया में तौबा ताएब होकर मरेगा उसके ऊपर गुनाहों के असरात नहीं होंगे। यह बंदा क़ब्र में भी चला जाएगा तो उसका ज़िस्म क़ब्र में भी नहीं गले सड़ेगा क्योंकि उसके अंदर गुनाहों के असरात ही नहीं हैं। इसलिए बाज़ हज़रात ने औलिया किराम रह० के जिस्म क़ब्रों में बिल्कुल सही सालिम देखे हैं। एक मर्तबा हमारे शहर के क़ब्रिस्तान में क़ब्र के लिए ज़मीन को खोदा गया तो एक क़ब्र खुल गई। लोग देखकर हैरान हुए कि मैय्यत का जिस्म तो क्या कफ़न का कपड़ा भी बिल्कुल सही सालिम था। इसलिए कि वह बंदा तौबा ताएब होकर मरा था। अल्लाह तआला ने उसे गुनाहों से ऐसे पाक किया था कि उसके बदन पर गुनाहों का असर नहीं था। इसलिए उसका जिस्म ज़मीन के अंदर ख़राब ही नहीं हो रहा था।

एक हैरानकुन मंज़र

पंद्रह बीस साल पहले की बात है कि मैं किसी के सिलसिले में लाहौर गया था। वहाँ एक दोस्त ने मुझे कहा, हज़रत! अगर आपके पास वक़्त हो तो आपको एक चीज़ दिखाना चाहता हूँ। मैंने पूछा, कौन सी? वह कहने लगा, हज़रत! आप वह चीज़ देखकर यक़ीनन ख़ुश होंगे। लिहाज़ा अगर आप के पास वक़्त है तो मैं आपको लिए चलता हूँ। मैंने कहा, ठीक है चलें। उसने मुझे अपनी गाड़ी पर बिठा लिया और तक़रीबन दस किलोमीटर का सफ़र करने के बाद उसने ब्रेक लगाई। वह ख़ुद भी गाड़ी से नीचे

उतरा और मुझे भी कहा हज़रत! आप भी उतर आएं। चुनाँचे मैं भी उतर गया। उसने मुझे वहाँ सड़क के किनारे पर बरगद का एक ऐसा पेड़ दिखाया जो सख़्त आंधी की वजह से जड़ों से उखड़ा हुआ था। मैंने कहा, इस पेड़ की क्या ख़ूबी है? वह कहने लगा, आप ज़रा इसके क़रीब होकर इसकी जड़ों के अंदर देखें। जब मैंने क़रीब होकर देखा तो मैं हैरान रह गया कि उस पेड़ की जड़ों के बीच वाली मिट्टी में नूरानी चेहरे वाले एक दाढ़ी वाले आदमी की मैय्यत दफ़न थी। उस मैय्यत को पेड़ की जड़ों ने चारों तरफ़ से घेरा हुआ था। पेड़ के उखड़ने की वजह से उसकी जड़ों में से मिट्टी गिर गई जिसकी वजह से उसकी मैय्यत नज़र आ रही थी। और मज़े की बात यह है कि उसका जिस्म और कफ़न सही सलामत था, सुब्हानअल्लाह। बाद में ग़ौर किया कि यह पेड़ तक़रीबन एक सौ साल पहले लगाया गया था। जैसे जैसे पेड़ बढ़ता गया उसकी जड़ें उस आदमी की मैय्यत को चारों से तरफ़ से घेरती गयीं। मालूम नहीं कि उस आदमी को उस पेड़ के लगने से कितना पहले दफ़न किया गया था।

क़ब्र क्या सुलूक करती है?

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि एक मर्तबा जनाज़ा पढ़ने गए। अब ज़रा ग़ौर कीजिएगा क्योंकि यह आजिज़ जो नुक्ता आपके ज़हन में आ जांएगा। जनाज़ा पढ़ने के बाद क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र के पास खड़े होकर उन्होंने रोना शुरू कर दिया। लोगों ने पूछा, हज़रत! आप तो इस जनाज़े के सरपरस्त थे आप पीछे क्यों खड़े हो गए? फ़रमाने लगे कि मुझे इस क़ब्र में से ऐसे आवाज़ महसूस हुई जैसे यह मेरे साथ हमकलामी कर रही है। लोगों ने पूछा कि क़ब्र ने आपके साथ

क्या हमकलामी की। फ़रमाया कि क़ब्र ने मुझसे यह हमकलामी की कि ऐ उम्र बिन अब्दुल अज़ीज़ तू मुझसे यह क्यों नहीं पूछता कि जो बंदा मेरे अंदर आता है तू मैं उसके साथ क्या सुलूक करती हूँ? मैंने कहा बता दो। क़ब्र कहने लगी कि मैं उसके साथ यह सुलूक करती हूँ?

उसके गोश्त को खा जाती हूँ। उसकी उंगलियों के पोरों को उसके हाथों से जुदा कर देती हूँ। उसके हाथों को उसके बाज़ुओं से जुदा कर देती हूँ। उसके बाज़ुओं को उसके जिस्म से जुदा कर देती हूँ। यों उसकी हड्डियों को जुदा करके उनको भी खा जाती हूँ।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० फ़रमाने लगे कि जब क़ब्र ने यह बात कही तो मुझे रोना आ गया।

क़ब्र में अज़ाबे इलाही के मंज़र

यह वाक़िआ इस आजिज़ ने एक बार एक मुल्क में सुनाया। उस महफ़िल में पीएचडी डाक्टर, एमबीबीएस डाक्टर और साइंसदान क़िस्म के लोग बुलाए गए थे। महफ़िल के ख़त्म पर एक साइंसदान साहब मेरे पास आए और कहने लगे, हज़रत! क्या आप ने यह वाक़िआ किसी किताब में पढ़ा है? मैंने कहा, जी हाँ। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० का यह वाक़िआ हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह० ने फ़ज़ाइले सदक़ात में भी नक़ल फ़रमाया है। जब ऐसे ठोस बुज़ुर्ग कोई वाक़िआ नक़ल करें तो वह सही होगा।

वह कहने लगे, हज़रत! क्या आप यह सब अपनी आँखों से देखना चाहेंगे? मैंने कहा, भई! आपका क्या मतलब? वह कहने लगा, हज़रत! ये चीज़ें यहाँ एक जगह आँखों से देखी जा सकती

हैं। मैं उसकी बात सुनकर बड़ा हैरान हुआ। वह कहने लगा, हज़रत! आप तीन घंटे फ़ारिग़ करें और मैं आपको ले जाकर ये सब मंज़र आँखों से दिखाऊँगा। मुझे और हैरानी हुई। मैंने कहा ठीक है, कल चलेंगे।

अगले दिन वह डाक्टर साहब वक़्त पर ही आ गए और हमें एक म्युज़ियम में ले गए। उस म्युज़ियम में के अंदर उन काफ़िरों ने कैमिकल लगी हुई लाशें रखी हुई थीं। इस स्टेज पर बैठकर मैं यह बात बड़ी ज़िम्मेदारी से कह रहा हूँ। मैं बावुज़ू मस्जिद में बैठा हूँ और सौ फ़ीसद सही बात कह रहा हूँ। उन्होंने उस म्युज़ियम में शीशे के कमरे बनाए हुए थे।

जब पहले कमरे में गए तो उसके दरवाज़े पर लिखा हुआ था कि जब इंसान मरता है तो उसकी यह हालत होती है। जब हम अंदर गए तो हमें एक लाश नज़र आई जिस पर उन्होंने कैमिकल लगाकर उसे हर चीज़ से बचाया हुआ था। इसको हनूत (कैमिकल) शुदा लाश कहते हैं। इंगलिश में इसको ममी कहते हैं। उन्होंने कहा कि जब कोई बंदा मरता है तो वह इस हालत में होता है। हमने इसको कैमिकल लगाकर यहाँ रख दिया है। हम उस लाश को देखकर हैरान हुए।

फिर वह दूसरे कमरे में ले गया। वहाँ एक प्लेट पर लिखा हुआ था कि यह आदमी मरा। हमने इसको क़ब्र में डाला और कुछ दिनों के बाद हमने क़ब्र को खोला और जिस हालत पर हमने इसकी लाश को पाया, हमने उसी हालत में इस पर कैमिकल छिड़क कर यहाँ रख दिया है। हमने जब उस बंदे को देखा तो उसका बाक़ी सारा जिस्म ठीक था मगर उसकी दोनों आँखों के ढेले ढुलककर उसके गालों पर आ चुके थे। और उनमें कीड़े पड़ चुके थे। मालूम हुआ कि क़ब्र के अंदर बंदे के जिस्म में जो सबसे

पहली तब्दीली आती है वह यह है कि आँखों के ढीले ढुलक कर गालों पर आ जाते हैं और उनमें कीड़े पड़ जाते हैं। जिन आँखों से ग़ैरुल्लाह को मुहब्बत की नज़र से देखता था उन पर सबसे पहले कीड़े चिपटते हैं। गोया अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरे बंदे! तेरी आँखें क़ाबू में नहीं थीं। तू ग़ैरुल्लाह को चाहतों और मुहब्बतों से देखता था मगर यह हक़ तेरे परवरदिगार का था लेकिन तुझे ग़ैर-महरमों के चेहरे अच्छे लगते थे। तो जो आँखें ग़ैर-महरमों को मुहब्बत की नज़र से हवस के साथ देखती फिरती हैं, क़ब्र में सबसे पहले इन्हीं आँखों को कीड़े खाएंगे। उसके बाद तीसरे कमरे में गए। उस कमरे में पड़ी हुई एक लाश की आँखों के ढेले को भी कीड़ों ने खा लिया था मगर अब उसके होंठों को भी कीड़े खा चुके थे। सिर्फ़ दांतों की बतीसी नज़र आ रही थी। इसके अलावा बाक़ी लाश ठीक थी। तो दूसरी तब्दीली यह आई कि उसके मुँह में कीड़े पड़ गए और कीड़ों ने होंठों को खा लिया जिसकी वजह से दूर से दांत नज़र आ रहे थे। ग़लत मुहब्बत भरी बातें करता, अब दूसरे नंबर पर उसकी ज़बान को कीड़ों ने खा लिया।

फिर हम चौथे कमरे में गए। हमने वहाँ भी देखा कि आँखों से ढेले निकले हुए और कीड़ों ने उनको खा लिया था और ज़बान को भी कीड़ों ने खा लिया था। इसके अलावा हमने देखा कि उसका पेट प्याले की तरह बना हुआ है। और उस प्याले के अंदर कीड़े पड़े हुए हैं। जिस पेट में हराम डालता था उसमें कीड़े पड़ चुके थे और उसे खा रहे थे। फिर अगले कमरे में देखा कि कीड़ों ने फैलना शुरू कर दिया था। आख़िर एक ऐसे कमरे में गए जहाँ कीड़ों ने जिस्म का पूरा गोश्त खा लिया था सिर्फ़ हड्डियाँ मौजूद थीं। फिर अगले कमरों में हड्डियों के बोसीदा होने की हालत को

देखा। और जब हम आख़िरी कमरे में पहुँचे तो वहाँ लिखा हुआ था कि जब हमने इस क़ब्र को खोदा तो सिर्फ़ रीढ़ की हड्डी का इतना हिस्सा बाक़ी मिला था, बाक़ी सब हड्डियों को भी कीड़ों ने खा लिया था।

ये सब मामलात इंसान को क़ब्र के अंदर पेश आते हैं। हमारी किताबों में लिखा हुआ था और उस मुल्क के काफ़िरों ने क़ब्र में जो तब्दीली देखी उसे ममी की हुई लाशों की सूरत में लोगों के लिए नुमाइश बनाया हुआ था। मगर वह कौनसी लाशें होती हैं जिनको मिट्टी और कीड़े खाते। ये उन लोगों की लाशें होती हैं जो गुनाह करते हैं। क्यों उनके अंदर गुनाहों के असरात होते हैं। इसलिए मिट्टी और कीड़े उनकी लाशों को खाते हैं। और जो लोग गुनाहों से बचते हैं और अल्लाह के हुज़ूर पेश होते हैं क्योंकि उन्होंने अपने इल्म और इरादे से गुनाह नहीं किया होता इसलिए उनकी लाशें क़ब्रों में भी महफ़ूज़ रहती हैं। अंबिया किराम के बारे में तो हदीस पाक में आया है कि अल्लाह तआला अंबिया किराम के जिस्मों को ज़मीन पर हराम कर दिया। इसी तरह जो अंबिया किराम के वारिस होते हैं और गुनाहों से अपने जिस्मों को बचाते हैं क्योंकि उनके जिस्मों में गुनाहों की गंदगी नहीं होती इसलिए जब उनके जिस्मों को क़ब्रों में रख देते हैं तो अल्लाह तआला की ज़मीन उनके जिस्मों को भी नहीं गला सकती और कीड़े भी उनके जिस्मों में नहीं पड़ सकते। इसीलिए कुछ औलिया अल्लाह के जिस्म को भी नहीं गला सकती और कीड़े भी उनके जिस्मों में नहीं पड़ सकते। इसीलिए बाज़ औलिया अल्लाह के जिस्म क़ब्रिस्तान की खुदाई के वक़्त बिल्कुल सही सालिम पाए गए। क्योंकि उनके जिस्म में गुनाहों के असरात नहीं थे।

मिट्टी में फूल

कई ऐसे नेकोकार भी होते हैं कि क़ब्र की मिट्टी ने उनके जिस्मों में कीड़े तो क्या डालने उनके जिस्म की ख़ुशबू क़ब्र की मिट्टी को भी ख़ुशबूदार बना देती है।

1. आपने इमाम बुख़ारी रह० का वाक़िआ सुना होगा कि जब उनको क़ब्र में दफ़न किया गया तो क़ब्र की मिट्टी से ख़ुशबू आती रही। वह समरक़न्द से क़रीब बाइस मील के फ़ासले पर ख़रतंग नामी गाँव में दफ़न हैं। इस आजिज़ को वहाँ चंद दिन गुज़ारने का मौक़ा मिला। उनका मज़ार मेहमानख़ाने और मस्जिद के दर्मियान था। लिहाज़ा हम जब भी मेहमानख़ाने से मस्जिद की तरफ़ जाते तो उनके मज़ार के पास से गुज़रते हुए एक अजीब सी ख़ुशबू महसूस करते। मैंने इमाम साहब से पूछा कि क्या लोग यहाँ इतर छिड़कते हैं? वह कहने लगे कि कोई एक बंदा भी इतर नहीं छिड़कता। आप देखें कि इर्द गिर्द मार्बल है। यहाँ कोई कुछ नहीं कर सकता। मैं इतने सालों से इमाम और ख़तीब हूँ। मैं जब भी इस जगह से गुज़रता हूँ मुझे महेशा इस जगह से ख़ुशबू आती है, अल्लाहु अकबर।

वह कहने लगे कि लोग यहाँ ख़ुशबू सूंघकर हैरान हो जाते हैं मैंने कहा हज़रत! मुझे तो कोई हैरानी नहीं हो रही है। कहने लगे, क्या आप हैरान नहीं हो रहे हैं कि वहाँ से गुज़रते हुए ख़ुशबू आती है? मैंने कहा, मुझे हैरानी नहीं हो रही है। कहने लगे, आप इस बात से क्यों हैरान नहीं हो रहे हैं? मैंने कहा–

گلے خوشبوے در حمام روزے   رسید از دست محبوبے بدستم

بدگفتم تو مشکے یا عنبرے   کہ از بوئے دل آویز تو مستم

بگفتا من گل ناچیز بودم ولیکن مدتے باگل نشستم

جمال ہمنشیں در من اثر کرد وگرنہ من ہماں خاکم کہ ہستم

एक दिन खुशबूदार मिट्टी मुझे हमाम में अपने महबूब के हाथ से मिली। मैंने उससे कहा तू मुश्क है या अंबर कि तेरी दिल आवेज़ खुशबू से मस्त हो गया। उसने कहा कि मैं एक कम क़ीमत मिट्टी हूँ लेकिन कुछ वक़्त एक फूल के साथ रह चुकी हूँ। अपने हमनशीन के जमाल ने मुझ पर असर किया वरना मैं तो वही मिट्टी हूँ।

2. एक मर्तबा इंडिया में ताउन की बीमरी फैली। हज़रत मौलाना याक़ूब साहब नानौतवी रह० के दिल में अल्लाह तआला ने यह बात डाली कि इस ताउन में उन्हें शहादत मिलेगी। हदीस पाक में आया है कि जो ताउन की बीमारी में मरा वह शहीदे आख़िरत में से है। जब उनको दफ़न किया गया तो उनकी क़ब्र की मिट्टी में से भी खुशबू आती थी।

3. हज़रत मौलाना अहमद अली लाहौरी रह० को लाहौर में म्यानी शरीफ़ के क़ब्रिस्तान में दफ़न किया गया तो उनकी क़ब्र में से भी खुशबू आया करती थी। बाद में उनके ताल्लुक़ वालों ने दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! इस खुशबू को दूर फ़रमा दीजिए वरना लोग मिट्टी उठाकर घर ले जाएंगे। आम लोगों का तो यही हाल होता है। चुनाँचे अल्लाह तआला ने उनकी दुआ की वजह से उस खुशबू को लोगों पर ज़ाहिर होना ख़त्म फ़रमा दिया। अलबत्ता हम यक़ीन करते हैं कि उनकी क़ब्र के अंदर अब भी खुशबू मौजूद होगी। यह खुशबू क्यों होती है? यह हक़ीक़त में नेकियों की खुशबू होती है।

एक मानी हुई हकीकत

अज़ीज़ तुलबा! हम जब भी गुनाह करते हैं हम समझ लें कि हम इस वक़्त अपने ऊपर नजासत मल रहे हैं। अगर इन नजासतों को हम तौबा किए बगैर अपने साथ लेकर कब्र में चले गए तो वहाँ यह नजासत ज़रूर बदबू फैलाएगी और बदबू से कीड़े पैदा होंगे बलकि नजासत में तो वैसे ही कीड़े पैदा हो जाते हैं। फिर हमारे जिस्म को कीड़े ही खाएंगा और क्या होगा। इसलिए हमें चाहिए कि हम गुनाहों से बचें और अपने जिस्म में नेकी की खुशबू पैदा करें। फिर आप देखेंगे कि अल्लाह तआला इस दुनिया में भी ख़ुशबू के असरात दिखाएंगे और आख़िरत में भी इंशाअल्लाह इसके असरात मिलेंगे। यह बात एक ठोस हकीकत रखती है कि जब तक हम अपने दिल से गुनाहों का मैल कुचैल नहीं उतारेंगे उस वक़्त तक हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का वस्ल नसीब नहीं हो सकेगा। इसकी एक मिसाल सुन लीजिए। एक मर्तबा हमें मिस्कीनपुर शरीफ़ जाने का मौका मिला। वहाँ एक छोटी सी दीवार थी। उसे तुलबा ऊँचा करना चाहते थे। चुनाँचे वे सीमेंट की एक बोरी ले आए। ईंटें भी मंगवा लीं और खुद ही मसाला बनाकर ज़रा ऊँची दीवार बना दी। मगर कुछ अरसे के बांद ऊपर की बनी हुई दीवार अपने आप गिर गई। वे ईंटे आपस में तो मज़बूती से जुड़ी हुई थीं मगर पहले वाली दीवार के साथ उसका जोड़ ठीक न लग सका था। तुलबा फिर परेशान हुए। फिर उन्होंने कुछ अरसे के बाद दोबारा पैसे जमा किए और सीमेन्ट ख़रीदकर दोबारा दीवार बनाई। मगर वही हुआ जो पहले हुआ था। यह आजिज़ वहाँ गया हुआ था तो उनमें से कुछ तुलबा ने कहा कि सुना है आप इंजीनियर है लिहाज़ा आप बता दीजिए कि हम कहाँ ग़लती कर रहे हैं। इस आजिज़ ने उनसे अर्ज़ किया कि

आप मसाला भी ठीक बना रहे हैं, पानी भी पूरा डाल रहे हैं, ईंटों को भी गीला कर रहे हैं मगर एक कोताही भी कर रहे हैं। वह कोताही यह है कि पुरानी दीवार के ऊपर मिट्टी जमी हुई है आप लोगों ने मोटी-मोटी मिट्टी उतार दी लेकिन उसको अच्छी तरह साफ़ नहीं किया। लिहाज़ा आप लोहे का ब्रश लेकर उसको पुरानी दीवार की ईंटों पर अच्छी तरह रगड़ें यहाँ तक कि उन पर मिट्टी और मैल कुचैल ख़त्म हो जाए। चुनाँचे तुलबा ने ऐसा ही किया। उन्होंने अच्छी तरह रगड़ रगड़ कर दीवार के ऊपर की सतह को बिल्कुल साफ़ कर दिया और फिर सीमेन्ट की मदद से दीवार बना दी। वह दीवार बिल्कुल सही दीवार की तरह मज़बूत और यकजान बन गई। तुलबा बड़े हैरान हुए। उस वक़्त आजिज़ ने मौक़ा ग़नीमत जानते हुए उन तुलबा को समझाया कि यहाँ से मारिफ़त की एक बात समझ में आती है कि जब तक पुरानी ईंटें मैली रहें उनका नई ईंटों के साथ जोड़ पक्का न हो सका यही हालत हमारे क़ल्ब की है। जब तक क़ल्ब के ऊपर गुनाहों की मैल मिट्टी रहेगी तब तक इस दिल का ताल्लुक़ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की पाक ज़ात के साथ नहीं हो सकता। अज़ीज़ तुलबा! हमें चाहिए कि हम गुनाहों से सच्ची पक्की तौबा करें। जब तक हम गुनाहों की जान नहीं छोड़ेंगे उस वक़्त तक परेशानियाँ हमारी जान नहीं छोड़ेंगी।

गुनाहों के मुज़िर असरात

याद रखना कि अगर हम गुनाह करेंगे तो गुनाहों के असरात से नहीं बच सकेंगे क्योंकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया:

﴿مَنْ يَّعْمَلْ سُوْءًا يُّجْزَ بِهٖ. (النساء:١٢٣)﴾ जिसने भी बुराई की उसको उसकी सज़ा मिलेगी।

यहाँ यह क़ुरआनी उसूल समझने की ज़रूरत है कि जिसने भी गुनाह किया उस गुनाह का वबाल उस पर ज़रूर आएगा। इसमें कोई छूट नहीं कि तालिब इल्मों को छोड़ दिया जाएगा या उलमा को छोड़ दिया जाएगा या सूफ़ियों को छोड़ दिया जाएगा। नहीं ज़रूर असरात पड़ेंगे।

बर्फ़ और ठंडी न लगे, आग हो और गर्म न लगे। गुनाह हो और उसके बुरे असरात न हों, यह कैसे मुमकिन है?

याद रखें कि गुनाहों की ज़रूरत सज़ा मिलती है चाहे हमें उसका एहसास हो या न हो। बाज़ अवक़ात तो वाक़ई हमें पता भी नहीं होता कि हम अपने गुनाहों की वजह से किन किन नेमतों से महरूम हो रहे हैं। गुनाहों के क्या-क्या बुरे असरात होते हैं, अब हम इस बात का जाएज़ा लेते हैं :

1. गुनाहों की वजह से इंसान की क़ुव्वते हाफ़िज़ा कम हो जाती है। अक्सर तालिब इल्म यही शिकायत करते हैं कि हज़रत! मुझे बातें याद नहीं रहतीं। मुताला करता हूँ, भूल जाता हूँ। इमाम शाफ़ई रह० ने भी अपने उस्ताद से यही सवाल किया था। फिर उसको शे'र की सूरत में यों लिखा—

شكوت الى وكيع سوء حفظى فاوصانى الى ترك العاصى

فان العلم نور من الهى ونور الله لا يعطى لعاصى

मैंने इमाम वकीअ रह० से अपने हाफ़िज़े की कमी की शिकायत की। उन्होंने वसीयत की ऐ तालिब इल्म! गुनाहों से बच जाओ क्योंकि इल्म अल्लाह तआला का नूर है और अल्लाह तआला का नूर किसी गुनाहगार को अता नहीं किया जाता।

दूसरे लफ़्ज़ों में यों समझिए कि गुनाहों से बचने की वजह से इंसान की क़ुव्वते हाफ़िज़ा अच्छी होती है। लिहाज़ा जो तुलबा

पूछते हैं कि हज़रत! क़ुव्वते हाफ़िज़ा अच्छी होने का कोई वज़ीफ़ा बताएं। वे सुन लें कि कि क़ुव्वते हाफ़िज़ा बढ़ाने का सबसे बड़ा वज़ीफ़ा यह है कि गुनाहों से बच जाएइए। क़ुव्वते हाफ़िज़ा में अपने आप इज़ाफ़ा हो जाएगा। याद रखें कि जैसे मौतकिफ़ को हर वक़्त सवाब मिल रहा होता है इसी तरह मदरसे में रहते हुए तालिब इल्म को भी हर वक़्त सवाब मिल रहा होता है। खाने पर भी सवाब, सोन पर भी सवाब, लेटने पर भी सवाब, पढ़ने पर भी सवाब यहाँ तक कि हर-हर अमल पर तालिब इल्म को सवाब मिल रहा होता है क्योंकि वह अल्लाह के रास्ते में होता है। इसलिए तालिब इल्मों को चाहिए कि वह गुनाहों से बचें वरना गुनाहों का वबाल ज़रूर आएगा।

2. इंसान गुनाहों की वजह से जिस्मानी क़ुव्वत की नेमत से महरूम हो जाता है। मसलन वह आकर कहता है कि हज़रत मैं कमज़ोर हो गया हूँ, नज़र भी कमज़ोर हो गई है। उठता हूँ तो आँखों के सामने अंधेरा आ जाता है। हाज़मा ख़राब हो गया है, वुज़ू क़ायम नहीं रहता। ऐसे हज़रात को चाहिए कि वह मनचाही ज़िंदगी को छोड़कर रब चाही ज़िंदगी अख़्तियार करें ओर लोहे का लंगोट बांध लें। इंशाअल्लह अल्लाह तआला मेहरबानी फ़रमा देंगे और उसकी यह परेशानियाँ ख़त्म हो जाएंगी।

3. गुनाह का अगर किसी और को पता चल जाए तो इज़्ज़त के बजाए उल्टे ज़िल्लत मिलती है। औरतों के सरों से दुपट्टे उतर जाते हैं, मर्दों के सरों से पगड़ियाँ उछल जाती हैं बल्कि सर में जूते भी पड़ते हैं। अगर कामयाब तरीक़े से छुप-छुप कर गुनाह कर लिया तो भी गुनाहों के बुरे असरात से नहीं बच सकेगा।

4. नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम दूसरों की औरतों से परहेज़गारी का मामला करोगे तो तुम्हारी औरतों के साथ भी परहेज़गारी का मामला किया जाएगा। इस उसूल को मद्दे नज़र रखकर कहा जा सकता है कि जो बंदे दूसरों की इज़्ज़त ख़राब करते हैं उसकी ख़ुद अपनी इज़्ज़त भी ख़राब होती है।

एक सुनार था। उसकी बीवी बहुत ख़ूबसूरत थी और अच्छी आदत की थी। एक दिन वह दोपहर के वक़्त खाना खाने घर गया तो उसने देखा कि उसकी बीवी ज़ार व क़तार रो रही थी। उसने पूछा, अल्लाह की बंदी! क्या हुआ? कहने लगी कि यह छोटा सा यतीम बच्चा जो हम ने गोद में लेकर पाला था। अब सत्रह साल का हो चुका है। आज मैंने इसे सब्ज़ी लेने बाज़ार भेजा। जब वापस आकर सब्ज़ी देने लगा तो इसने मेरा हाथ पकड़कर दबा दिया। मुझे इसकी नीयत में ख़राबी नज़र आई। मुझे बहुत ज़्यादा सदमा हुआ है कि मैं इसके लिए माँ की हैसियत रखती हूँ और इसकी मेरे बारे में यह सोच है। मैं इस सदमे की वजह से बैठी रो रही हूँ कि वफ़ा दुनिया से उठ गई है। यह सुनकर सुनार की आँखों में भी आँसू आ गए। बीवी कहने लगी, अब आप क्यों रो रहे हैं? उसने कहा यह इस बच्चे की कमी नहीं बल्कि मेरी अपनी कमी है। उसने पूछा, वह कैसे? वह कहने लगा कि आज मेरे पास औतरें चूड़ियाँ ख़रीदने के लिए आयीं। उनमें से एक औरत चूड़ी पहनना चाहती थी। मगर उससे पहनी नहीं जा रही थी। उसने मुझे कहा कि आप मुझे चूड़ी पहना दें। जब मैंने उसे चूड़ी पहनाई तो उसके हाथ मुझे अच्छे लगे। इसलिए मैंने उसे चूड़ी पहनाने के बीच उसके हाथों को

शहवत के साथ दबा दिया था। उसका नतीजा यह निकला कि मेरी बीवी का हाथ किसी और ने शहवत के साथ दबा दिया।

यहाँ यह बात समझने की ज़रूरत है कि अगर हम अपनी नज़रें इधर-उधर फेरेंगे तो क्या हमारी माँए, बहनें और बेटियाँ दूसरों की हवस की नज़रों से महफ़ूज़ रहेंगी। ख़ाविन्द क्या समझते हैं कि हम जिस पर चाहें नज़रों के तीर फेंकते रहें और हमारी बीवियाँ बची रहेंगी। हर्गिज़ नहीं क्यों क़ुरआन अज़ीमुश्शान में फ़रमा दिया गया है कि ﴿وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّءُ إِلَّا بِأَهْلِهِ. (فاطر: ٤٣)﴾ और बुराई का दाव उल्टेगा उन्हीं दाव वालों पर।

5. गुनाहों की वजह से इंसान मुनाजात की लज़्ज़त से महरूम हो जाता है। बनी इस्राईल का एक आलिम था। उससे कोई गुनाह हो गया। एक बार वह दुआ मांगते हुए कहने लगा, ऐ अल्लाह! मैंने तो आपकी नाफ़रमानी की मगर आपने मुझ पर नेमतें बरक़रार रखीं। यह तेरा कितना बड़ा एहसान है। अल्लाह तआला ने उसके दिल में बात डाली कि तुम्हें इसकी सज़ा मिल रही है। मगर क्योंकि तुम्हारी आँखों पर पर्दे पड़े हुए हैं। इसलिए तुम्हें वह सज़ा नज़र नहीं आ रही है। उसने फ़ौरन दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! आप खोल कर बता दीजिए कि मुझे गुनाहों की सज़ा कैसे मिल रही है? अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने दिल में बात डाली की क्या तुम महसूस नहीं करते कि जब से तुमने यह गुनाह शुरू किया है हमने उसी दिन से तुम्हें अपनी मुनाजात की लज़्ज़त से महरूम कर दिया है।

6. गुनाहों की वजह से तहज्जुद की पाबन्दी छीन ली जाती है। एक आदमी दुआ मांगते हुए रो रहा था। किसी दूसरे ने देखकर यह सोचा कि यह रियाकारी की वजह से रो रहा है। उसकी इस बदगुमानी की वजह से उसे छः माह तक तहज्जुद की पाबन्दी से महरूम कर दिया गया।
7. अल्लाह तआला गुनाहों की वजह से इंसान को तक्बीरे ऊला की पाबन्दी से महरूम कर देते हैं। हम से सुन्नतें छूट रही होती हैं और हमें एहसास ही नहीं होता कि हम कितनी बड़ी नेमत से महरूम हो रहे हैं। हम से मुख़्तलिफ़ वक़्तें की मसनून दुआएं दानिस्ता तौर पर छूट रही होती हैं और हमें एहसास ही नहीं होता कि हम अपना कितना नुक़सान कर रहे होते हैं।
8. गुनाहों की कसरत की वजह से दिल में गुनाह का घिनावनापन कम हो जाता है। और इंसान गुनाह को हल्का समझकर करता रहता है। मोमिन मर्द गुनाह को ऐसे समझता है कि जैसे सर पर पहाड़ आ गया हो जो अभी आकर गिरेगा। और फ़ासिक़ समझता है कि मक्खी बैठी थी, उड़ा दी। अब अगर तालिब इल्म की भी यही हालत हो कि उसे गुनाह मक्खी की मानिन्द हल्का नज़र आएग तो यह कितनी बड़ी नेमत से महरूमी है।
9. गुनाहों की वजह से उलूम व मआरिफ़ समझने की तौफ़ीक़ छिन जाती है। और बंदे को पता ही नहीं होता।
10. गुनाहों की कसरत की वजह से इल्म पर अमल करने की तौफ़ीक़ छीन ली जाती है।

इस आजिज़ के पास दौरए हदीस के तालिब इल्म को उसका

वालिद लेकर आया और कहने लगा, हज़रत! मेरा यह बेटा दौरए हदीस का तालिब इल्म है। यह पाबन्दी से नमाज़ें नहीं पढ़ता। आप दुआ फ़रमा दें कि यह पाबन्दी से पाँच वक़्त की नमाज़ें पढ़नी शुरू कर दे।

11. गुनाहों की वजह से इंसान की बात का असर ख़त्म हो जाता है। यही वजह है कि आज अच्छी आवाज़ में वअज़ करने वाले तो मिल जाते हैं मगर उनकी बातें सर से गुज़र जाती हैं।

13. अल्लाह तआला की नाफ़रमानी करने की वजह से उस इंसान के मातहत लोग उसकी नाफ़रमानी करते हैं। मुजाहिद बिन औज़ रह० फ़रमाया करते थे कि जब कभी मुझे अल्लाह तआला का हुक्म मानने में कोताही हुई मैंने उसका असर या तो अपनी बीवी में देखा या बांदी में देखा या सवारी के जानवर में देखा गोया जब उन्होंने अपने रब का हुक्म मानने में कोताही की तो उनके मातहतों ने उनका हुक्म मानने में कोताही की।

14. गुनाहों की वजह से इंसान हर वक़्त टैनशन (परेशानी) का शिकार रहता है। यह हो ही नहीं सकता कि इंसान गुनाह भी करे और उसे हमेशा का सुकून भी नसीब हो जाए। आज लोग गुनाह के रास्ते से सुकून की तलाश में नज़र आते हैं जबकि यह उनकी ख़ाम ख़्याली है। सुकून उसी सूरत में हासिल हो सकता है जबकि अल्लाह तआला की रज़ा वाले काम किए जाएं।

गुनाहों को हल्का न समझें

अज़ीज़ तुलबा! याद रखें कि कभी किसी गुनाह को हल्का न समझें। हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह० फ़रमाते हैं कि ऐ दोस्त! गुनाह

करते हुए यह न देख कि छोटा है या बड़ा बल्कि उस परवरदिगार की अज़्मत को देख जिसकी तू नाफ़रमानी कर रहा है। कभी किसी ने छोटे बिच्छू को इसलिए हाथ नहीं लगाया कि यह छोटा है। कभी किसी ने छोटे साँप को इसलिए हाथ नहीं लगाया कि यह छोटा है और न कभी किसी ने छोटे अंगारे को हाथ लगाया कि छोटा है। सब छोटे बिच्छू से डरते हैं, छोटे साँप से भी डरते हैं और छोटे अंगारे से भी डरते हैं क्योंकि वह नुक़सानदेह होता है। लेकिन अगली बात भी सुन लें कि बिच्छू, साँप और अंगारे का नुक़सान फिर भी कम होता है और गुनाह का वबाल उससे ज़्यादा होता है।

सोचने की बात

मेरी ये बातें सादी सी हैं मगर सवाबी भी हैं। लिहाज़ा इनको ख़ूब समझने की कोशिश करें। ये आपको फ़ायदा देंगी। जो किताबें आज के तालिब इल्म पढ़ते हैं, हू बहू यही किताबें हमारे अकाबिर ने भी पढ़ीं। हज़रत नानौतवी रह० ने यह सहाह सित्ता पढ़ीं। उस वक़्त की सहाह सित्ता कोई जुदा नहीं थीं। इसी क़ुरआन पाक की तफ़्सीर पढ़ी उनके पास अलैहिदा अनोखा क़ुरआन नहीं था। जो अहादीस आज दौरए हदीस का तालिब इल्म पढ़ रहा होता है इन हज़रात ने भी यही कुछ पढ़ा। जब सब किताबें एक जैसी हैं तो फिर हर तालिब इल्म क़ासिम नानौतवी क्यों नहीं बनता? हर तालिब इल्म अनवर शाह कश्मीरी क्यों नहीं बनता, हर तालिब इल्म शेख़ुल हिन्द मौलाना महमूदुल हसन क्यों नहीं बनता?

इसकी वजह यह है कि किताबें तो उन्होंने भी पढ़ीं मगर उन्होंने किताबों के पढ़ने के साथ-साथ गुनाहों से बचकर तक़्वे

वाली ज़िंदगी गुज़ारी और इन उलूम के अनवारात अपने सीने में भर लिए। यों उनके सीने अल्लाह तआला की मारिफ़त के ख़ज़ीने बन गए।

सोचने की बात यह है कि आज तुलबा के दिलों पर ताले क्यों लगे हुए हैं? दिलों में मुहब्बत इलाही की कैफ़ियत क्यों नहीं आतीं हालाँकि इन्होंने घर छोड़ा, देस छोड़ा, वतन छोड़ा, अज़ीज़ व अक़ारिब छोड़े और सारा दिन क़ुरआन मजीद और हदीस मुबारका पढ़ने में मसरूफ़ रहते हैं। अगर अब भी उनके दिलों में मारिफ़त की लज़्ज़त नहीं आती तो फिर कब आएगी? और अगर नहीं आती तो क्यों नहीं आती? जवाब यह है कि वे सारा दिन अपने दिल में क़ुरआन व हदीस का नूर इकठ्ठा करते हैं और असर से मग़रिब तक के वक़्फ़े में बाज़ारों में निकल जाते हैं। वहाँ बदनज़री करके और हंसी मज़ाक़ की उल्टी सीधी बातें करके इस नूर पर झाड़ू फेर देते हैं।

हज़रत शेख़ुलहदीस के वालिद मोहतरम हज़रत मौलाना याहया साहब रह० फ़रमाया करते थे कि अगर तालिब इल्म को दोस्ती लगाने का मर्ज़ हो तो वह कितना ही ज़हीन क्यों न हो उसकी कश्ती कभी न कभी बीच दरिया के डूब जाएगी और अगर तालिब इल्म कितना ही ग़बी और कुन्द ज़हन क्यों न हो अगर उसको दोस्ती लगाने का मर्ज़ नहीं है तो कभी न कभी उसकी कश्ती किनारे ज़रूरत लग जाएगी। अब आप इल्म हासिल करने की ग़र्ज़ से यहाँ उस्तादों के क़दमों में पहुँच चुके हैं। आप अपने इस आने की क़द्र करें और हर क़िस्म के गुनाहों से बचें।

दीन की बरकत से ईमान की सलामती

अज़ीज़ तुलबा! आप बड़े ख़ुश नसीब हैं। आप हज़रात ने दीन

पढ़कर बड़ा अच्छा सौदा किया है। इस दीन की बरकत से आपका ईमान सलामत रहेगा, इंशाअल्लाह। एक मर्तबा किसी महफ़िल में कॉलेज युनीवर्सिटी का पढ़ा हुआ एक शख़्स मिला। वह दाढ़ी मुंढा था मगर मुसलमान था। उसने एक ऐसी अजीब बात कही कि जिससे मुझे शक पड़ गया। खुदा जाने उसका ईमान महफ़ूज़ है कि नहीं। नक़्ल कुफ़्र कुफ़्र न बाशद।वह कहने लगा कि अल्लाह बड़ी जानिबदारी (नाइंसाफ़ी) है, अस्तग़फ़िरुल्लाह।

एक मर्तबा साउथ अफ़्रीक़ा में थे। वहाँ एक डाक्टर साहब से मुलाक़ात हुई। उनका तर्ज़े ज़िंदगी अंग्रेज़ों वाला था। वह बड़ी खुशी से बताने लगे कि मैं भी डाक्टर हूँ, मेरे तीन बेटे भी डाक्टर हैं। फिर उनकी बीवियाँ भी डाक्टर हैं। हमारी फ़ैमली में आठ नौ डाक्टर हैं। कोई इंगलैंड में है कोई अमरीका में है और कोई फ़लाँ जगह पर है। अब सोचिए कि उनको सिर्फ़ इस बात पर नाज़ है कि उनके ख़ानदान में आठ नौ मेडिकल डाक्टर हैं। और इस बात की परवाह भी नहीं कि उनमें से कौन दीन पर है ओर कौन दीन पर नहीं है। ये वे लोग हैं जो दुनिया की ज़िंदगी पर खुश होते हैं और समझते हैं कि हमने बड़ा अच्छा काम कर लिया है हालाँकि यह ख़सारा उठाने वाले हैं।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ۝ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ ۝ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ۝ (الكهف:١٠٣،١٠٤)

कह दीजिए कि मैं आपको आमाल के एतिबार से ज़्यादा ख़सारा पाने वालों के बारे में न बताऊँ? वे लोग जिनकी तमाम कोशिशें दुनिया के लिए हैं और वे समझे हैं कि हम बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।

अहले नज़र की दुआओं की बरकात

जब इंसान अल्लाह वालों की निगाहों में आता है तो गुनाहों की दलदल से निकल जाता है। एक नौजवान सिलसिलए आलिया में बैअत हुए। वह कहने लगे कि मैं पाकिस्तान के वफ़ाक़ुल मदारिस में मुसलसल तीन सालों से अव्वल आ रहा था मगर गुनाहे कबीरा से न बच सका। बैअत होने के बाद अल्लाह तआला ने इस गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी। जी हाँ यह निस्बत का नूर होता है जो सीनों में मुन्तक़िल होता है। यह बड़ों की दुआएं होती हैं जो इंसान के गिर्द पहरा देती हैं—

दूर बैठा कोई तो दुआएं देता है   मैं डूबता हूँ समन्द्र उछाल देता है

यह अहले नज़र की दुआएं और हिम्मत वालों की हिम्मतें होती हैं। वे तहज्जुद के अंदर गिड़गिड़ा रहे होते हैं और उनके दिल दुआएं मांग रहे होते हैं। मालूम नहीं कि अल्लाह तआला कहाँ-कहाँ किस-किस की दुआओं के सदक़े गुनाहों से हिफ़ाज़त फ़रमा रहे होते हैं। यही वजह है कि हम गुनाहों के पीछे भाग रहे होते हैं, हम तर्कीबें ढूँढ रहे होते हैं, हम गुनाहों का मौक़ा तलाश कर रहे होते हैं मगर हमारी कोशिश के बावजूद हमें गुनाहों का मौक़ा नहीं मिलता। इसमें हमारा कोई कमाल नहीं है। यह अल्लाह वालों की दुआओं का कमाल होता है जो वह तहज्जुद में सालिकों की तरक़्क़ी के लिए मांग रहे होते हैं।

ख़ौफ़े ख़ुदा हो तो ऐसा

आज हम गुनाह करना चाहते हैं लेकिन हमें गुनाह का मौक़ा नहीं मिलता। इसलिए हम गुनाह नहीं कर पाते। जब कि हमारे असलाफ़ ऐसे मुत्तक़ी और परहेज़गार होते थे कि उनको अगर गुनाह का मौक़ा भी मिलता था तो वह ख़ौफ़े ख़ुदा की वजह से

उस मौक़े से फ़ायदा नहीं उठाते थे। मिसाल के तौर पर :

एक ताबई रह० के बारे में आता है कि उनको ईसाई बादशाह ने क़ैद करवा दिया। वह चाहता था कि उनको क़त्ल करवा दे। मगर उसके वज़ीर ने कहा कि नहीं इसके अंदर बहादुरी इतनी है कि अगर यह किसी तरह हमारे मज़हब पर आ जाए तो यह हमारी फ़ौज का कमान्डर इन चीफ़ बनेगा। ऐसा बंदा आपको कहाँ से मिल सकेगा। उसने कहा, अच्छा मैं इसको अपने मज़हब पर लाने की कोशिश करता हूँ। उसका ख़्याल था कि मैं इसको लालच दूंगा। चुनाँचे उसने उनको लालच दिया कि हम तुम्हें सलतनत देंगे। तुम हमारा मज़हब अपना लो। मगर उन्होंने कोई तवज्जेह न दी। जब उन्होंने कोई तवज्जेह ही न दी तो वह परेशानी के आलम में सोच रहा था। इस दौरान उसकी नौजवान बेटी ने पूछा अब्बा जान! आप परेशान क्यों बैठे हैं? उसने कहा, बेटी! यह मामला है। वह कहने लगी, अब्बा जान! आप मुझे इजाज़त दें तो मैं रास्ते पर लाती हूँ।

चुनाँचे बादशाह ने उन्हें एक कमरे में बंद करवा दिया और उस लड़की से कहा कि तुम इसे रास्ते पर ले आओ। वह लड़की उनके लिए खाना लाती और बन संवरकर सामने आती। उसका ये सब कुछ करने का मक़सद उन्हें अपनी तरफ़ माइल करना था। वह लड़की इस तरह चालीस दिन तक कोशिश करती रही। मगर उन्होंने उसे आँख उठाकर भी न देखा। चालीस दिन गुज़र जाने के बाद वह उनसे कहने लगी कि आप कैसे इंसान हैं। दुनिया का हर मर्द औरत की तरफ़ मुतवज्जेह होता है और मैं इस क़द्र ख़ूबसूरत हूँ। हज़ारों में से कोई एक भी ऐसी नहीं और मैं रोज़ाना तुम्हारे लिए बन संवरकर आती रही लेकिन तुमने कभी आँख उठाकर भी नहीं देखा। इसकी क्या वजह है? तुम मर्द नहीं हो या क्या हो?

उन्होंने फ़रमाया कि मेरे परवरदिगर ने ग़ैर औरत की तरफ़ देखने से मना फ़रमाया है। इसलिए मैंने आपकी तरफ़ तवज्जेह नहीं की। उस लड़की ने कहा, जब तुम अपने परवरदिगार के साथ इतनी मुहब्बत है तो फिर हमें भी कुछ तालीमात दो। चुनाँचे उन्होंने उस लड़की को दीन की बातें सिखानी शुरू कर दीं,

शिकार करने को आए थे शिकार हो के चले

आख़िर वह लड़की इस्लाम क़ुबूल करने के लिए तैयार हो गई। लिहाज़ा उन्होंने उसको कलिमा पढ़ाकर मुसलमान बना दिया। वह कलिमा पढ़कर कहने लगी कि अब मैं मुसलमान हूँ। लिहाज़ा अब मैं यहाँ नहीं रहूंगी। बाद में उसने ख़ुद ही एक तर्कीब बताई जिसकी वजह से उन तबई रह० को भी क़ैद से निजात मिल गई और लड़की ख़ुद भी महलों को छोड़कर मुसलमान के साथ चली गई।

हैरत की बात है कि एक नौजवान लड़की उनको अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने के लिए चालीस दिन तन्हाई में कोशिश करती रही। मगर उन्होंने उसकी तरफ़ आँख उठाकर भी न देखा। या अल्लाह हमें तो हैरानी होती है। फ़रिश्तों को भी ताज्जुब होता होगा। यह किस लिए था? इसलिए कि उनका तज़किया हो चुका था और नफ़्स के अंदर से गंदगी निकल चुकी थी। मगर आज नौजवानों की हालत ऐसी है कि वे गुनाह इसलिए नहीं कर पाते कि कोई गुनाह के लिए तैयार नहीं होता वरना अगर कोई गुनाह का इशारा कर दे तो गुनाह के लिए अभी तैयार हो जाएं।

इतनी पाक हस्तियाँ

इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़सानी रह० मक्तूबात में फ़रमाते हैं कि इस उम्मत में ऐसी-ऐसी पाक बाज़ हस्तियाँ भी गुज़री हैं कि

जिनके गुनाह लिखने वाले फ़रिश्ते को बीस-बीस साल तक गुनाह लिखने का मौक़ा ही नहीं मिला, अल्लाहु अकबर। जब ये हज़रात ऐसे नामए आमाल को लेकर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर में पेश होंगे और दूसरी तरफ़ हम होंगे कि गुनाह से कोई दिन ख़ाली नही होता हालाँकि सालिक के दिल में तो हर वक़्त यह ग़म होना चाहिए कि मैंने अपने वजूद से अल्लाह तआला की कोई नाफ़रमानी नहीं करनी। लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम रात के वक़्त रो रो कर अल्लाह तआला से दुआएं मांगे कि ऐ मालिक मैं गुनाहों से नहीं बच सकता। आप चाहें तो मुझे बचा सकते हैं। आप मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा लीजिए।

तौबा करने के दो फ़ायदे

अगर आप ने इस महफ़िल में अपने दिल में पक्का इरादा कर लिया कि रब्बे करीम आज मैंने अपने सब गुनाहों से तौबा कर ली तो समझ लीजिए कि हमने अपने दिल को धो लिया और हमने अपने आपको अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के क़रीब कर दिया। जब तक गुनाहों को नहीं छोड़ेंगे उस वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का वस्ल नसीब नहीं होगा। यही वजह है कि हमारे मशाइख़ के पास जब भी कोई आता है तो वह सबसे पहला काम यही करवाते हैं कि भई! अपने गुनाहों से तौबा करो। अच्छा कभी-कभी शैतान दिल में यह बात डालता है कि तू फ़लाँ गुनाह नहीं छोड़ सकता। तो भई! अपने आपको समझाएं कि अगर हम गुनाह नहीं छोड़ सकते तो अल्लाह तआला हम से गुनाह छुड़वा सकते हैं क्योंकि हमारे दिल उनकी उंगलियों के दर्मियान में हैं।

﴿يُقَلِّبُهَا كَيْفَ يَشَاءُ﴾ अल्लाह तआला जैसे चाहते हैं दिलों को फेर देते हैं।

अगर अल्लाह तआला ने दिलों को फेर दिया तो फिर गुनाहों को छोड़ना आसान हो जाएगा। इसलिए तौबा करने की सच्ची पक्की नीयत कर लीजिए और गुनाह को छोड़ने का इरादा कर लीजिए। भले कोई बंदा रोज़ गुनाह करता है फिर भी वह तौबा की नीयत कर ले। इसके दो फ़ायदे होंगे। एक फ़ायदा तो यह कि इस तौबा की वजह से आज तक जितने गुनाह किए वे तो माफ़ हो जाएंगे और पिछला हिसाब साफ़ हो जाएगा। यह तो फ़ायदा है ही सही और दूसरा फ़ायदा यह है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मदद फ़रमाकर आइन्दा भी हिफ़ाज़त फ़रमा देंगे। अव्वल तो दो फ़ायदे मिलेंगे वरना एक फ़ायदा तो लाज़मी मिलेगा। लिहाज़ा तौबा एक ऐसा अमल है जो हर वक़्त करते रहना चाहिए ताकि इस तौबा से हमारे पिछले सब गुनाह माफ़ हो जाएं वरना शैतान कई दफ़ा वरग़लाता है और कहता है कि "नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली।" शैतान तुलबा के ज़हन में ऐसी बात डाल देता है मैं तो रोज़ाना गुनाह करता हूँ, मैं कैसे तौबा कर सकता हूँ। भई! सच्ची बात यह है कि नौ सौ चूहे तो क्या हज़ार चूहे खाकर भी हज को जाओगे तो अल्लाह तआला हज़ार को भी माफ़ फ़रमा देंगे क्योंकि मशाइख़ ने फ़रमाया :

﴿صد بار اگر توبہ شکستی باز آ﴾ मेरे बंदे! सौ दफ़ा तौबा की सौ दफ़ा तोड़ बैठा तो अब भी मेरे दर पे आ जा मेरा दर खुला है। तू तौबा करेगा तो मैं तेरी तौबा क़बूल कर लूँगा।

हम तो ऐसे सोचना शुरू कर देते है। कि जैसे हमने बख़्शना होता है। अगर हमने किसी को बख़्शना होता तो फिर वाक़ई हम तो इतनी सी ग़लती भी माफ़ न करते। ओ ख़ुदा के बंदे! अल्लाह तआला ने बख़्शना है और अल्लाह तआला की ज़ात बड़ी रहीम व करीम है। बंदे से माफ़ी मांगनी होती तो यह बड़ा मुश्किल काम

था। शुक्र है कि अल्लाह तआला से माफ़ी मांगनी होती है। अलबत्ता जो हुक़ूक़ बंदों के ज़ाए किए हैं वे तो बंदों से ही बख़्शवाने हैं। लिहाज़ा अगर आप महसूस करते हैं कि आपने किसी का दिल दुखाया है और किसी का हक़ मारा है तो उस बंदे से माफ़ी मांग लीजिए क्योंकि दुनिया की शर्मिन्दगी थोड़ी है और आख़िरत की शर्मिन्दगी बड़ी और बुरी है।

एक आदमी दुकान पर एकाउन्ट का काम करता है। उसको पता भी है कि औडिट वालों ने चैक करने आना है और वह अपनी किताब को चैक ही नहीं करता। तो जिस दिन एकाउन्ट औडिट वाले आएंगे तो वह जूते ही खाएगा। लिहाज़ा उसको चाहिए कि वक़्त से पहले ही अपना हिसाब व किताब देख ले कि फ़ीगर (हिन्दसे) एक दूसरे के साथ मिलती भी हैं या नहीं। जिस तरह दुकानदार वक़्त से पहले अपने औडिट के लिए तैयार होता है उसी तरह हम भी अपने क़ब्र के औडिट से पहले अपने आपको तैयार कर लें। और यह बड़ा आसान काम है क्योंकि तौबा करते वक़्त कोई वर्ज़िश तो नहीं करनी होती। अगर कोई वर्ज़िश होती कि तुमने डंड बैठकें निकालनी हैं तो हो सकता है कि कोई उज़्र करता कि मैं तो कमज़ोर हूँ। लिहाज़ा निकाल नहीं सकता। भई! तौबा का ताल्लुक़ दिल की नीयत के साथ है। अगर कोई बंदा दिल ही में नादिम हो जाएगा तो अल्लाह तआला ﴿اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ﴾ के मिस्दाक़ दिल की नदामत पर ही उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे।

शर्मिन्दगी की आग में जलना बेहतर है

अब एक मसअला सुन लीजिए। हज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ीअ साहब रह० आयत ﴿مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءً يُّجْزَ بِهٖ﴾ के तहत लिखते हैं कि

अल्लाह तआला का इर्शाद है कि जो गुनाह करेगा उसको उसकी सज़ा मिलेगी। वह फ़रमाते हैं कि इसका मफ़हूम यह है कि या तो सज़ा दुनिया में मिलेगी या फिर आख़िरत में मिलेगी। दुनिया की सज़ा यह है कि या तो अल्लाह तआला गुनाहों की वजह से उस पर परेशानियाँ डाल देंगे और फिर गुनाह को माफ़ कर देंगे और अगर परेशानियाँ न डालीं तो फिर अगर वह बंदा खुद तौबा ताएब हो जाए तो उससे अल्लाह तआला उसे माफ़ फ़रमा देंगे। यह भी तो एक क़िस्म की सज़ा ही है कि बंदा अपने दिल में नादिम व शर्मिन्दा हो जाए और अल्लाह तआला से माफ़ी मांगता रहे। तो वह फ़रमाते हैं कि जिस बंदे ने भी गुनाह किया उसको दो में से एक आग में जलना पड़ेगा। या तो दुनिया में नदामत और शर्मिन्दगी की आग में जले। अंदर ही अंदर कुढ़न हो, नदामत हो, माफ़ी मांग रहा हो और तौबा कर रहा हो। अगर वह दुनिया में नदामत की आग में जलेगा तो अल्लाह तआला आख़िरत की आग से महफ़ूज़ फ़रमा लेंगे और अगर दुनिया में नादिम और शर्मिन्दा नहीं होगा तो उन गुनाहों की वजह से आख़िरत की आग में जलना पड़ेगा।

अब आसान तरीक़ा कौन सा है? दुनिया में नादिम और शर्मिन्दा होकर अल्लाह तआला से माफ़ी मांग लेना ज़्यादा आसान है क्योंकि हम आख़िरत की आग में जलना बर्दाश्त नहीं कर सकते। हम तो नाज़ व नेमत के पले हुए बंदे हैं। हम तो धूप की गर्मी बर्दाश्त नहीं कर सकते। भला जहन्नम की गर्मी कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं। इसलिए अज़ीज़ तुलबा! हमें चाहिए कि हम इसी वक़्त अपने तमाम गुनाहों से पक्की सच्ची तौबा कर लें और दिल में शर्मिन्दगी हो कि ऐ मेरे मालिक! मैं अब तक गुनाह करता रहा। अब मुझे बात समझ में आई है कि यह गुनाह तो नजासत

हैं और उन्होंने मेरे जिस्म के आज़ा को नजिस बना दिया है और वाक़ई अगर अल्लाह तआला हमारे गुनाहों की बदबू को ज़ाहिर फ़रमा देते तो हमारे पास तो कोई बैठना भी पसन्द न करता। यह तो परवरदिगार की रहमत है कि उसने पर्दे डाल दिए हैं। इसलिए यही दुआ मांगे कि रब्बे करीम! जिस तरह आपने हमारी ज़ाहिरी नजासतों के ऊपर पर्दे डाल दिए हैं इसी तरह हमारी बातिनी नजासतों पर भी पर्दे डाल दीजिए।

जहन्नम से ख़ुलासी का एक अजीब सबब

याद रखें कि अगर मक्खी के सर के बराबर भी बंदे की आँखों से आँसू अल्लाह के ख़ौफ़ के वजह से निकलेगा तो वह उस बंदे के लिए कभी न कभी जहन्नम से निकलने का सबब बन जाएगा। जहन्न में एक जहन्नमी जल रहा होगा। वह देखेगा कि जन्नती आए हैं और उन्होंने अपने वाक़िफ़ लोगों की सिफ़ारिशें की हैं और जहन्नमियों को निकाल दिया गया है। इस बंदे का कोई भी ऐसा वाक़िफ़ न होगा जो उसकी सिफ़ारिश करे। वह अपनी बेबसी देखकर परेशान होगा। हदीस पाक में आया है कि जब कोई भी उसकी सिफ़ारिश नहीं करेगा तो उस बंदे की पलकों का एक बाल अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने फ़रियाद करेगा और कहेगा कि ऐ अल्लाह! मैं गवाही देता हूँ कि यह बंदा एक मर्तबा आपकी अज़मत को सामने रखते हुए अपने गुनाहों को याद करके रोया था और इसकी आँख से इतना छोटा सा आँसू निकला था कि मैं उससे तर हो गया था। लिहाज़ा आप मेरी गवाही क़बूल कर लीजिए कि यह आपसे डरने वाला बंदा है। चुनाँचे अल्लाह तआला फ़रिश्ते से फ़रमाएंगे कि तुम ऐलान कर दो कि हमने इस बाल की गवाही को क़बूल करके इस बंदे को जहन्नम से बरी फ़रमा दिया, सुब्हानअल्लाह।

गुनाह के मौक़े से बचने की दुआ

अज़ीज़ तुलबा! अल्लाह तआला के हुज़ूर दुआ मांगा करें कि ऐ अल्लाह! हमें गुनाहों के मौक़े से भी बचा लीजिए।

ग़मे हयात के साए मुहीत न करना
किसी ग़रीब को दिल का ग़रीब न करना
मैं इम्तिहान के क़ाबिल नहीं मेरे मौला
मुझे गुनाह का मौक़ा नसीब न करना

यह अल्लाह तआला ही हमें गुनाहों से बचा सकते हैं।

﴿وَمَا أُبَرِّئُ نَفْسِي ۚ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي. (يوسف:٥٣)﴾

और मैं पाक नहीं कहता अपने नफ़्स को बेशक नफ़्स तो सिखाता बुराई मगर जो रहम कर दिया मेरे रब ने।

रब का रहम कब होता है? जब बंदा खुद बचने की कोशिश करे और मामला उसके सर से ऊपर पहुँच जाए तो फिर अल्लाह तआला उसको बचा लेता है। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को जब गुनाह की दावत मिली थी तो उन्होंने फ़ौरन अल्लाह तआला की पनाह मांगी। चुनाँचे अल्लाह तआला ने उन्हें उस गुनाह से बचा लिया।

दो अजीब दुआएं

आप भी अल्लाह तआला से दुआ मांगा करें कि ऐ अल्लाह! शैतान मरदूद को हम से दूर कर दीजिए। चूँकि अल्लाह वाले दुआएं मांगते हैं। इसिलए अल्लाह तआला उनकी हिफ़ाज़ात फ़रमा दिया करते हैं। राबिया बसरिया रह० जब रात को तहज्जुद के लिए उठती थीं तो दो अजीब दुआएं मांगती थीं :

1. ऐ अल्लाह रात आ गई। सितारे छटक चुके। दुनिया के

बादशाहों ने दरवाज़े बंद कर लिए। अल्लाह! तेरा दरवाज़ा अब भी खुला है। मैं तेरे दर पर मग़फ़िरत का सवाल करती हूँ।

2. ऐ अल्लाह! जिस तरह आपने आसमान को ज़मीन पर गिरने से रोका हुआ है इसी तरह शैतान को मेरे ऊपर मुसल्लत होने से भी रोक दीजिए।

जब इंसान इस तरह अपने आपको अल्लाह के सुपुर्द करता है तो फिर अल्लाह तआला उसकी हिफ़ाज़त भी फ़रमाते हैं।

तौबा करते वक़्त रोने की फ़ज़ीलत

याद रखें कि तौबा करते वक़्त रोने को मामूली न समझें बल्कि कोशिश करें कि आँखों में आँसू मोतियों की तरह गिरने शुरू हो जाएं। हदीस पाक में आया है कि एक मर्तबा सहाबा किराम नबी अलैहिस्सलाम का वअज़ सुन रहे थे। वअज़ सुनते हुए एक सहाबी ज़ार व क़तार रोने लग गए। उनकी हालत देखकर नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि यह आज अल्लाह तआला के सामने इस तरह रोए हैं कि इनकी वजह से यहाँ पर मौजूद सब लोगों के गुनाहों को माफ़ फ़रमा दिया गया है। सच्ची बात अर्ज़ करूँ कि अगर नेकों पर गुनाहगारों की तौबा का अज्र वाज़ेह हो जाए तो वह भी गुनाहगारों पर रश्क करने लगें कि इन्होंने इतने बड़े-बड़े गुनाह किए थे मगर ऐसी तौबा की कि अल्लाह तआला ने उनके गुनाहों को उनकी नेकियों में तब्दील फ़रमा दिया बल्कि कई ख़ुश नसीब लोग ऐसे ख़ुलूस से तौबा करते हैं कि अगर उनकी तौबा के सवाब को पूरे शहर के गुनाहगारों पर तक़्सीम कर दिया जाए तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त सब गुनाहगारों की मग़फ़िरत फ़रमा दें

एक औरत की लाजवाब तौबा

एक मर्तबा नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के दौर में एक औरत गुनाहे कबीरा कर बैठी। किसी को इसका पता नहीं था। यह मामला उसके और उसके परवरदिगार के दर्मियान था। मगर अल्लाह तआला ने उसके दिल में यह एहसास डाला कि दुनिया की तकलीफ़ थोड़ी है और आख़िरत की ज़्यादा है और दुनिया की ज़िल्लत थोड़ी और आख़िरत की ज़्यादा है। लिहाज़ा मुझे चाहिए कि मैं अपने इस गुनाह को दुनिया में ही पाक साफ़ करवा जाऊँ। चुनाँचे वह नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुई। अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! मुझसे गुनाह सरज़द हो गया है। आपने अपना रुख़ दूसरी तरफ़ फेर लिया। उसने दूसरी तरफ़ से आकर कहा ऐ अल्लाह के नबी! मुझसे गुनाह सरज़द हुआ है। आपने फिर अपना रुख़ फेर लिया। अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चार मुख़्तलिफ़ सिम्तों में रुख़ किया और उसने चारों तरफ़ से आकर बताया कि मुझसे गुनाहे कबीरा सरज़द हुआ है। अब चार मर्तबा क्यों रुख़ फेरा? इसलिए कि नबी अलैहिस्सलाम उससे चार मर्तबा गवाही लेना चाहते थे। क्योंकि उस वक़्त तक हद जारी नहीं हो सकती जब तक गवाही न हो।

उस औरत ने इक़रार करते हुए कहा कि मैंने गुनाह किया है और वह गुनाह मेरे पेट में पल रहा है। अब मैं चाहती हूँ कि आप मुझ पर हद जारी करके मुझे इस गुनाह से पाक फ़रमा दें। नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, अभी जाओ और जब बच्चा पैदा हो जाए तो फिर आना। चुनाँचे वह चली गई।

जब बच्चे की पैदाइश हो गई तो वह बच्चे को लेकर फिर आई और फिर अर्ज़ करने लगी कि ऐ अल्लाह के नबी! अब आप

मुझ पर हद जारी कीजिए। अल्लाह के महबूब ने इर्शाद फ़रमाया कि अभी इस बच्चे को दूध पिलाओ। चुनाँचे वह फिर वापस चली गई।

दो साल दूध पिलाने के बाद वह फिर नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ करने लगी, ऐ अल्लाह के महबूब! आप मुझ पर हद जारी कर दीजिए। अब की बार जब वह आई तो बच्चे के हाथ में रोटी का टुकड़ा था जिसे वह खा रहा था। वह बताना चाहती थीं कि अब यह मेरे दूध का मुहताज नहीं रहा। अब उस पर हद जारी की गई।

ग़ौर कीजिए कि उसने बच्चा पैदा होने से पहले अपने गुनाह का इक़रार किया, फिर दो साल दूध पिलाने के भी गुज़रे। मगर उसमें ऐसी इस्तेक़ामत थी कि वह बार-बार आती रहीं। अल्लाह तआला ने उनके दिल में यह बात डाल दी थी कि मैं दुनिया में ही इस बोझ से पाक हो जाऊँ। चुनाँचे उनको संगसार कर दिया गया। संगसार करते हुए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके बारे में कोई सख़्त बात कह दी मगर नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

"उमर! इसने ऐसी सच्ची तौबा की है कि अगर इसकी तौबा के अज्र व सवाब को शहरवालों पर तक़्सीम कर दिया जाए तो शहर के सब गुनाहगारों की मग़फ़िरत हो जाए।"

इताअते इलाही पर इनाम

अज़ीज़ तुलबा! जब हम भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर अपने गुनाहों का यों इक़रार करेंगे तो रब्बे करीम हमारे गुनाहों को माफ़ भी फ़रमा देंगे और आइन्दा गुनाहों से हमारी हिफ़ाज़त भी फ़रमा देंगे। फिर देखना कि सीने में इल्म की मारिफ़त की ऐसी

शमा जलेगी कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसके नूर से पूरी दुनिया को मुनव्वर फ़रमा देंगे। जी हाँ! जब कोई कारीगर कोई मास्टर पीस तैयार करता है तो वह सब लोगों को दिखाने के लिए बतौर सिम्बल (निशान) अपने पास रख लेता है। चुनाँचे हमारे हज़रत रह० फ़रमाया करते थे कि अल्लाह तआला के कुछ बंदे ऐसे होते हैं जो गुनाहों से तौबा करके अपने मन में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत को उतार चुके होते हैं वे ऐसे सिम्बल बन जाते हैं कि अल्लाह तआला उनको पूरी दुनिया के इंसानों को दिखाने के लिए क़बूल फ़रमा लेते हैं। अल्लाह तआला उनके लिए दुनिया के मुल्कों को मौहल्ले बना देते हैं। फिर वे पूरी दुनिया में फिरते हैं। गोया अल्लाह तआला पूरी दुनिया के इंसानों को यह बताते हैं कि इनको देखो :

मेरे बंदे सिम्बल बने हुए हैं। इन्होंने दिल से मासिवा को कैसे निकाला और ये कैसे मेरे बने। आज इस वक़्त गुनाहों से सौ फ़ीसद बचने वाली क़ुदसी हस्तियाँ बहुत कम हैं। अल्लाह करे कि हम कोशिश करने वाले बन जाएं—

हाले दिल जिससे मैं कहता कोई ऐसा न मिला

बुत के बंदे तो मिले अल्लाह का बंदा न मिला

अल्लाह तआला हमें गुनाहों से सौफ़ीसद बचने की और ﴿اُدْخُلُوْا فِی السِّلْمِ کَافَّۃً﴾ (इस्लाम में पूरे दाख़िल हो जाओ) के मिस्दाक़ अपनी ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे। (आमीन सुम्मा आमीन)

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

❁ ❁ ❁

بسم الله الرحمن الرحيم

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ط
وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ○

गुस्सा और उसका इलाज

इक़्तिबास

याद रखिए कि ग़ुस्से पर क़ाबू पा लेना मर्दानगी और हिम्मत की बात है। आज यह हिम्मत ख़त्म हो गई है।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी मद्दज़िल्लहु

गुस्सा और उसका इलाज

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ط وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَo

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَo وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَo

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

तर्बियत की ज़रूरत

"तालीम व तर्बियत" दो अल्फ़ाज़ शुरू से ही इकठ्ठे रहे हैं। तालीम इंसान मदरसों से, स्कूलों से, कॉलेजों और युनिवर्सिटियों से हासिल करता है मगर वहाँ तर्बियत की कमी है। पहले वक़्तों में लड़कपन में माँ-बाप तर्बियत करते थे और जवान होने के बाद पीर और उस्ताद करते थे लेकिन आज वक़्त कुछ और है। आजकल के लड़के माँ-बाप से कोई इस्लाही बात सुनना पसन्द ही नहीं करते। उनको तो बाप अच्छा नहीं लगता क्योंकि वह रोकता है बल्कि माँ अच्छी लगती है क्योंकि वह हर चीज़ की इजाज़त दे देती है बल्कि बाज़ नवजवान बाप से ऐसे नफ़रत करते हैं जैसे पाप से नफ़रत की जाती है। उन्हें रोक-टोक अच्छी नहीं लगती।

नफ़्स इस बात को पसन्द नहीं करता कि मुझे किसी बात से रोका जाए और जो कोई उसे रोके वह उसे अच्छा नहीं लगता। अगर कोई बड़ा समझाए तो उससे बोलना छोड़ देते हैं। बड़ा भाई समझा दे तो छोटा उससे बोलना छोड़ देता है। और अगर बाप समझा दे तो वह नवजवान अपने वालिद के सामने आता ही नहीं। ख़ून इतने सफ़ेद हो चुके हैं। गोया जो ख़्वाहिशात पूरी करना सिखाए उसे दोस्त समझते हैं और जो नफ़्स की मक्कारियाँ बतलाए उसे दुश्मन समझते हैं। यह क़ुर्बे क़यामत की अलामतों में से है।

इंसान के तीन बर्तन

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इंसान को तीन बर्तन अता किए हैं :

जज़्बात का बर्तन

इनमें सबसे पहला बर्तन इंसान का दिल है। यह जज़्बात का सरचश्मा है। इंसान में जितने भी जज़्बात होते हैं उनका ताल्लुक़ दिल से है। मुहब्बत का जज़्बा, नफ़रत का जज़्बा, बहादुरी का जज़्बा, बुज़दिली का जज़्बा, सख़ावत का जज़्बा, बख़ीली का जज़्बा। इन सब जज़्बात का ताल्लुक़ इंसान के दिल के साथ है। इसके अलावा ईमान और कुफ़्र का ताल्लुक़ भी इंसान के दिल के साथ ही है।

ख़्यालात का बर्तन

दूसरा बर्तन अक़्ल है। यह ख़्यालात का बर्तन है। यह इंसान के जिस्म में आने वाले अच्छे और बुरे सब ख़्यालात का बर्तन है। सब ख़्यालात का महवर और मर्कज़ अक़्ल है। जिस तरह कम्पयुटर के अंदर Math Co. processor होता है। प्रोग्राम में

जहाँ कहीं Mathematicallly equation आ जाए तो वह सीधी Math Co. processor की तरफ़ रैफ़र कर दी जाती है। इसी तरह इंसान के दिमाग़ में जितने भी ख़्यालात processes (उपज) रहे होते हैं वे इंसान के दिमाग़ में होते हैं।

यों समझिए कि इंसान का दिमाग़ ख़्यालात का मोटरवे है। जैसे मोटर वे पर कारें भी होती हैं, बसें भी होती हैं और बड़े-बड़े ट्रेलर भी होते हैं इसी तरह इंसान के दिमाग़ की मोटर के ऊपर ख़्यालात आ जा रहे होते हैं। कभी दुनिया से मुताल्लिक़, कभी दीन से मुताल्लिक़, कभी अपने मुताल्लिक़ और कभी ग़ैरों के मुताल्लिक। ये ख़्यालात बार-बार आ रहे होते हैं। ख़्यालात का बार-बार आना भी अल्लाह की रहमत है। अगर ये ख़्यालात बार बार न आते तो हमारी ज़िंदगी मुश्किल हो जाती।

फ़र्ज़ करें किए सूफ़ी साहब से उसकी बीवी ने कहा दोपहर को मेहमानों ने आना है। आप सब्ज़ी लाकद दे दें, खाना बनाना है। घर से निकले और उनको दस पंद्रह साल के बाद प्राइमरी स्कूल के दोस्त मिल गए। अब उससे बातें करने लग गए। अगरचे वह बात कर रहे होंगे लेकिन उनके दिमाग़ में हट-हट कर ख़्याल आएगा कि मैंने घर में सब्ज़ी पहुँचानी है। यह अल्लाह तआला का बनाया हुआ ऑटो मैटिक सिस्टम है। अगर फ़र्ज़ करें कि उसको यह ख़्याल ही न आता कि मैंने घर में सब्ज़ी पहुँचानी है और दोपहर को मेहमान आ जाते और यह दोस्त के साथ वक़्त गुज़ारकर शाम को घर आ रहे होते तो फिर घर के अंदर क्या तमाशा बनता।

इसी तरह इंसान एक वक़्त में दो ख़्याल ज़हन में रख सकता है। एक काम कर रहा होता है और दूसरे काम का ख़्याल उसके

ज़हन में आ रहा होता है। मसलन इमाम साहब ने नमाज़ पढ़ानी है मगर साथ ही साथ आयतें भी तलाश कर रहे होते हैं। वह आयतें भी ढूंढ रहे होते हैं और वक़्फ़े-वक़्फ़े से घड़ी की तरफ़ भी देख रहे होते हैं।

ख़्यालात की ट्रेफ़िक

अगर मोटर वे पर ट्रेफ़िक आ भी रही हो ओर जा भी रही हो तो कोई फ़िक्र की बात नहीं होती। फ़िक्र की बात तब होती है जब ट्रेफ़िक ब्लाक हो जाए। इसी तरह अगर ख़्यालात आएं और जाएं तो फ़िक्र की कोई बात नहीं। लेकिन जब कोई ख़्याल आ जाए और जम जाए तो वह ट्रेफ़िक को ब्लाक कर देता है। अब इसका ख़्याल रखना पड़ेगा। जैसे पुलिस वाला चौराहे पर खड़ा होकर दाईं तरफ़ के ट्रेफ़िक को बायीं तरफ़ और बायीं तरफ़ को दायीं तरफ़, सामने वाली ट्रेफ़िक को पीछे और पीछे वाली ट्रेफ़िक को सामने की तरफ़ चलाता रहता है इसी तरह इंसान भी अपनी अक़्ल के चौराहे पर ख़्यालात के आने वाले ट्रेफ़िक को चालू रखता है। जिस तरह ट्रेफ़िक जाम हो जाए और चौक में भीड़ लग जाए तो उस सिपाही की वर्दी उतार ली जाती है। इसी तरह जिस बंदे के दिमाग़ के चौक में शहवानी ख़्यालात का ट्रेफ़िक जम जाए तो अल्लाह तआला भी उस बंदे की इंसानियत वाली वर्दी उतार देते हैं।

ख़्यालात के आने पर पकड़ कब होती है?

एक उसूल ज़हन नशीन कर लीजिए कि ख़्यालात का आना बुरा नहीं बल्कि ख़्यालात का लाना और उनको दिल में जमाना बुरा है। गंदे से गंदा ख़्याल भी आ सकता है। लेकिन यह आए

और चला जाए तो इससे कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता। औलिया को भी ऐसे ख़्यालात आ सकते हैं। कई दफ़ा नौजवान लज़्ज़तें लेने की ख़ातिर दिल में अजीब व ग़रीब तरह के ख़्यालात सोचते हैं। याद रखें कि अगर इरादे के साथ कोई ऐसा ख़्याल बांधा तो उस पर पकड़ होगी और अगर अपने आप कोई ख़्याल आ जाए तो उसको झटक दीजिए। इससे रूहानियत में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

ईमान की अलामत

सहाबा किराम ने नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! ऐसे-ऐसे ख़्यालात आते हैं कि हम तो समझते हैं कि इन ख़्यालात को हटाने की निस्बत आग में पड़ जाना बेहतर है। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि बताओ कि वे ख़्याल आने से तुम्हें ख़ुशी होती है या दिल तंग होता है। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! बहुत दिल तंग होता है। इस पर आपने इर्शाद फ़रमाया ﴿ذٰلِكَ عَلَامَةُ الْإِيْمَانِ﴾ यानी अगरदिल तंग होता है तो यह इस बात की अलामत है कि तुम्हारे दिल में ईमान मौजूद है। इस हदीस पाक से पता चला कि ख़्यालात किसी तरह के भी आ सकते हैं मगर सालिक को चाहिए कि वह इन ख़्यालात को ज़हन में जमने न दे। जब कभी ऐसे ख़्यालात आएं उनको फ़ौरन झटक दे। इसके बारे में हर्गिज़ न सोचे। याद रखें कि जब किसी ख़्याल की सोच शुरू हो गई तो यों समझिए कि इसकी ज़ुलमत दिल पर ज़रूर आएगी।

ख़्वाहिशात का बर्तन

तीसरा बर्तन नफ़्स है और वह ख़्वाहिशात का बर्तन है। ख़्वाहिशात जितनी भी हैं उनका ताल्लुक़ नफ़्स के साथ है। यह

ख़्वाहिशात अच्छी भी होती हैं और बुरी भी होती हैं। मसलन मैं तहज्जुद गुज़ार बन जाऊँ, यह अच्छी ख़्वाहिश है। और दुनिया में मेरी शोहरत और बड़ा ऊँचा नाम हो, यह बुरी ख़्वाहिश है।

बातिनी इस्लाह के दो तरीक़े

इंसान की इस्लाह के दो तरीक़े हैं एक तरीक़ा यह है कि इंसान नफ़्स के ऊपर मेहनत करे और उसकी ख़्वाहिशात को कुचल दे हत्ताकि उसकी ख़्वाहिशात शरिअत के मुताबिक़ हो जाएं। और दूसरा तरीक़ा यह है कि दिल पर मेहनत की जाए और उसके जज़्बात को बदल दिया जाए हत्ताकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत ग़ालिब आ जाए। जब इंसान को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत का जज़्बा हासिल हो जाएगा तो उसके ख़्यालात और ख़्वाहिशात भी उसके मुताबिक़ हो जाएंगे। दिल पर मेहनत करने का मतलब यह है कि कसरत से ज़िक्र व मुराक़बा किया जाए।

सिलसिए चिश्तिया और सिलसिलए नक़्शबंदिया में बुनियादी फ़र्क़

मशाइख़ चिश्त नफ़्स के मुजाहिदात से रूहानी तर्बियत का काम शुरू करवाते हैं और मशाइख़ नक़्शबंद क़ल्ब के ज़िक्र से। मंज़िल दोनों की एक है लेकिन हर फूल का अपना रंग और अपनी-अपनी ख़ुशबू है। नफ़्स पर जो काम करना होता है उसमें मुजाहिदा ज़्यादा करना पड़ता है। मतक़द्दिमीन (पिछलों) ने यही तरीक़ा अपनाया क्योंकि यह उनके हालात के ऐन मुताबिक़ था। इसलिए इसे "मुतक़द्दिमीन का सिलसिला" कहते हैं। अल्लाह तआला ने इसका फ़ैज़ शुरू से ही जारी फ़रमा दिया था। इस सिलसिले नक़्शबंदिया को "मुताख़्ख़िरीन का सिलसिला" कहते हैं।

अल्लाह तआला ने आज के ज़माने में अपने बंदों की कमज़ोरियों को देखते हुए यह एक आसान रास्ता बता दिया है कि दिल पर मेहनत करो और ज़िक्र व मुराक़बा करो ताकि दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत आ जाए। यह इन दोनों सिलसिलों में बुनयादी फ़र्क़ है।

अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम की मेहनत का मैदान

अंबिया किराम ने भी इंसान के दिल को मेहनत का मैदान बनाया। उन्होंने अक़्ल पर मेहनत नहीं की बल्कि उन्होंने दिल बदले क्योंकि दिल बदलने से आज़ा जवारेह से होने वाले आमाल बदल जाते हैं और दिल के बिगड़ने से सब कुछ बिगड़ जाता है—

दिल के बिगाड़ ही से बिगड़ता है आदमी
जिसने इसे संवार लिया वह संवर गया

इसी हक़ीक़त को खोलते हुए नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

اِنَّ فِی الْجَسَدِ بَنِیْ اٰدَمَ لَمُضْغَةً اِذَ فَسَدَتْ فَسَدَالْجَسَدُ کُلُّهٗ وَاِذَ صَلَحَتْ صَلَحَ الْجَسَدَ کُلُّهٗ اَلَا وَهِیَ الْقَلْبُ

बनी आदम के जिस्म में गोश्त का एक लोथड़ा है जब वह बिगड़ता है तो पूरे जिस्म के आमाल बिगड़ जाते हैं और जब वह संवरता है तो पूरे जिस्म के आमाल संवर जाते हैं। जान लो कि वह इंसान का दिल है।

इसी हदीस मुबारक से पता चला कि दिल इंसान के जिस्म के तमाम आज़ा का हाकिम है यहाँ तक कि अक़्ल भी इंसान के दिल के ताबे होती है। क़ुरआन अज़ीमुश्शान में अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَا اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِىْ فِى الصُّدُوْرِ

ऐ काश! उनके दिल होते जो उन्हें अक्ल सिखाते, उनके कान होते जिनसे वे हिदायत की बातें सुनते, आँखें अंधी नहीं होतीं। ये तो सीनों के अंदर दिल अंधे हो जाते हैं।

तीन बर्तन तीन नेमतें

ज़िंदगी गुज़ारने के लिए इंसान को नफ़ा देने वाली चीज़ें हासिल करनी पड़ती हैं और नुक़सान देने वाली चीज़ों से बचना पड़ता है। नफ़ा देने वाली चीज़ों को हासिल करने के लिए अल्लाह तआला ने इंसान को एक क़ुव्वत दी है जिसका नाम "शहवत" है। शहवत इश्तिहा को कहते हैं यानी किसी चीज़ की तलब होना और उसको हासिल करने की दिल में तड़प होना। यह जन्नत की नेमतों में से एक नेमत है जो नमूने के तौर पर अल्लाह तआला ने अता कर दी है ताकि इन नेमतों की एक झलक इंसान दुनिया में भी महसूस कर ले।

इसी तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने नुक़सान से बचने के लिए भी इंसान को एक क़ुव्वत अता फ़रमाई जिसे "ग़ज़ब" कहते हैं। इसका मतलब है "ग़ुस्सा।" नुक़सानदेह चीज़ों से बचने के लिए इंसान को ग़ुस्सा काम आता है। अगर इंसान में ग़ुस्सा होता ही न तो उसमें शर्म भी न रहती। इंसान ग़ुस्से की वजह से कई नुक़सादेह चीज़ों से बच जाता है। मिसाल के तौर पर किसी लड़के को अपनी गली में खड़े देखा। उसकी नज़र मैली मालूम हुई जिससे पता चला कि यहाँ खड़ा होना मुनासिब नहीं है तो इस पर ग़ुस्सा आएगा। लिहाज़ा उस लड़के को पास बुलाकर समझाए कि

बच्चा! आज के बाद तुम मुझे इस गली में न नज़र आना। तो इस ग़ैरते ईमानी की वजह से बंदे की इज़्ज़त बच जाएगी।

शहवत और ग़ज़ब के दर्मियान एतिदाल रखने के लिए अल्लाह तआला ने अक़्ल को हिकमत अता की। लिहाज़ा इंसान अपनी अक़्ल को इस्तेमाल करते हुए इन दोनों चीज़ों को कंट्रोल में रख सकता है।

तीन बर्तन थे और तीन ही नेमतें अता हुई :

- शहवत का ताल्लुक़ नफ़्स के साथ,
- ग़ज़ब का ताल्लुक़ क़ल्ब के साथ,
- हिकमत का ताल्लुक़ दिमाग़ के साथ।

ये तीनों चीज़े इंसान के काम आती हैं।

शहवत व ग़ज़ब को कंट्रोल करने में मशाइख़ का किरदार

याद रखें कि कई चीज़ें अगर हदों में रहें तो फ़ायदेमंद होती हैं और अगर हद से ज़्यादा हो जाएं तो नुक़सान देती हैं। मिसाल के तौर पानी को ले लीजिए। पानी अगर कहीं मिले ही न तो वह भी नुक़सानदेह है और अगर इतना हो कि बंद तोड़कर शहरों में आ जाए तो वह भी नुक़सानदेह है। बिल्कुल इसी तरह अगर शहवत इंसान के अंदर बिल्कुल ही न हो तो वह भी नुक़सानदेह है। ऐसे नामर्द इंसान से औलाद का सिलसिला आगे कैसे चलेगा। इसलिए शहवत का होना भी ज़रूरी है। और अगर इतनी बढ़ जाए कि इसको हलाल व हराम की तमीज़ ही न रहे तो यह भी नुक़सानदेह है। मालूम हुआ कि इस नेमत को एक हद के अंदर होना चाहिए फिर यह इंसान के लिए फ़ायदेमंद होगी।

यही मामला ग़ज़ब (ग़ुस्से) का है। अगर किसी बंदे के अंदर

गुस्सा बिल्कुल हो ही न तो वह बड़ा दय्यूस और बेग़ैरत बन जाता है। उसके सामने उसकी इज़्ज़त ख़राब की जाए या उसके सामने दीन का मज़ाक़ उड़ाया जाए तो उसे कोई एहसास ही नहीं होता। गोया उसके अंदर से हमियत जाती रहती है। बेग़ैरत इंसान के लिए महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, "बेग़ैरत इंसान जन्नत में नहीं जाएगा।" आपका इर्शादे मुबारक है :

﴿أَنَا أَغْيَرُ وَلَدَ آدَمَ وَاللّٰهُ أَغْيَرُ مِنِّي﴾ मैं बनी आदम में सबसे ज़्यादा ग़ैरतमंद हूँ और अल्लाह तआला मुझसे भी ज़्यादा ग़य्यूर हैं।

अगर किसी इंसान के अंदर गुस्सा न हो तो उसमें ग़ैरत भी नहीं रहेगी। जदीद तहज़ीब ने जो बेग़ैरती का बाज़ार गर्म कर रखा है उसकी मिसाल नहीं मिलती। नई तहज़ीम के मियाँ का यह हाल है कि वह अपने दोस्त को बीवी दिखाता है। उससे अपनी बीवी का तार्रुफ़ कराता है। उनके पास बैठकर बातचीत करता है बल्कि अब तो मुसाफ़ा भी होने लगा है। न इसे गुस्सा आता है और न ग़ैरत आती है।

और अगर यह ज़रूरत से ज़्यादा बढ़ जाए तो छोटी मोटी बातों पर वह भड़कना शुरू कर देगा। इसलिए इसका एक हद से ज़्यादा बढ़ जाना भी नुक़सानदेह है। आपने बुख़ार में एक गोली तीन मर्तबा खानी होती है, सुबह, दोपहर, शाम तो वह फ़ायदा देती है। अगर आप सुबह भी तीन खाएं और शाम को भी तीन खाएं तो वही गोली जिसने सेहत का सबब बनना था, उल्टा बीमारी के बढ़ने का सबब बन जाएगी। इसी तरह गुस्सा भी फ़ायदे की चीज़ है लेकिन जब अपनी मिक़्दार यानी हद से बढ़ जाता है तो फिर यह नुक़सानदेह बन जाता है।

अब सवाल यह पैदा होता है कि शहवत और ग़ज़ब दोनों को एतिदाल में कैसे लाया जा सकता है? इसका जवाब यह है कि इस काम के लिए किसी डाक्टर (इलाज करने वाले) की ज़रूरत पड़ती है जिसे "शेख़" कहते हैं। मशाइख़ जो मेहनत करवाते हैं उससे इंसान की शहवत और ग़ज़ब को कंट्रोल में आ जाता है। ज़िक्र व मुराक़बे का मक़सद यही है। जब तक किसी शेख़ से ताल्लुक़ न हो इंसान की इन दोनों चीज़ों में एतिदाल नहीं आ सकता। इसलिए किसी न किसी शेख़ से इस्लाही व तर्बियती ताल्लुक़ क़ायम करना ज़रूरी है।

जब शहवत कंट्रोल में न हो तो आँख क़ाबू में नहीं होती। इंसान अपने दिल में झांक कर देखे कि क्या उसकी आँख क़ाबू में है। अगर दिल से आवाज़ आए कि क़ाबू में नहीं तो इसका मतलब यह है कि शवहत अपनी हद से बढ़ी हुई है। इसी तरह अगर ग़ैर महरम को देखकर तबियत ललचाती है तो यह भी इस बात की अलामत है कि शहवत हद से बढ़ी हुई है और इसका इलाज करवाना ज़रूरी है। ऐसे शख़्स को शेख़ की ज़रूरत होती है ताकि वह उसे गाइड करे। कुछ पढ़ने को बताए, उसे ज़िंदगी गुज़ारने का सलीक़ा सिखाएऔर उसके लिए निज़ामुल अवक़ात तर्तीब दे ताकि उसकी शहवत उसके क़ाबू में आ जाए। जिसकी शहवत क़ाबू में आ जाए वह इंतिहाई पाकदामन इंसान होता है और पाकदामन इंसान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का पसन्दीदा होता है।

एक सहाबी की बातिनी इस्लाह का वाक़िआ

नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में एक नौजवान आया। उसने सीधे आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मुझे ज़िना की

इजाज़त दे दीजिए। उसके जवाब का एक तरीक़ा तो यह था कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ुस्से में आ जाते और फ़रमाते कि तुम हराम को हलाल करवाने आ गए। तुम्हें शर्म नहीं आती लेकिन नहलं बल्कि अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, क्या तुम यह चाहते हो कि कोई तुम्हारी वालिदा से यह हरकत करे? कहने लगा नहीं। पूछा बीवी से करे? कहने लगा नहीं। बहन से करे? कहने लगा नहीं। बेटी से करे? कहने लगा नहीं। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम जिससे ज़िना करोगे वह या तो किसी की माँ होगी, या किसी की बीवी होगी, या किसी की बहन होगी, या किसी की बेटी होगी। अगर तुम इसको पसन्द नहीं करते तो दूसरे लोग भी तो इसे पसन्द नहीं करते। जब इतना समझाया तो उसके ज़हन में बात आ गई। लेकिन फ़क़त समझाने से बात समझ में नहीं आई क्योंकि दिल के अंदर जज़्बात का तूफ़ान होता है। अक़्ल समझ भी ले तो क्या फ़ायदा जब तक कि जज़्बात क़ाबू में न आएं। इसलिए फिर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नुस्ख़ा आज़माया।

नुस्ख़ा यह था कि आपने उस नौजवान के सीने पर हाथ रखा और फ़रमाया :

"ऐ अल्लाह! इस नौजवान के दिल को पाक फ़रमा दीजिए।"

वह सहाबी फ़रमाते हैं कि मेरे सीने पर हाथ रखने से और इस दुआ की बरकत से मेरे दिल पर ऐसा असर हुआ कि उसके बाद मुझे जितनी नफ़रत ज़िना से थी उतनी नफ़रत मुझे दुनिया में किसी गुनाह से नहीं थी। यह क्या था? यह फ़ैज़ था जो नबी

अलैहिस्सलाम से उस उन सहाबी के सीने में मुन्तक़िल हुआ। अल्लाह वाले जो सीने से लगाते हैं यह भी फ़ैज़ के एक सीन से दूसरे सीने में मुन्तक़िल होने का ज़रिया है।

इंतिक़ाले फ़ैज़

हज़रत जिब्राइल अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला की तरफ़ से नबी अलैहिस्सलाम के पास "वही" लेकर आए और फ़रमाया ﴿اِقْرَأْ﴾ (ऐ अल्लाह के नबी! पढ़िए)। आपने इर्शाद फ़रमाया ﴿مَا اَنَا بِقَارِئٍ﴾ (मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ)। बुख़ारी शरीफ़ में है कि नबी अलैहिस्सलाम इर्शाद फ़रमाते हैं कि जब मैंने यह कहा तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने मुझे पकड़कर सीने से लगाया और ख़ूब दबाया हत्ताकि मुझे तंगी महसूस होने लगी। फिर उसके बाद छोड़ दिया और दोबारा कहा ﴿اِقْرَأْ﴾ (पढ़िए)। मैंने फिर कहा ﴿مَا اَنَا بِقَارِئٍ﴾ (मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ)। जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने मुझे दोबारा सीने से लगाया और फिर दबाया। फिर जब तीसरी मर्तबा सीने से लगाकर छोड़ा और पढ़ने को कहा तो मैंने यह पढ़ना शुरू कर दिया :

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ٥ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ٥ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ٥
الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ٥ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَالَمْ يَعْلَمْ٥ (العلق:١تا٥)

ग़ौर करें कि इस वक़्त जिब्राइल अलैहिस्सलाम ऐसा क्यों कर रहे थे? कोई खेल तमाशा था? नहीं बल्कि इसमें हिकमत यह थी कि यह फ़ैज़ था जो मुन्तक़िल हो रहा था। इसी को तो तवज्जोह कहते हैं।

हदीस पाक में आया है कि एक मर्तबा नबी अलैहिस्सलाम तश्रीफ़ फ़रमा थे। इसी बीच में जिब्राइल अलैहिस्सलाम एक

सहाबी वहिया कलबी रज़ियल्लाहु अन्हु की शक्ल में आए और नबी अलैहिस्सलाम के सामने इस तरह बैठ गए :

﴿رُكْبَةً إِلَى رُكْبَتِهِ﴾ उन्होंने अपने घुटने नबी अलैहिस्सलाम के घुटनों के साथ लगा दिए।

इसके बाद सवाल पूछे। सवाल पूछने के लिए शागिर्द पीछे अदब से बैठना चाहिए। मगर इसकी क्या वजह थी कि जिब्राइल अलैहिस्सलाम इतना क़रीब आकर बैठ गए कि घुटनों से घुटने मिल गए। इसका यही जवाब है कि वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से बरकात और तजल्लियात लेकर आए थे वह नबी अलैहिस्सलाम तक पहुँचनी थीं और उसकी उस वक़्त यही सूरत थी। दूसरे लफ़्ज़ों में यह फ़ैज़ का इंतिक़ाल था।

नफ़्स के धोबी पटरे से बचिए

बात यह चल रही थी शहवत और ग़ज़ब को कंट्रोल करने के लिए शेख़ की ज़रूरत होती है। अलबत्ता अगर आप यह कहें कि मैं अपनी शहवत और ग़ज़ब को ख़ुद कंट्रोल कर लूंगा तो बहुत अच्छी बात है। अगर आप ख़ुद कंट्रोल कर सकते हैं तो फिर वाक़ई आप को शेख़ की ज़रूरत नहीं है। कौन कहता है कि पीर व मुर्शिद से इस्लाही ताल्लुक़ क़ायम करना फ़र्ज़ है। अल्लाह करे कि फ़रिश्तों वाली यह सिफ़्त आपको बग़ैर उस्ताद के हासिल हो जाए। लेकिन याद रखना कि नफ़्स आपको ऐसा धोबी पटरा लगाएगा कि आप समझ रहे होंगे कि मैं अपना इलाज कर रहा हूँ और हक़ीक़त उस वक़्त खुलेगी जब मामला कहीं का कहीं पहुँच चुका होगा। यह नफ़्स इंसान की आँखों पर ऐसी पट्टी बांधता है कि उसको कुछ होश ही नहीं रहता।

मशाइख़ का उसूल

मशाइख़ का यह उसूल नहीं होता कि हर आने वाले को एक ही दवाई दे दी जाए। बल्कि हर आने वाले की तबियत को देखकर उसके मुताबिक़ दवाई तजवीज़ करते हैं। इसलिए शेख़ की ज़रूरत और ज़्यादा बढ़ जाती है।

औरंगज़ेब आलमगीर रह० की फ़रासते ईमानी

औरंगज़ेब आलमगीर रह० के पास दो आदमी लाए गए। इन दोनों ने एक जैसा ही गुनाह किया था। औरंगज़ेब रह० ने उनमें से एक के बारे में फ़रमाया कि इसको दस जूते लगाओ। चुनाँचे उसको जूते लगाए गए। फिर दूसरे को बुलाकर उसकी तरफ़ ग़ुस्से की नज़र से देखा और फ़रमाया, आपने भी यह किया है? उसके बाद फ़रमाया कि चले जाओ यहाँ से। वह चला गया।

बाद में लोगों ने औरंगज़ेब आलमगीर रह० से कहा कि आप का अद्ल तो बड़ा मशहूर है। इन दोनों ने एक जैसा जुर्म किया था मगर आपने एक को जूते लगवाए और दूसरे को फ़क़त तंबीह करके भेज दिया। आपका यह अमल ऐसा है कि जिसमें ज़ाहिर में इंसाफ़ नज़र नहीं आता। उन्होंने फ़रमाया कि अच्छा ऐसा करो तुम उन दोनों के घर जाओ और देखो कि उन दोनों का क्या हाल है। जो दस जूते खाकर गया था जब उसके घर गए तो देखा कि वह घर में बैठा क़हक़हे लगा रहा था। उसे बिल्कुल परवाह ही नहीं थी। और जिस को फ़क़त ग़ुस्से की नज़र से देखा था उसकी तबियत हिस्सास थी। वह बुख़ार के साथ बिस्तर पर पड़ा हुआ था।

मशाइख़ बंदे की तबियत देखकर इलाज करते हैं। किसी को

गुस्से से देख लेना काफ़ी होता है और किसी को अच्छी तरह डांट पिलानी पड़ती है।

“ग़ज़ब” का उनवान

शहवत के बारे में तो आप कई दिनों से सुनते आ रहे हैं कि नफ़्स और शैतान शहवत को भड़काते हैं और इंसान से बुरे काम करवाते हैं। आज का उनवान “ग़ज़ब” है। वैसे भी यह ग़ज़ब का उनवान है। क्योंकि अक्सर लोग यही कहते हैं कि जी दिमाग़ बहुत गर्म रहता है। लिहाज़ा दिमाग़ को ठंडा करने के लिए आज स्पेशल दवाई दी जाएगी। दवाई भी वही अच्छी होती है जो बीमारी के मुताबिक़ हो। यह तो मुनासिब नहीं है ना कि आदमी को तो नज़ला ज़ुकाम हो और डाक्टर उसे क़ौलन्ज की दवाई दे रहा हो।

यह एक ख़तरनाक बातिनी बीमारी है जो आजकल आम हो चुकी है। इसके बारे में अक्सर दोस्त ख़त के ज़रिए भी पूछते हैं, टेलीफ़ोन के ज़रिए भी पूछते हैं हत्ताकि आमने सामने गुफ़्तगू के दौरान भी कहते हैं, हज़रत! मुझे ग़ुस्सा जल्दी आता है और मैं अपने क़ाबू में नहीं रहता। क्या बच्चा, क्या बड़ा, क्या मर्द, क्या औरत, सब की यही हालत है।

गुस्सा निकालने का वबाल और पी जाने का फ़ायदा

हदीस पाक में आया है :

गुस्सा ईमान को ऐसा ख़राब करता है जैसे शहद को सिरका ख़राब कर देता है।

इसलिए जो इंसान ग़ुस्से को पी लेता है वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ बड़ा मक़्बूल होता है।

एक और रिवायत में इर्शाद फ़रमाया गया है :

ताक़त के बावजूद गुस्से को पी जाने वाला इंसान क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रज़ा को हासिल करने वाला होगा।"

यानी उसके अंदर बदला लेने की ताक़त भी है और गुस्सा निकाल भी सकता है लेकिन उसके बावजूद गुस्सा नहीं निकालता और बर्दाश्त कर जाता है तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उस बंदे को क़यामत के दिन अपनी रज़ा और ख़ुशनूदी का परवाना अता फ़रमा देंगे।

एक और रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :

"जो शख़्स इंतिक़ाम की क़ुदरत के बावजूद अपने गुस्से को दबा ले अल्लाह तआला उसके सीने को अमन व ईमान से भर देते हैं।

गुस्से के वक़्त नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कैफ़ियत

गुस्सा अंबिया किराम में भी होता था। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम ने खुद अपने बारे में इर्शाद फ़रमाया ﴿اَغْضَبُ كَمَا يَغْضَبُ الْبَشَرُ﴾ मुझे भी ऐसे ही गुस्सा आता है जैसे बशर को आता है। लेकिन आप का गुस्सा अल्लाह के लिए होता था।

हदीस पाक में आता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को एक मर्तबा तौरात के काग़ज़ मिल गए। उन्होंने लाकर नबी अलैहिस्सलाम के सामने पढ़ना शुरू कर दिए। थोड़ी देर बाद उन्हें सैय्यदना अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, "उमर!

तुम्हें तुम्हारी माँ रोए, क्यों नहीं देखता कि नबी अलैहिस्सलाम के चेहरे की तरफ़।"

जब उन्होंने नबी अलैहिस्सलाम के चेहरए अनवर की तरफ़ देखा तो नबी अलैहिस्सलाम का चेहरए अनवर ग़ुस्से की वजह से सुर्ख़ हो चुका था। अल्लाह के महबूब को जब किसी बात पर गुस्सा आता था तो आपका चेहरा मुबारक सुर्ख़ हो जाता था। जब हज़रत उमर ने देखा कि अल्लाह के नबी इतने ग़ुस्से में हैं तो फिर उसी वक़्त उन्होंने आप से माफ़ी मांगी। फिर नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"अगर आज ख़ुद मूसा अलैहिस्सलाम भी होते तो मेरी इत्तिबा के बग़ैर उनकी भी निजात न होती।"

औलिया अल्लाह का ग़ुस्सा

ग़ुस्सा औलिया अल्लाह को भी आता है। इसीलिए तो वह अपने बच्चों की तर्बियत करते हैं वरना तो उनकी बेटियाँ भी बेपर्दा बाहर फ़िरें बल्कि वे साथ ही लेकर जाएं और उनको बिल्कुल परवाह ही न हो जैसे आजकल के बुरे माहौल में ग़ाफ़िल क़िस्म के मुसलमान ख़ुद करते हैं। बाज़ जगहों पर बीवियाँ तो पर्दा करना चाहती हैं मगर ख़ाविन्द करने नहीं देते।

पिछले दिनों एक आलिमा लड़की को इसलिए तलाक़ हुई कि उसका ख़ाविन्द कहता था कि तूने बेपर्दा होकर मेरे साथ चलना है।

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ. (التحريم:٩)﴾

जिहाद कीजिए कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन से और उन पर सख़्ती कीजिए।

क़ुरआन मजीद की यह आयत बता रही है कि जहाँ ईमानी मामला आए वहाँ इंसान के पास ग़ज़ब का होना एक रहमत है। औलिया अल्लाह इसी वजह से ग़ैर शरई कामों पर ग़ुस्से का इज़्हार फ़रमाते हैं।

दोज़ख़ में जाने का सबब

एक हदीस पाक में आया है कि "अक्सर लोगों के दोज़ख़ में जाने का सबब उनका ग़ुस्सा होगा।"

इसकी कई वुजूहात हैं। मसलन ग़ुस्से की वजह से दूसरे की दिल आज़ारी होती है यानी ग़ुस्से में कोई ऐसी बात कर दी कि दूसरे का दिल दुख गया और किसी के दिल को दुख पहुँचाने से बड़ा कोई गुनाह नहीं होता है।

कई मर्तबा तो ऐसा होता है कि ग़ुस्से में तलाक़ दे देते हैं और जब थोड़ी देर के बाद दिमाग़ ठंडा होता है तो बीवी को कह देते हैं किसी को न बताना। इसके बाद मियाँ और बीवी दोनों बग़ैर निकाह के इसी तरह बाक़ी ज़िंदगी गुज़ार देते हैं और औलाद भी हो रही होती है। यह क़रीब क़यामत की अलामत में से है। हदीस पाक में है कि क़ुर्ब क़यामत की अलामत में से यह है कि ख़ाविन्द अपनी बीवी को तलाक़ देगा और फिर वह बग़ैर निकाह के उसी के साथ अपनी बक़िया ज़िंदगी गुज़ारेगा। गोया ग़ुस्सा ऐसा गुनाह करवाता है कि फिर वह सारी ज़िंदगी गुनाह में मुलव्विस रहता है। इन वुजूहात की बिना पर ग़ुस्से का कंट्रोल में होना इंतिहाई ज़रूरी है।

कमज़ोरी की निशानी

उलमा ने लिखा है कि ग़ुस्से का जल्दी आना कमज़ोर होने की

निशानी है। मिसाल के तौर पर सेहतमंद बंदे की निस्बत बीमार को जल्दी ग़ुस्सा आता है।

जवान की निस्बत बूढ़े में ग़ुस्सा जल्दी आता है।

मर्द की निस्बत औरत में ग़ुस्सा जल्दी आ जाता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम से पूछा कि पहलवान कौन है? अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जो दूसरों को गिरा द। वह पहलवान है। फ़रमाया नहीं। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! आप फ़रमा दीजिए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, "पहलवान वह है जो अपने ग़ुस्से पर क़ाबू पा ले।"

याद रखिए कि ग़ुस्से पर क़ाबू पा लेना मर्दानगी और हिम्मत की बात है। आज यह हिम्मत ख़त्म हो गई है। चुनाँचे छोटी-छोटी बातें ग़ुस्से पर क़ाबू न होने की वजह से बात बतंगड़ बन जाती हैं। घरों में लड़ाई झगड़े का बुनियादीसबब ग़ुस्सा बनता है। एक साहब आकर कहने लगे, हज़रत! मैं ग़ुस्से में बीवी को तलाक़ दे बैठा हूँ। मैंने कहा, बताओ किसी ने ख़ुश होकर भी अपनी बीवी को तलाक़ दी। कभी किसी मे कहा कि मैं आपकी ख़िदमत से ख़ुश हूँ और इनाम के तौर पर आपको तलाक़ पेश करता हूँ।

अच्छा इंसान कौन है?

हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कि अच्छा इंसान वह है जिसको ग़ुस्सा देर से आए लेकिन जल्दी राज़ी हो जाए और बुरा इंसान वहहै जिसे ग़ुस्सा जल्दी आए और बड़ी देर के साथ जाए। आज हमारी इस बीमारी की कैटेगिरी यही है कि हमें ग़ुस्सा आता तो

जल्दी है लेकिन जाता देर से है। इसलिए हमें चाहिए कि अगर किसी वजह से गुस्सा आए भी तो अगर दूसरा फ़रीक़ माफ़ी मांग ले तो दिल से फ़ौरन नाराज़गी दूर कर देनी चाहिए।

हज़रत मुर्शिदि आलम और ख़ौफ़े ख़ुदा

जिस साल मुर्शिदि आलम की वफ़ात हुई, यह उसी साल का वाक़िआ है। हज़रत मुर्शिदि आलम रह० फ़रमाते हैं कि मैं वुज़ू कर रहा था और मेरी अहलिया गर्म पानी से वुज़ू करा रही थीं। वुज़ू करवाते वक़्त कोई चीज़ रखने लगीं तो उनकी तवज्जोह दूसरी तरफ़ हो गई। मैंने उन्हें गुस्से से डांट पिलाई कि पहले मुझे तो वुज़ू तो करवा लो। जब मैंने गुस्से से कहा तो वह ख़ामोश रहीं और बर्दाश्त कर गयीं और मैंने वुज़ू कर लिया। वुज़ू करने के बाद मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने के लिए जा रहा था तो मेरे दिल में यह ख़्याल आया कि हालत तो यह है कि मामूली सी बात करके बीवी का दिल तोड़ा है और अब रब के सामने जाकर सज्दे करोगे तो सज्दे कहाँ क़बूल होंगे। फ़रमाने लगे कि यह ख़्याल आते ही मैं वापस लौटा। वापस आकर अहलिया से माफ़ी मांगी। उन्होंने बशाशते क़ल्ब से कहा कि मैंने उसी वक़्त ज़ह से बात निकाल दी थी यानी मैंने माफ़ कर दिया था। फ़रमाने लगे कि माफ़ी मांगने के बाद तब मैं मस्जिद में आया और मैंने नमाज़ अदा की इस उम्मीद के साथ कि मेरे मौला अब मेरी इबादत क़बूल फ़रमा लेंगे।

जज़्बए इंतिक़ाम

गुस्से की वजह से इंसान के अंदर "इंतिक़ाम" का जज़्बा पैदा होता है जबकि शरिअत हमें यह कहती है कि हम दूसरों से इंतिक़ाम लेने की बजाए उनको माफ़ कर दिया करें। यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को ज़्यादा महबूब है लेकिन अफ़सोस की बात यह है

कि आजकल लोग कहते हैं कि हम ईंट का जवाब पत्थरर से देंगे यानी जितनी ज़्यादती किसी ने की है हम उससे कई गुना बढ़कर ज़्यादती करेंगे। इसी को इंतिक़ाम कहते हैं। यही जज़्बए इंतिक़ाम इंसान को बर्बाद कर देता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अफ़ुव्व व दरगुज़र

नबी अलैहिस्सलाम ने कभी किसी से इंतिक़ाम नहीं लिया हत्ता कि जब मक्का मुकर्रमा फ़तेह हुआ और अल्लाह के नबी अलैहिस्सलाम फ़ातेह बनकर मक्का मुकर्रमा जा रहे थे तो उस वक़्त आप अपनी सवारी के बालों को पकड़कर यह फ़रमा रहे थे :

﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَحْدَهُ نَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهُ.﴾

सब तारीफ़ें उस एक अल्लाह के लिए हैं जिसने अपने बंदे की मदद की और उस अकेले ने तमाम दुश्मनों की जमाअतों को शकिस्त अता फ़रमा दी।

उस वक़्त नबी अलैहिस्सलाम के अंदर फ़ख़्र नहीं था बल्कि सर झुका जा रहा था। सवारी की गर्दन के बालों के साथ पेशानी लग रही थी और अल्लाह के नबी अल्लाह तआला की तारीफ़ें कर रहे थे। जब सहाबा किराम मक्का मुकर्रमा के क़रीब पहुँचे तो एक सहाबी सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे :

﴿اَلْيَوْمَ يَوْمُ الْمَلْحَمَةِ، اَلْيَوْمَ تُسْتَحَلُّ الْكَعْبَةُ.﴾

आज का दिन तो जंग का दिन है। आज हम काबा के अंदर क़िताल को हलाल करेंगे।

क्योंकि अल्लाह तआला ने बनी अलैहिस्सलाम के लिए सिर्फ़ फ़तेह के दिन के लिए मक्का मुकर्रमा का क़िताल हलाल कर

दिया था और बाद में क़यामत तक के लिए हुरमत क़ायम कर दी गई। जब उन सहाबी ने यह बात कही तो अबूसुफ़ियान जो कि उस वक़्त तक ईमान नहीं लाए थे, ने एतिराज़ किया कि आपके फ़ौजी क्या कह रहे हैं? इस एतिराज़ पर नबी अलैहिस्सलाम ने सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु से झंडा लेकर उनके बेटे को दे दिया और फ़रमाया :

﴿اَلْيَوْمَ يَوْمُ الْمَرْحَمَةِ﴾ आज का दिन तो रहमत का दिन है।

चुनाँचे जब नबी अलैहिस्सलाम हरम शरीफ़ में दाख़िल हुए तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम सीधे बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ गए। और वहाँ जाकर तवाफ़ और नमाज़ वग़ैरह में मशग़ूल हो गए। किताबों में लिखा है कि मक्का मुकर्रमा की हर जवान औरत को यक़ीन था कि आज मेरी इ़ज़्ज़त बर्बाद हो जाएगी क्योंकि वह समझते थे कि हमने मुसलमानों को इतनी तकलीफ़ें दी हुई हैं कि आज जब ये फ़ातेह बनकर आए हैं तो यह एक-एक से अपना बदला लेंगे। लेकिन जब इशा के बाद का वक़्त हो गया और कोई उनके घरों के दरवाज़ों तक भी न आया तो औरतें बड़ी हैरान हुईं। उन्होंने अपने मर्दों से पूछा कि देखो तो सही कि मुसलमान कहाँ हैं? पता तो करो हो सकता है वे आपस में कोई तर्कीब कर रहे हों या किसी वक़्त के इंतिज़ार में हों। लिहाज़ा मर्दों ने कहा ठीक है हम जाकर पता करते हैं। चुनाँचे मर्दों ने हिम्मत की और वे अपने घरों से बाहर निकले। जब वे हरम के क़रीब आए तो उन्होंने देखा कि सारे के सारे मुसलमान इबादत में मसरूफ़ हैं। कोई अल्लाह के घर का तवाफ़ कर रहा है कोई मक़ामे इब्राहीम पे सज्दे कर रहा है, कोई बैतुल्लाह शरीफ़ से लिपटकर दुआएं मांग रहा है और किसी ने ग़िलाफ़े काबा को पकड़ा हुआ है।

वे ये मंज़र देखकर हैरान हो कि ये लोग फ़ातेह बनकर दाख़िल हुए हैं और बजाए इंतिक़ाम लेने के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की इबादत में मशग़ूल हैं। देखिए अल्लाह के महबूब ने इंतिक़ाम नहीं लिया हालाँकि वे जानी दुश्मन थे। उन्होंने नबी अलैहिस्सलाम को इतनी तकलीफ़ पहुँचाई थीं कि ख़ुद नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

"मुझे दीन की ख़ातिर इतनी तकलीफ़ें पहुँचाई गयीं कि किसी नबी को इतनी तकलीफ़ें नहीं पहुँचाई गयीं।"

अगले दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आम माफ़ी का ऐलान फ़रमा दिया और फ़रमाया कि जो भी आकर कलिमा पढ़ लेगा उसको माफ़ी है। यहाँ तक कि चंद घरों का नाम लेकर फ़रमाया कि जो उन घरों में चला जाएगा उनके लिए भी माफ़ी है, सुब्हानअल्लाह।

एक और मज़े की बात सुनिए। जब इंसान किसी पर कंट्रोल पाता है तो वह आमतौर पर दो काम करता है। वह पहला काम तो यह करता है कि वह मुख़ालिफ़ीन को कुचल के रख देता है और दूसरा काम यह करता है कि वह अपने मुताल्लिक़ीन को ख़ूब नवाज़ता है। आज दुनिया में हम देखते हैं कि जिसको भी पावर मिलती है उसकी पहली तमन्ना यह होती है कि अपने मुख़ालिफ़ीन को कुचल कर रख दूँ और दूसरी तमन्ना यह होती है कि अपने मुताल्लिक़ीन को जितना नवाज़ सकता हूँ नवाज़ दूँ। नबी अलैहिस्सलाम ने इन दोनों चाहतों को पूरा नहीं किया। जब आप सलअम मक्का मुकर्रमा में फ़ातेह बने तो आप इंतिक़ाम ले सकते थे मगर आप ने इंतिक़ाम नहीं लिया। न ही मुख़ालिफ़ीन

को कुचलने की पालिसी पर अमल किया और न ही अपनों को नवाज़ा।

हदीस पाक में आया है कि जब आप हिजरत के वक़्त मदीना मुनव्वरा जाने लगे तो बैतुल्लाह शरीफ़ की चाबी बरदार उस्मान बिन तल्हा को फ़रमाया था कि इस बैतुल्लाह को खोल दो मेरा दिल चाहता है कि मैं अंदर जाकर थोड़ी देर अल्लाह की इबादत करूं मगर उसने जवाब दिया कि मैं नहीं खोलता। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त बड़ी हसरत से फ़रमाया :

"अच्छा! क्या तू वाक़ई नहीं खोलता? उस दिन क्या होगा जब मैं जिस जगह खड़ा हूँ यहाँ तू खड़ा होगा और जहाँ तुम खड़े हो वहाँ चाबी लेकर मैं खड़ा हूँगा।"

उसने आगे से उल्टी सीधी बातें कहना शुरू कर दीं कि तुम्हारे हाथ में चाबी कैसे आ सकती है वग़ैरह वग़ैरह।

जब नबी अलैहिस्सलाम फ़ातेह बनकर मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए तो बनू शैबा का वही बंदा चाबी बरदार था। नबी अलैहिस्सलाम ने उसे बुलाया। जब वह आया तो महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "चाबी मुझे दो।" उसने चाबी दे दी। जब आप ने वह चाबी ले ली तो आपने उसे याद दिलाते हुए फ़रमाया :

"तुम उस वक़्त को याद करो जब मैंने तुम्हें कहा था कि जहाँ मैं खड़ा हूँ वहाँ तुम खड़े होगे और जहाँ इस वक़्त तुम खड़े हो वहाँ चाबी लेकर मैं खड़ा हूँगा, क्या अल्लाह तआला ने वादा पूर कर दिया या नहीं?"

उसने कहा जी अल्लाह तआला का वादा पूरा हो गया है। उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चाबी लेकर

बैतुल्लाह शरीफ़ का ताला खोला। आप बैतुल्लाह शरीफ़ के अंदर दाख़िल हुए। आपने बैतुल्लाह शरीफ़ मे अल्लाह तआला की इबादत की। उसके बाद जब आप बाहर तशरीफ़ लाए और ताला लगाया तो उस वक़्त क़ुरैश के मुख़्तलिफ़ क़बीलों के लोग नबी अलैहिस्सलाम के करीब हो गए। उनमें से हर एक की तमन्ना थी कि हमें चाबी बरदार बना दिया जाए। चुनाँचे सब की नज़रे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जमी हुई थीं कि अल्लाह के नबी हमें चाबी दे दें। मगर अल्लाह के महबूब ने ताला लगाया और आपने जिस काफ़िर से चाबी ली थी वह चाबी उसी काफ़िर के हवाले कर दी और फ़रमाया :

"तुम चाबी को अपने पास रखो। यह चाबी क़यामत तक तुम्हारे ख़ानदान में रहेगी।"

जब आपने उस पर यह एहसान फ़रमाया तो उस काफ़िर की आँखों से आँसू आ गए और कहने लगा, "ऐ अल्लाह के महबूब! कलिमा पढ़ाकर मुझे मुसलमान बना दीजिए।"

माफ़ कर देने में इज़्ज़त है

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने मोमिनीन की सिफ़ात में से एक सिफ़्त यह बयान फ़रमाई :

﴿وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ط وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ. (آل عمران:١٣٤)﴾

(मोमिन लोग) ग़ुस्से को पी जाने वाले होते हैं। लोगों को माफ़ कर देने वाले होते हैं और अल्लाह ऐसे नेकोकारों से मुहब्बत फ़रमाते हैं।

चुनाँचे हदीस पाक में आया है, "माफ़ कर देने से इंसान की इज़्ज़त बढ़ती है।"

इससे पता चला कि इंतिक़ाम लेने से इज़्ज़त हर्गिज़ नहीं बढ़ती।

एक हदीस पाक में है कि क़यामत के दिन मुनादी ऐलान करेगा कि जिस इंसान का अल्लाह के ज़िम्मे हक़ है उसे चाहिए कि वह खड़ा हो और बग़ैर हिसाब किताब जन्नत में दाख़िल हो जाए। पूछा गया कि वह कौन लोग होंगे? नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, "जो लोग दुनिया में अल्लाह के लिए लोगों को माफ़ करने वाले होंगे। उनका अल्लाह पर हक़ होगा यही लोग खड़े होंगे और बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे।

इसलिए जो आदमी ग़लती करने के बाद आकर कहे कि भई! मुझे अल्लाह के लिए माफ़ कर दो तो माफ़ कर दिया करें क्योंकि इस माफ़ कर देने का अल्लाह तआला के हाँ बड़ा मक़ाम है।

एक हदीस में आया है कि जो किसी इंसान की लग़ज़िश से दुनिया में दरगुज़र करता है अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी लग़ज़िशों से दरगुज़र फ़रमाएगा। एक और हदीस में है कि जो इंसान दुनिया में दूसरों की ख़ताओं को जितना जल्दी माफ़ कर देगा, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उतना ही जल्दी उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमा देगा। इसलिए अगर कोई शख़्स माफ़ी का कोई उज़्र पेश कर दे तो उसका वह उज़्र जल्दी क़बूल कर लेना चाहिए।

सबसे ज़्यादा बद तरीन शख़्स

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, क्या तुम्हें बुरे लोगों से आगाह न करूं? सहाबा किराम ने अर्ज़

किया, ऐ अल्लाह के नबी! ज़रूर बताइए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "वह इंसान बहुत बुरा है जो अकेला खाए, अपने गुलाम को कोड़े मारे और बख़्शिश और रहमत को रोक दे।"

फिर उसके बाद इर्शाद फ़रमाया कि क्या तुम्हें इससे भी बद तरीन इंसान बता दूँ?" सहाबा किराम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी बता दीजिए। नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, "उससे बुरा इंसान वह है जो लोगों से बुग़्ज़ रखे और लोग उससे बुग्ज़ रखें।"

उसके बाद फिर फरमाया, "क्या मैं तुम्हें उससे भी बद तरीन इंसान का पता बता दूँ?" सहाबा किराम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! ज़रूर बता दीजिए।"

फ़रमाया, "वह इंसान जिस से नेकी की उम्मीद न हो और उसके शर से इंसान को अमन न हो।"

फिर ख़ामोश रहने के बाद आप ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें इससे भी बद तरीन इंसान बता दूँ?" सहाबा किराम ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! बता दीजिए। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, "जो बंदा किसी की लग़ज़िश को माफ़ न करे और किसी की माज़रत को क़बूल न करे। वह सबसे ज़्यादा बदतरीन इंसान होता है।"

ज़रा हम अपने गिरेबान में झांककर देखें कि क्या हम किसी की माज़रत क़बूल करते हैं? बीवी से ग़लती हो जाए और जितनी मर्ज़ी माफ़ियाँ मांगे। हम कहते हैं कि हम तो सज़ा देकर रहेंगे। अगर किसी आदमी से ग़लती हो जाए तो हम माफ़ नहीं करते बल्कि उसे दिखाते हैं कि कैसे रगड़ना होता है।

इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का अफ़ुव्व व दरगुज़र

एक मर्तबा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अगर कोई बंदा मेरे एक कान में गाली निकाले और दूसरे कान में माफ़ी मांग ले तो मैं उसी वक़्त उसके गुनाह को माफ़ कर दूंगा। उनका ﴿والعافين عن الناس﴾ वल आफ़िना अनिन्नास पर ऐसा अमल था।

इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु का अफ़ुव्व व दरगुज़र

एक मर्तबा इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक शख़्स को देखा जो उनकी ग़ीबत कर रहा था। आपने उसे फ़रमाया, "ऐ दोस्त अगर तू सच्चा है तो ख़ुदा मुझे बख़्श दे और अगर तू झूठा है तो ख़ुदा तुझे बख़्श दे।" सुब्हानअल्लाह कितना आसान जवाब है, बात ही समेट दी।

एक और शख़्स ने एक मर्तबा आपकी ग़ीबत की तो आपने उसे फ़रमाया, "ऐ दोस्त! जितना तुझे मेरे ऐबों का पता है उससे बहुत ज़्यादा ऐब ऐसे हैं जिनका अभी तुझे पता ही नहीं है।"

उसके बाद आपने उस बंदे को एक हज़ार दीनार हदिए के तौर पर पेश किए। जब उस बंदे ने आपका यह हुस्ने सुलूक देखा तो उसे शर्म आई। चुनाँचे उसने माफ़ी मांगी और कहने लगा, "मैं तस्दीक़ करता हूँ कि आप नवासए रसूल के बेटे हैं।"

इमाम अबूहनीफ़ा रह० के हासिदीन

इमामे आज़म अबूहनीफ़ा रह० से हसद करने वाले बहुत ज़्यादा थे। जब इंसान में कमाल आता है तो हसद करने वाले भी बन जाते हैं। अब भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो इमाम साहब रह०

को किसी न किसी अंदाज़ से निशाना बनाते हैं। दुश्मन दो तरह के होते हैं, अंजान या हासिद। अंजान ना जानने की वजह से बंदे की ख़ूबियों से अंजान होता है। अंजान तो किसी तार्रुफ़ के बाद दोस्त बन जाते हैं। अलबत्ता हसद करने वाले का क्या करें।

इमाम औज़ाई रह० ने एक दिन अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० से कहा, ऐ ख़ुरासानी! यह अबूहनीफ़ा कौन है जो दीन में नई-नई बातें घढ़ता रहता है। अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० ने "किताबुर्रहन" ला कर रख दी। उन्होंने उस कितअब को पढ़ा तो कहने लगे, अब्दुल्लाह यह नौमान कौन है? यह तो बड़ा आलिम है। अगर तुम इल्म हासिल करना चाहते हो तो इसकी सोहबत अपनाओ। उनको पहले तार्रुफ़ नहीं था। इब्ने मुबारक रह० ने अर्ज किया हज़रत! यही अबूहनीफ़ा रह० जिन्हें आप बिदअती कह रहे थे।

इमामे आज़म रह० का सब्र

एक मर्तबा एक शख़्स हज़रत इमाम आज़म रह० को ज़हनी अज़ियत देने के लिए मजमे में कहने लगा, आपकी वालिदा बेवा हैं। आप उनका मेरे साथ निकाह कर दें। अब यह कितना गुस्सा दिलाने वाली बात थी कि बूढ़ी वालिदा के लिए निकाह का पैग़ाम भेज रहा है। आपने बड़ी नरमी से जवाब दिया, मेरी वालिदा आक़िल बालिग़ औरत हैं उनसे पूछकर फ़ैसला किया जाएगा। वह शख़्स वहाँ से रुख़्सत होकर आगे जाकर गिर पड़ा। गर्दन टूट गई और वहीं मर गया। इस पर आपने फ़रमाया, अबूहनीफ़ा के सब्र ने एक आदमी की जान ले ली, सुब्हानअल्लाह।

हज़रत अक़्दस थानवी रह० की बर्दाश्त

हज़रत अक़्दस थानवी रह० एक जगह तक़रीर करने के लिए

तशरीफ़ ले गए। वहाँ स्टेज पर उन्हें एक चिट मिली। उस पर लिखा था, "अशरफ़ अली आप काफ़िर हैं, हराम की औलाद हैं और ज़रा संभलकर बात करना।" आपने यह पढ़कर बहुत मुहब्बत से जवाब दिया, भाई यह पर्ची आई है। सारे मजमे को पढ़कर सुनाई और फिर कहा, अगर में काफ़िर हूँ तो लो अब कलिमा पढ़ लेता हूँ, "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसलूल्लाह" और जो दूसरी तोहतम है उसका जवाब यह है कि इत्तिफ़ाक़ से इस मजमे में मेरे वालिद के निकाह के गवाह मौजूद हैं, उनसे पूछ लें और तीसरी बात ज़रा संभलकर बात करने की है तो न मैं चंदा मांगने आया हूँ न रिश्ता मांगने आया हूँ, मैं संभलकर बात क्यों करूं। मैं तो हक़ बयान करूंगा।

अल्लाह के लिए शागिर्द को सज़ा देना

हज़रत मौलाना याक़ूब साहब नानौतवी रह० एक शागिर्द को मार रहे थे। उसने ज़ोर से कहा, अल्लाह के लिए मुझे माफ़ कर दें। आपने एक और मारी और फ़रमाया, अल्लाह के बंदे! मैं तुझे अल्लाह के लिए ही तो मार रहा हूँ। यह गुस्सा हक़ीक़त में आग होती है। तभी तो चेहरा और आँखें सुर्ख़ हो जाती हैं।

शागिर्द को सज़ा देने की शरई हैसियत

कभी कभी गुस्सा बहुत ही नुक़सान का बाइस बन जाता है। शागिर्द को समझाने की ख़ातिर शरिअत ने इजाज़त दी है कि उस्ताद उसे तीन थप्पड़ या मुक्के लगा ले। वह भी चेहरे पर नहीं बल्कि पीठ पर। लेकिन हमने देखा है कि उस्ताद साहब का गुस्सा उनके क़ाबू में नहीं रहता। मदरसों में डंडे रखे होते हैं। और बच्चे को इंतिक़ामी तौर पर क़साई की तरह मारा जाता है और पिटाई

तर्बियत के लिए नहीं होती। वे उनको इसलिए मारते हैं कि उनका अपना गुस्सा क़ाबू में नहीं होता। उस बच्चे का क्या क़सूर, मंज़िल सुनाते वक़्त ग़लती हो गई। ऐन उसी वक़्त वह मंज़िल उस्ताद से सुनी जाए तो एक की बजाए दो ग़लतियाँ निकल आएंगी।

जब देखें कि बच्चा जानबूझ कर वक़्त ज़ाए कर रहा है या बदनीयती कर रहा है तो अब इस्लाहे अहवाल के लिए आप उसे सज़ा दे सकते हैं। शरिअत ने इस बात की इजाज़त दी है। अगर हम हुदूदे शरिअत से बढ़कर सज़ा देंगे तो क़यामत के दिन जवाबदेह होना पड़ेगा।

एक क़ारी साहब फ़रमाने लगे, हज़रत पहले अच्छे बच्चे थे कि जब आँख दिखाते थे वह मान लेते थे। फिर वह वक़्त आया कि मुक्का लगाते थे तो मान लेते थे और आज डंडों से मारते हैं और फिर भी नहीं मानते। हज़रत! क्या करें कि डंडों से भी मारते हैं और फिर भी नहीं मानते। मैंने कहा, "क़ारी साहब! अब तो सिर्फ़ एक ही तरीक़ा रह गया है कि जिसकी ग़लती निकले उसे गोली मार दिया करो।"

हज़रत अक़्दस थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि अगर उस्ताद को किसी तालिब इल्म पर गुस्सा आए तो उस्ताद को चाहिए कि वह उस वक़्त गुस्से को पी जाए और बाद में बनावटी गुस्सा बनाकर मारे। जब बनावटी गुस्से में मारेगा तो ज़्यादा नहीं मारेगा बल्कि थोड़ा मारेगा। याद रखें कि जब इंसान के अंदर गुस्सा आ जाता है तो फिर उसके अंदर इंसानियत नहीं बल्कि हैवानियत आ जाती है।

यूरोप के किसी स्कूल और कॉलेज में कोई उस्ताद किसी बच्चे को हाथ नहीं लगा सकता हत्ताकि माँ बाप भी हाथ नहीं लगा

सकते। अब सवाल यह पैदा होता है कि वहाँ बच्चे कैसे पढ़ते हैं? वहाँ उस्ताद समझाते हैं। एक उसूल याद रखें कि जब उस्ताद ने मारने के लिए हाथ उठा लिया तो यह इस बात की अलामत है कि उसने अपनी हार तसलीम कर ली कि मैं ज़बानी तौर पर बच्चे को नहीं समझा सकता। गुस्से को पीने के लिए एक बेहतरीन उसूल यह है कि बंदा गुस्से के वक़्त यह सोचे कि जितना अख़्तियार मुझे इस बंदे पर है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को उससे ज़्यादा अख़्तियार मेरे ऊपर है। अगर मैं इस पर बेजा गुस्सा करूंगा तो इसके जवाब में अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मुझ पर गुस्सा किया तो मेरा क्या बनेगा।

अफ़्वु व दरगुज़र के फ़ज़ाइल

- एक रिवायत में है, "जो शख़्स गुस्सा निकाल सकता हो मगर उस गुस्से को दबा जाए तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन सारी मख़्लूक़ के सामने बुलाकर फ़रमाएंगे कि तुम जितनी हूरे ऐना लेना चाहते हो उतनी तुम्हें दी जाती हैं।
  (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)
- एक मर्तबा अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम पर "वही" भेजी कि ऐ मूसा! क्या आपको ऐसा अमल बताऊँ कि जिसके करने से जिन चीज़ों पर सूरज और चाँद तुलू होते हैं सब चीज़ें आपके लिए मग़फ़िरत की दुआ करें? उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! वह कौनसा अमल है, ज़रूर इर्शाद फ़रमाएं। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया, "अगर मख़्लूक़ से पहुँचने वाली ईज़ा पर सब्र करोगे तो फिर सब चीज़ें तुम्हारी मग़फ़िरत की दुआ करेंगी।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का अफ़ुव व दरगुज़र

मुफ़स्सिरीन ने एक नुक्ता लिखा है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जब भाईयों से मिले तो उन्होंने कैद से निकलने का तो अल्लाह तआला के हुज़ूर शुक्रिया अदा किया लेकिन कुँए से निकलते हुए शुक्र अदा नहीं किया। इसकी क्या वजह थी? उलमा ने लिखा है कि उसकी वजह यह थी कि उनको कुँए में उनके भाईयों ने डाला था और वह अपने भाईयों को माफ़ कर चुके थे। चूँकि माफ़ करना इसको कहते हैं कि जब इंसान इशारे और किनाए में भी शिकवा न करे। लिहाज़ा अगर वह कुँए से निकलते हुए अल्लाह का शुक्र अदा करते तो शुक्र अदा हो रहा होता लेकिन हकीकत में भाईयों का शिकवा हो रहा होता। इसलिए उन्होंने कुँए से निकलते हुए अल्लाह तआला का शुक्र अदा नहीं किया।

हौज़े कौसर से महरूमी

एक हदीस पाक में आया है कि जिसके पास आकर कोई इंसान माज़रत करे चाहे वह इंसान हक़ पर हो या बातिल पर और फिर दूसरा बंदा उसकी माज़रत को क़बूल न करे, उस इंसान को हौज़े कौसर पर जाना नसीब नहीं होगा।

चारदांग आलम में ख़ुशख़ुल्क़ी का ऐलान

एक शख़्स ने नबी अलैहिस्सलाम के सामने से आकर सवाल किया, ऐ अल्लाह के नबी! सबसे अफ़ज़ल अमल कौनसा है? आपने इर्शाद फ़रमाया, ख़ुश ख़ुल्क़ी। फिर वह दाईं तरफ़ से आकर कहने लगा, ऐ अल्लाह के नबी! सबसे अफ़ज़ल अमल कौन सा है? आपने इर्शाद फ़रमाया, ख़ुशख़ुल्क़ी। फिर वह बाईं तरफ़ से

आया और कहने लगा, ऐ अल्लाह के नबी! सबसे अफ़ज़ल अमल कौन सा है? आपने इर्शाद फ़रमाया, खुशखुलक़ी। फिर वह सहाबी आपकी पीठ की तरफ़ से आए और पूछा, ऐ अल्लाह के नबी! सबेस अफ़ज़ल अमल कौन सा है? आपने उसकी तरफ़ फिर और फ़रमाया :

"तुम्हें क्या हो गया, तुम्हें समझ नहीं आ रहा। वह अमल खुशखुल्क़ी है और खुशखुल्क़ी इसको कहते हैं कि दूसरों पर ग़ुस्सा न किया कर।"

उन सहाबी ने चारों सिम्तों से आकर सवाल किया और अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चारों सिम्तों से जवाब दिया। इसमें यह हिकमत थी कि अल्लाह के महबूब का यह पैग़ाम दुनिया की हर सिम्त में पहुँच जाए कि सबसे अफ़ज़ल अमल खुशखुल्क़ी है।

सिद्दीक़ए काएनात को सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्यार भरी नसीहत

सैय्यदा आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत फ़रमाती हैं कि जब कभी अज़वाजे मुताहरात की बातों की वजह से मेरे अंदर हमीयत आ जाती और ग़ुस्सा आ जाता था तो नबी अलैहिस्सलाम मेरा कान पकड़कर उसको प्यार से आहिस्ता आहिस्ता मलते और कभी मेरी नाक पर उंगली रखकर यों फ़रमाते :

"ऐ मुन्नी सी आएशा! तू यह दुआ पढ़ कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रब! मेरे गुनाह बख़्श दीजिए। मेरे दिल का ग़ुस्सा निकाल दीजिए और बहकाने वाले फ़ितनों से मुझे बचा लीजिए।

जन्नत में पहुँचाने वाला अमल

तबरानी शरीफ़ की रिवायत है कि एक सहाबी ने अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए जिसके करने से मुझे जन्नत मिल जाए। नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"गुस्सा न किया कर। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इस अमल की वजह से तुझे जन्नत अता फ़रमा देंगे।

एक अफ़सर का सबक़ आमोज़ वाक़िआ

एक आदमी गर्वमेंट के किसी महकमे में अफ़सर था। उसने अपनी ज़िंदगी की दास्तान में अपना एक बहुत ही दिलचस्प वाक़िआ लिखा है। मैं आपको वाक़िआ सुना देता हूँ।

वह रेस्ट हाउस में ठहरा हुआ था। उसे एक बार किसी सरकारी दौरे पर एक शहर में से दूसरे शहर जाना था। उसे रेलगाड़ी के ज़रिए जाना था। वह स्टेशन पहुँचा और उसने टिकट ख़रीदा। गाड़ी जिस लाइन पर खड़ी थी उसे वहाँ पहुँचना था। उसने सामान उठाने के लिए क़ुली को बुलाया और उसे कहा, कि भई! मेरा सामान फ़लाँ प्लेटफार्म पर पहुँचा दो। उसने कहा, जी बहुत अच्छा और सामाना उठा लिया। क्योंकि वक़्त कम था। इसलिए वह तेज़ी से प्लेटफार्म की तरफ़ चला। पीछे से क़ुली भी सामान उठाकर भागा। वह आदमी तेज़-तेज़ चलकर प्लेटफार्म पर बोगी के दरवाज़े पर जल्दी से पहुँच गया लेकिन भीड़ ज़्यादा होने की वजह से क़ुली वक़्त पर न पहुँच सका। उस वक़्त उसको बहुत गुस्सा आया। यहाँ तक कि गार्ड ने सीटी दे दी और गाड़ी चलना शुरू हो गई। वह उस पर चढ़ नहीं सकता था क्योंकि उसका

सामान पीछे था। आख़िर उसे गाड़ी छोड़नी पड़ी।

जब वह गाड़ी से रह गया तो उसे बहुत अफ़सोस हुआ कि मेरा प्रोग्राम मिस हो गया। जब गाड़ी चल दी और मुसाफ़िरों को अलविदा कहने वाले लोग भी चले गए तो उस वक़्त वह क़ुली पसीने से तर सामान उठाए हुए उसके पास आया। उसके चेहरे पर बड़ी नदामत और शर्मिन्दगी थी। वह कहने लगा, साहब मुझे माफ़ कर दें, मैंने यहाँ पहुँचने की बहुत कोशिश की लेकिन रास्ते में इतनी भीड़ थी कि रास्ता नहीं मिल रहा था। उसके दिल में ख़्याल आया कि अब गाड़ी तो जा चुकी है। अब मैं अगर इस बेचारे पर गुस्सा करूंगा तो मुझे क्या फ़ायदा होगा? चुनाँचे उसने उसे प्यार से कहा, कोई बात नहीं, अल्लाह को ऐसा ही मंज़ूर था। चलो कल चला जाऊँगा। जैसे ही उसने यह कहा, उस क़ुली के चेहरे पर सकून आ गया और कहने लगा, अच्छा मैं आपका सामान आपकी गाड़ी में पहुँचा देता हूँ। चुनाँचे उसने उसका सामान गाड़ी तक पहुँचा दिया। उसने वह रात वहीं गुज़ारी। अगले दिन वह वक़्त से कुछ ज़्यादा पहले स्टेशन पर पहुँच गया। जब वह पहुँचा तो उसने देखा कि वही क़ुली पहले से उसका इंतिज़ार कर रहा था। जैसे ही उसने देखा तो उससे ऐसे गर्मजोशी से मिला जैसे कोई बड़ा अज़ीज़ होता है। उसके बाद उस क़ुली ने उसका सामान सर पर उठा लिया और कहने लगा, साहब! आज तो अभी रश नहीं है लिहाज़ा आज तो पहुँचा ही दूंगा। जब क़ुली ने उसका सामान प्लेटफार्म पर पहुँचा दिया तो उसने उसे पैसे देने चाहे तो वह कहने लगा, नहीं साहब! मैं पैसे नहीं लूंगा क्योंकि मेरी ग़लती की वजह से आपकी ट्रेन मिस हुई थी। उसने पैसे देने की बड़ी कोशिश की लेकिन क़ुली ने मिन्नत समाजत करनी शुरू कर दी कि अगर आप मुझे पैसे नहीं देंगे तो मैं ज़्यादा ख़ुश हूंगा। आख़िर उसने पैसे नहीं लिए।

क़ुली ने उसे गाड़ी में बिठाया और बोगी के बाहर उसके साथ वाली खिड़की खोलकर खड़ा हो गया और गाड़ी के चलने के वक़्त तक वह उसे बड़ी एहसानमंदों वाली नज़रों से देखता रहा और जब गाड़ी चलने लगी तो उस क़ुली ने उसे ऐसी मुहब्बत से अल्विदा किया कि उसे पूरी ज़िंदगी में कभी किसी रिश्तेदार ने इतनी गर्मजोशी के साथ अल्विदा नहीं किया था।

उसने इस वाक़िए के बाद लिखा कि लेट होने का जो ग़म था वह तो रात को ही ख़त्म हो गया था लेकिन उसकी मुहब्बत भरी अलविदाई नज़र आज बीस साल गुज़रने के बाद भी मेरे दिल में ठंडक पैदा कर देती है। अब देखिए कि वह बंदा दो गालियाँ देकर अपने दिल का ग़ुस्सा ठंडा भी कर सकता था और वह सुनकर घर चला जाता लेकिन उसने माफ़ कर दिया। और उस माफ़ करने का नतीजा निकला कि उसने एहसान माना। उस दिन भी उसका सामान पहुँचाया और अगले दिन भी सामान पहुँचाया यहाँ तक कि जब तक वह रवाना न हुआ और प्लेटफ़ार्म पर ही खड़ा रहा। उसके लिए दुआएं भी करता रहा और उसे मुहब्बत भरी नज़रों से अलविदा भी किया। जी हाँ! जब इंसान दूसरों की ग़ल्तियों को माफ़ कर देता है तो उनकी ग़ल्तियों की तकलीफ़ तो याद नहीं होती माफ़ कर देने का मज़ा उसे ज़िंदगी भर नसीब होता रहता है। इसलिए जब कभी कोई माफ़ी मांगने आए तो सबसे पहले अपनी आख़िरत के बारे में सोचें कि अगर मैंने आज उसको माफ़ न किया तो फिर मैं क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से किस मुँह से माफ़ी मांगूगा।

ज़ुन्नून मिस्री रह० की शफ़क़त भरी दुआ

ज़ुन्नून मिसरी रह० एक मर्तबा किश्ती में सफ़र कर रहे थे।

दरिया में एक और किश्ती भी चल रही थी। उसमें नौजवान मर्द, औरतें और लड़कियाँ सफ़र कर रही थीं। वह लोग कुछ खा पी रहे थे और हंसी मज़ाक़ में क़हक़हे भी लगा रहे थे। लगता यूँ था कि गंदे लोग थे और उन्होंने गंदी महफ़िल लगाई हुई थी।

जब हज़रत रह० की किश्ती के लोगों ने देखा तो उन्हें बड़ा गुस्सा आया और उनमें से एक आदमी ने ज़ुन्नून मिस्री रह० के पास आया और अर्ज़ किया, हज़रत देखिए! इनको खुदा का ख़ौफ़ नहीं है। ये दरिया के पानी के अंदर भी इस क़िस्म की गंदी हरकतें करने के लिए आए हुए हैं। पी पिला रहे हैं और क़हक़हे लगा रहे हैं। लिहाज़ा आप बद्दुआ कर दें कि अल्लाह तआला उनकी किश्ती को ग़र्क़ कर दे। आप पहले तो ख़ामोश रहे लेकिन जब लोगों ने बार बार कहा तो आपने उस किश्ती वालों को देखा और हाथ उठाकर यूँ दुआ की ऐ अल्लाह! जैसे आपने इनको दुनिया की खुशियाँ अता की हैं इसी तरह इनको आख़िरत की खुशियाँ भी अता फ़रमा दें। जब उन्होंने दुआ मांगी तो अल्लाह तआला ने उस किश्ती वालों को तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी, अल्लाहु अकबर।

इब्राहीम बिन अदहम रह० का अफ़ुव व दरगुज़र

एक बार इब्राहीम बिन अदहम रह० ने सर के बाल उतरवा दिए। वह किश्ती में सवार होकर जा रहे थे। उस वक़्त किश्तियाँ इतनी बड़ी होती थीं कि उनमें दो तीन सौ आदमी आसानी से बैठ सकते थे। आप किश्ती में ज़िक्र व अज़्कार में मशग़ूल हो गए। जब छोटे बच्चों ने चमकता हुआ सर देखा तो उनको अच्छा लगा। छोटों को क्या वह तो बड़ों को भी अच्छी लगती है। सर के बाल उतरवाएं तो उस पर हाथ फेरने का अपना मज़ा होता है। एक

17

बच्चे ने पास आकर उनके सर के ऊपर हाथ फेरा तो उसको बड़ा मज़ा आया। दूसरे बच्चे ने भी हाथ फेरा तो उसे भी बड़ा मज़ा आया। उसने तीसरे को यहाँ तक कि बच्चे बारी-बारी आते और सर पर हाथ फेरकर जाते रहे। उनमें से एक बच्चा कुछ ज़्यादा ही शरारती था। जब वह आया तो उसे शरारत सूझी और उसने हाथ फेरने के बाद एक थप्पड़ सा लगा दिया। उसके बाद दूसरे बच्चे ने भी थप्पड़ लगा दिया। उसके बाद तीसरे ने भी लगा दिया। बच्चे उनको थप्पड़ लगाते रहे और बड़े उनको देखकर हंसते रहे। किश्ती के सब आदमी उनका मज़ाक़ उड़ाने लगे। यहाँ तक कि अजीब बदतमीज़ी का तूफ़ान बर्पा हुआ। जब उन्होंने अल्लाह के एक वली को इस तरह बहुत ज़्यादा ईज़ा पहुँचाई तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ग़ैरत भी जोश में आ गई। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको इल्हाम फ़रमाया। ऐ इब्राहीम बिन अदहम! इन्होंने तूफ़ाने बदतमीज़ी बर्पा करने में हद कर दी है अगर आप इस वक़्त दुआ करें तो मैं किश्ती को उलट दूँ और सब ग़र्क़ हो जाएं। जैसे ही इल्हाम हुआ हज़रत ने हाथ उठाकर यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! आप इन सबके दिलों कि किश्ती उलट दीजिए और इनको नेक बना दीजिए। चुनाँचे दुआ क़ुबूल हुई और किश्ती में जितने थे सब ने मरने से पहले विलायत का मुक़ाम हासिल किया।

रहम की तलक़ीन

हदीस पाक में आया है :

﴿اِرْحَمُوْا مَنْ فِي الْاَرْضِ يَرْحَمْكُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ﴾

तुम ज़मीन वालों पर रहम करो आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।

अगर हम दुनिया में अपने गुस्से पूरे करेंगे तो फिर क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के गुस्से को बर्दाश्त करने के लिए तैयार हो जाएं।

सिलसिलए नक़्शबंदिया की बरकत से गुस्से का ख़ात्मा

हमारे अकाबिर ने फ़रमाया है कि हमारे सिलसिलए नक़्शबंदिया में दूसरा सबक़ है "लतीफ़ा रूह।" जब सालिक उस सबक़ को अच्छी तरह कर लेता है तो अल्लाह तआला उसे गुस्से से निजात दिला देते हैं। इसका तजरिबा भी किया गया है।

इंडिया में एक आलिम थे। उन्होंने एक बहुत बड़े मदरसे में बीस साल मुस्लिम शरीफ़ पढ़ाई। बड़े नुमायाँ उस्तादों में से हैं। मगर उनका गुस्सा भी मशहूर था। जब सिलसिलए आलिया नक़्शबंदिया में दाख़िल हुए तो कहने लगे, हज़रत! मेरी यह हालत है कि ज़रा सी बात पर गुस्से में आ जाता हूँ और यह गुस्सा मेरे क़ाबू में नहीं रहता। लोग मेरे इल्म की वजह से मेरा बड़ा एहतिराम करते हैं मगर मैं अपनी इस बातिनी बीमारी से बहुत तंग हूँ। उन्हें यह अर्ज़ किया गया कि आप यह सबक़ कर लें। नुस्ख़ा मौजूद है। उन्होंने तक़रीबन छः महीने यह सबक़ किया। अल्लाह तआला ने उनकी तबियत ऐसी बदली की एक दिन आए और अर्ज़ करने लगे कि मेरी बीवी ने पैग़ाम भिजवाया है कि आप मुझे ग़ाएबाना बैअत कर लें। फिर कहने लगे पता है वह क्यों बैअत होना चाहती है? मैंने पूछा, क्यों? कहने लगे कि उसने मेरे साथ ज़िंदगी के इतने साल गुज़ारे हैं। मुझे कहती थी, आप चार पाँच माह से बदल चुके हैं, इसकी क्या वजह है? मैंने उसको बताया कि मैं बैअत हो चुका हूँ। जब उसने बार-बार पूछा तो फिर मैंने कहा कि अब मैंने बैअत कर ली है और मेरे अंदर अब

वह गुस्सा नहीं है जो पहले था। कहने लगे कि जब उसने सुना तो कहने लगी कि मुझे यह निस्बत सच्ची लगती है, लिहाज़ा मैं भी इस निस्बत से फ़ायदा उठाना चाहती हूँ।

जब इंसान यह सबक़ करेगा तो आप के घरों में भी दीन ज़िंदा होगा। आज तो यह मामला है कि खुद तो सूफ़ी साफ़ी बने फिरते हैं और घरवालों को पक्का बेदीन बना रखा है। ऐसे ही लोगों के बारे में कहा जाता है, "ऊपर से ला इलाहा अंदर से काली बला।"

गुस्से को कंट्रोल करने का तरीक़ा

गुस्से को कंट्रोल करने के मुख़्तलिफ़ तरीक़े हैं :

- सबसे पहला तरीक़ा यह है कि जब आदमी को गुस्सा आए तो वह ला हवला वला क़ुव्वता इल्लाह बिल्लाहि पढ़े। उसकी बरकत से शैतान जो रगों में ख़ून की तरह दौड़ रहा होता है और गुस्से की हालत में बंदे के साथ गेंद की तरह खेल रहा होता है वह भाग जाता है और गुस्सा ख़त्म हो जाता है।
- अगर इससे भी गुस्सा ख़त्म न हो तो ﴿اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ﴾ अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम के अल्फ़ाज़ से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की पनाह मांगे। इस अऊज़ुबिल्लाह के पढ़ने से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त गुस्से से पनाह अता फ़रमा देंगे।
- अगर इससे भी गुस्सा ख़त्म न हो तो उसे चाहिए कि वह अपनी पोज़ीशन बदल ले। मसलन लेटा हुआ था तो उठकर बैठ जाए। बैठा था तो खड़ा हो जाए। खड़ा था तो दो क़दम चलकर अपनी जगह बदल ले। जगह बदलने से अल्लाह

रब्बुलइज़्ज़त उसके गुस्से को ठंडा फ़रमा देंगे।

- अगर किसी का गुस्सा इससे भी ठंडा न हो तो उसे चाहिए कि वह ठंडे पानी के साथ वुज़ू कर ले। वुज़ू की बरकत से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसके गुस्से को ख़त्म फ़रमा देंगे।
- अगर वुज़ू करने से भी गुस्सा दूर न हो तो वह दो रकअत नमाज़ पढ़ ले और सज्दे की हालत में सोचे की मैं सज्दे में पड़ा हूँ और अल्लाह का एक आजिज़ बंदा हूँ। अगर आज मैं किसी की ग़लती को माफ़ नहीं करूंगा तो कल अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़यामत के दिन मेरी ग़लतियों को कैसे माफ़ करेंगे। मशाइख़ ने फ़रमाया है कि जब सज्दे में जाकर अपनी आजिज़ी का तसव्वुर करेंगे तो गुस्सा बिल्कुल ठंडा हो जाएगा।
- अगर इससे भी इंसान का गुस्सा ठंडा न हो तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्ह फ़रमाया करते थे क इसका तरीक़ा यह है कि वह कुछ पानी लेकर अपनी नाक में डाले। इससे गुस्सा जल्दी ठंडा हो जाएगा।
- अगर इससे भी इंसान का गुस्सा ठंडा न हो तो फिर वही दुआ मांगे जो सैय्यदा आएशा सिद्दीक़ा को नबी अलैहिस्सलाम ने फरमाई थी। वह दुआ यह थी :

  "ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रब! मेरे गुनाह बख़्श दीजिए। मेरे दिल का गुस्सा दूर कर दीजिए और बहकाने वाले फ़ितनों से मुझे बचा लीजिए।
- और अगर इससे भी गुस्सा ठंडा न हो तो आख़िरी तरीक़ा यह है कि चंद मर्तबा नबी अलैहिस्सलाम पर दरूद शरीफ़ पढ़ लें। यह तयशुदा बात है कि चंद मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़ने से

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त गुस्से से निजात अता फ़रमा देते हैं। यही वजह है कि अरब में अगर दो बंदे झगड़ा शुरू कर दें तो अरबी लोग फ़ौरन कहते हैं ﴿صلوا على محمد صلوا على محمد﴾ (सल्लू अला मुहम्मद! सल्लू अला मुहम्मद)।

आप इन तरीक़ों से गुस्से को कंट्रोल कर लिया करें और दूसरों को जल्दी माफ़ कर दिया करें ताकि क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें भी माफ़ फ़रमा दें।

بسم الله الرحمن الرحيم

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِىْ نُفُوْسِكُمْ ط اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا

दुआओं की रात

यह बयान 15 शाबान 1423 हि० मुताबिक़ 20 अक्टूबर 2002 ई० नक़्शबंदी सालाना इज्तिमा के मौक़े पर जामा मस्जिद मदीना झंग में बाद इशा हुआ। यह शबे बरात थी और हाज़िरीन में सालिकीन और आम लोगों की बड़ी तादाद मौजूद थी।

इक़्तिबास

उलमा ने लिखा है कि चार रातों में अल्लाह तआला ख़ैर के दरिया बहा देते हैं :

1. लैलातुलक़द्र में,
2. शबे अरफ़ा (अरफ़ात की रात) में,
3. लैलतुल बरात (शबे बरात) में,
4. लैलतुल जाएज़ा (ईदुल फ़ितर की रात) में।

शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० ने लिखा है कि जिस तरह इंसानों की ईदें होती हैं इसी तरह शबे बरात फ़रिश्तों की ईद है।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी
मुजद्दिददी मद्देज़िल्लहु

दुआओं की रात

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۝

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ط اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ

غَفُوْرًا۝ (بنی اسرائیل :۲۵)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ۝ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ۝

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۝

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

रजब शाबान और रमज़ान के फ़ज़ाइल

कुछ अवक़ात, कुछ मक़ामात और कुछ आदमी ऐसे होते हैं कि जिनकी मौजूदगी में अल्लाह तआला रब्बुलइज़्ज़त के हाँ दुआएं क़बूल होती है। इन वक़्तों में से आज की रात (शबे बराअत) भी क़ुबूलियत की रात है। अहादीस में इसके बहुत से फ़ज़ाइल वारिद हुए हैं। रजब, शाबान और रमज़ानमुल मुबारक तीनों महीने इकठ्ठे आते हैं। अल्लाह तआला की इन महीनों की बड़ी अहमियत है।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने रजब को मैराज की रात के ज़रिए फ़ज़ीलत बख़्शी और रमज़ानुल मुबारक को लैलतुल क़द्र के ज़रिए

इज़्ज़त अता फ़रमाई। इन दोनों महीनों के दर्मियान शाबान का महीना आता है। इसलिए यह करीमुत्तरफ़ैन महीना कहलाता है। हदीस पाक में आया है कि जब नबी अलैहिस्सलाम रजब का चाँद देखते तो यह दुआ मांगते थे :

﴿اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِىْ رَجَبٍ وَّ شَعْبَانَ وَبَلِّغْنَا رَمَضَانَ﴾

ऐ अल्लाह! हमारे लिए रजब और शाबान में बरकत अता फ़रमा और हमें रमज़ान तक पहुँचा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि रजब का महीना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का महीना है। क्यों? इसलिए कि आमतौर पर इस महीने में मालदार लोग अपने माल की ज़कात निकालते हैं और ग़रीबों का ख़्याल करते हैं। फिर इर्शाद फ़रमाया कि शाबान का महीना मेरा महीना है। और फिर इर्शाद फ़रमाया कि रमज़ान का महीना मेरी गुनाहगार उम्मत का महीना है।

बाज़ बुज़ुर्गों ने लिखा है कि रजब का महीना बीज डालने का महीना है। शाबान का महीना आबपाशी (सींचने) का महीना है और रमज़ानुल मुबारक का महीना नेकियों के फल काटने का महीना है। या यूँ समझिए कि रजब का महीना पत्ते निकलने का महीना है। शाबान का महीना फल निकलने का महीना है और रमज़ान का महीना नेकियों के फल काटने का महीना है।

अगर रजब को हवा की मानिन्द समझा जाए तो शाबान का महीना बादल की मानिन्द है और रमज़ानुल मुबारक रहमतों की बारिश की मानिन्द है।

रजब का महीने में इंसान के आमाल सात गुना बढ़ते हैं,

शाबान के महीने में सात सौ गुना और रमज़ानुल मुबारक के महीने में एक हज़ार गुना हो जाते हैं।

रजब के महीने को दूसरे महीनों पर वह फ़ज़ीलत हासिल है जो क़ुरआन मजीद को बक़िया आसमानी किताबों पर। शाबान के महीने को दूसरे महीनों पर वह फ़ज़ीलत हासिल है जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बक़िया अंबिया किराम पर और रमज़ानुल मुबारक के महीने को बाक़ी महीनों पर वह फ़ज़ीलत हासिल है जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को अपनी मख़्लूक़ पर।

रजब का महीना गुनाहगारों की मग़फ़िरत का महीना, शाबान का महीना शफ़ाअत का महीना और रमज़ानुल मुबारक का महीना नेकियों के बढ़ने का महीना है।

रहमतों की इब्तिदा

इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़सानी रह० फ़रमाते हैं कि रमज़ानुल मुबारक को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के कलाम के साथ खुसूसी मुनासबत हासिल है। इसलिए कि जितनी भी आसमानी किताबें उतरीं वे सब की सब रमज़ानुल मुबारक में उतरीं। इस मुबारक महीने की बरकतों की इब्तिदा पंद्रह शाबन की रात से हो जाती है। वह इसकी मिसाल इस तरह देते थे कि सूरज के निकलने का वक़्त तो बहुत देर से होता है। उससे दो घंटे पहले तुलू सहर हो जाती है। वक़्त के साथ-साथ रोशनी बढ़ती चली जाती है हत्ताकि सूरज निकलने से चंद मिनट पहले ऐसी रोशनी होती है जैसे सूरज तुलू हो चुका हो। कभी-कभी लोगों को ग़लतफ़हमी हो जाती है कि सूरज निकला है या नहीं। वह फ़रमाते हैं पंद्रह शाबान की रात रहमतों भरे इस महीने के लिए तुलूए सहर की मानिन्द है। फिर [illegible] दिन में यह नूर बढ़ता रहता है

हत्ताकि रमज़ानुल मुबारक से चंद दिन पहले ऐसी बरकतें नाज़िल होती हैं जैसा कि रमज़ानुल मुबारक में बरकतें नाज़िल होती हैं। फिर रमज़ानुल मुबारक की पहली तारीख़ को रहमतों का सूरज तुलू हो जाता है। गोया आज की रात ख़ुसूसी बरकतों वाले महीने की रहमतों की इब्तिदा हो गई है।

बजट बनने की रात

उलमा ने इस रात को बजट की रात कहा है। जैसे हमारे मुल्कों में बजट बनता है और आने वाले साल के फ़ैसले किए जाते हैं कि कहाँ क्या ख़र्च किया जाएगा और क्या क्या काम किए जाएंगे। इसी तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त पंद्रह शाबान की रात फ़रिश्तों को हुक्म देते हैं कि आइन्दा साल जो वाक़िआत होने वाले हैं उनकी फ़हरिस्तें तैयार कर लें। किसको सेहत मिलनी है, किसने बीमार होना है, किसने ज़िंदा रहना है किसने फ़ौत होना है। किसका रिज़्क़ तंग करना है, किसका रिज़्क़ कुशादा करना है। किसको इज़्ज़त मिलेगी, किसको ज़िल्लत मिलेगी। किसको ख़ुशियाँ मिलेंगी, किसको ग़म मिलेंगे। किसको ईमान मिलेगा और कौन ईमान से महरूम कर दिया जाएगा। इन तमाम बातों के फ़ैसले आज की रात होते हैं। सत्ताइस रमज़ानुल मुबारक को ये फ़हरिस्तें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्म से फ़रिश्तों के हवाले कर दी जाती हैं। गोया अमल दरामद के लिए फ़हरिस्तें हर डिपार्टमेन्ट के हवाले कर दी जाती हैं।

पंद्रह शाबान का रोज़ा

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि इस रात में क़िस्मत के फ़ैसले होते हैं। मेरा जी चाहता है कि जब

ये फ़ैसले हों तो मैं रोज़े की हालत में हूँ। चुनाँचे अल्लाह के महबूब पंद्रह शाबान का रोज़ा रखा करते थे। इस हदीस से साबित हुआ कि पंद्रह शाबान का रोज़ा रखना सुन्नत है।

एक हदीस पाक के रावी अबूउमामा बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। वे अपनी क़ौम के सरदारों में से थे। जब वह इस्लाम क़बूल करने के लिए चलकर आए तो अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल में इलक़ा फ़रमाया कि यह अपनी क़ौम का बड़ा करीम आदमी आ रहा है इसकी इज़्ज़त करें। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम उनके इस्तिक़बाल के लिए खड़े हुए और उनके लिए अपनी चादर मुबारक बिछा दी और फ़रमाया कि इस चादर पर चलकर आओ लेकिन वह इतने अदब वाले थे कि उन्होंने अपने हाथों से चादर को उठा दिया और कहने लगे कि मुझे सजता नहीं कि मैं आपकी चादर मुबारक के ऊपर पाँव रखकर आऊँ। जब उन्होंने चादर को उठा लिया तो नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿اَبُوْ اُمَامَةَ كَنْزُ الْاَدَبِ وَالصِّيَانَةِ.﴾

अबू उमामा अदब और सियानत का ख़ज़ाना हैं।

वह अबूउमामा रिवायत करते हैं कि नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿مَنْ صَامَ يَوْمًا مِّنْ شَعْبَانَ فُتِحَتْ لَهُ اَبْوَابُ الْجِنَانِ وَ غُلِّقَتْ عَلَيْهِ اَبْوَابُ النِّيْرَانِ.﴾

जो आदमी शाबान में एक दिन रोज़ा रखता है अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत के दरवाज़े खोल देते हैं और जहन्नम की आग के दरवाज़े उस पर बंद फ़रमा देते हैं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि पंद्रह शाबान को क़याम करो और दिन को रोज़ा रखो। इस रात ग़ुरूबे आफ़ताब के बाद ही अल्लाह तआला आसमान पर जलवा अफ़रोज़ होते हैं और ऐलान करते हैं :

है कोई मग़फ़िरत चाहने वाला कि मैं उसकी मग़फ़िरत करूँ?

है कोई रिज़्क़ मांगने वाला कि मैं उसे रिज़्क़ अता करूँ?

है कोई मुसीबतज़दा कि मैं उसकी मुसीबत को दूर करूँ?

है कोई हाजत तलब करने वाला कि मैं उसकी हाजत रवाई करूँ?

जब अल्लाह तआला की तरफ़ से यों बख़्शिश के ऐलान होते हैं तो हमें भी चाहिए कि इस मौक़े से फ़ायदा उठाएं और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमतों को पाने की कोशिश करें।

क़ुबूलियते दुआ के असबाब

आज क़ुबूलियते दुआ के तमाम असबाब मौजूद हैं,

1. वक़्त भी क़ुबूलियत का है क्योंकि इस रात में दुआएं क़बूल होती है।

2. महफ़िल भी क़ुबूलियत की हैं। इस वक़्त बहुत से ऐसे उलमा व सुल्हा मौजूद हैं जो हदीस और तफ़्सीर पढ़ाने में अपना क़्त गुज़ारते हैं। लोगों को अल्लाह अल्लाह सिखाते हैं और अल्लाह के रास्ते में उनकी ज़िंदगियाँ गुज़रती हैं। यह ज़ाकिरीन की महफ़िल है। मालूम नहीं कि ये लोग कितनी दूर से यहाँ आए बैठे हैं। यह नेमत भी अल्लाह तआला ने हमें नसीब फ़रमा दी।

3. जगह भी क़ुबूलियत की है। यानी अल्लाह के घर (मस्जिद)

में बैठे हैं। अगर कोई दुनियादार के घर आकर बैठ जाए तो वह दुनियादार भी लिहाज़ कर लेता है। हम सब परवरदिगार के घर चलकर आए हैं तो क्या अल्लाह तआला लिहाज़ नहीं फ़रमाएंगे?

हम लोग सारा साल लोगों के सामने शिकवे करते फिरते हैं और अपनी परेशानियाँ सुनाते फिरते हैं। कुछ बेचारे तो आमिलों के पीछे भागते फिरते हैं और कई हाकिमों के दरवाज़े खटखटाते फिरते हैं। लेकिन जब धक्के खा खा कर कुछ भी नतीजा नहीं निकलता तो आख़िर में कहते हैं कि अल्लाह तो हमारी सुनता ही नहीं। (मअज़ल्लाह) आज सुनाने का वक़्त है। जब आज फ़ैसले हो रहे हैं और क़लम चल रहा है तो क्यों न हम परवरदिगार के सामने आज ही रो लें ताकि अल्लाह तआला हमारे बारे में ख़ैर का फ़ैसला फ़रमा दें।

सरापा सवाली बनकर दुआ मांगे

हमें चाहिए कि हम मांगने के तरीक़े से दुआ मांगें। कई मर्तबा इंसान दुआएं पढ़ता है, दुआएं मांगता नहीं है। यह याद रखिए कि दुआएं पढ़ना और बात है और दुआएं मांगना और बात है। दुआएं पढ़ना तो यह हुआ कि जल्दी जल्दी यह पढ़ दिया जाए

﴿ربنا اتنا فی الدنیا حسنة﴾ रब्बाना आतिना फ़िद्दुनिया हसनः...,

﴿ربنا ظلمنا انفسنا﴾, रब्बना ज़लमना अनफ़ुसना...,

﴿ربنا لا تزغ قلوبنا﴾ रब्बना ला तुज़िग़ क़ुलूबना...।

चुनाँचे दुआएं मांगने के बाद पूछें कि क्या मांगा तो कहते हैं कि जी मालूम नहीं कि क्या मांगा है। इसे दुआएं पढ़ना कहते हैं, दुआएं मांगना नहीं कहते। याद रखें कि दुआएं पढ़ने से क़बूल

नहीं होतीं बल्कि मांगने से क़बूल होती हैं। अब सवाल यह पैदा होता है कि दुआएं मांगना किसे कहते हैं? तो सुनिए कि दुआएं मांगना इसे कहते हैं कि मांगने वाला सर के बालों से लेकर पैरों के नाख़ुनों तक सरापा सवाल बन जाए। ज़रा चश्मे तसव्वुर से देखें कि जिस फ़कीर ने एक रुपया मांगना होता है वह कपड़े भी ऐसे पहनता है जैसे मांगने वाला, चलता भी ऐसे है जैसे परेशान हाल, वह हाथ भी ऐसे फैलाता है जैसे कोई फ़रियादी फैलाता है। वह आवाज़ भी दर्द भरी निकालता है। जिसने एक रुपया किसी इंसान से मांगना होता है अगर वह इस तरह फ़रियादी बनकर सवाल करता है तो जिसने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से अल्लाह तआला को मांगना हो तो सोचिए कि उसको कितना फ़रियादी बनकर सवाल करना होगा।

क्या हम इस तरह दुआएं मांगते हैं? जवाब मिलेगा नहीं। इसी लिए हमें क़ुबूलियते दुआ में देर नज़र आती है। अगर सही तरीक़े से दुआ मांगेगे तो परवरदिगार देने में देर नहीं करेंगे। आप ज़रा इस मिसाल पर ग़ौर करें कि कोई सख़ी आदमी दोस्तों की महफ़िल में बैठा हो और उस वक़्त कोई फ़कीर आकर उसके दोस्तों के सामने कहे कि मैंने इनसे एक रुपया मांगा था और इन्होंने मुझे नहीं दिया था। उसको कितना बुरा महसूस होगा कि मेरे सारे दोस्तों की महफ़िल में दावा कर रहा है कि मैंने मांगा था और मुझे नहीं दिया गया हालाँकि मैं इतना सख़ी हूँ। जब दुनिया का सख़ी अपने प्यारों के सामने यह बात सुनना गवारा नहीं करता तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़यामत के दिन अपने महबूब और दूसरे अंबिया किराम की मौजूदगी में यह कैसे पसन्द फ़रमाएंगे कि कोई यह कहे कि ऐ अल्लाह! मैंने मांगने के तरीक़े से मांगा था और

मुझे महरूम कर दिया गया था। यह उसकी शान से बईद है कि उस दाता के बारे में कोई यह कहे कि ऐ अल्लाह! मैंने मांगा था मुझे मिला नहीं।

दुआ मांगने से अल्लाह तआला खुश होते हैं

दुनियादार देते हैं तो उन्हें रंजिश होती है जबकि परवरदिगार का मामला और है। वह देते हैं तो उन्हें ख़ुशी होती है। हदीस पाक में आता है :

﴿مَنْ لَّمْ يَسْئَلِ اللّٰهَ يَغْضَبْ عَلَيْهِ﴾

जो शख़्स अल्लाह तआला से नहीं मांगता अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उससे नाराज़ हो जाते हैं।

गोया परवरदिगार आलम से जितना मांगेगें वह उतना ही हम से राज़ी होंगे। यह मांगने की रात है। लिहाज़ा ख़ूब दिल खोलकर मांगिएगा। इसलिए कि दुनियादार से तो एक दफ़ा मांगें तो वह दे देगा। दोबारा मांगे तो वह दे देगा। तीसरी, चौथी बार मांगे तो वह ज़रा त्योरी चढ़ाएगा। फिर मांगे तो आगे पीछे हो जाएगा। फिर मांगें तो ज़बान से साफ़ कह देगा कि मुझे परेशान न करें। हर वक़्त मांगने आ जाते हैं। दुनियादारों से अगर बार-बार मांगें तो वे नाराज़ हो जाते हैं जबकि अल्लाह तआला का मामला यह है कि बंदा एक दफ़ा मांगे तो अता कर देते हैं। दूसरी दफ़ा मांगे तो तब भी अता फ़रमा देते हैं बल्कि जो बंदा हर वक़्त अल्लाह से मांगे और हर चीज़ अल्लाह से मांगे, अल्लाह तआला उसे अपने औलिया में शामिल फ़रमा लेते हैं। वह फ़रमाते हैं कि यह मेरा वली है। मेरे सिवा किसी से मांगता ही नहीं। हर वक़्त मुझसे मांगता है और हर चीज़ मुझसे मांगता है।

ख़ैर का इरादा

हम खुशनसीब हैं कि रब्बेकरीम ने हमें ज़िंदगी में एक बार फिर ऐसी महफ़िल अता फ़रमा दी है। अगर अल्लाह तआला हमें बीमार कर देते तो हम अस्पताल में पड़े होते। अगर कोई एमरजन्सी हो जाती तो हम इधर-उधर भाग रहे होते। अल्लाह तआला ने तमाम हालात को अच्छा रखा और हमें सेहत व आफ़ियत के साथ यहाँ इकठ्ठे मिल बैठने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी। इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला का देने का इरादा होता है क्योंकि जब कोई सख़ी अपने दर पर मांगने वालों को बुलवाए तो उसका इरादा देने का होता है। उसको ख़ाली लौटाने का इरादा नहीं होता। अगर ख़ाली भेजना होता तो बुलाता ही क्यों? बुलाना इस बात की दलील है कि इरादा ख़ैर का है। अब हमने इस ख़ैर को मांगने के तरीक़े से मांगना है। अगर एक बंदा किसी को सामने मांगने के लिए हाथ फैलाए लेकिन चेहरा पुश्त की तरफ़ ले तो देने वाला उस बंदे को कुछ नहीं देगा। वह उल्टा उससे नाराज़ हो जाएगा कि तुमने तो मेरी बेइज़्ज़ती की है कि तुमने इधर हाथ फैलाया और चेहरा दूसरी तरफ़ मोड़ लिया। जिस तरह कोई फ़क़ीर हाथ फैलाए और अपना रुख़ मोड़ ले तो देने वाला नाराज़ हो जाता है। इसी तरह अगर कोई बंदा मांगने के लिए हाथ उठाए मगर उसका दिल ग़ाफ़िल हो जाए तो अल्लाह तआला भी उस बंदे से नाराज़ हो जाते हैं। लिहाज़ा ग़ाफ़िल दिल से दुआएं न मांगना बल्कि हाज़िर दिल से दुआएं मांगना।

जमाअती तौर पर दुआ मांगने की फ़ज़ीलत

मेरे दोस्तो! हम मुहताज और ज़रूरतमंद हैं और जिसको ग़र्ज़ होती है वह मांगता है। लिहाज़ा मक़ूला है :

﴿صَاحِبُ الْغَرَضِ مَجْنُوْنٌ﴾ जिसको ग़र्ज़ होती है वह मजनून होता है।

क्यों न आज की रात हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दीवानों की तरह रो रो कर मांग लें और ख़ैर के फ़ैसले करवा लें। यह कितना बेहतर होगा कि मख़्लूक़ के सामने ज़िल्लत बर्दाश्त करने के बजाए आज ही अपने रब के सामने आजिज़ी कर लें। याद रखें कि रब के सामने झुकना इज़्ज़त है और मख़्लूक़ के सामने झुकना ज़िल्लत है। अगर आज की रात परवरदिगार के सामने झुकेंगे तो इज़्ज़त मिलेगी और बाद में सारा साल मख़्लूक़ के सामने झुकते फिरेंगे तो ज़िल्लत मिलेगी।

जमाअती तौर पर दुआ मांगने की अपनी बरकात होती है। मुमकिन है कि हम अकेले दुआएं मांगते तो हमारे नामए आमाल में गुनाह ज़्यादा होने की वजह से परवरदिगार आलम की रहमत मुतवज्जेह न होती लेकिन मजमे में अगर एक बंदा भी ऐसा हो जिसकी दुआ क़बूल हो जाए तो सबकी दुआओं को क़बूल कर लिया जाता है। उस सख़ी का तरीक़ा यही है कि अगर कोई जमाअती तौर पर दुआएं मांगे तो एक की भी दुआ क़बूल हो जाए तो उसकी बरकत से अल्लाह तआला सबकी दुआएं क़बूल फ़रमा लेते हैं। सूरः फ़ातेहा में इंसान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तारीफ़ से बात शुरू करता है और फिर बाद में दुआएं मांगता है। लेकिन अगर वह अकेला नमाज़ पढ़ रहा है तो वह वाहिद का सेग़ा इस्तेमाल नहीं करता बल्कि जमा का सेग़ा ही इस्तेमाल करता है। ﴿إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ﴾ (इय्या-क नअबुदु व इय्या कनस्तईन) ही कहता है। यह नहीं कि अगर अकेले पढ़ना है तो ﴿أَعْبُدُ﴾ अबुदू और मिलकर पढ़ना है तो ﴿نَعْبُدُ﴾ नअबुदू। इसमें क्या

हिकमत थी? इसमें बंदे को सबक़ दिया गया है कि तुम अपने दिल में सोचो कि अगर मैं अकेला मांगूगा तो मालूम नहीं क़बूलियत होगी या नहीं। अगर मैं अपने आप को जमाअत का एक फ़र्द समझकर दुआ मांगूगा तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जमाअत की बरकत से मेरी दुआएं क़बूल कर लेंगे।

ख़ैर का दरिया

उलमा ने लिखा है कि चार रातों में अल्लाह तआला ख़ैर के दरिया बहा देते हैं :

1. लैलतुल-क़द्र में,
2. शबे अरफ़ा (अरफ़ात की रात) में
3. लैलतुल-बराअत (शबे बराअत) में
4. लैलतुल-जाएज़ा (ईद की रात) में

शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० ने लिखा है कि जिस तरह इंसानों की ईदें होती हैं उसी तरह शबे बराअत फ़रिश्तों की ईद होती है।

तीन चीज़ें तीन चीज़ों में

अल्लाह तआला ने तीन चीज़ों को तीन चीज़ों में छुपा दिया हैं अगर बच्चे को कोई चीज़ वैसे ही दे दी जाए तो उसे उस चीज़ की उतनी क़द्र महसूस नहीं होती। लिहाज़ा उसकी माँ उस चीज़ को कहीं छुपाकर रख देती है और बच्चे को कहती है कि उसे ढूंढो। उसको पता अगर यह इस चीज़ को ढूंढेगा और इधर उधर जाएगा तो उसका शौक़ बढ़ेगा और उसके दिल में इसकी क़द्र आएगी। इसी तरह अल्लाह तआला ने भी तीन चीज़ों को तीन चीज़ों में छुपा दिया है।

1. अल्लाह तआला ने अपनी रज़ा को अपनी ताअत में छुपा दिया है। लिहाज़ा मोमिन बंदा हर तरह की नेकी करता है कि मालूम नहीं कि अल्लाह तआला मेरी किसी नेकी की वजह से राज़ी हो जाएं।
2. अल्लाह तआला ने अपनी नाराज़ी को अपनी मासियत में छुपा दिया है। लिहाज़ा ईमान वाला बंदा हर क़िस्म के गुनाह से बचता है कि नहीं मालूम मेरा रब किस गुनाह की वजह से नाराज़ हो जाए।
3. अल्लाह तआला ने अपने औलिया को अपनी मख़्लूक़ से छुपा दिया है। इसलिए हर ईमान वाले बंदे की इज़्ज़त करनी चाहिए कि मालूम नहीं कि किस बंदे का अल्लाह तआला के हाँ क्या मर्तबा है।

दुनिया में इंसान जो कुछ मर्ज़ी करता फिरे क़यामत के दिन मालूम होगा कि खोटा और खरा कौन है। एक मर्तबा सैय्यद सुलेमान नदवी रह० सफ़र से वापस आए। किसी ने पूछा, हज़रत! कैसे रहे? उन्होंने जवाब में इर्शाद फ़रमाया—

यहाँ ऐसे रहे के वैसे रहे
वहाँ देखना है के कैसे रहे

इतने इंसानों की बख़्शिश

इब्ने माजा की रिवायत हे कि सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने एक रात नबी अलैहिस्सलाम को बिस्तर पर न पाया। मैं आप को देखने के लिए बाहर निकली तो मुझे जन्नतुल बक़ी में से रोने की आवाज़ आई। मैं उस आवाज़ की तरफ़ आगे बढ़ी तो देखा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दे की हालत में रो-रो कर अपनी गुनाहगार उम्मत के

लिए दुआए मग़फ़िरत फ़रमा रहे हैं। नबी अलैहिस्सलाम ने आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि आएशा! अल्लाह तआला आसमाने दुनिया पर तश्रीफ़ लाते हैं और आज की रात बनी कल्ब के क़बीले की बकरियों के बालों के बराबर जहन्नमियों को जहन्नम से बरी फ़रमाते देते हैं। बनी कल्ब मदीना तैय्यबा के क़रीब एक मशहूर क़बीला था जो बकरियाँ पालने में बड़ा मशहूर था। उस क़बीले के हर घर के अंदर सैंकड़ों बकरियाँ होती थीं। अब एक बकरी के बाल हज़ारों और उस क़बीले के पास बकरियाँ भी हज़ारों। इतनी तादाद में इंसानों की आज रात में बख़्शिश होगी।

मग़फ़िरत का ऐलान

सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

قُمْ لَيْلَةَ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ فَإِنَّهُ لَيْلَةٌ مُبَارَكَةٌ فَإِنَّ اللهَ تَعَالٰ يَقُولُ
فِيهَا هَلْ مِنْ مُسْتَغْفِرٍ فَاغْفِرَلَهُ.

तुम पंद्रह शाबान की रात को क़याम करो। बेशक यह एक मुबारक रात है। इसमें अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं कि कोई है मग़फ़िरत चाहने वाला कि मैं उसकी मग़फ़िरत करूँ।

हम मग़फ़िरत की तलाश में थे। ख़ुशक़िस्मती से आज की रात ऐसी आ गई कि परवरदिगार ने ख़ुद ऐलान कर दिया कि मग़फ़िरत तलब करने वाले मग़फ़िरत तलब करें ताकि मैं उनके गुनाहों को माफ़ कर दूँ।

शबे बराअत में अताए नबुव्वत

बाज़ किताबों में लिखा है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को

नबुव्वत भी इसी रात में मिली थी। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी अहलिया सफ़ोरा सलामुल्लाहि अलैहि को लेकर चल रहे थे। उनकी तबियत ठीक नहीं थी। आप आग लेने के लिए कोहे तूर पर पहुँचे तो अल्लाह तआला ने उनको पैग़म्बरी अता फ़रमा दी।

ख़ुदा की देन का मूसा से पूछिए अहवाल
आग लेने को जाएं पैयम्बरी मिल जाए

पत्थर दिल भी पेश कर दें

कुछ लोग कहते हैं कि दुआ मांगने को दिल नहीं करता। जब यह आजिज़ यह बात सुनता है तो दिल काँप उठता है। इसलिए कि किताबों में लिखा है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जिस बंदे से नाराज़ होते हैं तो सबसे पहले यही काम करते हैं कि उससे दुआ की लज़्ज़त व हलावत छीन लेते हैं। जब कोई बंदा कहता है कि दुआ मांगने को दिल नहीं करता तो वह यह कह रहा होता है कि मेरे रब ने मुझसे दुआ मांगने की लज़्ज़त छीन ली है। आज की रात अपने दिल को हाज़िर करके दुआ मांगे। अगर दिल पत्थर भी है तो उसको भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर पेश कर दें और कहें कि ऐ मालिक! यह पत्थर दिल आपके सामने हाज़िर कर रहे हैं। इस पर एक नज़र डालकर इसको मोम फ़रमा दीजिए।

तक़्दीर मुअल्लक़ और तक़्दीर मुबरम (अटल)

अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ج وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ٥﴾ (الرعد:٣٩)

अल्लाह तआला जो कुछ चाहते हैं मिटा देते हैं और जो कुछ चाहते हैं बरक़रार रखते हैं। और उसी के पास लौहे महफ़ूज़ है।

उलमा किराम ने इस आयत के तहत लिखा है कि तक़्दीर दो तरह की होती है :

1. तक़्दीरे मुअल्लक़,
2. तक़्दीरे मुबरम

जो तक़्दीर बदल सकती है उसे तक़्दीर मुअल्लक़ कहते हैं। इसमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मर्ज़ी से रद्दो बदल होता रहता है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआला रोज़ाना तीन सौ तीस मर्तबा लौहे महफ़ूज़ पर तवज्जोह फ़रमाते हैं। फिर उस में से जो कुछ चाहते हैं मिटा देते हैं और जो कुछ चाहते हैं बरक़रार रखते है। तक़्दीर का यह हिस्सा मशरूत होता है।

- अगर सदक़ा किया जाए तो बला और मुसीबत को टाल दिया जाता है।
- अगर माँ-बाप की ख़िदमत और इताअत की जाए तो उम्र बढ़ जाती है।
- सिला रहमी उम्र में ज़्यादती का सबब बनती है।
- जो किसी ग़रीब की मदद करेगा अल्लाह तआला उसके रिज़्क़ में बरकत अता फ़रमा देंगे।
- अगर कोई बीमार इलाज करेगा तो अल्लाह तआला बीमारी को दूर फ़रमा देंगे।
- मुसीबत का फ़ैसला होना था। बंदे ने रो-रो की आजिज़ी की। अल्लाह तआला ने मुसीबत को दूर कर दिया।
- जो बंदा ज़िना करता है अल्लाह तआला उससे उम्र की बरकत छीन लिया करते हैं।

- दुआ तक़्दीर को बदल देती है।

इसीलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जब बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करते तो रो रो कर यह दुआ मांगते थे कि ऐ अल्लाह! अगर आपने मुझे अहले सआदत में से लिखा है तो उनमें क़ायम रखिए और मेरा नाम उनकी फ़हरिस्त से न मिटाइए। और अगर तूने मेरे लिए शक़ावत (बदबख़्ती) लिखी है तो मेरा नाम अहले शक़ावत की फ़हरिस्त से मिटाकर अहले सआदत की फ़हरिस्त में लिख दीजिए क्योंकि आप जो कुछ चाहते हैं बरक़ार रखते हैं। आपके पास ही उम्मुल किताब है।

उलमा ने लिखा है कि तक़्दीर में जो तब्दीली किसी अमल या दुआ की वजह से होती है उससे मुराद वह तक़्दीर होती है जो फ़रिश्तों के इलम में होती है। उसमें कभी-कभी किसी हुक्म की शर्त होती है। अगर वह शर्त पाई जाए तो वह हुक्म भी लागू होता है और अगर वह शर्त न पाई जाए तो फिर वह हुक्म भी बाक़ी नहीं रहता। कभी फ़रिश्तों को इस शर्त का इल्म होता है और कभी-कभी इल्म भी नहीं होता। सिर्फ़ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के इल्म में होती है।

मुल्ला ताहिर लाहौरी रह० इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० के दो बेटे हज़रत मुहम्मद सईद रह० और हज़रत मुहम्मद मासूम रह० के उस्ताद थे। एक मर्तबा मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० को कश्फ़ के ज़रिए पता चला कि मुल्ला ताहिर की पेशानी पर 'मुल्ला ताहिर लाहौरी शक़ी' लिखा हुआ है। हज़रत रह० ने इसका तज़किरा अपने साहबज़ादों से कर दिया। क्योंकि हज़रत के साहबज़ादे मुल्ला ताहिर के शागिर्द थे इसलिए उन्होंने हज़रत से दरख़्वास्त की कि आप अल्लाह तआला से दुआ कर दीजिए कि

अल्लाह तआला शक़ावत को मिटाकर सआदत में बदल दें। चुनाँचे हज़रत ने दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! मुल्ला ताहिर लाहौरी की पेशानी से शक़ी का लफ़्ज़ मिटाकर सईद लफ़्ज़ तहरीर फ़रमा दें। अल्लाह तआला ने हज़रत की दुआ क़ुबूल फ़रमा ली और मुल्ला ताहिर लाहौरी की पेशानी पर शक़ी के बजाए सईद का लफ़्ज़ लिख दिया गया।

जो तक़्दीर नहीं बदल सकती उसे तक़्दीरे मुबरिम कहते हैं। यह अल्लाह तआला के अटल क़िस्म के फ़ैसले होते हैं और यह फ़ैसले किसी अमल या दुआ के साथ मशरूत नहीं होते। इसलिए उनको बदला नहीं जा सकता।

इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़सानी रह० फ़रमाते हैं कि इंसान की तक़्दीर का बेशतर हिस्सा मशरूत होता है। बहुत थोड़ा हिस्सा अटल होता है। वह होकर ही रहता है चाहे तो मर्ज़ी हो जाए। मेरे दोस्तो! जब बहुत थोड़ा हिस्सा मशरूत है तो क्यों न हम रो धो कर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को मना लें।

दो महरूम बंदे

हदीस पाक में आया है कि आज की रात बड़े-बड़े गुनाहगारों की मग़फ़िरत हो जाती है सिवाए दो बंदों के :

1. शिर्क करने वाले की
2. दिल में कीना रखने वाला

एक शिर्के जली होता है और एक शिर्के ख़फ़ी होता है। शिर्क जली ग़ैरुल्लाह के सामने झुकने को कहते हैं। मसलन बुत के सामने झुकना वग़ैरह। और शिर्के ख़फ़ी अपने नफ़्स के सामने झुकने और उसकी ख़्वाहिशात को पूरा करने में लग जाने को

कहते हैं। इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़सानी रह० फ़रमाते हैं कि ईमाने हक़ीक़ी की लज़्ज़त उस वक़्त तक नसीब नहीं होती जब तक कि बंदा शिर्क जली और शिर्के ख़फ़ी दोनों से तौबा न करे। अगर आप ग़ौर करें तो पता चलेगा कि आज दिल में नफ़्सानी, शहवानी और शैतानी मुहब्बतें भरी पड़ी हैं। ये सब नफ़्स की शरारतें हैं। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿أَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُۥ هَوَىٰهُ﴾

क्या देखा आपने उसको जिसने अपनी ख़्वाहिशात को अपना माबूद बना लिया है।

गोया रब को माबूद मानना छोड़ दिया और अपने नफ़्स को माबूद बना लिया। इस आयते मुबारका से पता चलता है कि ख़्वाहिशात की पैरवी और पूजा करना शिर्क है। लिहाज़ा अगर दिलों में नफ़्सानी, शहवानी और शैतानी मुहब्बतें मौजूद हों तो उनसे आज सच्ची पक्की तौबा कर लें। कहीं ऐसा न हो कि उसकी वजह से आज की बरकत से महरूम हो जाएं।

दूसरी बात कीना है। किसी इंसान के दिल में रंजिश और दुश्मनी होने को कीना कहते हैं। इसक वजह से इंसान उसके साथ मुक़ाबलेबाज़ी, ज़िदबाज़ी और दुश्मनी करता है। अगर आप ग़ौर करेंगे तो मालूम होगा कि बहू के बारे में सास के दिल में कीना होता है। सास के बारे में बहुत के दिल में कीना होता है। कई जगहों पर तो मियाँ-बीवी में एक दूसरे के बारे में कीना होता है। दोस्तों के दिल में दोस्तों के बारे में कीना होता है। कई जगहों पर बहनों का आपस में कीना चलता है। भाईयों का आपस में कीना चलता है और बहन भाई भी आपस में कीना रखते हैं। जब तक यह कीना भी दिल से नहीं निकलेगा उस वक़्त आज की दुआएं

क़बूल नहीं होंगी। हम दुआ मांगने से पहले इन दोनों गुनाहों से सच्ची तौबा कर लें। ऐसा न हो कि हम उनकी वजह से मग़फ़िरत से महरूम हो जाएं।

अच्छे गुमान से दुआ मांगें

हदीसे क़ुदसी में अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿اَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِیْ بِیْ﴾

मैं बंदे के साथ वैसा ही मामला करता हूँ जैसा वह मेरे साथ गुमान करता है।

इसलिए अगर आज हमारा गुमान यह हुआ कि पता नहीं मेरी दुआ क़बूल होती है या नहीं तो फिर हमारी दुआ यक़ीनन क़बूल नहीं होगी। अगर यह गुमान हुआ कि जी हमारी तो वह सुनता ही नहीं (मअज़ल्लाह) तो यक़ीनन नहीं सुनेंगे और अगर यह गुमान हुआ कि हम पर अल्लाह तआला यक़ीनन रहमत फ़रमाएंगे तो फिर यह दुआ अल्लाह तआला के हाँ यक़ीनन क़बूल हो जाएगी।

क़बूलियते दुआ के वाक़िआत

कौन कहता है कि दुआएं क़बूल नहीं होतीं। क़बूल होती हैं मगर उसके लिए दिल के यक़ीन की ज़रूरत होती है। यक़ीन कीजिए कि हमने अपनी ज़िंदगी में क़ुबूलियते दुआ के सैंकड़ों वाक़िआत देखें हैं। मिसाल के तौर पर :

हमारे एक दोस्त चीफ़ इंजीनियर थे। अल्लाह की शान की वह एक दफ़ा पागल हो गए। यहाँ तक कि डाक्टरों ने लाइलाज क़रार दे दिया। हमें कई महीनों के बाद पता चला। हम उनसे मिलने के लिए उनके घर गए। हम यह देखकर हैरान हो कि उनको घरवालों

ने बांधा हुआ था क्योंकि उनकी अक़्ल काम नहीं करती थी और उनको अपने नफ़े नुक़सान का पता नहीं था। उनके बीवी बच्चों का रो रो कर बुरा हाल था। ज़िक्र व फ़िक्र करने वाले चंद नेक लोग वहाँ तश्रीफ़ ले गए। हम भी उनके साथ वहाँ पहुँच गए। अल्लाह के नेक बंदों ने वहाँ बैठकर अल्लाह तौबा की और फिर उनके लिए दुआ मांगी। अल्लाह तआला ने वह दुआ क़ुबूल क़र ली। और बग़ैर इलाज के उनको दोबारा अक़्ल की नेमत अता फ़रमा दी। इस वक़्त वह सऊदी अरब में चीफ़ इंजीनियर के तौर पर काम कर रहे हैं।

हमारे एक दोस्त डाक्टर थे। एक दिन वह अपने क्लीनिक पर आए। गाड़ी से उतरे तो उतरते ही उनकी आँखों की बीनाई ज़ाएल हो गई। जब वह किसी आदमी का हाथ पकड़कर घर पहुँचे तो घर में कोहराम मच गया। घरवालों का रो रोकर बुरा हाल हो गया। उन्होंने मुल्क के सदर के आई स्पेशलिस्ट को बुलाकर भी चैकअप करवाया मगर उसने भी जवाब दे दिया कि यह बीनाई वापस नहीं आ सकती। चुनाँचे वह नाउम्मीद होकर बैठ गए। अल्लाह की शान कि वह सिलसिले के दोस्त थे। दोस्तों को पता चला तो ज़िक्र व फ़िक्र करने वाले दोस्त वहाँ पहुँच गए। हम भी उन दोस्तों के साथ वहाँ पहुँच गए। सबने मिलकर वहाँ अल्लाह तआला से तौबा की और उनके लिए दुआएं कीं। अलहम्दुलिल्लाह हमने अपनी ज़िंदगी में उस डाक्टर की बीनाई को लौटते हुए देखा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने बग़ैर दवाई के उनकी आँखों की बीनाई लौटा दी।

रहम की अपील

दिल से ग़लत मुहब्बतों को निकाल दीजिए और सीना साफ़

कर लीजिए। कहीं कोई ऐसा वैसा ताल्लुक़ है तो आज उस ताल्लुक़ से सौ फ़ीसद तौबा कर लीजिए। दिल में कहीं गुनाह का इरादा फंसा हुआ है तो आज उस इरादे को दिल से निकाल लीजिए। अगर दिल में किसी के बारे में कीना है तो आज उस कीना को भी दिल से निकाल दीजिए। फिर देखिए कि अल्लाह की रहमत कैसे छम-छम बरसती है।

यह बात याद रखिए कि अगर हम पर गुनाहों का मुक़दमा चलाया जाए तो हम हार जाएंगे, इसलिए कि हम गुनाहगार हैं। मुक़दमे के बाद एक चीज़ "रहम की अपील" होती है। अब हमारी हालत उस बंदे की सी है जो मुजरिम है और अपने किसी बड़े के सामने रहम की अपील कर रहा है। हम भी अपने परवरदिगार से रहम की अपील कर रहे हैं। अगर वह रहम फ़रमा दे तो हमारी बिगड़ी बन जाएगी। वह तो बड़ा करीम और मेहरबान परवरदिगार है। उस परवरदिगार ने तो इब्लीस की भी दुआ क़बूल कर ली थी। उसने कहा था :

﴿رَبِّ أَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ.﴾

ऐ अल्लाह मुझे क़यामत तक मुहलत दे दीजिए।

उलमा ने लिखा कि फ़िरऔन के ज़माने में एक मर्तबा दरियाए नील बंद हो गया। वह बड़ा परेशान हुआ। चुनाँचे उसने तन्हाई में दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! मैं लोगों के सामने तो ख़ुदाई का दावा करता हूँ लेकिन अब मैं परेशान हो चुका हूँ। अब अगर तू मौजूद है तो इस दरियाए नील को फिर जारी कर दे। अल्लाह तआला ने उस मरदूद की दुआ क़बूल करके दरियाए नील को जारी कर दिया था। जब अल्लाह तआला ऐसे ख़ताकार लोगों की दुआएं क़बूल

कर लेता हैं तो फिर ईमान वालों की दुआएं कैसे क़बूल नहीं फ़रमाएंगे।

इस्तिग़फ़ार और सिफ़्ते रुबूबियत

तालिब इल्मों के लिए एक इल्मी नुक्ता अर्ज़ करता हूँ। क़ुरआने करीम में जहाँ कहीं भी इस्तिग़फ़ार का लफ़्ज़ आया है वहाँ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अक्सर व बेशतर अपनी सिफ़्ते रुबूबियत का ज़िक्र ज़रूर किया है। मिसाल के तौर पर :

﴿فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ، فَاسْتَغْفِرْ رَبَّهٗ، فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ.﴾

अल्लाह तआला ख़ालिक़ और मालिक भी हैं और इस्तिग़फ़ार के साथ अपनी ख़ाल्क़ियत और माल्कियत वाली सिफ़्त भी बयान कर सकते थे लेकिन फ़क़त रबूबियत वाली बयान फ़रमाई है। यहाँ सवाल यह पैदा है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपनी रुबूबियत का तज़्किरा क्यों फ़रमाया है? इसका जवाब यह है कि रब्ब वह ज़ात है जो इंसान और बाक़ी तमाम रूह रखने वाली चीज़ों की परवरिश करती है। इसलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने यहाँ रब का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया। चूँकि माँ-बाप मजाज़ी तौर पर बच्चे की परवरिश करते हैं इसलिए यह रुबूबियत और तर्बियत का लफ़्ज़ उनके लिए भी इस्तेमाल किया गया है। ﴿كَمَا رَبَّيٰنِىْ صَغِيْرًا﴾ कमा रब्बायानी सग़ीरा। यह क़ुरआन पाक के अल्फ़ाज़ हैं जो माँ-बाप के लिए इस्तेमाल हुए हैं।

माँ-बाप चूँकि बच्चे की परवरिश करते हैं इसलिए उनको बच्चे के साथ एक फ़ितरी लगाव होता है। माँ ज़्यादा वक़्त लगाती है। इसलिए उसे बाप की निस्बत बच्चे से ज़्यादा मुहब्बत होती है। माँ को अपने बच्चे से कितनी मुहब्बत होती है? अगर बच्चा दूसरे

कमरे में रोए तो माँ कभी नहीं बैठेगी। वह खाना और सब काम छोड़कर और रास्ते की रुकावट दूर करके बच्चे के पास पहुँच जाएगी। अगर कोई नहीं पहुँचने देगा तो उसकी आँखों में आँसू जारी हो जाएंगे और वह मछली की तरह तड़पने लग जाएगी। इसलिए कि माँ को बच्चे के साथ जज़्बाती लगाव होता है बल्कि अगर बेटा अपना न भी हो, भाई का बेटा पाला हुआ हो तो इस पालने की वजह से उस बच्चे के साथ भी उसको फ़ितरी मुहब्बत हो जाती है। वह उसे अपने बेटों से भी बढ़कर प्यारा लगता है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जहाँ इस्तिग़फ़ार का लफ़्ज़ इर्शाद फ़रमाया वहाँ अपनी सिफ़्ते रुबूबियत का तज़्किरा भी फ़रमाया। गोया अल्लाह तआला कहना चाहते हैं :

"ऐ मेरे बंदो! माँ ने तुमको पाला है और माँ को तुमसे मुहब्बत है। मैं भी तुम्हारा पालने वाला हूँ, मुझे भी तुमसे मुहब्बत है। तुम बचपन में माँ के सामने रोते थे तो वह तुम्हारी ज़रूरतें पूरी करती थी और अब अगर तुम मेरे सामने रोओगे तो मैं तुम्हारे इस रोने को कबूल कर लूंगा। मांगो तो मैं तुम्हें कभी इंकार नहीं करूंगा। मेरे दर पर आकर झुकोगे तो मैं तुम्हें धक्के नहीं दूंगा। मैं तुम्हें बेसहारा नहीं करूंगा। मैं तुम्हें ग़ैरों के हवाले नहीं करूंगा। मैं परवरदिगार हूँ, मैंने तुम्हें पाला है। अब तुम इस्तिग़फ़ार करो उस परवरदिगार के सामने जिसने तुम्हें बचपन से पालकर जवान किया और जवानी से पालकर बुढ़ापे तक ले आया।

गुनाहों को बख़्शवाने का वक़्त

मेरे दोस्तो! यक़ीन कीजिए कि हमने इतने गुनाह किए हैं कि हमारे सर पर पहाड़ों जैसे बोझ हैं। अगर वह बोझ क़यामत के दिन अल्लाह तआला ने खोल दिए तो कितनी शर्मिन्दगी होगी।

आज इन गुनाहों को बख़्शवाने का वक़्त है। रब्बे करीम वह ज़ात है जो इन गुनाहों को नेकियों में तब्दील फ़रमा दे तो कोई पूछने वाला भी नहीं। वह परवरदिगार चाहेंगे तो हमारे मुक़द्दर के फ़ैसले फ़रमा देंगे। और हमें अल्लाह तआला अपने नेक बंदों में शामिल फ़रमा देंगे। हम जो सोचते फिरते हैं कि हमारे दिल पत्थर हैं तो आज इस पत्थर को मोम करवाने की ज़रूरत है। लिहाज़ा अब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआ कीजिए कि परवरदिगारे आलम हम पर अपनी रहमत फ़रमा दे और हमारी दुआओं को क़बूल फ़रमा ले। (आमीन सुम्मा आमीन)